श्री भद्रबाहुस्वामी विरचित

भद्रबाहु - संहिता

४५ आगम सारांश व अन्यविषय

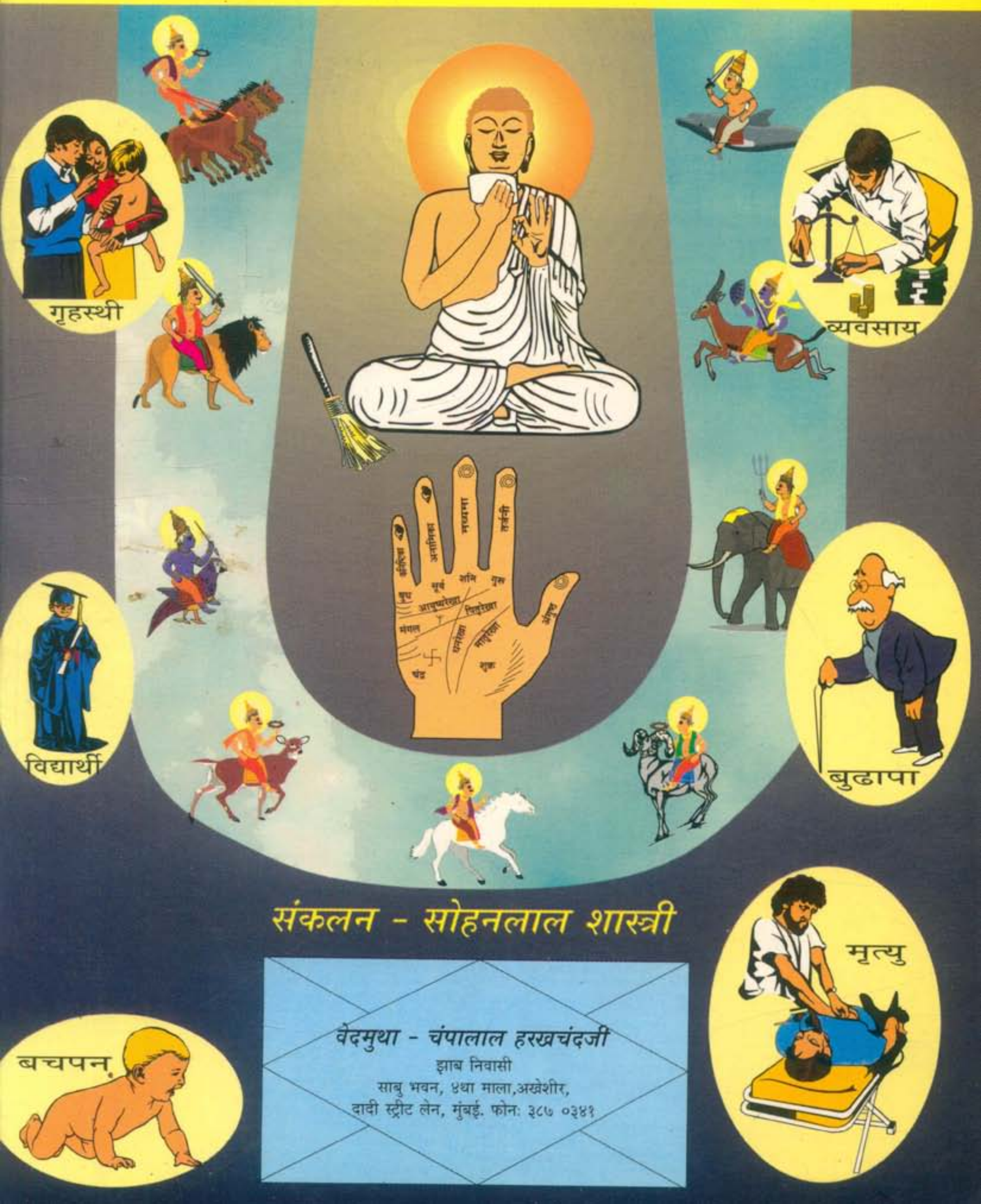

संकलन - सोहनलाल शास्त्री

वेदमुथा - चंपालाल हरखचंदजी
झाब निवासी
साबु भवन, ४था माला, अखेशीर,
दादी स्ट्रीट लेन, मुंबई. फोनः ३८७ ०३४१

वन्दे - वीरम्

भद्रबाहू - संहिता

भाग - २

(अन्तिम चौवह पूर्व ज्ञानी)

श्री भद्रबाहू स्वामी विरचित - संकलन

पं. सोहनलाल शास्त्री

व्याकरण - न्याय - साहित्य रत्न.

प्रकाशन

श्री चतुर्विध संघ के सहयोग से मूल्य. इस अमूल्य ग्रंथ का कोई मूल्य नहीं. किन्तु ज्ञान आशातना न हो.

रु. २००/-

पुस्तक मिलने का पता

(१) सुमित्रा प्रिंटींग प्रेस, आरे रोड, गोरेगांव (वेस्ट),
मुम्बई - ४०० ०६२, फोन - ८७३ ४६ ८९

(२) पं. सोहनलाल शास्त्री
बस स्टॅन्ड, मु.पो. रामसीन, जि. जालोर (राजस्थान)

(३) श्री शांतिलालजी मुथा
भूपेन्द्र साहित्य ग्रंथ माला, आहोर

वि. सं. २०६०

: शुभाकांक्षा :

यह मेरी ४४ वी पुस्तक है, मेरी अवस्था ७८ वर्ष की है, आँखें कमजोर, फिर भी प्रयास किया संकलन का ।

: ज्ञान :

ज्ञान एक दीपक है इस के प्रकाश में देखना - समझना, अनुभव करना है ।

स्वाध्याय - आत्म ज्ञान का सचोट साधन है, आप प्रतिदिन एक घंटा पुस्तक पढते रहिये, आप को बहुत आनंद होगा ।

: आप से विनंती :

यदि स्वाध्याय के द्वारा इस को पढते रहेंगे तो आपको वास्तविक आत्मानुभव होगा ।

वृद्धावस्था से यदि त्रुटियें रह गई होतो-मिच्छामि दुक्कडम्

मुंबई - ता. १-७-१९९९

पं. सोहनलाल शास्त्री

हमारे गुरूजी

पं. सोहनलालजी शास्त्रीजी का परिचय

बम्बई - व राजस्थान के बहुत से हमने संगीतकार पं. सोहनलाल जी शास्त्री जी के साथ में रहकर - पूजा - भावना - प्रतिष्ठा - अंजन शलाका आदि कार्यक्रमों का अनुभव प्राप्त किया । गुरूजी के साथ में रहने से हमें इनका परिचय प्राप्त हुआ ।

आप का जन्म जालौर जिल्ला आकोलीमें वि.सं. १९७७ वैशाख सुदी २ का हुआ था, पिताजी का नाम - गजाजी - नाथाजी, माता का नाम - केशरबाई, आप के भाई - जेठाजी, हकमाजी व छोटे भाई - सज्जनसिंह आप रावणा राजपूत है । बहेन का नाम - सुन्दर बाई - आप का नाम सोहनलाल ।

बचपन से ही पूर्व भव के संस्कारों से जो सुनते वह याद हो जाता था, दस वर्ष की आयु में माँ - बाप का स्वर्गवास हो गया । श्री यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. श्री हर्ष विजयजी म.सा. ने पंडित रखकर - लघु कौमुदी - सिध्धान्त कौमुदी - काव्यों का अभ्यास करवाया । इन्दौर जुनी कसेरा बाखल में रह कर होल्कर संस्कृत महाविद्यालय में मध्यमा काशी की परिक्षायें दी । परम विद्वान जैन पंडित श्री जुहारमलजी ने तन - मन से व्याकरण काव्य - न्याय का अभ्यास करवाया ।

कालिदास के पंच काव्यों में जैन सिध्धान्तों का प्रतिपादन एवं सभी उदाहरण याद करवाये । पंडितजी कहते "डाचूं ते साचू" ग्रंथो को याद करो । सभी धर्मों का समन्वय करो, तदनुसार व्यवहार में लाओ । इन्दौर से काशी गये वहां पर पांच वर्ष रहकर शास्त्री परीक्षा

दी। ३० वर्ष आयु में विटण - (रामसीन) रावणा राजपूत - राठोड भावाजी की लडकी सीताबाई साथे विवाह हुआ - जोधपुर - लौकाशाह के सम्पादक रहें तरुण जैन - सत्यनीति प्रकाश के सम्पादक रहे। भीनमाल नागपुर सरदारमल पुगलीया स्थानक में धार्मिक मास्टर रहे।

वि.सं. १९५० - में नरमेराम अन्दरजी जैन पाठशाला माटुंगा में अध्यापक - व साधु - साध्वीजी को अध्ययन कराते १९५२ में गोरेगांव वेस्ट, आरे रोड पर दुकान की आज भी इनके सुपुत्र चलाते है। "सुमित्रा प्रिंटिंग प्रेस"

पूर्वभव के संगीत संस्कार जागृत हुये। आप संगीतकार बने, हमारे सरीखे कई शिष्य इनकी सेवा में रहने लगे। आशु कवि - खडे - खडे उसी समय गीत बना देते।

आपने रेकार्डिंग - का कार्य त्रिशला इलोक्ट्रोनिक्स के मालिक श्री शान्तिभाई एवं महेन्द्रभाई के समागम से प्राप्त किया - आप की कई ओडियो केसेट प्रकाशीत हुई

"भगवान महावीर" टेलीफिल्म प्रदर्शित हुई - ओडियो - वीडियो की १८८ केसेटों के गीत लिखे।

आपने बम्बई में कई मंडलों की निःस्वार्थ सेवा की

(१) श्री राजस्थान जैन पार्श्व मंडल - आरे रोड गोरेगांव (वेस्ट) मुंबई - ४०० ०६२.
(२) श्री वासुपूज्य जैन संगीत मंडल मलाड (वेस्ट)
(३) श्री शांति जैन संगीत मंडल भारत नगर ग्रांट रोड.
(४) श्री राजेन्द्र जैन संगीत मंडल कामाठीपुरा मुंबई.

अभी आपने टी.वी. कलाकार लेकर जैन संस्कृतिके धार्मिक ऐतिहासिक नाटक तैयार किये हैं। कई प्रोग्राम हो चुके हैं।

(१) भगवान महावीर, (२) नवकार महामंत्र, भील भीलडी
(३) नाकोडा भैरूजी (इतिहास) (४) नेम राजुल (नवभव)

बेटी बाप कर्मी या आप कर्मी (श्री पाल मयणा)
विष्णु धर्म के नाटक - कृष्ण सुदामा, सतीमाता झुंझुनीवाली,
आपने लिखे - भक्त प्रल्हाद , शकुन्तला, आदि. नृत्य संगीत मय -

आपके समीप **में भवरलालजी चौधरी भीनमाल,** संगीत का अभ्यास किया. जिनकी कई केसेटें प्रकाशित हो चुकी है।

हम आपके संगीतकार -

(१) **गोपाल सोलंकी** - रामसीण
(२) **प्रताप मेहरा** - रामसीण
(३) **मोहनगांधी जैन** - तरवतगढ
(४) **पुखराज सेन** - कोशीलाव
(५) रामलाल जैन थूर
(६) प्रकाश खंडेलवाला पोषालिण
(७) **हसमुख दिवान** - छोटेराही मुंबई
(८) **शैलेन्द्र कुमार** - कालंद्री

हमारे गुरूजी जुग जुग जीये इन्हीं शुभ कामनाओंके साथ

पुस्तक प्रकाशन में सहयोग देने वाले -
श्री मोतीलाल जी राका सादडी, श्री. मीठालालजी मेगलवा वाला - मदुराई

धन्यवाद

- धार्मिक कार्यक्रमों पर बडे प्रोग्राम -

जैन सांस्कृति - धार्मिक - आध्यात्मिक - ऐतिहासिक
नाटक - नाटिकायें - संवाद - लोक नृत्यों के साथ
टी.वी. फिल्म कलाकारों द्वारा प्रस्तुत -
किये जाते है, जिसे देखकर हमारे नव युवक - युवतियों
को ज्ञान मिलं.

तीर्थ निर्माताओं के जीवन पर नृत्य नाटिकाये ।
सभी तीर्थों के
एक महिने पहले सम्पर्क करें - जिस तीर्थ - जिन महान
पुरुषों के नाटक चाहिये - नया बनाकर कलाकारों द्वारा
प्रस्तुत किया जायेगा ।

- संपर्क -

सुमित्रा प्रिंटिंग प्रेस
आरे रोड, गोरेगांव (वेस्ट)
मुंबई ४०० ०६२,
फोन - ८७३ ४६ ८९

पं. सोहनलाल शास्त्री
बस स्टेन्ड. (रामसीन)
मु. पो. रामसीन
जि. जालोर
(राजस्थान.) - ३०७८०३
फो. ०२९६९ - ३३३६३

त्रिशला इलेक्टोनिक्स - जवेरी बजार खारा कुआ
सामे ३ माले मुंबई. फो - २०६ ३५ ७२

वास्तुशास्त्र

घर-गृहिणी के लिये सुख कारक

वास्तु शास्त्र अनुसार घर

समृद्धी सुखशान्ति - आनंदमय जीवन यापन

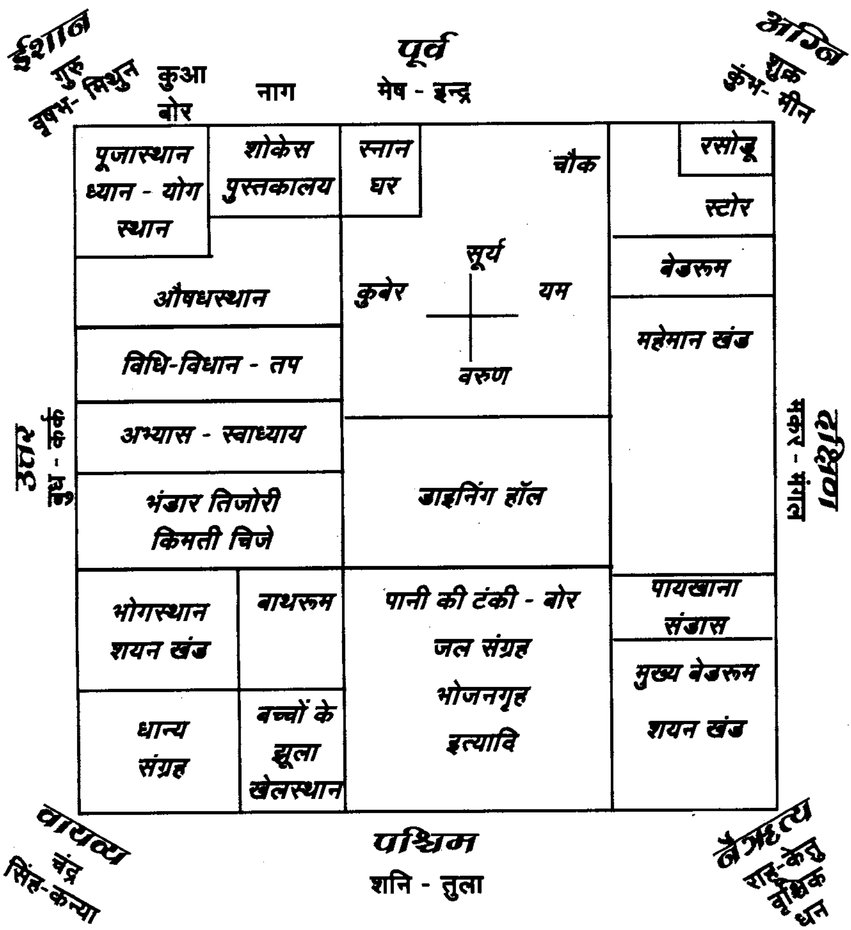

सांसारिक जीवन में सुखशान्ति - शुभकारक, रीध्धी-सिध्धी मिले

इसके लिये उपयोगी बातें, ध्यान देने लायक

१. घर के प्रवेश द्वार पर गणपति मूर्ति, या मांगलिक - ॐ, अथवा ॐ ह्रीँ श्री जीरावला पार्श्वनाथाय नमः लिखवाना चाहिये ।

२. प्रवेश द्वार पर घोडे की नाल लगाना, दाहिने पैर की ।

३. दरवाजे पर तोरण लगाना चाहिये ।

४. घर में अपने इष्ट देव-देवी के फोटू लगाना चाहिये। भयानक या विषय वासना के रौद्र फोटू नहीं लगाना ।

५. घर के दरवाजे पर झाडू - बुहारी नहीं रखना चाहिये, एकान्त में रखना चाहिये।

६. घर-मकान में शान्ति न हो तो पितृ दोष भी हो सकता है, इसके निवारण हेतु प्रतिदिन पानी पीने की जगह तेल का दीपक लगाना।

७. तिजोरी दक्षिण दिशा में दिवाल पास रखना चाहिये जिसका मुंह उत्तर दिशा में खुले जिससे लक्ष्मी तिजोरी में जमा होवे।

८. ईशान कोण में कचरा गंदगी या बेकार सामान नहीं रखना ।

९. विद्यार्थिओं को पढ़ते समय पूर्व या उत्तर दिशा में रखना जिससे जल्दी याद होता है।

१०. मुख्य दरवाजा अंदर भाग में खुलना चाहिये ।

११. स्नानगृह पूर्व भाग में बनाना, आजकल शौचालय एवं स्नानगृह एक साथ बनाये जाते है। शयन खंड के साथ दक्षिण या पश्चिम दिशा में बनाना चाहिये। फिर भी *शौचालय और स्नानगृह अलग बनवाना चाहिये।*

१२. महेमानों के लिये पश्चिम में और कुंवारी लडकियों के लिये वायव्य में कमरे होने चाहिये ।

१३. मकान की सीढ़ियां ऊपर जाने का रास्ता उत्तर अथवा पश्चिम में बनवाना चाहिये।

१४. मुख्य दरवाजा दो भाग में व अन्दर खुले ऐसा बनाना चाहिये।

विश्वपूज्य प्रातःस्मरणीय
प्रभु श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

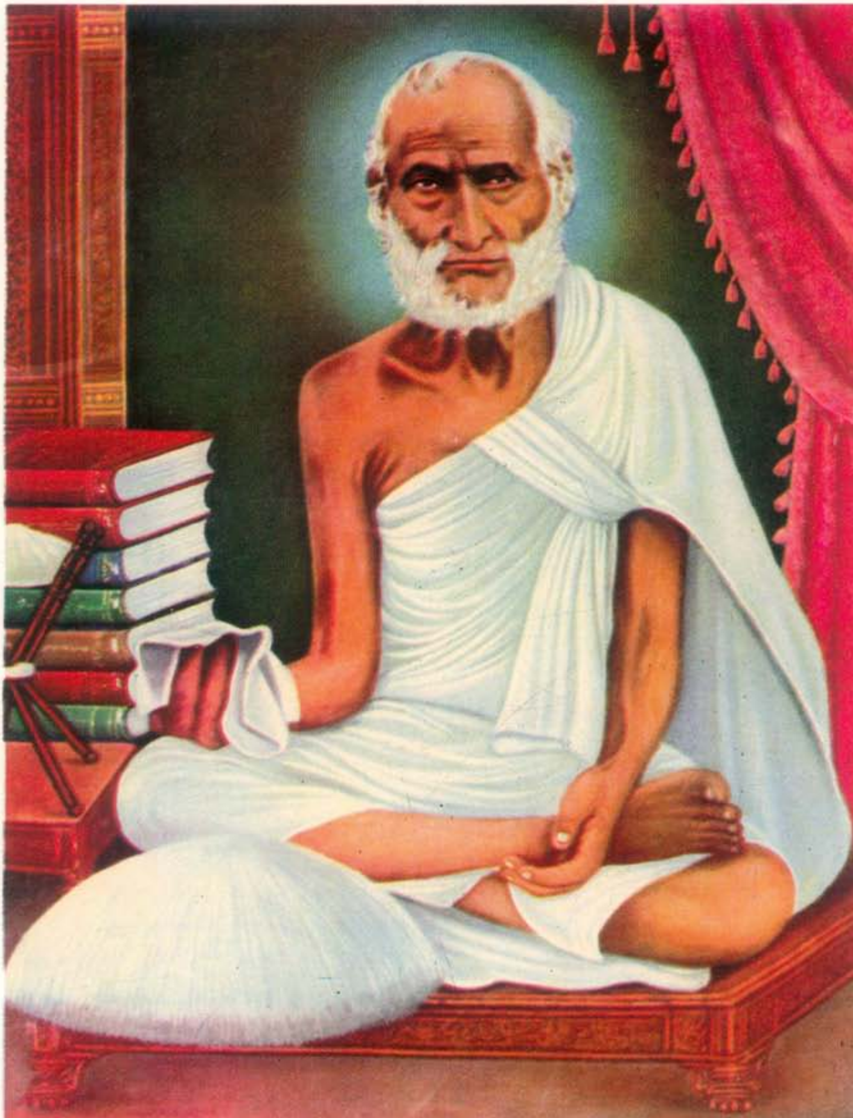

पूज्या श्री गुरूणीजी श्री हेतश्रीजी की सत्तरमी 17 पुण्य
तिथी पर पुण्य स्मृतिमें श्री मुक्तिश्री बागरा

प.पू. तपोमूर्ति गच्छाधिपति आचार्यदेव
श्री दर्शनसागरसूरीश्वरजी म. सा.

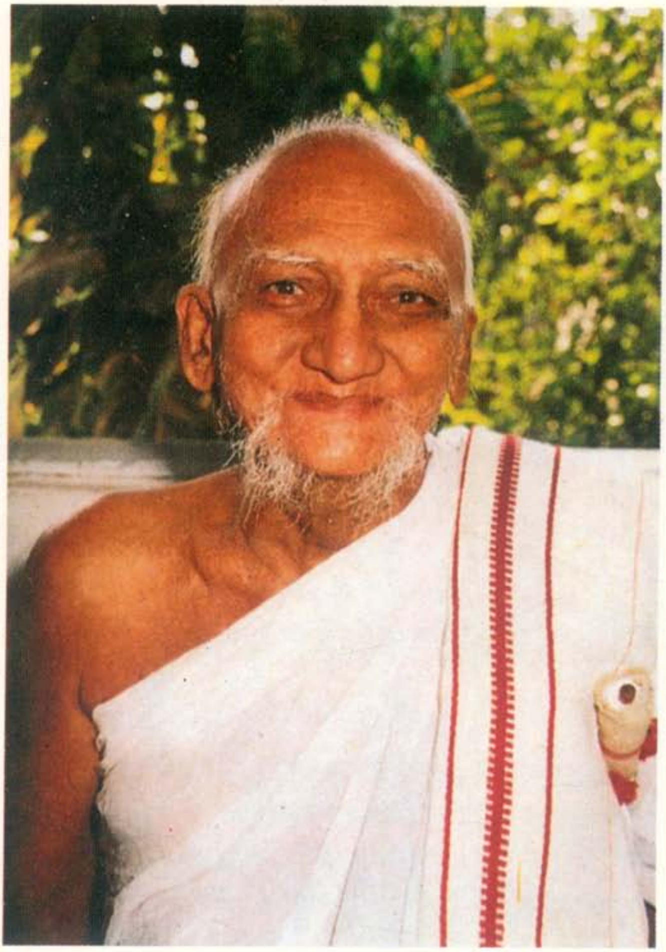

प.पू. संगठन प्रेमी आचार्य देव
श्री नित्योदय सागर सूरीश्वरजी महाराज.

प.पू. मधुरवक्ता योगनिष्ठ श्री चन्द्राननसागर सूरीश्वरजी म.सा.
की शुभ प्रेरणासे .

प. पू. आचार्य भगवंत श्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी
म. सा. की परंपरा में साध्वीजी मंडल
वर्तमान - प्रवर्तिनी श्री मुक्ति श्री जी म. सा.

आचार्य रत्नप्रभ सूरिजी ने भगवान महावीर के ७० वर्ष बाद सावन बदी १४ को उपकेशपुर (ओसियां) में राजा उत्पलदेव मंत्री उहड़देव एवं प्रजा जनों को जैन धर्म में दीक्षित कर ओसवाल वंश की स्थापना की ।

अंग फडकना (अंग स्फूरण)

स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ-सुख	भग-लिंग	पति-स्त्री मिले
ललाट	स्थानलाभ-प्रगति	गुदा	वाहन लाभ
स्कन्ध-कंधा	भोग समृद्धी	वृषभ	पुत्र लाभ
भौहों के मध्य	सुख मिले	ओठ	प्रिय वस्तु मिले
दोनों भौहें	महासुख-मिलन	हबटी	भय प्राप्त होवे
कपाल	शुभ धनलाभ	कंठ	ऐश्वर्य लाभ
नेत्रद्वय	धन प्राप्ति	गरदन	शत्रु का भय
नेत्र कोण २	लक्ष्मीलाभ	पृष्ठ	युद्ध में हार
नेत्र समीप	प्रिय समागम	गाल (कपोल)	वारांगना लाभ
नेत्र पलक १	राज्य लाभ	मुख	मित्र प्राप्ति
नेत्र पलक द्वय	युद्ध जय	बाहू	मधुर भोजन
नेत्र आसपास	कलत्र लाभ	बाहू मध्य	धनागम
नासिका २	प्रेम बढे	पेडू	अभ्युदय
हाथ	द्रव्यलाभ	नितम्ब	वस्त्रलाभ
छाती	विजय मिले	घुटने	शत्रु वृध्धी
हृदय	इच्छित फल मिले	जांघ	स्वामी प्राप्ति
कमर	बल मिले	पैर के ऊपर	स्थान लाभ
कमर के पास	प्रीति-प्रेम वधे	पैर तले	राज्य प्राप्ति
नाभी	स्त्री नाश		या - सम्मान यात्रा
पेट	भोजन इच्छित	पादांगुष्ठ	अलाभ

शरीर पर पल्ली (छिपकली) पडे उसका फल

स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	राज्य लाभ	बाये पहुंचे पर	कीर्तिनाश
नाक ऊपर	पीडा	दाहिने पैर पर	यात्रा
बाई भुजा	राजभय	आठे पर	धननाश
दोनों घुटने	सुख प्राप्ति	नेत्रपर	धनलाभ
कमर	अश्व लाभ	पेटपर	भूमिलाभ
ललाट	बन्धूदर्शन	कंधोपर	विजय
दाहिना कान	आयु वृद्धी	हृदय पर	धनलाभ
कंठ पर	शत्रु नाश	बाये पैर पर	नाश
जांघ पर	शुभ	नीचले होठ पर	ऐश्वर्य प्राप्ति
दक्षिण पहुंचे	मन संताप	दाहिनी भूजा पर	राज सम्मान
केशों पर	निश्चित	पीठ पर	बुद्धी नाश
मस्तकपर	मृत्यु	नासिका पर	बहु धन
भौहों पर	राज्य संबंध	मुख पर	मीठा भोजन
बायां कान	अधिक लाभ	पैरों के बीच	स्त्री नाश
स्तन पर	दौर्भाग्य	पैरों के किनारे	मृत्यु
हाथ पर	वस्त्र लाभ		

घर में पानी रखने का हौद (कूप)

ईशान पृष्टी	**पूर्व** धन प्राप्ति	**आग्नेय** पुत्रनाश अशुभ
उत्तर सुखी	**मध्यभाग** धननाश	**दक्षिण** स्त्री मृत्यु अशुभ
वायव्य शत्रु भय पीड़ा	**पश्चिम** संपत्ति धनलाभ	**नैऋत्य** मृत्यु अशुभ

शास्त्र प्रमाण -

कूपे वास्तोर्मध्य वेशेऽर्थ शस्त्वैशान्यावौ पुष्टिरेश्वर्य वृध्धि:
सूनोर्नाश: स्त्रीविनाशो मृतिश्च संपत्पीडा शत्रुत:स्याच्य सौख्यम् ।।

भवन के मध्यभाग में कूपखनन से अर्थनाश, ईशान में कूपखनन से पुष्टि, पूर्व में ऐश्वर्यवृध्धि:, अग्निकोण में खनन से पुत्र नाश, दक्षिण में कूप खनन से स्त्री विनाश, नैऋत्य में मृत्यु, पश्चिम में धनप्राप्ति, वायव्य में शत्रु की तरफ से पीडा, और उत्तर में सुखप्राप्ति।

दरवाजे के सामने -

मार्गतरूकोण कूपस्तम्भभ्रम विध्धमशुभवं द्वारम् ।
उच्छायाद् द्विगुणितां भूमि त्यक्त्वा न वोषाय ।।

भवन द्वार के ठीक सन्मुख मार्ग स्थित वृक्ष, किसी अन्य भवन (मकान) का कोण (कोणा) कूप, स्तंभ, भ्रम (बडा खाल) इनका होना अशुभ है। किन्तु द्वार की उंचाई से दुनी भूमि को त्याग कर यदि कोणा कूपादि हो तो दोषप्रद नहीं है।

यदि द्वार की ऊंचाई ५ मिटर हो तो मकान के १० मिटर तक की दूरी से बाहर यदि कोणा - कूपादि की स्थिति भले ही द्वार के संमुख हो तो भी अशुभ नहीं जाननी चाहिये ।

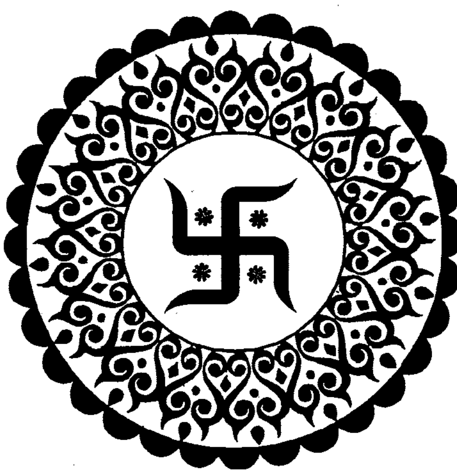

आठ दिशा में ऊंचा-नीचा मकान का भाग

दिशा	कुछ ऊंचा हो तो	कुछ नीचा हो तो
पूर्व	संतान हानि, संतान का भविष्य अंधकार में	यश-ऐश्वर्य प्राप्ति, आयुवृद्धी।
अग्नि	नैऋत्य से ऊंचा हो तो अशुभ माना जाता है। वायव्य और ईशान से ऊंचा हो तो धनलाभ	नैऋत्य से नीचा हो तो शुभ। वायव्य ईशान से नीचा हो तो अग्नि का भय रहता है। शत्रुभय, चोरभय, स्वास्थ्य बिगडे
दक्षिण	आर्थिक विकास होवे स्वास्थ्य ठीक रहेगा।	आर्थिक हानि रोग उत्पन्न होवे।
नैऋत्य	धनवृद्धी, यश-कीर्ति सन्मान प्राप्त होवे।	महारोग होवे, अकाल मृत्यु का भय, व्यसन की आदत - खोटी
पश्चिम	अच्छी संतान होवे, मान प्रतिष्ठा वधे	संतान नाश, तबियत बिगडती रहे इज्जत नाश पामे
वायव्य	ईशान से उंचा हो तो कोई कार्य में विजय मिले, शत्रुनाश होवे, धनप्राप्ति होवे परन्तु नैऋत्य और अग्निकोण से ऊंचा हो तो अशुभ	ईशान से नीचा हो तो विवाद झगडे रोग, कष्ट मिले, नैऋत्य व अग्निकोण से नीचा हो तो शुभफल
उत्तर	हर प्रकार से नुकसान	हमेशा लाभदायक
ईशान	दरिद्रता आवे, गरीब परिस्थिति में जीवन यापन	सब प्रकार से वृध्धी

दादा-गुरूदेव श्री मद्विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के साध्वीजी समुदाय का टुंक परिचय

१. प.पू. श्री अमरश्रीजी म.सा.

जन्म - वि.सं. १८९५ माघ सुद ५ आहोर शेठ श्री टीकमचंदजी लुणावत की धर्म पत्नि मंगलाबाई की कूख से हुआ। नाम आतियांबाई।

विवाह - योग्य शिक्षा प्राप्त कर सं. १९०९ फाल्गुन वदी ४ को सम्पन्न हुआ।

वैधव्य - सं. १९११ मार्गशीर्ष शुक्ल ३ को वैधव्य प्राप्त हुआ।

दीक्षा - तीर्थराज वरकाणा में वि.सं. १९२६ फाल्गुन वदी ८ गुरूदेव की निश्रा में संयम व्रत अंगीकार किया। साध्वीजी समाज में गुरुदेव की प्रथम साध्वीजी।

स्वर्गवास - वि.सं. १९३४ माघ वदी ८ के दिन दाहोद में स्वर्गवास हुआ।

२. श्रीलक्ष्मीश्रीजी म.सा.

जन्म - आपका आहोर में हुआ नाम लक्ष्मीबाई, आतियांबाई की खास सखी।

दीक्षा - वि.सं. १९२६ फाल्गुन वदी ८ में वरकाणा तीर्थ में दीक्षा ग्रहण की गुरुदेव की निश्रामें नाम रक्खा लक्ष्मीश्रीजी। अमरश्रीजी की शिष्या बनी।

३. प. पू. कुशलश्रीजी म.सा.

आहोर में शेठ गोडीदासजी की सुपुत्री केशरीबाई तथा एक भीनमाल की श्राविका दोनों को लक्ष्मीश्रीजी ने दीक्षा दी नाम रक्खा क्रमशः कुशलश्रीजी व उदयश्रीजी।

४. प. पू. श्री विद्याश्रीजी

जन्म - चौहान वंशीय पोरवाल शा. देवीचन्दजी की धर्मपत्नि चुन्नीबाई की कुख से वि.सं. १९१३ माघ सुद ५ को हुआ। नाम दिया नंदीबाई।

विवाह - वैराग्य भावना से ओतप्रोत मना करने पर भी माता-पिताने भोपावर दलीचंदजी पोरवाल के सुपुत्र भगवानजी के साथ कर दिया। वि.सं. १९२८ पोष सुद २।

दीक्षा - पति का स्वर्गवास हो गया वि.स. १९३५ में आषाढ वद १२ को दीक्षा अंगीकार की और अमरश्रीजी की शिष्या बनी नाम विद्याश्रीजी रक्खा। प्रखर बुद्धी से आपको झाबुआमें योगोद्धहन से वि.सं. १९५२ माघ सुदी १५ को महत्तरिका पद से विभूषित किया।

स्वर्गवास - आपने साध्वी समाज में ज्ञानाभ्यास एवं संयम क्रियाओंका विशेष उद्‌बोधन दिया। वि.सं. १९६२ मार्गशीर्ष सुदी ५ राजगढ में आपका स्वर्गवास हुआ।

५. प.पू. श्री मानश्रीजी

जन्म - भीनमाल शा. दलीचन्दजी ओखाजी बालना (ओसवंशीय) श्री धर्मपत्नि नन्दाबाई की कुखसे १९१४

माघ सुद १० के दिन हुआ। नाम रक्खा वर्दीबाई।

माता पिताने आपका विवाह कर दिया, किन्तु तीन मासमें वैधव्य प्राप्त हुआ।

दीक्षा - भेसवाडा चातुर्मास बिराजमान गुरुणीजी की विद्याश्रीजी के पास गुरुदेव व माता पिता खास ससुर से आज्ञा लेकर वि.सं. १९४१ आश्वीन सुद १० मंगलवार को दीक्षा अंगीकार की नाम रक्खा श्रीमानश्रीजी।

स्वर्गवास - अनेक भव्य प्राणियों को समकितवंत किये अंत में आहोर १९९० कार्तिक वद ६ अनशन पूर्वक स्वर्गवास हुआ।

६. प.पू. श्री मनोहरश्रीजी

जन्म - राजगढ जवेरचंदजी ओसवाल की धर्मपत्नि दोलीबाई कुखसे वि.सं. १९२८ आसोज वद ५ के दिन हुआ। नाम रक्खा मंत्रीबाई।

विवाह - वि.सं. १९४५ झाबुआ निवासी हुकमीचन्दजी के साथ हुआ पति व सम्बन्धीयों से आज्ञा लेकर आहोर आये।

दीक्षा - वि. सं. १९४८ अषाढ सुद ५ को विद्याश्रीजी के पास दीक्षा ली।

स्वर्गवास - शुद्ध चारित्र का पालन करती हुई वि.सं. १९९२ आसोज सुद २ को बागरा में स्वर्गवास हुआ।

७. प.पू. श्री भावश्रीजी म.सा.

जन्म - हरजी राजस्थान वनजी पोरवाल की धर्मपत्नि नाजुबाई की

कुखसे वि.सं. १९३४ आषाढ सुद ५ को हुआ था। नाम रक्खा कंकुबाई।

विवाह - गुडा बालोतान निवासी राजमलजी पोरवाल के साथ शुभ लग्न हुआ। ३ मास ही में वैधव्य आन पडा। किन्तु पूर्व भव पुन्योदयसे।

दीक्षा - भेंसवाडा राजस्थान में वि.सं. १९५४ फाल्गुन सुद ८ के दिन गुरुणीजी श्रीमानश्रीजी के पास चारित्र अंगीकार किया। नाम रक्खा भावश्रीजी उपाध्याय धन विजयजी म. की निश्रामें हुई। बडी दीक्षा गुरुदेव की निश्रामें हुई।

स्वर्गवास - आहोर राजस्थान में वि.सं. १९९७ पोष सुद। रविवार ने आपका स्वर्गवास हुआ। आप बहुत प्रभावशाली गुरुणीजी हुये।

८. प.पू. विनयश्रीजी म.

जन्म - आहोर राजस्थान निवासी अमराजी पोरवाल की धर्मपत्नि सोनीबाई के कुख से वि.सं. १९३६ मार्गशीर्ष शुक्ल ८ को हुआ। नाम रक्खा उजलीबाई।

विवाह - भेसवाडा राजस्थान निवासी नवाजी पोरवाल के साथ शुभलग्न हुआ। २ मास में ही पति का स्वर्गवास हुआ।

दीक्षा - भेसवाडा में श्रीधन विजयजी महाराज सा की निश्रामें श्रीगुरुणीजी मानश्रीजी के पास वि.सं. १९५४ चैत्र वदी १० को बडे उत्सव के साथ दीक्षा अंगीकार की। नाम रक्खा श्री विनयश्रीजी। यथा नाम तथा गुण थे।

स्वर्गवास - शिवगंज राजस्थान में वि.सं. १९८६ श्रावण वदी ७ के दिन स्वर्गवास हुआ।

९. प.पू. श्री कमलश्रीजी

जन्म - खाचरोद (मालवा) ओसवाल देवीचन्दजी की धर्मपत्नि तगीबाई की कुखसे वि.सं. १९३३ आश्विन शुक्ल ७ को हुआ। नाम रक्खा सुडीबाई।

विवाह - वि.सं. १९४४ फाल्गुन शुक्ल ३ खाचरोद में सौभागमलजी के साथ शुभ लग्न हुआ।

दीक्षा - वैधव्य प्राप्त हुआ। वैराग्यभाव से श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. की निश्रामें श्री मानश्रीजी के पास दीक्षा अंगीकार की। नाम रक्खा कमलश्रीजी। वि.सं. १९६१ फाल्गुन शुक्ल ३ राणापुर मालवामें।

स्वर्गवास - सेवा का परम आत्मीय गुणों से ओतप्रोत पुन्यवान।

१०. प.पू. श्री गुलाबश्रीजी

जन्म - रतलाम (मालवा) ओसवाल भगवानजी की धर्मपत्नि सुडीबाई के कुख से वि.सं. १९५३ कार्तिक शुद १३ को हुआ। नाम रक्खा जडावबाई।

विवाह - १२ वर्ष की आयु में खाचरोद निवासी केसरीमलजी ओसवाल के साथ शुभ लग्न हुआ। चैत्र सुदी ७ सं. १९६५ में वैधव्य प्राप्त हुआ।

दीक्षा - वि.सं. १९६७ आश्विन शुक्ल १० को श्रीमानश्रीजी ने

दीक्षा दी। नाम रक्खा गुलाबश्रीजी। आपकी प्रेरणा से श्री दानश्रीजी, श्री विशालश्रीजी, श्री देवेन्द्रश्रीजी, श्री हेमलताश्रीजी, श्री सद्‌गुणाश्रीजी, सुमंगलाश्रीजी आदि को दीक्षा प्रदान की।

स्वर्गवास - वि.सं. २०३१ कार्तिक शुक्ल ५ को भीनमाल स्वर्गवास हुआ।

११. श्री प.पू. हेतश्रीजी

जन्म - पू. गुरुदेवश्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी को आचार्य पदवी प्रदान दाता आहोर निवासी पोरवाल की जवानमलजी की धर्मपत्नि गुलाबबाई के कुख से सं. १९५५ आश्विन सुदी १० को जन्म हुआ। नाम दिया हीराबाई।

विवाह - १४ वर्ष की आयु में आहोर रामचन्द्रजी पोरवाल के साथ शुभलग्न हुआ। सं. १९६९ में । ४७ दिनों के बाद वैधव्य मिला।

विनयश्रीजी म. के उपदेश से श्री मोहनविजयजी म. की निश्रामें मानश्रीजी म. ने वि.सं. १९७२ वैशाख सुदी १० की दीक्षा दी। नाम रक्खा हेतश्रीजी।

स्वर्गवास - वि.सं. २०३९ फाल्गुन सुदी १२ अपनी जन्म भूमी आहोर में स्वर्गवास हुआ।

गुलशन में फूल खिलते हैं, मुर्झाने के लिये ॥
सूर्य उदय होता है, अस्त होने के लिये ॥
मनुष्य जन्म लेता है, मर जाने के लिये ॥

शासन दीपिका प्रवर्तिनी श्री मुक्तिश्रीजी (वर्तमान)

युं तो -

संसार में अनेक जीव उत्पन्न होते हैं और पानी के बुद्बुदे की तरह नष्ट हो जाते हैं। किन्तु जन्म उन्हीं का सार्थक है वे संसार में अपना एवं दूसरों का आत्म कल्याण कर जाते है। वैसी ही एक महान आत्मा अनेक जीवों की उपकारिणी वर्तमान में विचरण कर रही है जिनशासन सेवा करती हुई।

जन्म - ऐतिहासिक धन्यधरा मनोहर मालव के कुक्षी नगर में, पिताश्री चत्तरचन्दजी की धर्मपत्नि गंगाबाई की कुख से वि.सं. १९८१ श्रावण वद ११ के दिन जन्म हुआ। शरीर लालित्यतासे नाम दिया लीलादेवी।

"तम्हा संयोग सम्बन्धं"

दीक्षा - पूर्व भवों के संयोग से १० वर्ष की आयु में धार्मिक भाव से ओतप्रोत श्री भूपेन्द्रसूरीश्वरजी की निश्रामें साध्वीजी भावश्रीजी के पास वि.सं. १९९१ महासुद पूनम अहमदाबाद में दीक्षा अंगीकार की। नाम दिया मुक्तिश्रीजी।

अध्ययन - बाल ब्रह्मचारिणी की बुद्धी श्रुत ज्ञान की ओर अग्रसर बनी और संस्कृत-प्राकृत-आगम ग्रंथ एवं साहित्यग्रंथों का अध्ययन किया। आपने अध्ययन स्वाध्याय के साथ-साथ २० वर्ष तक श्री हेतश्रीजी की सेवा की।

"सेवा धर्म परम गहनं, योगिनामप्यगम्यम्"

सेवा धर्म सबसे गहन है, इसे योग साधक भी नही पा सकते उसी का फल है कि आज त्रिस्तुतिक संघ में साध्वी समुदाय में सर्वोपरि प्रवर्तिनीजी के रुप में बिराजमान है।

स्वभाव - सरल स्वभावी, शान्तिप्रिय, तपस्वीनी एवं मौनी, आभ्यन्तर ज्ञान-ध्यान-स्वाध्याय अनुरागी। शुद्ध चारित्रधारी, चिरंजीवी हो, यही जिनशासनदेव से अभ्यर्थना।

समय, महान पुरुषों का वीर निर्वाणसे

वर्ष	वीर निर्वाण से
१२	गौतम निर्वाण
१८	शोभनराज का कलिंगपर राज्यारोहण
२०	सुधर्मास्वामी का निर्वाण
३१	उदायी राजाने पाटलीपुत्र बसाया
६०	नंद राजा का पाटलीपुत्र में राज्याभिषेक
६४	जंबुस्वामी का निर्वाण (मतांतर)
७०	रत्नप्रभसूरि उपकेश वंश स्थापना
७५	आर्य प्रभव का स्वर्गवास
९८	शय्यंभव सूरि स्वर्गवास
१४८	यशोभद्रका स्वर्गवास
१४९	चंडराय का कलिंग देशमें राज्याभिषेक
१४९	आठवे नंद की कलिंग देशपर चढाई
१५४	चन्द्रगुप्त मगध का राजा बना
१५६	संभूति विजयजी का स्वर्गवास
१७०	भद्रबाहू का स्वर्गवास
१८४	चन्द्रगुप्त सम्राट का स्वर्गवास
१८४	बिंदूसार का राज्याभिषेक
२०९	बिंदुसार का स्वर्गवास
२०९	अशोक का राज्याभिषेक
२२७	क्षेमराज का कलिंगदेश में राज्यरोहण
२३९	अशोकराजा की कलिंगपर चढाई
२४४	अशोक का परलोक गमन
२४४	संप्रतिराजा का पाटलीपुत्र में राज्याधिकार
२४६	संप्रति का उज्जैनी जाना
२४६	पाटलीपुत्र में पुण्यरथ का राज्याधिकार

२७५	बुड्डराज का कलिंग में राज्यारोहम
२८०	पुण्यरथ का मरण
२८०	वृद्धरथका पाटलीपुत्र में राज्याभिषेक
२९३	संप्रति का स्वर्गवास
२९३	उज्जैनी में १ एक वर्ष अराजकता
२९४	बलमित्र, भानुमित्र का उज्जैन में राज्यारोहण
३००	भिक्खुराय (स्वारवेल) का राज्याभिषेक
३०४	वृद्धरथ की हत्या
३०४	पाटलीपुत्र पर पुण्यमित्र का अधिकार
३३०	भिख्खुराय का स्वर्गवास
३३०	वक्रराय का राज्याभिषेक
३५४	बलमित्र, भानुमित्र का मरण
३५४	नभोवाहन राज्यप्राप्ती
३६२	वक्रराय का स्वर्गवास
३६२	विदुहरायका राज्याधिकार
३९४	नमो वाहन स्वर्गवास
३९४	गर्दभिल्ल का राज्याधिकार
३९५	विदुहराय का मरण
४१०	विक्रमार्क का उज्जैनीमें राज्याभिषेक
१५३	स्कंदिल प्रमुख मथुरा वांचना सभा
२००	गंधहस्ती, आचांग का विवरण रचा
२०२	स्कंदिलाचार्य मथुरा वांचना स्वर्गवास

फूल वे मुर्झा गये, सुगंध जगमें छोड़कर ॥
दुनिया से ले ली विदा, यादगार अपनी छोड़कर ॥

ओसियाँ (उपकेशपुर)

भारत की भव्य वीर धरा, धरती पर; राजस्थान मरू भूमि के नाम से कहे जाने वाला यह प्रान्त, इतिहास में अजोड है, यहां पर कई शूरवीर, दानवीर, एवं धर्मवीर हुये और हो रहे है।

शिर कटे और धड लडे, रखे देश की शान ।।
दानवीर जन्मे जहाँ, वो है राजस्थान ।।

उसी पवित्र भूमि पर सुन्दर और सुव्यवस्थित श्रीमाल नगर था, उसमें महाप्रभावी और प्रतापी जयसेन राजा राज्य करता था, उसके दो पुण्यवान पुत्र हुये एक भीमसेन - दूसरा चन्द्रसेन।

भीमसेन संसार की मोह माया में लिपटा रहता था, किन्तु चंद्रसेन निर्वेदभाव में अपना जीवन बिताता था चन्द्रसेन ने चंद्रावती नगरी बसाई और भीमसेन ने प्राचीन श्रीमाल नाम हटा कर, भीन्नमाल नाम अपने नाम पर प्रचलित किया।

भीमसेन का पुत्र उपलदेव तथा महामंत्री ऊहड दोनों राजा के व्यवहार से नाराज होकर दोनों निकल पडे। अपनी भुजाओं एवं बुद्धी बलसे ओसवाली जमीन प्राप्त कर शुभ मुहूर्त, शुभघडी में टेकरी पर चामुंडा माता की स्थापना की और बाद में नगर वसाना शुरु किया।

भीन्नमाल से हजारों कुटुंब, बडे बडे व्यापारी, शिल्पी आकर यहां बस गये, चढती दसा एवं व्यापार का समृद्ध शहर बनने से दूर दूर के लाखों लोग बस गये। माता चामुंडा प्रत्यक्ष थी, उसके प्रभाव से अच्छी, उपजाऊ भूमि, एवं सुख का साम्रज्य छा गया।

धीरे धीरे यह नगरी बारह १२ योजन लंबी और नव ९ जोजन चौडी बस गई, शनै शनै समय के साथ साथ यह नगर क्षत्रीयों के शूरवीरों से सम्पन्न हो गया। इस का नाम रक्खा - उपकेशपुर।

श्री रत्नप्रभ सूरिजी

विद्याधरों का राजा महेन्द्र विद्याधर की लक्ष्मी देवी की कुंख से महान प्रभावी रत्नचूंड का जन्म हुआ। युवावस्था प्राप्त होने पर महेन्द्र ने दीक्षा अंगीकार की एवं रत्नचूंड राजा बना, अपनी पत्नी के साथ आनन्द से रहने लगा।

एक दिन विद्या चारण मुनि आये, तीर्थ यात्रा का उपदेश दिया तो उन्हीं के उपदेश से यात्रार्थ अपना विमान सजाया और चल पडे तीर्थ यात्रा करने, विमान रूका, नीचे देखा, एक मुनिराज तप त्यागमय ध्यान से उपदेश दे रहे थे। नीचे उतर कर क्षमा मांगी और गुरुदेव की वाणी सुनी।

संसार की निस्सारता समझ कर रत्नचूंड ने दीक्षा अंगीकार की, चौदह पूर्वधारी बने, नाम रखा रत्नप्रभसूरि, परोपकारार्थ विचरने लगे। धरातल पर। साथ में पांचसौ शिष्य थे।

चक्रेश्वरी देवी की प्रेरणा

एक दिन चक्रेश्वरी देवी रत्नप्रभ सूरीश्वरजी के पास आकर बोली हे गुरु देव। आप मरूधर भूमि में पधारों, जहां नास्तिक तांत्रिक लोगों ने अपने अज्ञानता वश अपने अखाडे जमा रक्खे हैं। लोगों को तांत्रिक चमत्कार दिखा कर पांच मकार जो नरक ले जाते हैं। भैरवीचक्र चला कर सब को अधोगति की और ले जा रहे है। उपकेशपुर बहुत बडा नगर है जहां लाखों लोग बसते है फिर भी यज्ञ धर्म के नाम पर घोर हिंसा होती है। इसलिये महान उपकार का काम है आप उपकेशपुर की ओर पधारो। यह बात सुनकर रत्नप्रभ सूरि स्वयं महाज्ञानी थे, महाउपकार का कार्य समझकर अपने शिष्य समुदाय के साथ चल पडे उपकेशपुर की ओर। मार्ग में कई कठिनाईयें आई किन्तु विहार में सभी परिसहो को सहते हुये आप उपकेशपुर में पधारें।

भयंकर परिसह

शिष्य समुदाय के साथ आप नगर में आये लुद्रवी टेकरी पर चामुंडा देवी के पास एक स्थान पर ठहरे किन्तु नगर में नये साधु देख कर एक हलचल

मच गई, कहीं भी भिक्षा (गौचरी) नहीं मिली। जहां जायें वहां मांस ही मांस, और चामुंडादेवी ने इनके त्याग तपस्या की परीक्षा लेने कई उत्पात उत्पन्न किये। लोग गालियां देने लगे, बाहर जाये तो कंकर मारे, लकडी फेंके, उनपर थूंके कुत्तो को ललकार कर उन पर छोडे, भसे और पीछे दौडे।

शिष्यों को उपदेश

श्रमण त्यागी तपस्वियो ? अपने त्याग तप का मार्ग प्रशस्थ हो रहा है। उपसर्ग आने पर कष्ट का सामना कर शान्त स्वआत्मभाव में रमण करने से बाह्य उपसर्ग छू नहीं सकते। वीरों की तरह युद्ध स्तर पर सहन करना है। सभी जीवों पर करूणा एवं शत्रु मित्र पर समभाव में रमण करना है।

खन्दकमुनि, जिनकी चमडी निकाल दी थी गजसुकुमाल श्वसुर ने मस्तक पर माटी की पाल बांधकर खेर के अंगारे भर दिये थे। राजा परदेसी की सूर्यकंता स्वपत्निने जहर दे दिया था।

महावीर ने भी साढे बारह वर्ष भयंकर उपसर्ग सहन किये, इस तरह गौचरी नहीं मिलने से अपना जीवन और भी त्याग तपस्या से चमक उठेगा अतः धर्माराधन अच्छी तरह होगा।

एक मास हुआ फिर भी मुनि जहां गौचरी जाते वहां अशुद्ध आहार हो जाता। तब आचार्य महाराज ने त्यागी घोर तपस्वीयों से कहा कि बहुत दिन हो गये आप सभी मुनिराजों को औदारिक शरीर कृश हो चुके है इसलिये अब यहां से विहार कर देना चाहिये, ऐसा विचार कर आचार्य महाराज ने अपनी कम्मर कस ली और विहार के लिये तत्पर हुये।

चामुंडादेवी की विनंती

ठीक रात्री के चौथे प्रहर में लुद्रवी टेकरी पर आचार्य महाराज के पास चामुंडादेवी आकर विनंती करने लगी, गुरु देव यहां पर बहुत बडा लाभ होगा इसलिये आप चौमासा यहां पर कराावे।

चामुंडा देवी की बात सुनकर ज्ञानी गुरुने ज्ञानोपयोग द्वारा पैंतीस साधु अपने पास रक्खे और शेष साधुओं को कोरंटक नगर कोरटा भेज दिये ।

पीणा सर्प दंश

राज कन्या विवाह योग्य होनेसे मंत्री के पुत्र के साथ उसका बडे धूम धाम से विवाह हुआ, लग्न की प्रथम रात में दोनों राज महल में सोये थे कि ठीक मध्य रात्री में पीणा सर्प ने मंत्री पुत्र को डस लिया सर्प के जहर शे शरीर नीला पड गया, महलों में राज कुटुंब में हाहाकार मच गया ।

कई उपाय किये गये, यंत्र, मंत्र और तंत्र वाले आये किन्तु कुछ भी फरक नहीं पडा । वैद्यों ने कुंवर को मृत घोषित कर दिया, सभी पूरा राज कुटुंब मिलकर विमान में मंत्री कुंवर को बिठा कर स्मशान की ओर लेजाने लगे ।

इतने में एक छोटा साधु रस्ते में लोगों से बोला ? अरे जीते हुये मंत्री कुंवर को क्यों जलाने लेजा रहे हो यह तो जिन्दा है । इसको गुरुदेव के पास ले जाओ यह बात सभी में एक दम फैल गई, राजा, मंत्री सभी कुंवर को आचार्य महाराज के पास लाये, गुरुदेव ! यह तो हमारे राज का सूर्य था, इसके बिना पूरे राजमें अन्धकार छाजायेगा, महाराज आप का महान उपकार होगा आप इसे जीवीत करें ।

आचार्य महाराज ने लाभालाभ समझ कर थोडासा गरम पानी मंगवाया विषहर विषनिन्नासं मंत्र से गुरुदेव के चरणों का प्रक्षाल कर कुंवर के ऊपर छांटा कि तत्क्षण कुंवर आलस्य मरोड कर खडा हुआ ।

विषहर विष निन्नासं

धरणेन्द्र, पद्मावती व पार्श्वयक्ष सभी इस मंत्र के आधीन है । भयंकर से भयंकर जहर क्षण में उतर जाता है । सारी राजधानी में आनन्द ही आनंन छा गया । कुंवर, कुंवरी राज कुटुंब के आनन्द का पार नही था । राजा ने आज्ञा दी की हीरे, पन्ने, मोहरे आदि थाल भर गुरुदेव को भेंट करो क्योंकि गुरुदेव ने कुंवर को जीवन दान दिया है ।

राज, मंत्री, राजकुटुंब एवं नगरवासी जन सभी अपने सामंतो के साथ गुरुदेव की चरणों मे आये, हाथ जोड कर वन्दन करके कहने लगे गुरुदेव यह भेंट स्वीकारें।

गुरुदेव ने जवाब दिया कि राजन ! यह धन धाम तो हम हमारे घर छोड आये है, राज पाट सभी का त्याग कर दिया। हमें कुछ नहीं चाहिये। ये सर सामान आत्माने अनन्तिवार प्राप्त किया है।

सभी क्षत्रियों ने जैन धर्म स्वीकारा

मनुष्य जीवन का चरम लक्ष्य के आत्म रमणता एवं चिर शान्ति, जहां तक आत्म विश्वास श्रद्धा एवं सभी जीवों पर करूणा, श्रावक व्रत अंगीकार नहीं करता है तब तक इस संसार में वह भटकता रहता है मृग तृष्णावत्।

गुरुदेव वाणी सुनकर उपलदेव राजा उहड महामंत्री एवं पूरा राजकुटुंब सभी क्षत्रीयों ने जैन धर्म शुद्धिमंत्र स्वीकार किया, चक्रेश्वरी देवीने वास क्षेप लाकर दिया। चामुंडा देवी ने फूल वर्षाये, जय जय ध्वनि से पूरा उपकेशपुर गुंज उठा। महाजन संघ की स्थापना की, रत्नप्रभ सूरीश्वरजी महाराज ने सभी क्षत्रीयों को जैन बनाये और जैन धर्म की जय - जयकार हुई।

सच्चायीय माता नाम स्थापन

चामुंडादेवी ने कहा गुरुदेव आप का नाम तो अमर होगया किन्तु मेरा क्या ! तब चौदह पूर्वधारी आचार्य देव, चक्रेश्वरी देवी तथा चतुर्विध संघने मिलकर कहा कि - संसार में तू ही एक सच्ची माता है इसलियें आज से तुम सच्चीयाय माता के नाम से पूजी जायेगी और ओसवालों की कुलदेवी।

आज भी ओसीयाँ में हजारों लाखों लोग नवरात्री में पूजन दर्शन को आते है और लुणाद्री टेकर पर बिराजमान देवी के दर्शन करते हैं।

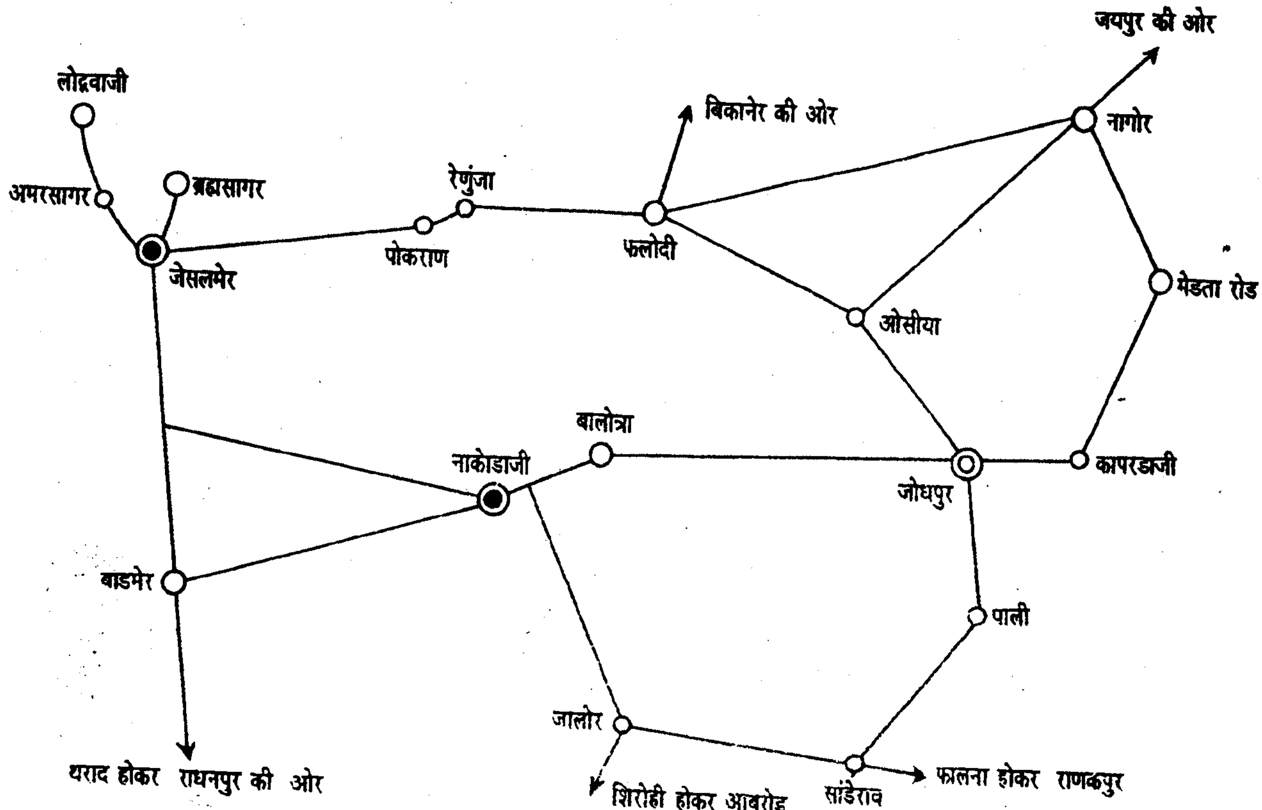

लोद्रवाजी
अमरसागर
ब्रह्मसागर
जेसलमेर
पोकराण
रेणुंजा
फलोदी
बिकानेर की ओर
नागोर
जयपुर की ओर
मेड़ता रोड
ओसीया
बालोत्रा
नाकोडाजी
जोधपुर
कापरडाजी
बाडमेर
पाली
जालोर
सांडेराव
थराद होकर राधनपुर की ओर
शिरोही होकर आबुरोड
फालना होकर राणकपुर

लक्षण स्वाभाविक प्रजनन के

पहला मास

फलप्रद मानव अंड तेजी से बढ़ता है. गर्भनाल (जिननके द्वारा शिशु को पोषण मिलता है) का विकास होता है. पहले मास तक आपके शिशु की लंबाई करीब 1/4" होती है.

दूसरा मास

दूसरे मास के दौरान आपके शिशु का चेहरा आकार लेने लगता है. उँगलियाँ, घुटने, कान तथा आँखें भी बनने लगती हैं. अब आपका शिशु करीब 1" लंबा होता है.

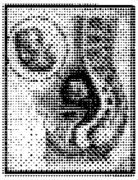

तिसरा मास

अब आपका शिशु अपना मुट्ठी तथा मुँह को खोल व बंद कर सकता है. उसका लिंग विकसित होने लगता है. इस समय उसकी लंबाई 4" होती है.

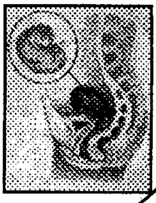

चौथा मास

अब स्टेथोस्कोप की सहायता से आपके शिशु के हृदय की धड़कन सुनी जा सकती है. पलकें, भौंहें, बरौनियाँ, नाखून और बाल आ जाते हैं. चौथे मास तक आपका शिशु लगभग 6" लंबा हो जाता है.

पाँचवा मास

आपका शिशु अब हिलना शुरू कर देता है. इस समय उसका वजन लगभग एक पौंड तथा लंबाई करीब 10" होती है.

✆ 375 58 49
375 79 58
Fax: 3743000

PRAKASHCHANDRA & CO.
SHA TILOKCHAND MAYACHAND & CO.
NIHALCHAND DHULAJI
PRAKASH MAYACHANDJI

Industrial Quality Brass Copper Sheets & Strips

116, Gulalwadi, Kika Street, Mumbai - 400 004.

छठा मास

छठे मास तक आपके शिशु के आवश्यक अंग विकसित हो जाते हैं. अब उसका वजन करीब 2 पौंड और लंबाई लगभग 12" होती है.

सातवाँ मास

यह बढ़ने और पूर्ण विकसित होने की अवस्था है. अब आपका शिशु करीब 14" लंबा जाता है.

Pravin Jain ✆ 872 63 92

RAJENDRA ENTERPRISES

Manufacturers and Traders :
Thermoware & Plastic Products

Patel Estate, I. B. Patel Road,
Goregaon (East), Mumbai-400 063.

आठवाँ मास

आपके शिशु का विकास जारी रहता है तथा शरीर की चरबी बढ़ने लगती है. अब आपका शिशु अधिक पैर हिलाने लगता है.

नौवाँ मास

नौवें मास में आपके शिशु का वजन 7 पौंड तक हो सकता है और लंबाई करीब 18" से 20" तक होती है.

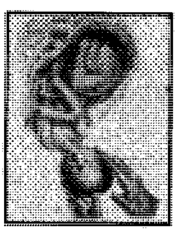

''जाइ जरा मरण सोग पणासणस्स''
गर्भावास में भयंकर नव मास तक दुःख उठाकर जन्म लिया,
गर्भावास का दुःख भूल गया,
जन्म, बुढापा और मृत्यु इन तीन दुःख से छूटना ही मुक्ति है।

ओसवालोंके गोत्र व ज्ञातियां

इस विषयमें वंसावलियों और पट्टावलियों का भिन्न भिन्न मत है कितनेक लिखते है कि आचार्य रत्नप्रभसूरिने उपलदेवराजादिको प्रतिबोध दीया था उस समय १८ गौत्रकी स्थापना की। जब कितनेकों का मत है कि मंत्रीपुत्र कि खुशी में सूरिजीकी सेवामें १८ रत्नोंका थाल रखा था तद्नुसार १८ गौत्र हुवे जब कितनेको का मत है कि देवीके मन्दिर पूजा करनेको गये हुवे श्राद्धवर्ग के १८ गोत्र स्थापन किये। कितनेकों का मत है कि अठारा कुलके राजपुतों को प्रतिबोध दीये जिनके १८ गौत्र हुवे है इत्यादि समय के विषय भेद होनेपर भी शुरूसे १८ गौत्र होनेमें सबका एक मत्त है। १८ गोत्रों कि स्थापना एक ही समय में हुई हो या कारण पाके अलग अलग समयमें हुई हो पर इतना तो निश्चय है कि आचार्य रत्नप्रभसूरिने उपकेशपुरमें उपकेश (महाजनवंश) वंशकी स्थापना कर वीरात् ७० वर्ष महावीर मूर्ति की प्रतिष्ठा की जिसके बाद ३०३ वर्ष मूल प्रतिष्ठाका भंग होनेसे नगरमें बहुत अशान्ति फैली जिसकी शान्ति आचार्य श्री कक्कसूरिने कराई उस समय १८ गोत्र के श्रावको को स्नात्रीये बनाये गये थे। तथाच-उपकेश चारित्रे-

(१) तातहडगोत्रं, (२) वापणागोत्रं, (३) कर्णाट-गोत्रं, (४) बलहागोत्रं, (५) मोरक्षगोत्रं, (६) कुलहटगोत्रं, (७) वीरहटगोत्रं, (८) श्रीश्रीमालगोत्रं, (९) श्रेष्टिगोत्रं एते दक्षिणबाहु।

(१) सुचंतिगोत्रं, (२) आदित्यनागगौत्रं, (३) भूरि गोत्रं, (४) भाद्रगोत्रं, (५) चिंचटगोत्रं, (६) कुंभटगोत्रं, (७) कन्नोजियेगोत्रं, (८) डिडूगोत्रं, (९) लघुश्रेष्टिगोत्रं एते वामबाहु।

इस प्राचीन लेखसे निःशंक सिद्ध होता है कि वीरात् ३७३ अर्थात् विक्रमपूर्व ९७ वर्ष पहेले तो महाजनवंश (उपकेशवंश) में अलग अलग गोत्रोंकि संख्या हो चुकी थी और इन गोत्रवालोने अपनि अच्छी उन्नति भी करली थी पर प्रस्तुत, समयसे कितने काल पूर्व इन गोत्रोंका बन्धन हो चुका था इसके निर्णय के लिये पट्टावलियो व वंसावलियों के

श्री कुशल प्रभा श्री जी

सा. श्री मुक्ति श्री जी

श्री कीर्ति प्रभा श्री जी

श्री मनोहर श्री जी म. सा.
श्री भाव श्री जी म. सा.

श्री हीतश्री जी   श्री मुक्तीश्री जी

दीक्षार्थिनी लीलाकुमारी
आयु - 10 (सांसारीक)

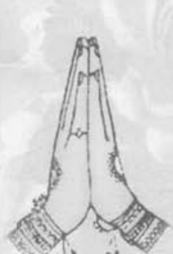

राष्ट्रसंत-गच्छाधिपति - श्री हेमेन्द्र सुरि आज्ञानु वर्ती
श्री मुक्तिश्री जी म. सा.

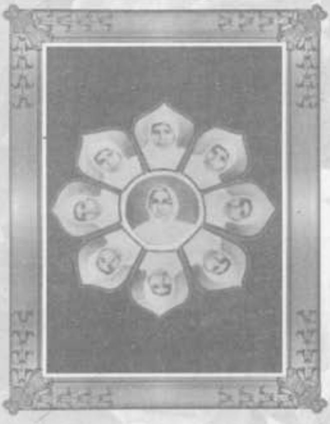

परम पूज्य आचार्य भगवंत श्री राम सूरीश्वरजी म. सा. (डेहलावाला)
आज्ञानु वर्तिनी पू. विदुषी श्री कंचनश्रीजी म. सा.
स्व. २०५९ महासुद १४
पंचभाई पोल - अहमदाबाद.

प.पू. प्रतिभा संपन्न श्रीराम सूरीश्वरजी म.सा. (डहेलावाला) के आज्ञानुवर्तिनी

विदुषी श्री कंचनश्रीजी म.सा.

आपका जन्म वि.सं. १९८२ भादरवा सुद ६ के दिन राधनपुर में हुआ था। पिता - मोतीभाई, माता - मणीबहेन, बाल्यकाल - १३ वर्ष की आयु में प.पू. श्री मणिश्रीजी के पास दीक्षा अंगीकार की।

आपने जैनागम, प्रकरण ग्रंथों का अध्ययन किया, साथ ही शुद्ध चारित्र का पालन, त्याग-तपस्यादि करते हुये आपने अपना पवित्र जीवन बिताया।

अंतिम समय तक प्रतिदिन स्वाध्याय में संलग्न रहकर अपना जीवन आदर्श बनाया। आपने कई बालिकाओं को एवं श्राविकाओं को उपदेश देकर दीक्षा प्रदान की।

सं. २०५९ मगसर सुद १४ पंचभाई की पोल में स्वर्गवासी हुई।

विनय भक्ति भावनाए, गुरुकृपा ने साधतां ।।
श्रमणी धर्म ना सुव्रतों ने यतिधर्म ने पालतां ।।
शताधिक श्रमणीवृंद, परिवारे जे शोभतां ।।
एवा श्री गुरुकंचन वंदतां, विघ्नों सकल दूरे थतां ।।

श्री. पुखराजजी नरसिंगदासजी जैन देशलहरा

पंडितजी की ढाणी

ओसीया (राजस्थान)

सुपुत्र - जवाहरलाल, मीश्रीमल, ललितकुमार, महेन्द्रकुमार, अजयकुमार

पाइलोट इन्डस्ट्रीज, गोरेगांव

आपके सुपुत्रों ने भगवान महावीर टेलीफिल्म में सहयोग दिया।

धन्यवाद !

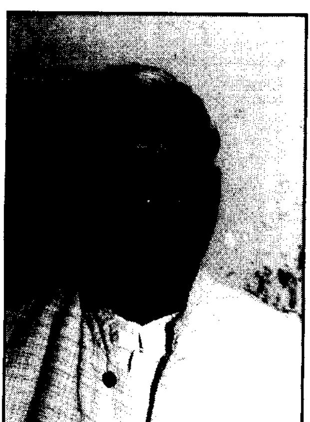

पं. सोहनलाल शास्त्री–साहित्य रत्न

आपने जैन धार्मिक एवं गीत संगीत की ४४ पुस्तकें प्रकाशित की, जैन धार्मिक आध्यात्मिक एवं तीर्थ ऐतिहासिक १८४ ओडीयो केसेट प्रकाशित की। टेलीफिल्म-भगवान महावीर, आपकी जन्म भूमि-आकोली, निवास-रामसीण-विटण, जि.जालौर (राजस्थान)

कर्मभूमि-सुमित्रा प्रिंटिंग प्रेस, मुंबई

आरे रोड, गोरेगांव (वेस्ट), मुंबई-४०० ०६२.

फोन: ८७३४६८९, (राज.) ०२९६९-३३३६३

धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत मातृभक्त,
संगीत, पूजा, भावना के प्रेमी

रांका फेब्रिक्स
७०८, प्रागराज गली, मूलजी जेठा मार्केट,
मुंबई, फोन : २०८०४०८

श्री. मोतीलाल रतनचंदजी रांका
सादडी राणकपुर (राजस्थान)
३/३, जयकर स्मृति, आरे रोड,
गोरेगाव वेस्ट, मुंबई-४०० ०६२

श्री जवाहरलाल पुखराजजी देशलहेरा
मु. पो. पंडितजी ढाणी
ओसीया (राजस्थान)

सर कटे और धड लडे,
रखे देश की शान,
दानवीर जन्मे वहाँ,
जो है राजस्थान।

महातपस्वी - श्री चन्दप्रभा श्री जी म. सा.

जन्म - रामसीण

पिता - हरजी जी

बेहन - मुक्ती

माता - केशरबाई

दीक्षा - २००४ हेतश्री जी म. पासे थराद

तपस्या में पूरा जीवन बिताया.

छेल्ला - ४५ उपवास, ४०० छट्ठ, ४० अट्ठाई,

पोस्ट-बालबाडा (राजस्थान)

फोन-२४५७०४

लुकड़ घेवरचंन्द मीसरी मलजी

श्रीमती पानीदेवी घेवरचन्दजी लुकड़

Mamta Optical & Fancy Stores

WHOLE SALE OPTICALS

K. V. R. Swamy Road,
Rajahmundry - 533 101.
(Andhra Pradesh)

Ph. - 442104 - Off.
440895 - Res.
478182 - Res.

श्री अमृतलालजी बाबुजी पालेचा (रामसीन)
सौ. शकुन्तलादेवी अमृतलालजी पालेचा (रामसीन)

श्री अमृतलालजी भोमराजजी (बालवाडा)
सौ. कमलादेवी अमृतलालजी (बालवाडा)

सिवाय इस समय हमारे पास कोइ साधन नहीं है तथापि अनुमान हो सकता है कि स्नात्रीये बनने के समय गोत्रोंका जथ्था बन्ध गया था तो कम से कम दो तीन शताब्दी जीतना पुराण समय तो अवश्य होना ही चाहिये इस अनुमानसे पट्टावलियों व वंसावलियों का समय भी स्थिर हो सकता है आगे हम इन १८ गोत्रों कि वृद्धि की ओर देखते है तो प्रत्येक मूलगोत्रसे अनेक साखा प्रति साखासे प्रफुल्लित हो इस ज्ञातिने अपनी इतनी तो उन्नति करली कि इसके मुकाबलेमें स्यात् ही दूसरी ज्ञातियों उन्नति क्षेत्रमें आगे पांव रखा हो इन अठारा गोत्रोंका विस्तारपूर्वक इतिहास जो हमको मिला है वह आगेके प्रकरणों मे दीया जावेगा यहाँपर तो केवल एकेक गोत्रोंसे कितनि कितनि साखाओरूप ज्ञातियों व गोत्र निकले है उनके नाम मात्रदे देना चाहते है कारण कि यह भी इस ज्ञातिके उन्नतिका एक नमूना है-

(१) मूलगौत्र तातेड़ – तातेड, तोडियाणि, चौमोला, कौसीया, धावडा, चैनावत, तलोवडा, नरवरा, संघवी, डुंगरीया, चोधरी, रावत, मालावत, सुरती, जोखेला, पांचावत, बिनायका, साढेरावा, नागडा, पाका, हरसोत, केलाणी, एवं २२ जातियों तातेड़ोंसे निकली यह सब भाई है ।

(२) मूलगौत्र बाफणा – बाफणा, (बहुफूणा) नहटा, (नाहाटा नावटा) भोपाला, भूतिया, भाभू, नावसरा, मुंगडिया, डागरेचा, चमकीया, चोधरी, जांघडा, कोटेचा, बाला, धातुरिया, तिहुयणा, कुरा, बेताला, सलगणा, बुचाणि, सावलिया, तोसटीया, गान्धी, कोटारी, खोखरा, पटवा, दफ्तरी, गोडावत, कूचेरीया, बालींया, संघवी, सोनावत, सेलोत, भावडा, लघुनाहटा, पंचवया, हुडिया, टाटीया, ठगा, लघुचमकीया, बोहरा, मीठडीया, मारू, रणधीरा, ब्रह्मेचा, पाटलीया वानुणा, ताकलीया, योद्धा, धारोला, दुद्धिया, बादोला, शुकनीया एवं ५२ जातियों बाफणोंमे निकली हुई आपसमें भाई है ।

(३) मूलगौत्र करणावट – करणावट, वागडिया, संघवी,

रणसोत, आच्छा, दादलिया, हुना, काकेचा, थंभोरा, गुंदेचा, जीतोत, लाभांणी, संखला, भीनमाला, एवं करणावटोंसे १४ साखाओं निकली वह सब आपसमें भाई है ।

(४) **मूलगौत्र बलाहा** – बलाहा, रांका, वांका, सेठ, शेठीया, छावत, चोधरी, लाला, बोहरा, भूतेडा, कोटारी, लघु रांका देपारा, नेरा, सुखिया, पाटोत, पेपसरा, जडिया, सालीपुरा, चितोडा, हाका, संघवी, कागडा, कुशलोत, फलोदीया एवं २६ साखाओ बलाहा गोत्रसे निकली वह सब भाई है ।

(५) **मूलगौत्र मोरख** – मोरख, पोकरणा, संघवी, तेजारा, लघुपोकरणा,वांदोलीया, चुंगा, लघुचंगा, राजा, चोधरि, गोरीवाल, केदारा, वातोकडा, करचु, कोलोरा, शीगाला, कोटारी एवं १७ साखाओं मोरखगोत्र से निकली वह सब भाई है ।

(६) **मूलगौत्र कुलहट** – कुलहट, सुरचा, सुसाणी, पुकारा, मसांणीया, खोडीया, संघवी, लघुसुखा, बोरडा, चोधरी, सुराणीया, साखेचा, कटारा, हाकडा, जालोरी, मन्नी, पालखीया, खूमाणा एवं १८ साखाओं कुलहट गौत्रसे निकली वह सब भाई है ।

(७) **मूलगौत्र विरहट** – विरहट, भुरंट, तुहाणा, ओसवाला, लघुभुरंट, गागा, नोपत्ता, संघवी, निबोलीया, हांसा, धारीया, राजसरा, मोतीया, चोधरी, पुनमिया सरा, उजोत, एवं १७ साखाओं विरहट गौख से निकली है वह सब भाई है ।

(८) **मूलगौत्र श्री श्रीमाल** – श्रीश्रीमाल, संघवी, लघुसंघवी, निलडिया, कोटडिया, झाबांणी नाहरलांणी, केसरिया, सोनी, खोपर, खजानची, दानेसरा, उद्धावत, अटकलीया, धाकडिया भीन्नमाजा, देवड, माडलीया, कोटी, चंडालेचा, साचोरा, करवा एवं २२ साखाओं श्रीश्रीमाल गौत्रसे निकली वह सब भाई है ।

(९) **मूलगौत्र श्रेष्ठि** – श्रेष्ठि, सिंहावत्, भाला रावत, वैद, मुत्ता, पटवा, सेवडिया, चोधरी, थानावट, चीतोडा, जोधावत्,

कोटारी, बोत्थाणी, संघवी, पोपावत, ठाकुरोत्, बाखेटा, विजोत्, देवराजोत्, गुंदीया, बालोटा, नागोरी, सेखांणी, लाखांणी, भुरा, गान्धी, मेडतिया, पातावत्, शूरमा एवं ३० साखाओ श्रेष्ठि गौत्रसे निकली वह सब भाई है ।

(१०) मूलगोत्र संचेति – (सुचंति साचेती) ढेलडिया, धमाणि, मोतिया, बिंबा, मालोत्, लालोत्, लालोत्, चौधरी, पालाणि लघुसंचेति, मंत्रि, हुकमिया, कजारा, हीपा, गान्धी, बेगाणिया, कोठारी, मालखा, छाछा, चितोड्यिा, इसराणि, सोनी, मरुवा, घरघटा, उदेचा, लघुचोधरी, घोसरीया, बापावत्, संघवी, मुरगीपाल, कीलोला, लालोत्, खरभंडारी, भोजावत्, काटी जाटा, तेजाणी, सहजाणि सेणा मन्दिरवाला, मालतीया, भोपावत्, गुणीया, एवं ४४ साखाओ संचेति गोत्रसे निकली वह सब भाई है ।

(११) मूलगौत्र आदित्यनाग – आदित्यनाग, चोरडिया, सोढाणि, संघवी, उडक मसाणिया, मिणियार, कोटारी, पारख, पारखों से भावसरा, संघवी, ढेलडिया, जसाणि, मोल्हाणि, न्नडक, तेजाणि, रूपावत्, चोधरि, गुलेच्छा-गुलेच्छोंसे दोलताणी, सागाणि, संघवी, नापडा, काजाणि, हुला, सेहजावत्, नागडा, चित्तोडा, चोधरी, दातारा, मीनागरा, सावसुखा सावसुखोंसे मीनारा, लोला, बीजाणि, केसरिया, बला, कोटारी, नांदेचा,

भटनेराचोधरी – भटनेराचोधरियोंसे कुंपावत्, भंडारी, जीमणिया, चंदावत्, सांभरीया, कानुंगा, गदईया गवइयोंसे गेहलोत, लुगावत्, रणशोभा, बालोत्, संघवी, नोपत्ता बुचा बुचोंसे सोनारा, भंडलीया, करमोत्, दालीया, रत्नपुरा, फिर चोरडियोंसे नाबरिया, सराफ, कामाणि, दुद्धोणि, सीपांणि, आसाणि, सहलोत्, लघु सोढाणी, देदाणि, रामपुरिया, लघुपारख, नागोरी, पाटणीया, छाडोत्, ममइया, बोहरा, खजानची, सोनी, हाडेरा, दफ्तरी, चोधरी, तोलावत्, राब, जौहरी, गलाणि इत्यादि एवं ८५ साखाओं आदित्यनाग गोत्रसे निकली वह सब भाई है ।

मूलगौत्र भूरे – भूरि, भटेवरा, उडक, सिंधी, चोधरी, हिरणा, मच्छा, बोकड़िया, बलोटा, बोसूदीया, पीतलीया, सिंहावत्, जालोत्, दोसाखा, लाडवा, हलदीया, नाचाणि, मुरदा, कोठारी, पाटोतीया एवं २० साखाओं भूरि गौत्रसे भूरि गौत्रसे निकली वह सब भाई है।

(१३) मूलगौत्र भद्र – भद्र, समदडिया, हिंगड, जोगड, गिंम, खपाटीया चवहेरा, बालडा, नामाणि, भमराणि, देलडिया, संघी, सादावत्, भांडावत्, चतुर, कोटारी, लघु समदडिया, लघु हिंगड, सांढा, चोधरी, भाटी, सुरपुरीया, पाटणिया नांनेचा, गोगड, कुलधरा, रामाणि, नाथाणि, नाथवत्, फूलगरा एवं २६ साखाओं भद्रगौत्रसे निकली वह सब भाई है।

(१४) मूलगौत्र चिंचट – चिंचट, देसरडा, संघवी, ठाकुरा, गोसलांणि, खीमसरा, लघुचिंचट, पाचोरा, पुर्विया, निसाणिया नौपोला, कोठारी, तारावाल, लाडलखा,शाहा, आकतरा, पोसालिया, पूजारा, वनावत्, एवं १९ साखाओं चिंचटगोत्र से निकली वह सब भाई है।

(१५) मूलगौत्र कुमट – कुमट काजलीया, धनंतरि, सुधा, जगावत्, संघवी पुगलीया, कठोरीया कापुरीत, संभरिया चोक्खा, सोनीगरा, लाहोर, लाखाणी, मरवाणि, मोरचीया, छालीया, मालोत्, लघुकुंमट, नागोरी एवं १६ साखाओं कुंमटगौत्र से निकली यह सब भाई है।

(१६) मूलगौत्र डिंडू – डिंडू, राजोत्, सोसलाणि, धापा धीरोत्, खंडिया, योद्धा, भाटिया, भंडारी समदरिया, सिंधुडा, जालन, कोचर, दाखा, भीमावत्, पालणिया, सिखरिया, वांका, वडवडा बादलीया, कुंगा, ऐवं २१ साखाओं. डिडूगौत्रसे निकली वह सब भाई है।

(१७) मूलगौत्र कन्नोजिया – कन्नोजिया, वडभटा, राकावाल, तोलीया, धाधलिया, घेवरीया, गुंगलेचा, करवा, गढवाणि, करेलीया, राडा, मीठा, भोपावत्, जालोरा, जमघोटा, पटवा, मुशलीया एवं १७ साखाओ कन्नोजिया गोत्रसे निकली यह सब भाई है।

(१८) मूलगौत्र संचेति – लघुश्रेष्टि, वर्धमान, भोभलीया, लुणोचा, बोहरा, पटवा, सिंधी, चिंतोडा, खजानची, पुनोत्-गोधरा,

हाडा, कुबडिया, लुणा, नालेरीया, गोरेचा, एवं १६ शाखाओ लघुश्रेष्ठिगोत्रसे निकली वह सब भाई है ।

२२-५२-१४-२६-१७-१८-१७-२२-३०-४४-८५-२०-२९-१९-१६-२१-१६-१६ कुल संख्या ४९८ मूल अठारा गोत्रकी ४९८ साखाओ हुई इसपर पाठकवर्ग विचार कर सकते है कि एक समय ओसवालोंका कैसा उदय था और कैसे वड़वृक्षकी भांति वंश वृद्धि हुई थी ।

इनके सिवाय उपकेशगच्छाचार्य व अन्य गच्छ के आचार्योने राजपुत्तादि कों प्रतिबोध दे जैन जातियो में मिलाते गये अर्थात् विक्रम पूर्व ४०० वर्ष से लेके विक्रम कि सोलहवी शताब्दी तक जैनाचार्यो ओसवाल बनाते ही गये ओसवालो कि ज्ञातियों विशाल संख्यामे होने का कारण यह हुवा कि कितनेक तो व्यापार करने से , कितनेक एक ग्राम से अन्य ग्राम जाने से पूर्व ग्राम के नाम से, कितनेकों के पूर्वजोंने देशसेवा, धर्मसेवा या बडे बडे कार्य करने से, और कितनेक हाँसी ठठा मस्करी से उपनाम पडते पडते वह ज्ञाति के रूपमें प्रसिद्ध हो गये एक याचकने ओसवालोंकी जातियों की गणत्री करनी प्रारंभ की जिस्मे उसे १४४४ गोत्रों के नाम मिला बाद उसकी ओरतने पुछा कि हमारे यजमान का गोत्र आप की गणती में आया है या नहीं ? याचकने पुछा कि उन्हों का क्या गोत्र है? औरतने कहा डोसी याचकने देखा तो यह नाम गीणती मे नही आया तब उसने कहा कि ''डोसी तो और बहुत से होसी'' ओसवाल ज्ञाति एक रत्नागर है इसकी गणती होना मुश्किल है इस समय कितनिक जातियों बिलकूल नाबुद हो गई पर इन दानवीरों के बनाये मन्दिर व मूर्तियों जिनके शिलालेखों से पता मिलता है कि पूर्वोक्त ज्ञातियों भी एक समय अच्छी उन्नति परथी इतना ही नहीं पर प्राचीन कवियों ने उन ज्ञाति के दानवीर धर्म्मवीर शूरवीर नररत्नों कि कविता बना के उनकी उज्वल कीर्ति को अमर बनादी है ।

सर कटे और धड लडे, रखे देश की शान ।
दानवीर जन्मे वहां, वो है राजस्थान ॥

प्रमुख कुलदेवियों के संक्षिप्त शक्ति स्थल

सचियाय माता	ओसियाँ, जिला जोधपुर
नागणेसी माता	नागाणा, बालोतरा - जोधपुर राज मार्ग
अम्बा माता	अम्बाजी, आबू रोड़ के पास
आशापुरा माता	नाडोल, जिला पाली
खीमज माता	खीमज ग्राम, भीनमाल
लोदर माता	लोदरबा, जिला जैसलमेर
केल पूज माता	किचरियाजी, करोली (हिंडोन)
हिंगलाज माता	पाकिस्तान, अभी पालीतना पर्वत
भुवाल माता	विरामी, जिला जोधपुर
सुन्धा माता	सुन्धाजी, जिला भीनमाल
ब्राह्मणी और रूद्राणी	भुवाल ग्राम, मेड़ता जैतारण राज मार्ग
बड़माता	भडाणा (मूण्डवा), जिला नागौर
भवानी माता	नागौर दुर्ग
सुसवाणी माता	मोरखण, जिला बीकानेर
अदर देवी माता	आबू पर्वत
बीस हत्थ माता	जोधपुर
लेकेक्षण माता	छोटी खाटू, जिला नागौर
बाण माता	चित्तौड़ दुर्ग
झंकार माता	थराद गुजरात
गोत्र माता	भीनमाल
वराही माता	गुजरात
गाजर माता	

भगवान महावीर प्रभु की प्रतिमा रेती व दूध से माताजीने बनाई

ऊहड महामंत्री की गायें जंगल में चरने जाती जिसमें एक गाय केर (केरडा) के झाड के पास जाकर चारों स्थन से दूध छोड देती तब सच्चीयाय माताजी ने ७० वर्षे सुन्दर रेती व दूध से प्रतिमा बनाकर स्थापन की।

राजा उपलदेव तथा महामंत्री ऊहड ने मंदिर बना कर उसी प्रतिमा को बिराजमान करने का शुभ मुहूर्त माघ सुद पांचम गुरुवार का निकाला।

कोरंट नगर की प्रतिष्ठा

शेष साधुओं ने कारंट नगर में चातुर्मास किया था वहां पर भी भगवान महावीर स्वामी का मंदिर बनवाया श्री संघ उपकेशपुर पट्टण में आकर गुरुदेव से माघ सुद पांचम गुरुवार की प्रतिष्ठा का मुहूर्त निश्चय किया। दोनों नगरों की एक साथ प्रतिष्ठा कराई।

रत्नप्रभ सूरीश्वरजी ने अपने वैक्रीय शरीर दो रूप बनाये मूल शरीर से उपकेशपुर की प्रतिष्ठा की और दूसरे शरीर से कोरंट (कोरटा) मंदिर की प्रतिष्ठा की।

चामुंडादेवी के मन्दिर में हिंसा बन्द

अज्ञानी लोग चामुंडादेवी के मन्दिर में जाकर पशु बलि चढाते, यह देखकर गुरुदेव श्री रत्नप्रभ सूरिजीने लोगों को समझाया कि जो जगत की माता है। वह अपने संतान की कभी नहीं बलि लेती।

"कुपुत्रों जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति" छोरु कुछोरु हो जाता है किन्तु माता कुमाता नही हो सकती।

माताजी को मोदक (लड्डू) खाजा फल फूल आदि सात्विक द्रव्य चढाओ, चामुंडा प्रसन्न होगी देवी ने उपद्रव शांत किया, किन्तु सही मार्ग मिलने पर सत्य मार्ग सात्विकता को अंगीकार किया।

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
अ		
आयरिया	ओसीया	मंडोर
आवेडा	आशापुरा	सोनाणा
अदाणी	कुंवारीदेवी	सोनाणा
ओस्तवाल	ओसीया	मंडोर
अरणोडा	ओसीया	मंडोर
आयट	आशापुरा	सोनाणा
अग्निगोत्र	अंबाजी	सेवाडी
अणदा	ब्राह्मणी	सोनाणा
आईडी	आशापुरा	सोनाणा
आडवानी	ब्राह्मणी	सिदरट
अहाडा	बाणमाता	मंडोर
अलमेसा	आशापुरा	सोनाणा
अहड	नागणेशी	मंडोर
अम्बा गोत्र	अम्बाजी	सोनाणा
परमार	-	-
अलावत	अदर देवी	सोनाणा
ओडाणी	ब्राह्मणी	सोनाणा
आसदे	आशापुरा	सोनाणा
आचू	सुंधामाता	सोनाणा
आवेडा	आशापुरा	सोनाणा
अजमेरा	अम्बाजी	सोनाणा

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
अरडक	आशापुरा	सोनाणा
अहंकासा	अदरदेवी	सोनाणा
ई		
इसपगोता	अंबाजी	सोनाणा
राठोड	-	-
ऊ		
उपरगोठा	अंबाजी	सोनाणा
उजोत	ओसीया	मंडोर
उहावत	नागणेशी	मंडोर
उस्तवाल	सुषमादेवी	सोनाणा
उदेश	अंबाजी	सोनाणा
उपट	अदरदेवी	सोनाणा
उदावत	ओसीयामाता	मंडोर
ए		
एणिया	चितोडी देवी	सोनाणा
श्री		
श्रीपति	अम्बाजी	सोनाणा
श्री श्री श्री माल	कुंवारीदेवी	वावखेतला
श्री श्री माल	गौत्रमाता	भीनमाल
श्री श्री माल	गौत्रमाता	सोनाणा
श्री श्री माल	शेषनमाता	सोनाणा
नेनगोता-श्रीश्रीमाल	ओसीया	मंडोर

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
श्री श्री माल	खीमतमाता	भीनमाल
क		
करणीया	अदरदेवी	सोनाणाजी
कांकरीया	गजेश्वरी चामुंडा	मंडोर
कांकलीया	अम्बाजी	सोनाणाजी
कटारीया	आशापुरा	सोनाणाजी
कुंकुम चोपडा	ओसीयाजी	मंडोर
कासरीया	आशापुरा	सोनाणा
कमाणी	आशापुरा	सोनाणा
कोचर	ओसीया	मंडोर
कोठारी	ओसीया	मंडोर
कवाडीया	अम्बाजी	सोनाणा
कंवाड	ओसीया	मंडोर
कंवाड	अम्बाजी	सोनाणा
कानुंगा	ओसीया	मंडोर
केदारा	अम्बाजी	सोनाणा
करचू	अदरदेवी	सोनाणा
कूचेरीया	अम्बाजी	सोनाणा
काजलीया	मात्र माता	गोयली
करवा	आशापुरा	सोनाणा
कागडा	अदर देवी	सोनाणा
करनोत	ओसीया	मंडोर

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
कंकुलोट	ओसीया	मंडोर
कुशलोत	अदरदेवी	सोनाणा
कमेडीया	आशापुरा	सोनाणा
कायेल	अदरदेवी	सेवाडी
कश्यप	अम्बाजी	सोनाणा
कणीवत	आशापुरा	सोनाणा
कुकम	ओसीया	मंडोर
काग	आशापुरा	सोनाणा
काश्यप गोत्र	पतंगादेवी	मोकलसर
कुवाडीया चौहान	आशापुराजी	सोनाणा
कबदी	अंबाजी	सियाणा
काम्बटाणी	सुंधा माता	सोनाणा
काबा	कुलेटी	फेदाणी
कांनुंनगा	अम्बाजी	सोनाणा
कपूर	आशापुरा	मंडोर
कुंडलवार	ब्राह्मणी	मंडोर
कुलरीया	सुंधामाता	सोनाणा
कलसोणीया	ब्राह्मणी	मंडोर
करोलीवाल	ब्राह्मणी	मंडोर
कुकल	आशापुरा	सिदरट
कान्दली	ब्राह्मणीमाता	सोनाणा
काग	सुंधामाता	सीदरट

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
काला	ब्राह्मणी	सियाणा
कावा	अदरदेवी	सोनाणा
कीरी	हिंगलाज	मोकलसर
कुलामोर	आशापुरा	सोनाणा
कुकडा	अदरदेवी	सोनाणा
केलवा	बाणमाता	मंडोर
कुदणेचा	आशापुरा	सोनाणा
करड	ब्राह्मणी	सियाना
कोकुपोत्रा	हिंगलाज	मोकलसर
कोटडीया	नागणेशी	मंडोर
कोच	आशापुरा	सोनाणा
कावलेचा	आशापुरा	सोनाणा
कूकणा	अदरदेवी	सोनाणा
कयाणी	आशापुरा	सोनाणा
कासटीया	खीमजदेवी	सोनाणा
कांघलोत	ओसीयामाता	मंडोर
करणोत	नागणेशी	मंडोर
करणीया	अदरदेवी	सोनाणा
कापडीया	आशापुरा	सोनाणा
कोरा	अंबाजी	सोनाणा
कोटेचा	ओसीया	मंडोर
कुचेरीया	ओसीया	मंडोर

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
केचेरीया	ओसीया	कुचेरामैरु
कक्कड	ओसीया	मंडोर
कलटोदी	ओसीया	मंडोर
कोकडा	ओसीया	मंडोर
कुलेरीया	सुंधामाता	सोनाणा
करल	गातामाता	मंडोर
कोटेचा	ओसीया	मंडोर
कुचेरीया	ओसीया	मंडोर
केचेरीया	ओसीया	कुचेराभेरु
कक्कड	ओसीया	मंडोर
कलटोदी	ओसीया	मंडोर
कोकडा	ओसीया	मंडोर
कुलेरीया	सुंधामाता	सोनाणा
करल	गाजरमाता	मंडोर
कुरकच्चीया	ओसीया	मंडोर
कमटीया	ओसीया	मंडोर
कडबडा	अंबाजी	सोनाणा
ख		
खीमसरा	अम्बाजी	सोनाणाजी
खांटेड	आशापुरा	सोनाणा
खोपर	ओसीया	मंडोर
खीमसरा	अम्बाजी	सोनाणा

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
खजांसी	ओसीया	मंडोर
खंडेलवाल	जीण चामुंडा (जयपुर)	रींगस
खरगांधी	पतंगादेवी	नीतोडा बाबाजी
खांडपीया	अंबाजी	सोनाणा
खीर	अदरदेवी	सोनाणा
खेराड	खीमज माता	सोनाणा
खीची	आशापुरा	सोनाणा
खालच	खीमजमाता	सोनाणा
खोखर	नागणेशी	मंडोर
खुरधा	अदरदेवी	सोनाणा
खुटोल	आशापुरा	सोनाणा
खाखड	आशापुरा	सोनाणा
खोखा	ओसीया	मंडोर
खोडेवाल	ओसीया	मंडोर
खोडीया	नागणेशी	मंडोर
ग		
गदवानी	ओसीयाजी	मंडोर
गेलडा	आशापुरा	सोनाणाजी
गांग	अदरदेवी	सोनाणाजी
गोठी	अदरदेवी	सोनाणाजी
गणधर चोपडा	ओसीयाजी	मंडोर
गुलेच्छा	नागणेशी	मंडोर

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
गदहीया	नागणेशी	मंडोर
गांधी	आशापुरा	सोनाणा
गांधी	पतंगीया	नीतोडा बाबा
गुंदेचा	ओसीया	बाबाजी
गुंदेचा - गुंदेशा	रोहिणी	सोनाणा
गुंदेशा	राहीणी	सोनाणा
गुगलीया	ओसीया	मंडोर
गौरीवाल	अदरेदेवी	सोनाणा
गोडावत	अंबाजी	सोनाणा
गुगलीया ब.	ओसीया	मंडोर
गहलोत	बाणमाता	सोनाणा
गोराणा	बाणमाता	सोनाणा
गरुड	आशापुरा	सोनाणा
गंगोलीया	ओसीया	मंडोर
गुजर	ब्राह्मणीमाता	सोनाणा
गोरधन गोता	अंबाजी	सोनाणा
चौधरी	-	-
गुंदेचा ब.	रोहिणीमाता	सोनाणा
गौलगोत्र	अंबाजी	सिदरट
गोयलगोता	अंबाजी	सिदरट
गेवाल	वीरवाडा	पावटा
-	ब्राह्मणी	-

मीठा बोलो, कम बोलो, सत्य बोलो

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
गर्ग	ब्राह्मणी	सोनाणा
गारु	पुनागर माजी	मंडोर
गैलतर	चीतोडीमाता	सोनाणा
गौतम	बाणमाता	मंडोर
गोदारा	बाणमाता	मंडोर
गोगादे	नागणेषी	मंडोर
गंगवाल	हिंगलाज	मोकलकर
गोरवाल	आशापुरा	सोनाणा
गडवानी	ओसीया	मंडोर
गांगा	अदरदेवी	सोनाणा
गोप	अदरदेवी	सोनाणा
गिडिया	अदरदेवी	सोनाणा
गोड	अदरदेवी	सोनाणा
गेलडा	अदरदेवी	सोनाणा
गेगादे	नागणेशी	मंडोर
गेढवाड	अदरदेवी	सोनाणा
गुगलीया	ओसीया माता	मंडोर
गुलगुलीया	ओसीया	मंडोर
गंगवाल	जमवाय माता	सोनाणा
गदैया चौहान	आशापुरा	सोनाणा
गोधा	आशापुरा	सोनाणा

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
घ		
घाकडीया	ओसीया	मंडोर
घोडेला	ब्राह्मणी	सेवाडी
घाघु	अदरदेवी	सोनाणा
घन्दे	हिंगलाज	मोकलसर
घवेचा	नागणेशी	मंडोर
घोघल	नागणेशी	मंडोर
घोघल	नागणेशी	मंडोर
घूरीया	अदरदेवी	सोनाणा
घुपीया	ओसीया	मंडोर
घन्नाजी	ओसीया	मंडोर
घाघरीया	नागणेशी	मंडोर
घाघल	ओसीया	मंडोर
च		
चोरडीया	नागणेशी	मंडोर
चंडालीया	अम्बाजी	सोनाणा
चुंगा	अदरदेवी	सोनाणा
चीतोडा	अदरदेवी	सोनाणा
चीतोडा	चीतोडामाता	सोनाणा
चंदावत	ओसीया	मंडोर
चोयल	सुन्धामाता	सोनाणा
चावा	सुषमादेवी	सोनाणा

मनुष्य के खाने लायक खाओ, अभक्ष मत खाओ

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
चिंचट	ब्राह्मणी माता	सिदरट
चौमोला	प्रेमी माता	नाकोडा
चापरवोल	आशापुराजी	सोनाणा
चांदेरा	ब्राह्मणी	सोनाणा
चवला	ओसीया	मंडोर
चीरपुरा	खिमज	सोनाणा
चन्द्रावत	बाणमाता	मंडोर
चुंडावत	खीमज माता	सोनाणा
चौहाणा	अदरदेवी	सोनाणा
चालुका	आशापुरा	सोनाणा
चीपा	आशापुरा	सोनाणा
चींपड	ओसीया	मंडोर
चामड	भुवालमाता	सेवाडी
चगलाणी	ओसीया	मंडोर
चीरडक्या	आशापुरा	सोनाणा
चौधरी (ठंवर)	दीह्ली गाजरमाता	मंडोर
चौवण्या	आशापुरा	सोनाणा
चावडा	अरबुदा देवी	सोनाणा
छ		
छाजेड	भुवाल माता	सेवाडी या मंडोर
छाजेड	भुवाल माता	मंडोर
छावडा	नारायण देवी	भीनमाल

प्रत्येक जीवों के साथ मैत्री भाव रखो

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
छावडा	नारायण देवी	वाव थराद
छपनीया	नागणेशी	मंडोर
छाहड	अदरदेवी	सोनाणा
छछा	हिंगलाज	मोकलसर
छावडा	आशापुरा	सोनाणा
ज		
जोगड	अम्बाजी	सोनाणा
जीरावाला	अम्बाजी	सोनाणा
जालोरी	अम्बाजी	सोनाणा
जालोरा	आशापुरा	सोनाणा
जडीया	अदरदेवी	सोनाणा
जसाणी	बाणमाता	सोनाणा
जागरवाल	अम्बाजी	सोनाणा
जागरवाल ब.	ब्राह्मणी माता	सोनाणा
जिंदल	सेढल माता	सोनाणा
-	परसोतमा	-
जेजटोटीया	हिंगलाज	मोकलसर
जयसिंह गजा	वोकल माता	सोनाणा
जोण	ब्राह्मणी	कोटा
जारेचा	हिंगलाज	मोकलसर
जागा	अदरदेवी	सोनाणा
जपाला	अदरदेवी	सोनाणा

कर्मो का भोग ज्ञानी हसकर, अज्ञानी रोकर भोगता है

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
जोगीया	ओसीया देवी	मंडोर
जोधा	नागणेशी	मंडोर
जसाणी	ओसीया	मंडोर
जिंदाणी	लोदरमाता	मंडोर
जांगड	ओसीया	मंडोर
जलवाण्या	जमवाय माता	सोनाणा
जांभरी	जमवाय माता	सोनाणा
झ		
झाबक	ओसीया	मंडोर
झांवक	अम्बाजी	सोनाणा
झावड	अम्बाजी	सोनाणा
झोटा	कुंवारी देवी	सोनाणा
झावडा	अम्बाजी	सोनाणा
झोडोलीया	अदरदेवी	सोनाणा
झाला	अदरदेवी	सोनाणा
ट		
टाटीया	अंबाजी	सोनाणा
तुण्ड	आशापुरा	सोनाणा
टीमरेचा	आशापुरा	सोनाणा
टाक	ब्राह्मणी	सोनाणा
टाटीया	पुनागर माजी	मंडोर
टीवाणा	बाणमाता	मंडोर

व्यर्थ में कर्म मत बांधो, भोगना पडेगा

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
टोडरवाल	अदरदेवी	सोनाणा
टांक	पाडलमाता	सोनाणा
टोग्या	अदरदेवी	सोनाणा
ठ		
ठडा	अम्बाजी	सोनाणा
ठाकुर	अम्बाजी	सोनाणा
ठकराना	हिंगलाज	मोकलसर
ड		
डागा	आशापुरा	सोनाणा
डोशी	अम्बाजी	सोनाणा
डागरेचा	अंबाजी	सोनाणा
डोडेचा	हिंगलाज	मोकलसर
डावडा	गाजरमाता	मंडोर
डांगी ब.	अदरदेवी	सोनाणा
डालिया	आशापुरा	सोनाणा
डांगी	नागणेशी	मंडोर
डोड	अदरदेवी	सोनाणा
डीया	आशापुरा	सोनाणा
डाबी	अरबुदादेवी	सोनाणा
ढ		
ढेलडीया	अम्बाजी	सोनाणा
ढेलडीया (वोहरा)	ओसीया	मंडोर

आत्मा चेतन है, शरीर जड है, दोनों का मिलना स्थाई नही

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
त		
तिलेरा	अम्बाजी	सोनाणा
तलसेरा	अम्बाजी	सोनाणा
तलेसरा ब.	खीमज माता	सोनाणा
तिलहरा	अम्बाजी	सोनाणा
तातेड	ओसीया	सोनाणा
तौ	ब्राह्मणी	सोनाणा
तीवडकीया	बाणमाता	मंडोर
तेजाणी	ओसीयामाता	मंडोर
तोसलीया	ओसीया	मंडोर
थ		
थुल्ल	ओसीया	मंडोर
द		
दुगड-सुगड	आशापुरा	सोनाणा
दरडा	अदरदेवी	सोनाणा
दुगड ब.	आशापुरा	सोनाणा
दुधोरीया	आशापुरा	सोनाणा
दोतेवाडीया	अम्बाजी	सोनाणा
दोतेवाडीया ब.	ओसीया	मंडोर
दफ्तरी	अंबाजी	सोनाणा
देवड	आशापुरा	सोनाणा
दरडा-दरला	अंबाजी	सोनाणा

हमारे पास लाखो मोती, पर कफन के जेब नही होती

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
दिलवाल	मोदरामाता	भटोणा
दूगसा	अदरदेवी	सोनाणा
देवराजोत	नागणेशी	मंडोर
दुगठीया	अदरदेवी	सोनाणा
दुदणेचा	आशापुरा	सोनाणा
देशलहेरा	सच्चियामाता	मंडोर
देवराजोत	नागणेशी	मंडोर
दुधेरीया	अदरदेवी	सोनाणा
दुरावत	नागणेशी	मंडोर
दया	आशापुरा	सोनाणा
देवसयाणी	ओसीया	मंडोर
देसोरा	ओसीया	मंडोर
देवल	गाजरमाता	मंडोर
दौसा	नागणेशी	मंडोर
दगडावत	ब्राह्मणी	सोनाणा
दरडौया	आशापुरा	सोनाणा
ध		
धारीवाल	ओसीया	मंडोर
धारोलीया	धनादेवी	सोनाणा
धोका (देवडा)	आशापुरा	सोनाणा
धोका देवडा	अंबाजी	सोनाणा
धारीया	अदरदेवी	सोनाणा

कहना तो आता है, मगर करना नही आता

ग्गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
धारोडीया	ओसीया	मंडोर
धर्मपंच लोढा	खीमज	सोनाणा
धरावता	अदरदेवी	सोनाणा
न		
नाहर	अदरदेवी	सोनाणा
नाहटा	ओसीया	मंडोर
नागोरी	अदरदेवी	सोनाणा
नागोरी ब.	नागोरीमाता	मंडोर
नागसेठीया	अम्बाजी	सोनाणा
नेनगोता	अंबाजी	सोनाणा
नांगल	सुन्धामाता	सोनाणा
नरवा	सुषमादेवी	सोनाणा
नागोत्रा सोलंकी	अम्बाजी	सोनाणा
नक्षत्र	ओसीया	मंडोर
निम्बजीया परमार	निबजमाता	मलावा
,, - ,,	भूआल	,, - ,,
नवलखी	अंबाजी	सोनाणा
नाणेशा	अंबाजी	सोनाणा
नदुआणा	वांकल माता	सोनाणा
नागा	सुंधा माता	मंडोर
नागरीया	ब्राह्मणी	सोनाणा
नीवेडचा	अदरदेवी	सोनाणा

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
नसोलिया	नागणेशी	मंडोर
नाणी	ओसीया माता	मंडोर
नीका	ओसीया माता	मंडोर
नाहडसरा	ओसीया	मंडोर
नाताड	आशापुरा	सोनाणा
नीरपाल्या	अदरदेवी	सोनाणा
प		
पारख	ओसीया	मंडोर
पीथलीया	आशापुरा	सोनाणा
पगारीया	खीमजमाता	भीनमाल
पगारीया ब.	अम्बाजी	सोनाणा
पोकरणा	ओसीया	मंडोर
पीपाडा	अम्बाजी	सोनाणा
पीपाडा ब.	बाणमाता	सोनाणा
पुगलीया	अंबाजी	सोनाणा
पुनमीया	अम्बाजी	सोनाणा
पावेचा	ओसीया	मंडोर
पालरेचा	सुंधामाता	सोनाणा
पटवा	अम्बाजी	सोनाणा
पचलोढा	अंबाजी	सोनाणा
पुनमीया (सटा)	ओसीया	मंडोर
पाटोत	अदरदेवी	सोनाणा

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
पाटणीया	ओसीया	मंडोर
पुजारा	सच्चियाय	सोनाणा
पाटलीया	अम्बाजी	सोनाणा
पोसालीया	डिडवाना	मोकलसर
पालगोता	आशापुरा	सोनाणा
चौहान	-	-
पाखरबढ	अदरदेवी	सेवाडी
पोलेरीया	सुन्धामाता	सोनाणा
पामेचा	अम्बाजी	सोनाणा
पीपलीया	आशापुरा	सोनाणा
पटिपात	आशापुरा	सोनाणा
पाटासर	ब्राह्मणीमाता	सोनाणा
पारेव	अंबाजी	सोनाणा
पालगोता ब	आशापुरा	सोनाणा
पालगोता	कंठनदेवी	सोनाणा
पुंडरगोता	अंबाजी	सोनाणा
चौहान पुं.	,, - ,,	,, - ,,
पारासर	ब्राह्मणी माता	सोनाणा
पुरी	हिंगलाज	मोकलसर
पोपा	दिडेसीमाता	थोब
पीपडा	बाणमाता	मंडोर
पाहड्या	आशापुरा	सोनाणा

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
पापला	अदरदेवी	सोनाणा
पांगुला	आशापुरा	सोनाणा
पीतल्या	आशापुरा	सोनाणा
पोठल्या	बाणमाता	सोनाणा
पामेचा	आशापुरा	सोनाणा
पोकरणा	नागणेशी	मंडोर
पोण	ब्राह्मणी	सियाना
पायल	अदरदेवी	सोनाणा
पेनार	अदरदेवी	सोनाणा
पीथा	अदरदेवी	सोनाणा
पीथलीया	आशापुरा	सोनाणा
पीपाडा	अदरदेवी	सोनाणा
पीपलीया	ओसीया	मंडोर
पीपाडा ब.	बाणमाता	सोनाणा
पोकरणा	ओसीया	मंडोर
पोपाणी	ओसीया	मंडोर
पाखर	गाजरमाता	मंडोर
पाटणी	गाजरमाता	मंडोर
पापडीवाल	आशापुरा	सोनाणा
पटोद्या	गाजरमाता	मंडोर
फ		
फोफलीया	ओसीया	मंडोर

एक दिन जाना जरुर है, इसका हर पल ध्यान रखना

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
फलोरीया	अदरदेवी	सोनाणा
फागणीया	अंबाजी	सेवाडी
फालोदीया वोहरा	ओसीयादेवी	मंडोर
फलोदीया	ओसीया	मंडोर
फोगरीया	ओसीया	मंडोर
ब		
बावेला	अदरदेवी	सोनाणा
बोरड	अदरदेवी	सोनाणा
बाफना	ओसीया	मंडोर
बरडीया	अदरदेवी	सोनाणा
बहुफणा	ओसीया	मंडोर
बोथरा	ओसीया	मंडोर
बागरेचा	आशापुरा	सोनाणा
(चौहान) नागरेचा	आशापुरा	सोनाणा
बागरेचा	अम्बाजी	सोनाणा
नागरेचा सोलंकी	" - "	" - "
बांठीया	अदरदेवी	सोनाणा
बुझेचा	अदरदेवी	सोनाणा
बच्छावत	ललेचीमाता	मंडोर
बच्छावत ब.	ओसीया	सोनाणा
बाघमार	ओसीया	मंडोर
बंदामुथा	अदरदेवी	सोनाणा

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
बंदामुथा	ओसीया नागदेवता	का पूजन
बैगानी	आशापुरा	सोनाणा
बागचार	ओसीयाजी	मंडोर
बालगोता	ओसीया	मंडोर
बालड	ओसीया	मंडोर
बाणगोता	खीमज माता	भीनमाल
बग	अंबाजी	सोनाणा
बालावत	नागणेशी	मंडोर
बाला	अम्बाजी	सोनाणा
बालदोलीया	अदरदेवी	सोनाणा
बादोला	अम्बाजी	सोनाणा
बनावत	ओसीया	मंडोर
बडबडा	अंबाजी	सोनाणा
बाकडीया	आशापुरा	सोनाणा
बडेरा	ओसीया	मंडोर
बालावत	अदरदेवी	सोनाणा
बालावत परमार	,, - ,,	,, - ,,
बोरड	अदरदेवी	सोनाणा
बुरडीया	अदरदेवी	सोनाणा
बेगानी	आशापुरा	सोनाणा
बाहतीया	ओसीया	मंडोर
बालीया	ओसीया	मंडोर

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
बरडीया	सुंधामाता	सोनाणा
बाग	आशापुरा	सोनाणा
बंबा	अदरदेवी	सोनाणा
बोडा	आशापुरा	सियाना
बादलीया	अम्बाजी	सोनाणा
बनलखा	अम्बाजी	सेवाडी
बम्ब	ओसीया	मंडोर
बरबडा	गाजरमाता	कुचेरा
-	दिल्ली	-
बडदुआ	गाजरमाता	कुचेरा
	दिल्ली	-
बप्पनाग	चामुंडा	वाघोडा
बवलखा	अम्बाजी	सोनाणा
बलदरीया	अंबाजी	सोनाणाजी
बालेचा	पुनागरमानीजी	सोनाणा
बागेचा	जिणमाता	वाघोडा
बाबरीया	ब्राह्मणी	मंडोर
बग	धुमडा चामुंडा	मोकलसर
बीजल	ब्राह्मणी	सोनाणा
बेडा	आशापुरा	सोनाणा
बग	मादाजुन	खुंटाणी
बग	मादाजुन	खुंटाणी

ज्ञानी अपनी गति सुधार लेता है, अज्ञानी रात दिन रोता है

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
बलदरीया	अंबाजी	सोनाणा
बोका	अदरदेवी	सोनाणा
बजाज	खंडवा माता	मंडोर
बडमेरा	नागणेशी	मंडोर
बोम्हालण	आशापुरा	सोनाणा
बालोत ब.	आशापुरा	सोनाणा
ब्रह्मक्षत्रीय	हिंगलाज	मोकलसर
बामणीया	कालनमाता	वरली
बाढेल	नागणेशी	मंडोर
बिछडा	हिंगलाज	मोकलसर
बांघेटा	आशापुरा	सोनाणा
बगडीया	हिंगलाज	मोकलसर
बिहल	आशापुरा	सोनाणा
बालीया	आशापुरा	सोनाणा
बुवकीया	ओसीया	मंडोर
बरड	अदरदेवी	सोनाणा
बरडीया	अदरदेवी	सोनाणा
बांगी	अदरदेवी	सोनाणा
भ		
भवरा	बाणमाता	वाघोडा
भायल	अदरदेवी	सोनाणा
भीमबोसीया	प्रेमीमाता	सोनाणा

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
भूत	हिंगलाज	मोकलसर
भडगतिया	ओसीया माता	मंडोर
भाटीया	अदरदेवी	सोनाणा
भाटी	अदरदेवी	सोनाणा
भटनेरा	ओसीयादेवी	मंडोर
भटेवरा	ओसीया माता	मंडोर
भूआता	ओसीया माता	मंडोर
भांगडा (खीमर)	खीमज माता	सियाणा
भंडसाली	ब्राह्मणी	सेवाडी
भुवालीया	जमवाय माता	सोनाणा
भौसा	आशापुरा	सोनाणा
भंसाली	लोदरमाता	मंडोर
(जैसलमेरा)	ओसीया	मंडोर
भंसाली	ओसीया	मंडोर
भंसाली ब.	अम्बामाता	सोनाणा
भंडारी	आशापुरा	सोनाणा
भूरट	ओसीया	मंडोर
भीनमाला	खीमज माता	भीनमाल
भाटी	सुन्धामाता	सोनाणा
भूडेल	अदरदेवी	सेवाडी
भदेचा	अदरदेवी	सोनाणा
भद	ओसीया	वाघोडा

पूर्व भवों के संयोग से मिले हो, आनंद में रहो

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
भिटडीया सोनी	सुषमादेवी	सोनाणा
भीलोचा बोहरा	अंबाजी	सेवाडी
भीलोचा बोहरा ब.	अंबाजी	सोनाणा
भलगर	अंबाजी	सोनाणा
भूरीया	अदरदेवी	सोनाणा
भलदरा	चामुंडा	सोनाणा
भुटा	आशापुरा	सोनाणा
भूरा	चामुंडा	सियाना
भारती छोगाला	हिंगलाज	मोकलसर
म		
मुणोत	नागणेशी	मंडोर
मुणोत ब.	ओसीया	मंडोर
मुणोत आ.	नागणेशी	जालोदवाव
मालू	ओसीया	मंडोर
मलावत	अदरदेवी	सोनाणा
मेमैया	आशापुरा	सोनाणा
मुंदरेचा	आशापुरा	सोनाणा
मुरडीया	ओसीया	मंडोर
मोदी	ओसीया	मंडोर
मसणीया	अदरदेवी	मंडोर
माकड	सुन्धामाता	सोनाणा
माडण	सुन्धामाता	सोनाणा

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
माल्हू	ब्राह्मणीमाता	सोनाणा
मंडोवरा	,, - ,,	,, - ,,
मंडोवरा (परिहार)	गाजरमाता	मंडोर
मोमाया	मंबादेवी	सोनाणा
मुठलीया	अंबाजी	सोनाणा
मंडोवरा	ब्राह्मणी	मंडोर
मणियारी	चामुंडा	वाव थराद
मोरवाल	आशापुरा	सोनाणा
मारवानी	आशापुरा	सोनाणा
मारु	ब्राह्मणी	सोनाणा
मेवाडा	खीमज	सियाणा
मम्बईया	आशापुरा	सोनाणा
मरोठीया	ओसीयामाता	मंडोर
मगदीया	ओसीयामाता	मंडोर
माकेलवाल	ओसीयामाता	मंडोर
मक्कद	ओसीया	मंडोर
मुरडीया	ओसीया	मंडोर
मुलाण्या	आशापुरा	सोनाणा
मोलसरा	अदरदेवी	सोनाणा
मकवाणा	अदरदेवी	सोनाणा
मांगलीया	चामुंडा	सोनाणा
मकवाणा	सुन्धामाता	सोनाणा

जीव मात्र को दुख मत देना, सुख देना

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
मालवी	ब्राह्मणी	मंडोर
मण्डावर	गाजरमाता	मंडोर
मारवणीया	ब्राह्मणी	मोकलसर
मुठलीया ब.	अंबाजी	सेवाडी
मोरीगेला	अदरदेवी	सोनाणा
मोरीगेला किंगवा	'' - ''	'' - ''
मांगलिक	बाणमाता	मंडोर
मुखेल दायमा	अदरदेवी	सोनाणा
मेलवाल	आशापुरा	सोनाणा
मोढसी	अदरदेवी	सोनाणा
मेहरा	हिंगलाज	मोकलसर
माल्हण	आशापुरा	सोनाणा
मादु	हिंगलाज	मोकलसर
महेचा	नागणेशी	मंडोर
मांडणोत	नागणेशी	मंडोर
मोडोत	ओसीया	मंडोर
मोहीवाल	अदरदेवी	सोनाणा
मेडतीया	नागणेशी	मंडोर
र		
राखेचा	अंबाजी	सोनाणा
रुणावल	ओसीयाजी	मंडोर
रांका	अंबामाता	सोनाणा

दुख देने से दुख मिलता है, सुख देने से सुख

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
बांका	अदरदेवी	सोनाणा
रामडीया	अदरदेवी	सोनाणा
रोहड	आशापुरा	सोनाणा
रामपुरीया	ओसीया	मंडोर
रायशीयाणी	कुंवारीदेवी	वाव या सोनाणा
राणावत	अदरदेवी	सोनाणा
रायसोनी	अम्बाजी	सोनाणा
रायसोनी मुथा	" - "	" - "
रिखाब	अम्बाजी	सोनाणा
रांका ब.	अदरदेवी	सोनाणा
(देबारा)	" - "	" - "
राणसोत	अंबाजी	सोनाणा
रावत	ओसीया	मंडोर
रणधीरा	ओसीया	मंडोर
रतनपुरा	" - "	" - "
रतनपुरा वोहरा	अंबाजी	सोनाणा
राइगर	आशापुरा	सोनाणा
रायसोनी	आशापुरा	सोनाणा
रातडीया	आशापुरा	सोनाणा
राणा	चितोडमाता	थोब
राजदेवरा	नारायणादेवी	मंडोर

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
रतन राठोड	नागणेशी	मंडोर
रतनपुरा	अंबाजी	सेवाडी
रतनपुरा चौहान	" - "	" - "
रामसीणा	अंबाजी	सोनाणा
राजपुरोहीत	अंबाजी	
" - " ब.	ब्राह्मणी	सोनाणा
रायमलानी	सुंधामाता	सोनाणा
राजदेवरीया	ओसीया	मंडोर
रावका	आशापुरा	सोनाणा
राणकिया	आशापुरा	सोनाणा
राणधीर	खीमजमाता	सोनाणा
रामडीया	आशापुरा	सोनाणा
राडदण	नागणेशी	मंडोर
रायजादा	ओसीयामाता	मंडोर
रुंठीया	भुवालमाता	सेवाडी
रीखब	खीमजमाता	सोनाणा
रामदेवा	ओसीया	मंडोर
रामपुरीया	ओसीया	मंडोर
रुपेल	सुन्धामाता	सोनाणा
रुपेल सलडीया	ब्राह्मणी	सोनाणा
राजभदरा	शंखेश्वरी	सोनाणा
राजहंस	अदरदेवी	सोनाणा

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
राजावत	जमवायमाता	सियाना
ल		
ललवाणी	किंचरीया माता	सोनाणा
लूंकड	अम्बाजी	सोनाणा
लूंकड ब.	ओसीया	मंडोर
लूणीया	ब्राह्मणीमाता	सोनाणा
लोढा	आशापुरा	सोनाणा
लोढा ब.	अंबाजी	सोनाणा
लाखाणी	ओसीया	मंडोर
लामाणी	अंबाजी	सोनाणा
लोरकीया	वाराहीमाता	सिदरट
लालरेचा	अम्बाजी	सोनाणा
लांबगोत्र चौहान	अम्बाजी व नीतोडा	सीदरट बाबाजी
लुंलड	चौदरा माताजी	भीनमाल
लूणीया	अंबाजी	सोनाणा
लोरकीया	शंखेश्वरी	सिदरट
लाताड	ब्राह्मणी	सोनाणा
लखावत	ब्राह्मणी	सेवाडी
लठीवाल	अदरदेवी	सोनाणा
व		
वेदमुथा	ओसीया	मंडोर
वागमार	लोदरमाता	मंडोर

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
विनायकीया	अंबामाता	मंडोर
वोहरा	अंबाजी	सोनाणा
वकियातरी	आशापुरा	सोनाणा
वागाणी	ओसीया	मंडोर
वीजल	खीमजमाता	सोनाणा
वाणीगोता	खिमजमाता	भीनमाल
वालदरीया	अंबाजी	सेवाडी
वर्दना	गाजरमाता	सोनाणा
वागरेचा	घुमडामाता	" - "
वागरेचा गर्ग	चामुंडा	सिदरट
वडकीया	वारेसरी माता	गोयली
" - " ब.	ब्राह्मणी	" - "
वारडे	हिंगलाज	मोकलसर
विराणा	अदरदेवी	सोनाणा
वाघोत	अदरदेवी	सोनाणा
वारड	अदरदेवी	सोनाणा
वीरावत	अदरदेवी	सोनाणा
वडेर	ओसीया	मंडोर
वनमाली	आशापुरा	सोनाणा
विंनायक्या	बाणमाता	सोनाणा
स		
सांवमुखा	नागणेशी	मंडोर
संकलेचा	शंखेश्वरी	सोनाणा

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
संकलेचा ब.	शंखेश्वरी	मेवानगर
सालेचा	अंबाजी	सोनाणा
सालेचा वहोरा	अंबाजी	सोनाणा
सिंघी-सिंघवी	वाकलमाता	सेवाडी
सिंघवी	अम्बाजी	सोनाणा
सिंघवी डीडू	अदरदेवी	सोनाणा
" - "	" - "	नागपूजा
सिंघवी वालदोटा	अदरदेवी	सोनाणा
संकलेचा चौहान	आशापुरा	सोनाणा
संचेती	ओसीया	मंडोर
संचमती	अम्बाजी	सोनाणा
सुराणा	सुषवाणी	सोनाणा
सेठीया	अम्बाजी	सोनाणा
सोनी	अम्बाजी	सोनाणा
सांखला	अम्बाजी	सोनाणा
शाह	अम्बाजी	सोनाणा
शिशोदीया	ओसीया	मंडोर
शिशोदीया गहलोत	बाणमाता	सोनाणा
सांड	अम्बाजी	सोनाणा
सियाल	अम्बाजी	सोनाणा
सोलंकी	गौत्रमाता	सोनाणा
सोलंकी	अंबाजी	सोनाणा

गौत्र	कुलदेवीजी	क्षेत्रपालजी
सोनी	ओसीया	मंडोर
सिंहावत	ओसीया	मंडोर
शिंगाला	अदरदेवी	सोनाणा
साचोरा	साचोरी माता	सोनाणा
साचोरा	ओसीया	मंडार
सालेसा	अंबाजी	सोनाणा
सेखाणी	ओसीया	मंडोर
सोवीगरा	अम्बाजी	सोनाणा
सोवीगरा	आशापुरा	सोनाणा
सुखीया	अदरदेवी	सोनाणा
समदडीया	ओसीया	मंडोर
समदडीया	ललेची माता	मंडोर
सेमलाणी	अम्बाजी	सोनाणा
सेऊआ	ब्राह्मणी माता	सोनाणा
सफ्ला	आशापुरा	सोनाणा
सांढ	अंबाजी	सोनाणा
सुंदेसा	सुन्धामाता	सोनाणा
शाकरीया	अंबाजी	सिदरट
सोनेला	मोदरामाता	भरुडी
सी गोता	चितोडमाता	सोनाणा
सतावत	अम्बाजी	सोनाणा
सोनेला	हिंगलाज	सिदरट

किसी की निंदा मत करना, सभी अपने कर्मो के आधीन है

मनुष्य जीवन की सार्थकता

संसार में कई जीव उत्पन्न होते है और पानी के परपोटे के समान नष्ट हो जाते हैं, उनका जन्मना नहीं जन्मना समान है। किन्तु वही मनुष्य धन्य है जो जन्म लेकर स्व-पर का कल्याण कर जाते हैं, जीवन जारहा है, जन्म-मरण की परंपरा का पार पाना मुश्किल है।

सत्संग – गुरु द्वारा दिया हुआ ज्ञान कर्मों के आवरण को दूर कर आत्म प्रकाश को प्रकाशित करेगा। जैसे सफेद चमकदार कपड़ा – दो चार दिन में मलीन हो जायेगा, उसका श्वेत प्रकाश दब गया, आवरण से, साबुन लगाकर धोनेसे मेल के आवरण हट गये, श्वेत चमकदार प्रकाश बाहर आ गया।

आवरण – कर्म है, अविवेकता है, यदि यह दूर हो जाये तो आत्म का प्रकाश प्रकाशित रहेगा, संसार में रहता हुआ भी विवेक जयणा व निवृत्ति से वर्तेगा तो तिर जायेगा।

उत्तम कुल – उत्तम धर्म एवं उत्तम देव गुरु मिलना मुश्किल है, ''धम्मस्ससार मुवलम्भ करे पमायं'' धर्म के साधन मिलने पर भी प्रमाद से खोदिये। अतः प्रत्येक मनुष्य को अपना जीवन सार्थक करने में तत्पर रहना चाहिये। सोएगा वह खोएगा, जागेगा वो पावेगा।

श्रावक के करने योग्य दिन चर्या

जागना –

रात्रि के चौथे प्रहर में अर्थात् ब्राह्ममुहूर्त्त (१) में पञ्चपरमेष्ठि (अरिहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय और साधु) का स्मरण करते हुए जागृत होना चाहिए।

नाक की नाड़ी (सुर) देखना, जिस तरफ़ की नाड़ी चलती हो, उस तरफ का पैर पहिले नीचे रखना। फिर बिस्तर का त्याग करना। रात्रि के पहने हुए कपड़े बदल डालना और शुद्ध वस्त्र पहनना। शरीर की अशुद्धि को भी त्यागना, यानि शौचादि क्रिया से भी निवृत होना चाहिए।

जाप करना –

शरीर और वस्त्र की शुद्धि हो जाने के बाद मंदिर जी उपाश्रय या घर के एकान्त स्थान में जाकर एकाग्र चित्त से नवकार का जाप करना चाहिए, जाप करते समय मुख पूर्व या उत्तर दिशा की ओर रखें, पद्मासन से बैठकर माला

को उंगलियों का सहारा न देकर जाप करना यही उत्कृष्ट विधि है। यदि ऐसा न हो सके तो माला हाथ में लेकर जाप करे परंतु स्मरण रहे कि मेरु का उल्लंघन न होना चाहिये यह माध्यम विधि है, चलते फिरते बिना संख्या का जाप करते रहना।

प्रतिक्रमणा या सामायिक –

इच्छानुसार जाप करने बाद उपाश्रय या घर के एकान्त स्थान में बैठकर श्रावक को रात्रि प्रतिक्रमण करना चाहिए। प्रतिक्रमण न आता हो या ऐसा ही कुछ कारण होवे तो सामायिक करे। बारह व्रतधारी श्रावक तो अवश्य प्रतिक्रमण करें। या नवकार महामंत्र का जाप करें।

(१) सूर्योदय होने में ९६ मिनिट बाकी रहें उस समय को ब्रह्ममुहूर्त कहते हैं।

देवदर्शन –

प्रतिक्रमण के बाद देव दर्शन करने को श्री मंदिर जी में जावे। घर से निकलते ही एक निसीहि कहे इसमें श्रावक के लिए घर और व्यापार सम्बन्धी तमाम बातों का त्याग करना कहा है। दूसरी निसीहि मंदिर जी की सीढ़ी चढ़ते वक्त कहे, इसमें मंदिर सम्बन्धी ८४ आशातना को दूर करने को कहा है। और तीसरी निसीहि मूल गंभारे के पास में आकर कहे। इस तरह से कह कर भगवान की स्तुति करे।

याद रखें कि पुरुष वर्ग प्रभु के दाहिनी तरफ और स्त्री वर्ग प्रभु के बांयी ओर खड़े रहकर दर्शन तथा स्तुति करें। इस समय भगवान को बिना छुए वासक्षेप से पूजा करनी चाहिए। प्रभु मूर्ति के सामने रह कर प्रभु की स्तुति या दर्शन करना चाहिए।

बाद में उत्तरासंग पूर्वक योग मुद्रा सहित मधुर वाणी से चैत्यवंदन करे। योग मुद्रा इसे कहते हैं–दोनों हाथों की कुहणी (कोणी) को उदर पर रखे, दोनों हाथ कोषावृति से रखे जावें, दोनों हाथों की उंगलियां परस्पर संश्लेषित (एक दूसरे से मिली हुई) रखें इसका नाम योग मुद्रा है। मन्दिर जी से बाहर निकलती दफा आवस्सिहि ज़रूर कहे।

गृह अवस्था –

बाद में घर पर जाकर घर संबन्धी–जैसे भोजन आदि की जो व्यवस्था करनी होवे सो करे, करावे। बन्धुओं तथा नौकरों को भी अपने २ काम पर नियुक्त करे, इसके बाद उपाश्रय में जाकर व्याख्यान श्रवण करें।

व्याख्यान श्रवण –

श्रावक बुद्धि के आठगुणों (१) पूर्वक व्याख्यान श्रवण करें, गुरु को

पंचांग प्रणिपात (२) कर गुरु की आशातना न हो ऐसे स्थान में जाकर बैठे।

(१) सुनने की इच्छा, सुनना, ग्रहण करना, धारण करना, उहा, अपोह, अर्थ विज्ञान, तत्वविज्ञान यह बुद्धि के आठ गुण हैं। (२) दो गोडे, दो हाथ और एक मस्तक-इन पांचों के जमीन के साथ स्पर्श करके वंदन करना उसका नाम है-पंचांग प्रणिपात। गुरु के सामने बैठकर व्याख्यान सुनती दपा इन बातों का अवश्य ध्यान रखा जावे।

१-पैरो को कमर के साथ बांधकर नहीं बैठना।
२-पैर लम्बे नहीं करना।
३-पैर पर पैर नहीं चढ़ाना।
४-हाथ ऊंचे नहीं करना जिससे बगल दिखाई दे।
५-बहुत पीछे भी नहीं, एकदम नज़दीक भी नहीं लेकिन ऐसी जगह और इस तरह बैठें कि गुरु का मुख भी दिखाई दे और आने जाने वालों को भी विघ्न न होवे।

इन बातों का ध्यान रखते हुए व्याख्यान श्रवण करना चाहिए व्याख्यान में होने वाली शंकाओं का गुरु समीप विनयपूर्वक समाधान भी कर लेना चाहिए। जिसने सुबह प्रतिक्रमण न किया होवे वह गुरु को द्वादशावर्त्त वंदन करके यथा शक्ति पच्चक्खाण लेवे।

स्नान विधि -

अब प्रभु पूजा केलिए श्रावक को पूर्व दिशा में मुख रखकर स्नान करना चाहिए। जिस पट्टे पर बैठ कर स्नान किया जाय वह ज़मीन ऊंचा होना ज़रूरी है जिससे पानी बहकर निकल जावे और किसी भी जीव को बाधा न पहुंचे। रजस्वला या किसी अत्यन्त मलीन चीज़ से स्पर्श हुवा हो या सूतक हो या स्वजन की मृत्यु हुई हो तो गृहस्थ को सर्व स्नान अवश्य करना चाहिए। बिना छाना हुवा पानी काम में न लाया जावे। स्नान करने के बाद स्वच्छ वस्त्र से शरीर को पोछकर कंवली पहन कर जब तक पैर न सूख जावे तबतक खड़े रहकर मनमें जिनेश्वर प्रभु का स्मरण करना चाहिये।

देव पूजा -

जिस गृहस्थ के घरमें घर देहरासर (मंदिर) हो वह घर में जाकर पूजा के वस्त्र पहन कर मुख कोष बांधे। घरमंदिर घर में प्रवेश करते हुए वाम भाग में होना चाहिए। भगवान की मूर्ति ज़मीन से कम से कम डेढ़ हाथ ऊंची होनी चाहिए। पूजा के समय सात प्रकार की शुद्धि होनी चाहिएः- मन, वचन, काया, वस्त्र, भूमि, पूजा के उपकरम और स्थान। फिर शुद्ध जल या पंचामृत कलश में लेकर प्रभु को पक्षाल आदि कराया जावे, बादमें अष्ट द्रव्य से पूजा करनी चाहिए। आठ द्रव्य के नामः- जल, चंदन, पुष्प, धूप, दीपक, अक्षत, नैवेद्य

और फल।

घरमंदिर के पूजा के समय जहां तक हो सके पूर्व या उत्तर दिशा के तरफ मुख रखना चाहिए। फिर नव अंग की पूजा इस प्रकार करे-चरण, जानु, कर, स्कन्ध, मस्तक, ललाट, कण्ठ, हृदय और नाभि। यह पूजा करने के स्थान हैं। इस प्रकार घर देहरासर की पूजा कर लेने के बाद मार्ग की अशुद्धियों को दूर करता हुआ गांव के मन्दिरजी में पूजा करने जावे। पहिले मूल नायक जी की पूजा करने के बाद फिर दूसरी प्रतिमा जी की पूजन करनी चाहिए। तमाम अरिहंत मूर्तियों की पूजा कर लेने के बाद सिद्ध भगवान की पूजा करनी चाहिए, इसके बाद यक्ष यक्षिणी की पूजन करनी चाहिए। अवग्रह से गंभारा के बाहर जाकर भावपूर्वक चैत्यवंदन करना चाहिए। बाद में आवस्सिहि कह कर मन्दिर जी से निकल कर घर जावे।

पुष्प पूजा विधि -

भगवान को जो पुष्प चढ़ावे वे शुद्ध, साफ, सुगन्धित और पके हुए तथा अखण्डित होने चाहिये। पुष्प की पत्तियां अलग २ न करके चढ़ावे तथा उसका छेदन भेदन भी न करें, और कलियां तोड़ कर भी न चढ़ावे। पुष्प ज़मीन पर पड़ा हुवा, पैर लगा हुवा, या नीचे गिरा हुवा हो ऐसा पुष्प भगवान को नही चढ़ाना चाहिए। पूजा समाप्त कर संसारिक कार्य में लगे।

भोजन विधि -

भोजन अपने कुटुम्बी जनों के साथ बैठकर करना चाहिए। भोजन में भक्ष्याभक्ष्य का विचार ज़रूर रखें यानि अभक्ष्य वस्तुओं का सर्वथा त्याग करना चाहिए। उत्पातपूर्वक क्रोधान्ध होकर, खराब वचनों को कहते हुए या दक्षिण दिशा में मुख रख कर किया हुवा राक्षसी भोजन कहा जाता है। संध्याकाल, रात्रिकाल, स्वजन का मर्दा पड़ा हुवा हो ऐसे समय भोजन न करना चाहिए। जाति भ्रष्ट के घर भी भोजन नहीं करना चाहिए। अज्ञात भोजन या अज्ञात फल भी न खावे। बाल हत्या, स्त्री हत्या, भ्रूण हत्या, गौ हत्या करने वाले नीच मनुष्यों के साथ बैठकर भी भोजन नहीं करे। पानी अगर भोजन के पहिले पीवे तो विष समान है, भोजन के मध्य में पत्थर और अन्त में अमृत के समान होता है। अतिथि, नौकर, चाकर, पशु आदि की संभाल लेने के बाद ही गृहस्थ को भोजन करना चाहिए। भोजन करने के बाद दो घड़ी आराम लेकर सम्बन्धियों से वार्तालाप करना चाहिए जिससे हरएक से प्रेम बना रहे और घर में संप रह सके। इसके बाद व्यापार के लिये बाज़ार में जावे।

द्रव्योपार्जन -

गृहस्थ को चाहिए कि न्यायपूर्वक द्रव्योपार्जन करे। द्रव्य साध्य नहीं परन्तु साधन है, इस बात का ख्याल रखकर ही व्यापार करे। परोपकार, धर्म-

कार्य, कुटुम्ब पोषण, भाईयों का उद्धार, मित्रों का उपकार, देश सेवा, समाज सेवा इत्यादि कामों में द्रव्य की आवश्यकता होती है, इस लिये नीतिपूर्वक द्रव्योपार्जन करना चाहिये। जिस कार्य से पापारम्भ ज्यादा होता हो या लोक निंदा होती हो या जिस कार्य को करने से यह भव और पर भव बिगड़ता हो ऐसे कार्य को न करना चाहिए और न ही उसके द्वारा द्रव्योपार्जन ही करे। अर्थोपार्जन में अतिक्लेश, धर्म का उल्लंघन या नीच की संगति तथा विश्वासघात भी नही करना चाहिये। लेनदेन में वचन का घात न किया जावे इसके लिए खास ध्यान भी रखना चाहिए। व्यापार में एक तोल और एक और एक बोल ही रखना यह उन्नति का मार्ग है। अपनी कमाई का कम से कम चौथा हिस्सा पुण्य मार्ग में खर्च करना चाहिए।

व्यालु-

दिन के आठवें भाग में व्यालु (शाम का भोजन) कर लेना चाहिए। संध्या के समय चार काम बिलकुल ही नहीं करे। जैसे-आहार, मैथुन, निद्रा और स्वाध्याय। रात्रि भोजन का नियमित रूप से त्याग करने से एक महिने में पंद्रह उपवास का फल होता है।

संध्या पूजन एवं प्रतिक्रमण -

थोड़ा जल लेकर हाथ, पैर, मुख आदि को साफ करके सायंकाल की पूजा के लिये मंदिर जी में जावे और आरती तथा मंगल दीपक उतार कर प्रभु का पूजन करे। बाद में प्रतिक्रमण करने के लिये उपाश्रय में जावे, अगर गुरु का अभाव हो तो घर में आकर विधिपूर्वक प्रतिक्रमण करे और काउसग्ग के वक्त ध्यान रखे कि का उसग्ग में न्यून या अधिक न गिना जावे।

गुरु भक्ति -

प्रतिक्रमण के बाद गुरु की शारीरिक भक्ति वैयावच्च करे। गुरु की सेवा के समय मुख को वस्त्र को ढकना चाहिये जिससे थूंक आदि से उनकी आशातना न होजावे। गुरु को पाद स्पर्श न हो तथा और भी तेतीस आशातनाओं में से कोई आशातना न हो जावे इसकी पूर्ण सावधानी रखनी चाहिये। इस प्रकार गुरु की भक्ति करे।

शयन -

रात्रि के एक पहर व्यतीत होने के बाद ही शयन करे अर्थात् नव बजे बाद। सोते वक्त सात नवकार चौबीस तीर्थंकरों के नाम तथा और भी जो बोलने योग्य पाठ याद हों तो उसका पाठ करें और शुद्ध चित्त से शुभ भावना द्वारा इस प्रकार कह कर सोवेः-

अर्हन्तः शरणं संतु सिद्धाश्च शरणं मम
जिनधर्मो मे साधवः शरणं सदा ॥
खामेमि सव्व जीवे सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ति मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥

पिस्तालीस आगम

अग्यारह अंग, छः छेद
बारह उपांग, चार मूल
पयन्ना दस, दो चुलिका

श्रावक के १२ व्रत

सम्यक्त्व-श्रद्धा -

बाहर व्रतधारी को सब से पहिले अपना समकित-सम्यक्त्व निर्मल करना चाहिये। अर्थात् देव-गुरु-धर्म पर पूर्ण श्रद्धा कर लेनी चाहिए।

सुदेव -

अरिहंत-सर्वज्ञ वीतराग प्रभु को ही देव मानना। अन्य किसी देव को देव बुद्धि से न मानना - न पूजना। क्योंकि मोक्ष दाता सुदेव ही है।

सुगुरु -

पांच महाव्रतों के पालने वाले कंचन-कामिनी के सदा त्यागी, पाद विहार करने वाले, भिक्षा वृत्ति से निर्वाह करने वाले और धर्मोपदेश देने वाले साधु को ही गुरु मानना। क्योंकि वे निवृत्ति का उपदेश देते हैं, न कि आदेश।

सुधर्म -

तीर्थंकर भगवान का प्ररूपित, दयामय, स्याद्वाद शैलीयुक्त ऐसे धर्म को ही धर्म बुद्धि से मानना और उसी धर्म की आराधना करना।

१ स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत -

किसी भी निरपराधी त्रस जीव को हिंसा की बुद्धि से, अर्थात् जान-बूझ कर हिंसा न करना।

२ स्थूल मृषावाद विरमणव्रत -

१-कन्या आदि सम्बन्धी झूठ नहीं बोलना अर्थात् छोटी को बड़ी कहना, बड़ी हो तो छोटी कहना वगैरह। (''कन्या'' शब्द से दो पैर वाले दास-दासी आदि भी समझ लेने चाहिये)

२-गाय-भैंस आदि जानवर सम्बन्धी झूठ नहीं बोलना। छोटी को बड़ी, बड़ी को छोटी, दूध नहीं देती है तो भी यह कहना, कि दूध देती है, वगैरह।

३-भूमि, खेत, मकान सम्बन्धी झूठ नहीं बोलना। (अर्थात् किसी की ज़मीन नहीं तो भी उसकी ज़मीन कहना) वगैरह।

४-थापण मोसा-अर्थात् किसी मनुष्य ने कुछ द्रव्य या कोई चीज अमानत या गिरवी रखी हो उसको हड़प नहीं करना। अर्थात् जिस प्रकार अथवा जिस नियम से दियो हो उसी प्रकार वापिस कर देना।

५-कूट साक्षी-कोर्ट या अन्य जगह झूठी साक्षी या गवाही नही देना।

३ स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत -

१-गांठ खोल कर चीज़ नहीं लेना।

२-जेब-खीस्सा काट कर चीज़ नहीं लेना।

३-घर पर सेंध नहीं डालना।

४-ताला तोड़ना या चोरी करना नहीं।

५-रास्ते में जाने आने वाले को लूटना नहीं।

६-किसी की गिरी हुई चीज़ को अपने पास रखना नहीं।

अर्थात्-जिसमें राज दण्ड हो लोक में "चोर" की प्रसिद्धि हो ऐसा काम नही करना।

नोटः- इसमें विशेष बात लिखनी हो तो लिखी जा सकती है।

४ स्थूल मैथुन विरमण व्रत -

१-अपनी विवाहिता स्त्री को छोड़, संसार की समस्त सधवा, विधवा, अविवाहिता या वेश्या समस्त के साथ काया से विषय सेवन का त्याग। (इस तरह स्त्री के लिये पर-पुरुष का त्याग)

नोटः- द्वितीया, पंचमी, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावस्या तथा अन्य पर्व के दिनों में भी ब्रह्मचर्य पालना। जिसकी सूची हाथ से लिख लेनी चाहिए।

५ स्थूल परिग्रह परिमण व्रत -

धन, धान्य, घर खेत, जानवर, आभुषण, नकदी आदि समस्त मिलाकर कुल रु...........तक रखूंगा। उससे ज़्यादा हो तो धर्म कार्य में व्यय करना। इस तरह नियम करना अथवा यदि भिन्न २ नाम से रखना हो तोः-

१-नकद, सोना, रूपा, जवाहर, अशरफी आदि सब मिलाकर रु......तक रखना।

२-धान्य-एक वर्ष के लिए....मन धान्य से अधिक न रखना।

३-क्षेत्र...वीघे जमीन से अधिक नहीं रखना।

४-वस्तु-किमाड़ घर....गोदाम इससे अधिक नहीं रखना।

५-सुवर्ण...तोले से अधिक सोने की वस्तु नहीं रखना।

६-कुपद-तांबा, पीतल, लोहा, कांसा, एल्मुनियम, रांगा आदि धातु की वस्तुएं....मन से अधिक नही रखना।

७-दुपद-दास, दासी, नौकर....से अधिक नही रखना।

९-चौपद-घोड़ा, गाड़ी, गाय, भैंस, बैल वगैरह...से अधिक नहीं रखना।

६ दिशा परिमाण व्रत -

पूर्व में.....पश्चिम में....उत्तर में....दक्षिण में.....अग्निकोण में.......नैऋत्य कोण में...ईशान्यकोण में......ऊपर.......और नीचे.....इससे ज्यादा नही जाऊंगा।

नोटः- धर्म कार्य के लिए अधिक कोस भी दूर जा सकते हैं। तार व डाक वगैरह दूर दूर भी भेजे व मंगवाये जा सकते हैं।

७ भोगोपभोग परिमाण व्रत -

जो चीज़ एक ही दफा काम में आती है वह भोग कहलाती है। जैसे-भोजन, विलेपन, पुष्प आदि।

जो चीज़ अनेक बार काम में आवे वह उपभोग कहलाती है। जैसे-वस्त्र, अलंकार स्त्री आदि।

ऐसे भोग और उपभोग में आने वाली तमाम चीजों का परिमाण करना।

इस व्रत के लिये हर रोज़ सुबह शाम चौदह नियम करने चाहिए। और काम में आने वाली चीज़ों का नियम करना चाहिए। वे चौदह नियम यह हैं :-

सचित्त दव्व विगइ वाणह तंबोल वत्थ कुसुमेसु।
वाहण सयण विलेवण, बंभ दिसि म्हाण भत्तेसु॥

सबसे बड़ा सगपण - स्वधर्मी भाई

हर प्रकार से स्वधर्मि भाइयों की मदद करनी चाहिये।

१. **सचित्त :-**

(१) मिट्टी-नमक, वगैरह....सेर से ज़्यादा न लूंगा।

(२) पानी-पीने व स्नान करने तथा अन्य काम के लिये.....बालटी या घड़े से ज़्यादा न लूंगा।

(३) अग्नि-चूल्हे.....सगड़ी....इससे ज़्यादा काम में नहीं लूंगा।

(४) वायु-पंखे......हिंडोले......इस से ज़्यादा न लूंगा।

(५) वनस्पति-हरिवनस्पति.....से ज़्यादा न लूंगा।

२. **द्रव्य :-**

खाने पीने के पदार्थ.....ज़्यादा न लूंगा।

३. **विगय :-**

(१) मांस, मदिरा, मधु, मक्खन, इन चार महा विगय का त्याग।

(२) घी, तेल, दूध, दही, गुड़ और कड़ाइ विगय - अर्थात् तली हुई चीज़ इन छः विगयों में से......ही लूंगा, उसका नाम लिखा जाय, बाकी का मूल से त्याग रक्खा जाय।

नोटः- इन विगयों का यदि मूल से त्याग किया जाय, तो इन विगयों से बनी हुई चीज़ भी न ले और यदि कच्ची ही विगय का त्याग किया जाय तो ऊपर से ली हुई चीज़ न ले बाकी पकाई हुई चीज़ ले सकता है।

४. **वाणह :-**

बूट...जूते....मोजे की जोड़....चप्पल....लूंगा (या साथ जोड़ी लिख देना)।

५. **तंबोल :-**

पान, सुपारी, इलायची आदि मुख वास की चीजें.....लूंगा।

६. **वस्त्र :-**

.............रखूंगा।

७. **कुसुम :-**

फूल, तेल, अत्तर........लूंगा, इससे अधिक नहीं।

८. **वाहन :-**

मोटर, गाड़ी, घोड़ा, तांगा, नाव, हवाई जहाज वगैरह....प्रयोग करूंगा।

९. **शयन :-**

शय्या तथा जुदे २ स्थान पर बैठने में आसन आवें उनमें से.......की छूट है।

१०. **ब्रह्मचर्य :-**

परस्त्री (स्त्री के लिए पर पुरुष) का त्याग करना। स्वस्त्री (स्वपत्नि) के लिए धार लेना चाहिए।

१२. **दिशा :-**

शरीर से.......कोस से आगे नही जाऊंगा।

१३. **स्नान :-**

.....से ज्यादा दफा नहीं करना। हाथ पैर की शुद्धि की जयणा। अथवा लोकाचार में जाना पड़े तो जयणा।

१४. **भक्त-भोजन :-**

भोजन..सेर लूंगा । पानी....सेर लूंगा । दूध शरबत......सेर लूंगा।

इस के उपरान्त :-

असि.......शस्त्र ओज़ार..........रखूंगा।

मस्सी-दवात.........हौल्डर.....पैन्सिल........

तथा अन्य चीजें......रखूंगा।

कृषि-ज़मीन........वीघे रखूंगा। बागीचे की जयणा।

८. **अनर्थ दण्ड विरमण व्रत -**

जिससे निरर्थक पाप लगे, ऐसा कार्य नहीं करना। अर्थात्-जहां हिंसा का कार्य होता हो, वहां देखने नहीं जाना। जहां तक हो सके नाटक चेटक या भैसों की लड़ाई आदि देखने नहीं जाना और किसी को खास जान बूझ करके हिंसा के लिए नहीं देना।

९. **सामायिक व्रत -**

सालभर में.......सामायिक करना। सालभर का नियम न करना हो तो महीने २ में.....सामायिक करना।

अंतर में हर समय नवकार मंत्र जाप करना।

१० **देशावकाशिक व्रत -**

बारह मास में........देशावकाशिक करना।

नोट :- चौदह नियम धारना यह भी देशावकाशिक है। एक साथ दस सामायिक करना यह भी देशावकाशिक व्रत है।

११ पौषध व्रत –

सालभर में आठ पहर के या चार प्रहर के पौषध...करना।

नोटः- जहां तक हो सके उपवास करके पौषध करना चाहिए। नही तो आयंबिल या एकासना भी हो सकता है।

१२ अतिथि संविभाग व्रत –

मुनिराज को गोचरी बहरा कर ही भोजन करना चाहिए, इसका नाम है अतिथि संविभाग व्रत। मुनिराज का योग न हो तो किसी साधर्मी भाई को भोजन करवाकर भोजन करना चाहिए।

ऐसा अतिथी संविभाग सालभर में......करना।

इति श्रावक के बारह व्रत

(सम्पूर्ण)

त्याग करने योग्य वस्तुएं

तीर्थंकर महाराज ने जो त्यागने योग्य वस्तुएं बतलाई हैं उनमें २२ अभक्ष्य, ३२ अनंतकाय और १५ कर्मादान हैं इनके नाम ये हैं :-

१ वाईस अभक्ष

१. बड़ के फल
२. पीपल के फल
३. पिलखण के फल
४. कठुंवर के फल
५. गूलर के फल
६. मदिरा
७. मांस
८. मधु
९. मक्खन
१०. बरफ
११. विष
१२. ओले (जो बरसाद में पड़ते हैं)
१३. मिट्टी (सचित)
१४. रात्रि भोजन
१५. बहु बीज वाले फल
१६. संधान (अचार-बोल आदि का)
१७. द्विदल (दही के साथ कठोर चीज़ मिलाना)
१८. बैंगण
१९. तुच्छ फल (खाने का थोड़ा फैंकने का ज्यादा)
२०. अज्ञात फल
२१. चलित रस
२२. बत्तीस अनंतकाय

नोटः- जिन चीज़ों की छूट रखनी हो वे ऊपर नोट कर लेनी चाहिए।

अज्ञात अवस्था में किये कर्मों का प्रायश्चित करना ।

३२ बत्तीस अनंत काय -

१ सूरनकंद
२ वज्र कंद
३ हरी हल्दी
४ सतावरी
५ हरा नरकचूर
६ अद्रक
७ वरीयाली कंद
८ कुंवारी-गवार पाठा
९ थोर
१० हरी गिलोय
११ लस्सन
१२ वांस करेला
१३ गाजर
१४ लुनियां की भाजी
१५ लोढ़िया की भाजी
१६ गिरि कर्णिका
१७ पत्तों के कुंपल
१८ खर सुआ
१९ थेगी
२० हरा मोथा
२१ लूण वृक्ष की छाल
२२ विल हुंड़ा
२३ अमृत वेली
२४ कांदा मूला
२५ छत्र टोप
२६ विदल के अंकुर
२७ बथवे की भाजी
२८ बाल
२९ पालक
३० कुली आमली
३१ आलु कन्द
३२ पिंडालु

धर्म

दुर्गति प्रसृतां जीवान्, यस्मात् धारयते ततः ॥
धत्ते चैतान् शुभे स्थाने, तस्मात् धर्म इति स्मृतः ॥१॥

दुर्गति में पडतों को बचाकर शुभ स्थान में रक्खे उसे धर्म कहते हैं।

प्रतिदिन स्वाध्याय धार्मिक पुस्तक पढ़ना

नोट :- इसमें जो चीज़ रखनी हो उस पर निशान कर लेना चाहिए।

१५ कर्मादान -

१ इंगालकर्म-चूना, ईन्ट आदि पकाना। भड़भूंजे वगैरह की भट्टी करना और कराना।

२ वन कर्म-जंगलों को कटवाना वगैरह।

३ साड़ी कर्म-गाड़ी, मोटर, हल वगैरह का व्यापार। और सवारी के जानवर बेचना।

४ भाड़ी कर्म-गाड़ी, बैल, हल वगैरह किराये पर चलाना।

५ फोड़ी कर्म-खानें खुदवाना, सुरंग तुड़वाना आदि।

६ दंत वाणिज्य-हाथी दान्त का व्यापार करना। तथा जानवरों के सींग, हड्डी, नख आदि का व्यापर।

७ लक्ख वाणिज्य-लाख तथा गोंद आदि का व्यापार।

८ रस वाणिज्य-घी, गुड़, तेल आदि का व्यापार।

९ विष वाणिज्य-अफीम, सोमल आदि ज़हरी चीज़ों का व्यापार।

१० केश वाणिज्य-पशु, पक्षी के केश, पंख, ऊन आदि का व्यापार।

११ यंत्र पीलण-मिल, जीन, सांचे, चक्की आदि का पानी सुखवाना।

१५ असति पोषण-क्रीडा के लिये कुत्ता, बिल्ली, तोते आदि का पालना।

नोटः- जिस व्यापार के लिये छूट रखना हो उस पर निशान कर लेना किस व्यापार के शेयर, ब्रान्ड आदि रखने पड़ें तो उसकी जयणा करना।

गुरुगम मिलनेपर ज्ञान चर्चा करना।

आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥

शरीर व आत्मा की आरोग्यता (रोग रहित पणुं) ज्ञान प्राप्ति, एवं समाधिपूर्वक मृत्यु दो।

शकुन विचार

शकुन एक दिवो
ग्रामान्तर या परदेशं रवाना होते समय अच्छें
शुकन होना भविष्य में कल्याणकारी है !
मृग डाबा सें जीमणा हो तो श्रेष्ट है !
डाबी छीक जीमणी खांसी अच्छीं है !
काग डाबा बोलता हो तो अच्छा है !
गधा डाबा भूंखें तो अच्छा है ?
सर्प जीमणा हो तो बहुत अच्छा।
रुपारेल डाबा सें जीमणी जातीं अच्छी है और
सन्मुख आती हो तो बहुत अच्छी है।

आटों कांटो घी घडो, खुला लटीं नार।
डाबाभलान जीमणा, लालीं जरख सो नार ॥१॥
कुंभ करेवों चीवडों, हडमत ने हींरणा ?
येता लीजे जीमणा, प्रभातें निरणा। (२) ?
मृग घरसें डाबा परघर जींमणा अच्छा हैं ?
कोचरी और सोनचीडी जीमणी अच्छी है ?
डाबी छीक जीमणी खांसी,
रोती नार सासरे जाती !
जो बलद खंचाऊ आवें,
तब बिभीषण लंका पावे ! ३।

ग्रामान्तर जाते समय सन्मुख कुंवारीं कन्या, सधवा स्त्री, पुत्र सहित, गुड या खींर से भरा हुआ घडा, दही; भेरी, पुष्पमाला, निर्धूमाग्नि, राजा, मुनि, चावल, रत्त, वीणा; ध्वजा; पताका इत्यादि सामने आनेसे शुकन अच्छा और कार्य की सिद्धि होती है ! नीलचास पक्षी मयूर नौउला दृष्टिगत हो तो उत्तम है !

कुर्कट डाबा बोलें तो उत्तम है ?
नाहार जीमणीं तरफ मीले तो अच्छा।
सूवा जीमणीं तरफ बोंले तो धन लाभ होता है ?
तीतर जीमणा अच्छा डाबासें जीमणा बहुत अच्छा !
बुगला बोलता हुआ व ऊंचा उडता हूआ दीखें तो कन्या
तथा धन का लाभ और मित्र समागम हो ?
बहुतसे चकवे एक झाड पर देखें तो धन लाभ हो
सारस डाबी देखें तो महान लाभ हो !
टीटोंडीं सन्मुख बोले तो संतोष या लाभ होंवे ?
घूघू डाबी तरफ बोले तो उन्नत फलदाता हो ?
मयूर एक शब्द बोले तो धन लाभ दो बार बोलें तो स्त्री
लाभ नाचता हुआ देखें तो उत्साह बढे ?
कबूतर जीमणीं तरफ लाभदाई है !
मुर्गा डाबी तरफ बोलें तो उत्तम है !
निलकंठ सन्मुख आता हो तों धनलाभ है।
भ्रमरा डाबी तरफ फूल पर बैठा हो तो उत्तम फल
कानखजुरका डाबा जाना अच्छा !
हस्तीं घोडा जीमणा अच्छा है ?
उंट गधा डाबा लाभकारी होता है !

बन्दर जीमणा हो तो बहुत अच्छा है ?
कुत्ता जीमणा और मुख में भक्ष हो तो अच्छा।
बिल्ली जीमणीं अच्छीं है?
कोयल जीमणी लाभकारक है।
सोवन चिडीं जीमणी धन लाभ करावें ?
रसोई तैयार हो और मनवार करें तो जीमणा अच्छा ! जावो जावो फते होगा सिद्ध होगा ऐसा शब्द बोलता हो तो उसी समय रवाना होना बहुत इत्यादि अच्छा शकुन से परदेश या ग्रामान्तरे जाना, शुभ निमित्त से कार्य की सिद्धि होती है।

डाबा तीतर डाबा मोर, जीमणा हंस करे कलोल
जीमणे मले गउ को जायो, लंकाराज विभीषण पायो

ये शकुन दो तरह के होते हैं (१) द्रष्ट शकुन, (२) शब्द शकुन।

द्रष्ट शकुन - आँखों से देखा जाय।

शब्द शकुन - कानों से सुना जाय।

यदि पुन्याई प्रबल हो तो शकुन अच्छे होते हैं यदि पाप का उदय हो तो अपशकुन होते हैं।

तादृशी जायते बुद्धिः, व्यवसायोपि तादृशः ॥
सहाया, तादृशाश्चैव, यादृशी भवितव्यता ॥१॥

होनहार होगा, उसे कोई भी नहीं मिटा सकता बुद्धी कर्मानुसारिणी।

(१) जाते समय रवाना हुये वहाँ अच्छे शकुन हो तो समझना अपना काम बन जायेगा।

(२) घर से रवाना हुये और अच्छे शकुन नहीं हुये तो थोडी देर ठहर जाना। इस तरह दो वखत देख लेना पर बार-बार अपशकुन हो तो काम नहीं बनेगा।

(३) घरसे रवाना हुये और किसी दूसरे ने कहाँ कि तुम्हारा काम फतेह होगा तो शुभ शकुन है।

(४) ज्योतिष का फरमान है कि वार से तिथी बलवान, तिथी से नक्षत्र बलवान, नक्षत्र से करण बलवान, करण से लग्न बलवान, लग्न से निमित्त बलवान, निमित्तसे मन के उज्वल भाव बलवान, भाव से पूर्व संचित पुन्य, इसलिये पुन्य पर जोर देना।

(५) हरिभद्र सूरीश्वरजी महाराज फरमाते हैं चौथ का चंद्रमा नहीं देखना, नक्षत्र, मुहुर्त, तिथी, करण से शकुन बलवान होता है।

(६) साधु, राजा, हाथी, घोडा, मोर, बेल, गाय, राजहंस, सधवा नार, स्त्री-

पुरुष का जोड़ा, मुसाफरी करते समय सामने मिले तो अच्छा है। मन धारा काम बनेगा।

(७) फल, फूल, आभुषण, ध्वजा, छत्र, सोना, चांदी पहनी स्त्री चवर, रथ, पालखी, बाजा, वीणा, सितार, सारंगी, मृदंग, चंदन, काच, पानी का भरा घड़ा, रसोई थाल, दही, हथियार, पंखा, बिना छुये की अग्नि, कुवारी कन्या, पान खाता हुआ पुरुष, मीटाई आदि सामने मिले तो शुभ शकुन जानना।

(८) घर से या दुकान से रवाना होते समय, कारणवाली स्त्री, विधवा, गर्भवती, खुल्ले केशवाली ऐसी सामने मिले तो अपशकुन जानना, अगर विधवा माँ हो तो शुभ शकुन समझना।

(९) पाडा, या पाडे पर चढा आदमी, ऊंट या ऊंट पर चढा आदमी, गधे पर चढा आदमी सामने मिले आदमी, गधे पर चढा आदमी सामने मिले तो अपशकुन। नपुंसक, रोता पुरुष भी अच्छा नहीं।

(१०) मुसाफरी करते समय, सर्प, किर काटिया, छिपकली, गो, छोटी-बड़ी, बिल्ली, काला कुत्ता रस्ता काटे तो अच्छा नहीं।

(११) मुर्गे की आवाज, मोरकी आवाज, गधे की आवाज डावी सुनाई दे तो बहुत अच्छा काम बनेगा।

(१२) मुसाफरी करते समय ठोकर लगे, किसी वस्तु में कपडा अटक जाय, धजा गिरपडे, लूला, लंगडा, काणा, अंधा, लडती हुई बिल्ली, दुर्गंध वस्तु सामने मिले तो अच्छा नहीं।

(१३) घर से रवाना होते राख, हाडके, पत्थर लेकर, तेल, चमडा, चरबी, फुडा हुआ बर्तन, सुका घास कपास, केश, काले रंग के कपडे पहने स्त्री हो या पुरुष, लोहा, सांकल, अशुभ शब्द आदि सामने आये को अपशकुन है, तखलिफ आयेगी।

(१४) सारस का जोडा दिखाई देना अच्छा है। आवाज करे तो और भी अच्छा, सामने भात लेकर पुरुष या स्त्री मिले तो अच्छा है।

(१५) सामने पागल आवे या गीले कपडे पहना आदमी आवे तो अच्छा नहीं। जाते समय सूर्य स्वर चले शीघ्र काम बनेगा। चावल, गेहू, बाजरी, जुवारी खाने योग्य धान लैकर सामने मिले तो अच्छा शकुन है। छोटा बच्चा, या बच्चे को लेकर औरत या मर्द सामने मिले तो अच्छा है।

उपरोक्त शकुन देखना चाहिये, शकुन दीपक है।

ग्रह दशा पर –

कौनसा नग पहनना

८४ रत्नों की पहिचान

१.	*माणिक*	(माणक) यह लाल रंग का होता है, इसको अंगूठी या चेन में अंगपर धारण करनेसे सूर्यग्रह की शांति होती है.
२.	*हीरा*	सफेद व गुलाबी रंग का होता है, इसको धारण करने पर शुक्र ग्रह की शांति होती है।
३.	*पन्ना*	सब्ज और गुलाबी रंग का होता है, इसको धारण करने से बुध ग्रह की शांति होती है।
४.	*नीलम*	नीले रंग का होता है, इसको धारण करने से शनि की महादशा शांत होती है।
५.	*लसनीया*	बिल्ली की आंख सरीखा होता है इसके धारण करने से केतु ग्रह की दशा शांत होती है।
६.	*मोती*	सफेद होता है, कहीं-कहीं काला-गुलाबी भी पाया जाता है। इसको धारण करनेसे चंद्र ग्रह शांत होता है
७.	*मुंगा*	मुंगा इसका रंग लाल होता है और इसको धारण करनेसे मंगल की दशा शांत होती है।
८.	*पुखराज*	पीला,सफेद और नीले रंग का भी होता है इसके धारण करने से गुरु की दशा शांत होती है।
९.	*गोमेदक*	लाल धुए के समान होता है, इसके धारण करनेसे राहू ग्रह की दशा शांत होती है।
१०.	*लालडी*	यह गुलाब के फूल समान होती है , और २५ रत्ती से ऊपर होने से लाल कहा जाता है।
११.	*फीरोजा*	आसमानी रंग का होता है और कंकरों के समूह में मिलता है।

१२.	*ऐमनी*	अधिक लाल थोडा स्याहीपन का होता है इसको मुसलमान ज्यादा पहनते है, आनंददायक होता है।
१३.	*जवरजद्द*	सब्ज और स्याही समान होता है.
१४.	*तुर्मनी*	इसके रंग पांच प्रकार के होते हैं जात-पुखराज की है हल्का व नर्म होता, मंगलकारी होता है।
१५.	*उपल* का	इसके नाना प्रकार के रंग होते है उपर एक तरह अभ्र पडता है।
१६.	*नरम*	लाल जरदपन सरीखा होता है।
१७.	*सुनहला*	सोने के धुये समान होता है।
१८.	*धुनेला*	यह भी सोने के धुये समान होता है।
१९.	*कटेला*	बैगन के रंग समान होता है।
२०.	*संग सितारा*	बहुत प्रकार के रंग भरा होता है, उपर सोने के रंग समान दाग होते हैं।
२१.	*स्फटिक*	बिल्लोर इसका रंग सफेद, चमकदार होता है।
२२.	*गउदन्ता*	गाय के दन्त समान थोडा जरद व सफेद रंग का होता है।
२३.	*तामडा*	काला सूर्ख रंग का होता है चमक रहती हैं।
२४.	*लुधिया*	मजन्टा अथवा चिरमी के समान लाल रंग का होता है।
२५.	*मरीयम*	सफेद रंग का होता है, इसकी पालिस अच्छी होती है।
२६.	*मकनातीस*	थोडा स्याहीपन और सफेद चमकदार होता है।
२७.	*सिन्दूरिया*	सफेद रंग लिये हुये कुछ गुलाबी रंग का होता है।
२८.	*लीली*	यह नीलम की जात है, परन्तु नीलम से कुछ नरम और थोडा जर्द होता है।
२९.	*बैरूज*	हल्का सब्ज इस को खान (टोडा)में है।

३०.	*मरगज*	जात पन्ने की रंग सब्ज, इसमें पानी नही होता
३१.	*पितोनीया*	सब्ज के उपर सूर्ख छीटेदार होता है।
३२.	*बांसी*	सब्ज हल्का तथा संगे-सम से हल्का और नरम होता है लेकिन पालिस अच्छी चमकदार होती है।
३३.	*दुरेलजफ़*	कच्चे धान के समान रंग होता है इसकी भी पालिस बहुत अच्छी होती है।
३४.	*सुलेमानी*	काले पर सफेद डोरे होते है।
३५.	*आलेमानी*	भूरे रंग पर उपर सफेद डोरे होता है।
३६.	*जजेमानी*	रंग पारे के समान होता है, जात सुलेमानी।
३७.	*सिवार*	सब्ज उपर भूरे रंग की रेखा होती है।
३८.	*तुरसावा*	गुलाबीपन लिये हुये जर्द होता है, इसका पत्थर बहुत नर्म होता है।
३९.	*अहवा*	गुलाबी रंग उपर बडे बडे छींटे होते हैं।
४०.	*आवरी*	कालापन लिये हुये, सोने के समान होता है।
४१.	*लाजवरद*	नीले रंग का होता है।
४२.	*कुदरत*	काला रंग का होता है, सफेद व जर्द दाग होते हैं।
४३.	*चित्ती*	काले पर सोने के छीटे और सफेद डोरा मालूम होते हैं।
४४.	*संगेरस*	इसकी दो जात होती है, अंगूरी एवं सफेद, अंगूरी अच्छा होता है।
४५.	*लास*	जात-मारवर की
४६.	*मारवर*	रंग पारे के समान, रंग लाल व सफ़ेद मिला होनेसे मकराना भी कहलाता है।
४७.	*दाना फ़िरंग*	पिस्ते के समान थोडा सब्ज होता है यह तीन प्रकार का होता है. सोनाकस, लोहाकस, चांदीकस, अंत के दो तो मिलते, पहेला नही मिलता।

४८.	*कसौटी*	काला रंग, इससे सोने के कस की परीक्षा होती है।
४९.	*दारचना*	चने की दाल समान पीला तथा लाल टिकीया के समान स्याह जमीन पर होता है।
५०.	*हकीके कुलबहार*	सब्जपन के साथ जद मिला होता है मुसलमान जपने की माला बनाते हैं। यह पत्थर जल में होता है।
५१.	*हालन*	गुलाबी मैला, हिलाने से हिलता है।
५२.	*सिजरी*	सफेद उपर श्याम दरख्त दिखता है।
५३.	*सुवेनजफ*	सफेद में बाल शरीखी रेख होती है।
५४.	*कटरवा*	पीले रंग का होता है, जिसका बोरखा तथा माला बनती है।
५५.	*झरना*	मटिया रंग का, जिसे पानी देने पर सब पानी झर जाता हैं।
५६.	*संगे वसरी*	आंख के सुरमें में काम आता है, रंग काला होता है।
५७.	*दांतला*	जरदपन लिये सफेद होता है, पुराने शंख समान होता है।
५८.	*मकडी*	सादापन लिये हुये काला, उपर मकडी के जाल समान।
५९.	*संगीया*	शंख के समान सफेद, इसका घडी का लाकेट बनता है।
६०.	*गुदरी*	नाना प्रकार के रंगवाला होता है, इसे फकीर पहनते हैं।
६१.	*कासला*	सब्जपन लिये सफेद होता है।
६२.	*सिफरी*	सब्जपन लिये, आस्मानी रंग का होता है।
६३.	*हदीद*	भूरापन लिये स्याह, वजनदार होता है
	मुसमलान	इसकी तसवीह बनाकर जाप करते है।

६४.	*हवास*	सोनापन लिये सब्ज होता है, औषधियों में काम आता है, यह शक्तिशाली दवाई में आता है।
६५.	*सिंगली*	जाति (माणक) की, स्याही व सुर्खी मिला हुआ रंग होता है।
६६.	*ढेडी*	काला रंग, इसकी खरल व कटोरे बनते है।
६७.	*हकीक*	अनेक प्रकार रंगोंवाला होता है, जिसका घडी का मुड्डा कधोरे एवं खिलौने बनते हैं।
६८.	*गोरी*	अनेक प्रकार रंगोंवाला, सफेद सूत सरीखा होता है।
६९.	*सीचा*	काला रंग, इसकी नाना प्रकार की मूर्तिये बनती है, यह चीकना चमकदार होता है।
७०.	*सीमाक*	लाल, जरद, एवं कुछ शाहमाइल होता है उपर सफेद जरद व गुलाबी छीटा होता है इस की खरल कटोरे बनते हैं।
७१.	*मुसा*	सफेद रंग, खरल कटोरे बनते है।
७२.	*पनधन*	कुछ सब्जपन लिये काले रंग का होता है।
७३.	*अमलीया*	कुछ कालापन लिये, गुलाबी रंग का होता है।
७४.	*डूर*	कत्थे समान रंगवाला होता है, हड्डी सड जाने पर दवाई में काम आता है।
७५.	*तिलमर*	काला उपर सफेद छींटा, इसके खरल बनते हैं।
७६.	*स्वारा*	सब्जपन लिये भगंदर रोग पर इसका पाउडर काम लेते हैं।
७७.	*पाय जहर*	सफेद पारे के समान रंगवाला होता है, विष जहरीले सर्प-विछू काटने की जगह लगाने से एक क्षण में विष खेच लेता है।
७८.	*सिरखडी*	मिट्टी के समान रंगवाला होता है इसके सुन्दर खिलौने बनते हैं। जिसके शरीर पर धाव पड गये होते है। उनमें घिसकर लगाने पर घाव जल्दी भर

जाता है।

७९. *जहर मोहरा* कुछ सफेद रंग लिये होता है, सब्ज रंग का भी होता है। यदि कोई जहरीली वस्तु हो या जहर व्याप्त हो तो जहर नष्ट हो जाता है।

८०. *रतुबा* लाल रंग का होता है। जिसे रात में ज्वर (ताव) आता हो उसके गले में बांधने से ज्वर नहीं आयेगा एकान्तरा - तेरान्तरा भी नहीं आयेगा।

८१. *सोनामक्खी* नीले रंग का होता है, औषधियों कई दवाईयों में यह काम आता है।

८२. *हजरतेय हूद* यह सफेद मीट्टी के समान होता है इससे मूत्र पेशाब की बिमारी में काम आता है।

८३. *सुरमा* आंख की प्रत्येक बिरामी में काम आता है, यह आँख का जाल काट देता है।

८४. *पारस* काला रंग इसको लोहा के लगानेसे लोहा सोना बन जाता है। यह अर्वली पहाड (आबू) में हैं।

इन रत्नों के चमत्कारी गुण है, स्वाभाविक ये मनुष्य को लाभ देते हैं। ये एक प्रकार के सब पत्थर होते हैं। इनको भाग्यशाली ही पहिचान देख सकता हैं।

बहु रत्ना वसुन्धरा

जीवन की सार्थकता – सब के साथ प्रेम

Girish M. Jain
Dinesh Jain

New

MAN - MANDIR

SUITINGS, SHIRTINGS, SAREES & DRESS MATERIALS

S. V. ROAD, MALAD (WEST), MUMBAI - 400 064.
PHONE : 889 92 76 / 882 00 28

अष्टांग निमित्त

जैन शास्त्र चौदह पूर्व में आठ तरह के निमित्त शास्त्र कहे गये हैं। इसलिये इनको अष्टांग निमित्त कहते हैं।

(१) ***अंग स्फूरण निमित्त***	जो शरीर के अवयव फडकते हैं।
(२) ***स्वप्न शास्त्र***	रात्री में अथवा दिन में सोने पर जो स्वप्न आते हैं उनका फल तथा समय।
(३) ***स्वर-विज्ञान***	मनुष्य तथा पक्षियों की बोली पहेचान कर भावि भविष्य ज्ञान प्राप्त करना।
(४) ***भूमिकंप निमित्त***	पृथ्वीपर एवं आकाश में नूतन वस्तु दिखाई देना, भूमि कंपन ज्ञान।
(५) ***व्यंजन निमित्त***	तिल, मसा, काले दाग, लाल दाग, सफेद दाग आदि शरीर के चिन्हों का फल।
(६) ***रेखा निमित्त***	हाथ, पग, ललाट आँख, पेट आदिपर रेखाओं का ज्ञान।
(७) ***उत्पात निमित्त***	संसार में पृथ्वी पर कहां, कैसा उत्पात होनेवाला है, उसके चिन्ह पहले ही दिखाई देते हैं उनका वर्णन।
(८) ***अंतरिक्ष निमित्त***	आकाश विज्ञान और उसमें नये नये तारे चिन्हों का उद्‌गम ज्ञान।

उपरोक्त जैन शास्त्र आगमों के आधारपर उधृत किये जाते हैं

अंगं स्वप्नःस स्वरश्चैव। भौमं व्यंजन लक्षणे ॥
उत्पातमंतरिक्षं च। निमित्तं स्मृत मष्टघा ॥१॥

उत्तराध्ययन के आठवे अध्ययन में

पहेला अंगस्फूरण (अंग फडकना)

सिरफुरगे किर रज्जं, पियमेलो होइ बाहुफुरणंमि ॥
अछि फुरणंमि अ पियं, अहरे पिय संगमो होई ॥१॥

पुरुष के दाहिना (जीमना) मस्तक फडके तो, राज सन्मान मिले, जीमना हाथ फडके तो प्रिय (जोभी) का मिलन हो। जीमनी आँख फडके तो मित्र मिलन या लाभ हो, नीचे का ओठ फडके तो सम्बन्धी का मिलन हो।

स्त्री का जाबा अंग, और पुरुष का जीमना अंग समझना, पुरुष का डाबा कहा हो वहां स्त्री का जीमना समझना।

पुरुष का जीमना मस्तक फुरके तो नेता कार्यकर्ता बने, लिलाट फुरके तो भी राज लाभ हो।

''शिरसः स्पंदनं राज्यं, स्थान लाभो ललाटके''

जीमना - कान फडके तो अपनी प्रशंसा सुनाई दे।

डाबा - कान फडके तो बुराई निंदा अपयश सुनाई दे।

जीमना - जीमनी आँख का पलक फडके तो दोस्त मिलन या शुभ समाचार मिले।

डाबा - आंख का पलक फडके तो किसी से झगडा हो।

जीमना - जीमनी आँख के उपर का पलक फडके तो अपना काम पूर्ण होगा। अगर नीचे का फडके तो काम बिगड जायेगा। दोनों साथ पलक फडके तो नुकसान होगा, चिंता होगी।

जीमना - गाल फडके तो एश आराम मिलेगा।

डाबा - गाल फडके तो तकलिफ होगी, अकस्मात बिमारी आयेगी।

उपर का - ओठ फडके तो किसी से झगडा होगा।

जीमनी - गर्दन फडके तो अकस्मात रुपये मिले।

डाबी - गर्दन फडके तो रंज (दुख) पैदा करे।

जीमना - कंधा फडके तो भाई संगे सम्बन्धी मिले।

डाबा - कंधा फडके तो अशुभ माना है।

जीमनी - छाती फडके तो मिलन।

डाबी	-	छाती फडके तो जुदाई, विवाद
पेट	-	फडके तो आनंद मिले, अच्छा भोजन मिले।
नाभी	-	फडके तो अपनी इज्जत से आदमी गिर जाता है।
जीमनी	-	हाथ की हथेली फडके तो लाभ होगा।
डाबी	-	हथेली फडके तो नुकसान।
जीवना	-	पोव (पग) फडके तो मुसाफरी करे।
डाबा	-	पांव फडके तो रंज दुख पैदा करें।
गुदा	-	फडके तो शत्रुओं का नाश होता है।
इंद्री	-	फडके तो स्त्री समागम होता है।
साथल	-	जंघा फडके तो सवारी करेगा।

आदि-आदि शास्त्रों में बहुत विस्तृत वर्णन है

आठ कर्म कैसे है

नैन पट्टी ज्ञानावरण, दर्शन-पहरेदार ॥
असीधार मधुलेपना, वेदनीकर्म आधार ॥
मोहनीय-मदिराकह्यो, पग बेडी है आयु ॥
नाम-चित्रकारी समो, कुंभकार-गौत्रायुं ॥
अंतराय भंडारी समो, कर्म आठ है जान।
इन्हें समझ कर छोडदो, ज्यूं पावो निर्वान ॥

ज्ञान आत्मा का प्रकाश है।
जयान्ति-बाफना

Jayantilal M. Bafna

Director : Sterling Strips Ltd.
Treasurer : Rajasthani welfare Association

Bafna

Metal Corporation

131, Kika Street, Gulalwadi, Bombay-400 004.
Off: 373 80 63, 371 63 18, 371 68 30 | Resi: 492 84 36

स्वप्न ज्ञान

स्वप्न ज्ञान से भविष्य में होनेवाले जीवन के उतार चढाव, सुख-दुख का पहले ज्ञान हो जाता है। शास्त्रकारों ने स्वप्न का वर्णन निम्न प्रकार किया है।

स्वप्न शास्त्र में बडे स्वप्ने ७२ इनमें ३० बड़े और इनसे सबसे बडे स्वप्न १४ है, तीर्थंकरों की माता, चक्रवर्तीयों की माता ये १४ स्वप्न देखती है। हाथी, वृषभ, सिंह, लक्ष्मी, फूलों की माला, सूर्य, चन्द्र, ध्वजा, कलश, पद्मसरोवर, समुद्र, देव विमान, रत्नों की राशी, अग्निशिखा, वासुदेव की माता इनमेसे सात स्वप्न देखे, बलदेव की माता इनमें से चार स्वप्न देखे।

अनुभूत जो चिज दिन में देखी अनुभव की चिज का स्वप्न व्यर्थ जाता है। जो धन्धा करता है उसी धन्धे के स्वप्न निरर्थक होते हैं। सुनी-सुनाई बातों के स्वप्न भी व्यर्थ होते है।

पित्त प्रकृतिवाला स्वप्न में फल, फूल, अनाज, बाग, लाल, पीले जवाहरात आदि देखता है, यह भी व्यर्थ है।

व्याधितेन सशोकेन, चिन्ताग्रस्तेन जन्तूना ॥
कामार्तनार्थ मत्तेन, दृष्ट स्वप्नो निरर्थकः ॥

बिमारी से, चिन्ता से, कामार्थी, पागलपन से आदि स्वप्ने निरर्थक ही होते हैं। वायु प्रकृतिवाला पहाडपर चढना, वृक्षोपर चढना आदि।

स्वाभाविक या अपने-अपने इस्ट देव की प्रेरणा से जो स्वप्ने आवे वे सच होते हैं। अधिक पुन्य अधिक पाप से भी स्वप्न आया करते हैं।

(१) रात की प्रथम प्रहर में देखा स्वप्न एक वर्ष में फल देगा।
(२) दूसरी प्रहर में देखा स्वप्न छ मास में फल देगा।
(३) तीस प्रहर में देखा हुआ स्वप्न तीन मास में फल देगा।
(४) रात की चौथी प्रहर में देखा स्वप्न एक मास में फल देगा।

सुबह सूर्योदय पहले स्वप्ना देखा हुआ तात्कालिक फल देगा। दिन का स्वप्न व्यर्थ होगा। कभी निर्मल भाव से आया हो तो फल देनेवाला होता हैं।

अच्छा स्वप्न आया और नींद खुल गई तो फिरसे सोना नहीं। यदि बुरा स्वप्न आ जाय और नींद खुल जाय तो वापिस सो जाना।

यदि अच्छा स्वप्न आया होतो जिन प्रतिमा या गुरु सन्मुख कहना। अज्ञानी को नहीं सुनाना।

(१) हाथी पर, घोडेपर, रथपर चढकर समुद्र की ओर चला, देखे तो उच्च पदवी प्राप्त करता है।

(२) तीर्थयात्रा, प्रभुदर्शन, मुनि दर्शन, सज्जन दर्शन यदि स्वप्न में देखे तो शीघ्र ही उसे लाभ होगा।

(३) फूल का हार पहना, फूल का ढेर देखना, फूलों की वर्षा आदि देखने पर कुछ ही समय में लक्ष्मी प्राप्त होगी।

(४) समुद्र, तलाव, नदी, नाला पानी से भरा हुआ देखे तो शीघ्र ही लाभ होगा।

(५) सूर्य उदय देखना, जलती अग्नि, ग्रह, नक्षत्र, जिन मंदिर या किसी देव के दर्शन शीघ्र फलदायक होते है।

उत्तराध्ययन सूत्र अध्याय ८ वा. टिका

अलंकृतानां द्रव्याणां, वाजिवारणयोस्तथा ॥
वृषभस्य च शुक्लस्य, दर्शने प्राप्नुयाद् यशः ॥१॥

श्रृंगार किया हुआ हाथी, घोडे या अन्य श्रृंगार की हुई वस्तु देखे या श्वेत बेल देखे तो खूब यश प्राप्त करता है।

(१) हाथी, घोडा, गाडी, वस्त्र, चोर ले जाय तो मान हानि होगी।

(२) स्वप्न में हाथी, घोडे, रथ या अन्यपर चढकर फिरे तो कुछ ही समय में लाभ होगा।

(३) स्वप्न में मोती के थाल भरे, देखे, मोती के हार पहने देखे, छत्र-चामर देखे तो उसकी समाज में इज्जत बढे।

(४) बिमार-स्वप्न में सूर्य चन्द नक्षत्र वा अग्नि देखे तो शीघ्र ही उसकी बिमारी चली जायेगी।

(५) स्वप्न में वीणा, वाद्य काच (दर्पण) दिखाई दे तो लाभ होगा।

(६) श्रृंगार की हुई स्त्री दिखाई दे तो शीघ्र लग्न होगा। ध्वजा, पताका, उडता हुआ पतंग दिखाई दे तो लाभ होगा।

(७) स्वप्न में खीर खाना, मिष्टान्त खाना, उसे शुभ समाचार मिलेंगे। जहाज पर चढकर समुद्र की सैर करे तो उसे लक्ष्मी मिलेगी। यदि बिमारी की हालत में देखे तो बिमारी मिट जायेगी।

(८) नाच-रंग देखना अच्छा है, खुद नाचना गाना बुरा है। इष्ट देव या प्रभु के सामने स्तवन गाना अच्छा है। स्वप्न में काले रंग की वस्तु देखना खराब है। किन्तु हाथी या देवता काले रंग का देखना अच्छा है।

(९) स्वप्न में स्त्री हरण, जुत्ते ले जाना, चोर चोरी करना इत्यादी स्वप्ने अनिष्ट कारक है।

(१०) स्वप्न में मरा हुआ देखना अच्छा है (व्यवहार में ठीक नहीं) ऊंट, गधा, भैसा, बकरा आदि पर बैठना देखे तो खराब है, स्वप्न में पान, सुपारी, चंदन, कपुर, सफेद फूल लाभकारक है।

(११) जो व्यक्ति स्वप्न में किचड में फसा हुआ देखे तो उसकी मृत्यु समीप में है। गांव, नगर, मकान जलते हुये देखेतो अनिष्ट है।

(१२) स्वप्न में आभूषण, कपडा, मकान, आसमन इनाम में मिले ऐसा देखे तो शीघ्र लाभ होगा। स्वप्न में किसी हरे वृक्ष पर चढता हुआ देखे तो शीघ्र लाभ होगा। स्वप्न में मिठाई, मेवा देख या स्वयं ने खाया देखे तो खुशी प्रसन्नता प्राप्त होगी।

(१३) स्वप्न में स्वयं ने आभूषण पहना, या मिला देखे तो लाभ होगा, गुम गया देखे तो नुकसान होगा, आकाश में चमते तारे या सूर्य देखे तो उसे राजकारण में लाभ होगा, तारे तूटते हुये देखे तो नुकसान होगा।

(१४) स्वप्न में हिंसक जानवर, क्रूर राक्षस या क्रूर चोर दिखाई दे तो किसी से अकस्मात झगडा होगा। अपने बाल गिरते देखे या दांत टूट गये देखे तो चिंता करावे। स्वप्न में कोई आदमी अपने से झगडा करने आया देखे या स्त्री देखे तो किसी से झगडा होगा।

(१५) स्वप्न में फल दिखाई दे, फल खाना, फल दूसरों को देना, प्रभु को

फल चढाना देखे तो अकस्मात लाभ होगा। स्वप्न में गांव, नगर, देखे तो लाभ होकर मिलन होगा। स्वप्न में लोटा, कपास, तेल, घी देखना बुरा है। स्वप्न में हाथ, पग, नाक, कटा या काटते हुये देखे तो आफत तकलिफ आयेगी।

(१६) स्वप्न में भूत, पिचास, शराबी को कुत्ते सता रहे है देखे तो मृत्यु नजदिक जाना, बिमार आदमी, स्त्री, ऊंठ, कुत्ता, गधा आदिपर सवार होना, या उनके पास बैठना देखे तो मृत्यु निश्चय है।

(१७) गायने रोदनं विद्यात्, नर्तने वधबंधनम् ॥
हसने शोचनं ब्रुयात्, पठने कलहं तथा ॥१॥

स्वप्न में गायन करे तो उसे रोना पडे, नाच करे तो राजा का वध बंधन हो यदि स्वप्न में हंसता है चिंता फिकर हो।

(१८) भगवती सूत्र सोलहवा शतक छठ्ठा उदेशा में

स्वप्न में पका फल कोई लाकर दे तो अतिशीघ्र लाभ होगा। स्वप्न में स्वयं हाथीपर, घोडेपर, रथपर, गाडीपर चढ रहा है देखे तो लक्ष्मी प्राप्त हो और इज्जत बढेगी। स्वप्न में दूध झरती गाय दिखाई देतो उसके घर में जमीन में गडी दौलत मिले। स्वप्न में देवदर्शन, तीर्थयात्रा, सूर्य, चंद्र दर्शन, सिंह, हरावृक्ष हाथी, बैल, समुद्र, पानी भरा तलाव, लक्ष्मी या कोई भी देवी दिखाई दे तो सात दिन में ही अपूर्व लक्ष्मी भंडार मिलेगा।

(१९) स्वप्न में कपडे धोते देखे तो कर्ज से मुक्त होगा। हाथ धोते, पग धोते, मुंह धोते देखे तो इज्जत मिले, समाज में, जाति में, सन्मान मिले।

(२०) स्वप्न में अग्नि वरसाद, खून वरसाद, तुफान दिखाई दे तो संकट आयेगा अपने पास बैठा, कुत्ता, सियार, भूत, पिचास, वानर देखे तो बिमारी आवे। जहर पिया देखे तो आयु बढे।

(२१) काग, शियार बैठा, देखे तो मृत्यु हो, स्वप्न में कन्या सिंगार की हुई देखे तो स्त्री मिलेगी। मोर या अन्य पक्षी नाचते हुये दिखाई दे तो लाभ हो। स्वप्न में शिर के बाल बढे हुये देखे, तो शुभ कारक है।

साधु, महात्मा या सज्जन व्यक्ति देखे तो या मुलाकात हो तो ३ दिन में ही लाभ होगा।

धर्म निर्वृति में है, प्रवृत्ति में नहीं

पत्थर भी सुन लेता है, जो हम पत्थर पूजते हैं ॥
जिसके दिल में है पत्थर, उसे पत्थर ही सूजते हैं ॥

करना होसो करी ल्यो, काला केशो मांही ॥
घोलोने धीरप दियो, हृदय विसारो राम ॥

दिये न घरसु दान, देतां पग आडो धरे।
जड काडे जजमान, ओटो काडे आग लो ॥

ज्ञान नही, ध्यान नही, मन नही माला में ॥
राबोडी धमीडे बाबो, बैठो धरम शाला में ॥

दुर्गति प्रसृज्ञीवान्, यस्मात् धारयते जनान् ॥
धत्ते चेतान् शुभे स्थाने, तस्मात् धर्म इति स्मृतः
दुर्गति-गिरते जीवों को बचावे वह धर्म हैं।

शरीर नाशवंत- आत्मा अमर

Golden

Plastics

Sukhraj Kabdi

Bangles in
- **Metal**
- **Acrylic**
- **Plastics**
- **& Rainbow**

Phone :
Off : 375 44 50
375 81 61 74, 3RD Bhoiwada,
Resi : 387 67 62 Mumbai-400 002

गर्भ में जीव कब आता है।

जब स्त्री के गर्भ रहता है, पुरुष का वीर्य एवं स्त्री का रज दोनों मिलने पर जो बुन्द बनती है उसी समय जीव उसमें आ जाता है। इक्कीस दिन में मांस की पेशी समान बन जाता है।

महिने भर में आम की गुटली समान बन जाता है, इसी तरह दूसरे, तीसरे, चौथे महिने धीरे धीरे बढता हुआ पिंड मजबूत बन जाता है। पांचवे महिने उस गर्भ के पिंड के पांच अंकूर निकलते हैं, दो हाथ, दो पग और एक मस्तक। इस तरह दिन प्रतिदिन गर्भ बढता जाता है। (कोई लोग कहते है कि पांचवे महिने जीव आता है यह गलत है) पांचवे महिने हाथ, पग, मस्तक आता है। जीव उसी दिन आता है जिस दिन गर्भ ठहरता है।

छट्ठे महिने पित्त और रुधिर पैदा होते हैं, सातवे महिने नाडीयें पैदा होती है। आठवे महिने सम्पूर्ण अंग प्रत्यंग पूर्ण हो जाते हैं। नव में महिने गर्भ पूर्ण सुदृढ बन कर जन्म लेता है। चाहे लडका हो, चाहे लडकी, पूर्व भव कर्मानुसार जन्म लेते हैं ईश्वर तो तटस्थ है, लडका, लडकी, अच्छे, बुरे सब कर्मानुसार है।

आडम्बर–आत्मा का पतन,

गर्भावास में आ गया, मल-मूत्र के स्थान
फँसा रहा संसार में, भूल गया भगवान ॥
गरीबी में शरीफो की, शराफत कम नही होती।
सोने के सौ टुकडे करो, किमत कम नही होती

Girnar Metal

Stockist & Suppliers :

Stainless Steel Wire Rods & Wires

52-A, Islampura Street, Near Alankar Cinema,
Mumbai-400 004.
Phones : 386 191, 388 5935 I Resi.: 308 3505

चार तरह की स्त्रिये

शास्त्रों में चार प्रकार की स्त्रियों का वर्णन आता है। (१) पद्मिनी, (२) चित्रिणी, (३) हस्तिनी, (४) शंखिनी अब इनके लक्षण बताते हैं।

१. *पद्मिनी*

पद्मिनी स्त्री की बोली मीठी होती है, आँखों में शर्म, मुंह चन्द्र समान गोल, नाक तोते के सान तीखा, (चोच जैसा) सुन्दर, शरीर कोमल, शरीर पर बाल नहीं, अनार के दाने समान दांत, बाल पतले कोमल, नाभी ऊंडी, हृदय उन्नत, अंगूलिये लंबी, नख लाल, लिलार पांच आंगुल, होठ पतले और लाल, पशीना दुर्गंधवाला नहीं।

चलने में गंभीरता, नींद कम, काम विकार अल्प, घमंड कम, सुगन्धी वस्तुओं का शोख,स्वाभाविक श्रृंगार करे, दिल की कोमल, लोभ नहीं, प्रत्येक पुरुष के सामने हंसे नहीं, कपडे स्वच्छ रखे, आप भी स्वच्छ रहना पसंद करे।

देव दर्शन, गुरु दर्शन में उत्साही, दयालु, किसी के साथ झगडे करना पसंद नहीं। पति के प्रति सन्मान पूर्ण, पति परायणा, पति की इच्छानुसार वर्तन वाली, घर की लक्ष्मी समान, घर को सुशोभित रखती है। प्रत्येक वस्तु रहन सहन स्वच्छ पसंद करती है।

रसोई बनाने में चतुर, पति के जीमने के बाद जीमने वाली। पास में बैठ कर अपने हाथ से जीमानेवाली। ये सब पद्मिनी के लक्षण है।

२. *चित्रिणी*

चित्रिणी स्त्री को रंग बिरंगे कपडे अच्छे लगे, शरीर सुन्दर, नेत्र चंचल, मोहक, दिल की उदार, अपनी चतुरता से दूसरोंका मन मोहित करने वाली, मुंह गोल, केश कोमल, शरीर पर बाल नहीं। गौर वर्ण, ललाट चार आंगुल।

फूलों का श्रृंगार बहुत अच्छा लगे, दांत सुन्दर, ओठ लाल व पतले। बोली मीठी व कोमल, काम वासना में चतुर, पति को आकर्षित

करने वाली, पति परायणा, अपने पति को कभी नाराज नहीं करे।

नृत्य कला, संगीत कला में विशेष रुचि, यहां तक कि संगीत कला गाने में पुरुषों को मात कर दें।

प्रेम करना, आकर्षित करना, पद्मिनी से भी ज्यादा, रसोई बनाने में चतुर, पति को भोजन करा कर भोजन करें।

पर पुरुष से हंसी मश्करी या विपरीत व्यवहार कभी नहीं करने वाली।

तीर्थयात्रा, देव, गुरु धर्म परायणा, धर्म में रुचिवाली। पद्मिनी स्त्री मनकी भोली होती है। चित्रिणी स्त्री स्वभाव में चालाक होती है। ये दोनों स्त्रिये पद्मिनी, चित्रिणी भाग्यवान, पुन्यवान पुरुष को मिलती है। और उस का संसार स्वर्ग तुल्य होता है।

३. *हस्तिनी*

हस्तिनी स्त्री पद्मिनी, चित्रिणी से कम दर्जे की स्त्री होती है, फिर भी अच्छी है। शरीर उसका साधारण होता है गौर वर्ण वाला होता है। कभी मोटा शरीर भी होता है, अति मोटा या अति दुर्बल नही होता है।

चलने में धीरे धीरे चलती हैं, बोली मीठी होती है, आँखों में लाज रहती है। शरीर सुन्दर होता है, मुंह गोल, ओठ पतले, नाभी ऊंडी, शिर बडा, बाल कोमल, लंबे, हाथ, पग की अंगूलीये पतली लंबी, नेत्र बड़े।

धर्म कार्य में श्रद्धावान, देव, गुरु, धर्म पर विश्वास, पर उपकारी, दयावान, दिल भोला, नोकर, चाकर पर दयावान।

पति को खुश रखनेवाली, काम कला में चतुर, रसोई बनाने में होशियार, रिश्तेदार जो जैसा मिले उसके साथ वैसा ही व्यवहार रखनेवाली सभी कुटुम्ब से मिलकर करें, अपने घर का व्यवहार, कुल मर्यादा समझ कर चले। घर को बाल बचो को स्वच्छ रखे। ऐसी यह तीसरी स्त्री हस्तिनी है।

४. **शंखिनी** (ककेशा)

शंखिनी स्त्री प्रेम क्या चिज है यह कुछ नहीं समझती, दिल की कंजूस, शरीर का रंग काला, और यदि गौर वर्ण रहा तो वो भी बेढंगा। पढना, लिखना कुछ भी नहीं समझती।

बेशर्म होकर जोर-जोर से हंसे, अविवेदक पूर्वक जोर जोर से बोले, धीरे-धीरे, मीठा बोलना सीखा ही नहीं। नींद बहुत आवे, अच्छे लोगों की संगत उसे अच्छी नहीं लगे। पति से भी झगडा कर बैठे, पति से विपरीत कार्य करे।

उसीकी बोली दूसरों को अच्छी नही लगे, अडोस, पडोस से प्रेम नहीं रक्खे, घर के सम्बन्धीओं से भी प्रेम नही, सास, ससुर का भी आदर सत्कार नहीं, रक्खे। बडों का विनय नहीं करे। अपने आपको महान समझे, नख कम लाल, ओठ बडे जाडे, शिर छोटा, कपडे, गहने, श्रृंगार करने पर भी अच्छी नहीं लगे।

अंगूलीये पग, हाथ की टेडी मेडी शास्त्र सुनना धर्म, कर्म करना अच्छा नहीं लगे। पति के होते हुये भी पर पुरुष से सम्बन्ध रक्खे। नोकर चाकर को भी खराब बोले। पैर, पैर पर झूठा बोले, अपने घर बहुओं को भी ताड तर्जना करें, शरीर पर बाल साथल पर भी बाल, हाथ पर भी रुंहे ये सब शंखिनी औरत के लक्षण है। पूर्व भव में खोटे कर्म किये हो उन्हें ऐसी शंखिनी कर्कशा नार मिले।

धन धन हो पियुजी थोरा भाग। कर्कशा नार मिली।

आया था अकेला, जायेगा अकेला

Manak Jewellers

Wholesale Dealers in Silver Fancy Ornaments

39, Trimurti Market 3rd Floor,
126/28 Sheikh Memon Street,
Zaveri Bazar, Mumbai - 400 002.

मृत्यु के पहले मृत्यु संकेत

काल ज्ञान रोगी का

(१) जो मनुष्य आँखों के पास अंगूली नही गिन सकता हो, पूर्णिमा चन्द्र नही दिखाई देता हो वैसा मनुष्य २४ घंटे जीयेगा।

(२) जिसकी आँखे लाल हो गई हो, आंखें खोल नहीं सकता हो, शरीर गर्म रहता हो तो वो दो दिन जियेगा।

(३) जिसका मुंह तथा आंखे थीज गई हो, जीभ से अच्छी तरह बोल नही सकता, श्वास लेते समय आवाज आती हो वह ३ दिन जीयेगा।

(४) जो मनुष्य अपने नाक का ढोच, अपनी आँखों से नही देख सकता वो एक दिन जीयेगा।

(५) हवा नांखते समय शरीर के रुवाले याने बाल पर हवा का असर न हो वह व्यक्ति ५ पांच दिन जीयेगा।

(६) जिस मनुष्य के कान शिथिल नम गये हो, या अपनी जगह से विपरीत हो गये हो तो वह व्यक्ति ७ सात दिन जीयेगा।

(७) जिस व्यक्ति को सूर्य की गर्मी एवं रात्री की ठंडक महसूस नही होती हो रात, दिन ठंडी, गर्मी का भान न रहे वो ८ दिन जीयेगा।

(८) कानों से बराबर सुन नहीं सकता, कान के कुछ लगावे तो भी उसे प्रतीत न हो, ज्ञान तंतु कम हो गये हो तो वह व्यक्ति नौ दिवस जीयेगा।

(९) जो मनुष्य घी, तैल, पानी, दर्पण (काच) में अपना मुंह या पडछाया मस्तक बिना देखे तो १० दिन जीयेगा।

(१०) जो मनुष्य रोटी, भात या खाने की वस्तु कुत्ते को या कौआ को डाले तो वो नहीं खायेंगे, वह व्यक्ति ग्यारह दिन जीयेगा।

(११) रोगी व्यक्ति को देखने आनेवाले व्यक्ति का मुंह झोखा दिखाई दे, बराबर पहेचान नही सकता वह तेरह दिन जीयेगा।

(१२) जो मनुष्य अपनी पडछाया अपनी आंखों से बराबर देख नहीं सकता वह व्यक्ति चौदह दिन जीयेगा।

(१३) जो व्यक्ति रात्री का सूर्य सफेद नही परन्तु काला देखे तो वो रोगी पंद्रह दिन जीयेगा।

(१४) जिस मनुष्य को रात्री में बहती नदी, उडते पंछी, चलती गाडी या कोई भी चलनेवाला देखे तो वह सोहल दिन जीयेगा।

(१५) जो मनुष्य लीला वृक्ष को या उसके पान को बराबर नहीं देखे, सुका हुआ देखे तो वह व्यक्ति सतरह दिन जीयेगा।

(१६) जिस की बुद्धी विपरीत, रहन, सहन बोल, चाल हो जाय वह व्यक्ति अठारह दिन जीयेगा।

(१७) जिसकी बुद्धी दिन में अलग, और रात्री में अलग दोनों में फरक पड जाय वह उन्नीस दिन जीयेगा।

(१८) जो रात्री में एक भी तारा न देख सकता हो वह व्यक्ति बीस दिन में चला जायेगा।

(१९) जिस व्यक्ति को चंद्र में छीद्र ही छीद्र दिखाई दे वो इक्कीस दिन जीयेगा।

(२०) जो व्यक्ति बिमारी में अपना पूरा शरीर लम्बा कर न सकता हो सिमिट कर रहता हो वह व्यक्ति बाईस दिन जीयेगा।

(२१) जो मनुष्य बिमार अवस्था में किसी को मरा हुआ देखे या स्वप्न में मुडदा आस पास लोगों को देखे तो मनुष्य तेईस दिन जीयेगा।

(२२) जिस बिमार को तारे दिखे, दिनमें, आकाश धुंधला देखे और बिजली दिखाई दे तो दो महिने जीयेगा।

(२३) जो मनुष्य पास में पडा हुआ दीपक न दिखे, गंध, सुगंध भी न आवे, स्मरण शक्ति कमजोर पड जाय वह बारह घंटे जीयेगा।

(२४) जिस मनुष्य के बाल खीचने पर तरत शीघ्र निकल जाय। शरीर शिथिल-कांति विना का हो जाय, आंखे मुश्कील से खोलता हो वह दस घंटे जीयेगा।

(२५) अपने हाथ की अंगीये बराबर गिन नही सकता, आँख का तेज एकदम चला जाय वह व्यक्ति अठारह घंटे जीयेगा।

(२६) पाणी बराबर पी नहीं सकता, भोजन करना छोड दिया शरीर

बिल्कुल शिथिल हो गया हो तो चौबीस घंटे तक जीयेगा।

(२७) कान, नाक, आंखों के आस पास का भाग हाथ, पग तलीया काले पड जाये तो तीन दिन जीयेगा।

(२८) रोगी अवस्था में विपरीत स्वप्न, विपरीत दर्शन दिखाई दे तो वह आट दिन तक जीयेगा।

(२९) आयुर्वेद ग्रंथों में रोगी अवस्था का वर्णन किया गया है रोगी के शरीर **के लक्षण, हाव भाव, बोली चाली देख कर ग्रंथ कारों के आधार पर यह दिखाया गया है।**

वैद्य चंद्रोदय ''नामक ग्रंथ में बहुत से लक्षण दिखाये गये है।

बेटो भलोनी होय, सीख न लेवे सारी॥
बाप भलोनी होय, कन्या राखे कुवारी॥
नारी भलीन होय, पतिसुं राखे ख्वारी॥
बेटी भलीन होय, अपणो पियर सजावे॥
किसाण भलोन होय, काल में पाल न बांधे॥
सगो भलोवन होय, रात दिन छाती रांधे॥
भलोनी सांई सासरे, घटे उणरो कायदो॥
वेताल कहे विक्रम सुनो, इनमें नी फायदो॥

●●●

ए दिल गम न करता, तकदीर बदलती है।
शीशा तो वही है, मगर तस्वीर बदलती है॥

●●●

इरादा तो है मंजील का, चलना नही आता।
कहना तो आता है, मगर करना नही आता॥

●●●

विक्रम संवत बारहवी शताब्दी में सूत्रों के आधार पर वीतराग परमात्मा की वाणी आचार्य भगवंत श्री हेमचन्द्र सूरीश्वरजी महाराज ने संस्कृत श्लोक बद्ध ''योग शास्त्र'' के आधारपर

मृत्यु का काल ज्ञान

(१) जो मनुष्य स्वप्न में छीक, विष्टा, मूत्र एक साथ करते हुये देखे तो वह व्यक्ति एक वर्ष में उसी दिन उसी समय मृत्यु प्राप्त होगा।

(२) **जीभ, नाक, अपनी आंखों से नही दिखाई दे तो वह चौबीस घंटे जीयेगा।**

(३) जो मनुष्य स्वप्न में गिघ्घ, कौए, मेरे शरीर को खा रहे हैं ऐसा देखा तो तीन दिन में मृत्यु प्राप्त होगा।

(४) जो मनुष्य स्वप्न में ऊंट, सुअर, गधेडा, प्राणी पर चढकर सवारी करते हुये देखे तो एक वर्ष का आयु बाकी है।

(५) जो मनुष्य स्वप्न में सूर्य बिना किरणोवाला गोल चक्र दिखाई दे, वह अग्यारह मास जीयेगा, और उसी समय उसी वार मृत्यु प्राप्त होगा।

(६) रात्री स्वप्न में भूत, प्रेत, जलती चिता दिखाई दे गंधर्व गान करते हुये दिखाई दे तो दसवे महिने मृत्यु होगी।

(७) स्वप्न में उल्टी, मूत्र, विष्टा, सोनु दिखाई दे तो छः मास या शीघ्र ही मृत्यु प्राप्त हो सकती हैं।

(८) जो मनुष्य अकस्मात पागल हो जाय, अकस्मात दुर्बल हो जाय, अकस्मात हत्यारा हो जाय,

(९) आँख में जो सफेद की की है वह काली पड जाय तो वह व्यक्ति बाहर घंटे जीयेगा। उसकी मृत्यु अवश्य भावी है।

(१०) जिस व्यक्ति के शिर पर कौआ, पंछी या गीध आकर बैठ जाय तो छः मास का आयु बाकी है।

(११) यदि कोई मनुष्य बीमार हो और उसे घंटा नाद सुनाई दे या कोई

भी वाजींत्र का आवाज सुनाई दे तो उसकी तीन मास आयु बाकी है।

(१२) गिरोली शिर पर पड जाय, या कागडो विष्टा कर दें तो छः मास आयु बाकी है।

(१३) नाक की टोंच टेडी हो जाय, या आँखे गोल हो जाय, कान अपनी जगह से ढीले पड जाय तो छः मास का आयु बाकी है। कहीं कहीं छः दिन भी बताया है।

(१४) जो मनुष्य स्वप्न में काला पुरुष, लोह का डंडा धारण करनेवाला मनुष्य देखे। काला कागडा देखे तो छः मास आयुष्य बाकी है।

(१५) जिस मनुष्य की जीभ काली पडने लग जाय, कोई भी वस्तु खाने में स्वाद परिवर्तन हो जाय तो सात दिवस में मृत्यु होगी।

(१६) जिस मनुष्य को हिचकी आने लग जाय, सारा शरीर शिथिल हो जाय, इंद्रियों अपना कार्य छोड दे तो चौबीस घंटे में मृत्यु होगी, वेदनीय कर्म का भारी उदय होतो सात दिन निकाल देता है।

(१७) जीभ का स्वाद चला जाय, बराबर बोल नहीं सकता, कानों से बराबर सुन नही सकता, नाक से गंध ज्ञान चला जाय बारंबार आँख फडक्या करे, सामने वस्तु का ज्ञान न रहे रात में इन्द्र धनुष्य दिखाई दे, पानी में, काच में अपना मुँह दिखाई नहीं दे। आकाश धुंधला देखे, बिना कारण मस्तक इधर उधर करता रहे, हंस, काग, मयूर, पंछी बंद आँखों में दिखाई दे। ठंडा, गरम, सुवाला, कठोर का मालूम न पडे। इनमें से कोई भी एक लक्षण दिखाई दे तो वह व्यक्ति बच नहीं सकता। वह एक मास में निश्चय मृत्यु प्राप्त होगा। वेदनीय कर्म से समय में न्युनाधिक हो सकता है।

ज्ञानी के अज्ञानी जन। कर्म रहित नही कोय ॥
ज्ञानी भोगवे धैर्य से। अज्ञानी भोगवे रोय ॥

●●●

मंत्र तंत्र औषध नही। जेथी पाप पलाय ॥
वीतराग वाणी विना, अवर कोई न उपाय ॥

स्वर विज्ञान

स्वर - स्वयं राजते इति स्वरा, स्वतंत्र रुप से रहे स्वर, नाद परमब्रह्म है। १. षड्ज, २. रिषम, ३. गांधार, ४. मध्यम, ५. पंचम, ६. धैवत और ७. निषाद। इन सात स्वरों में स्वर विज्ञान देखा जाता है।

दुनिया में जितने मनुष्य, पशु, पक्षीगण सभी अपने, अपने स्वर में बोलते हैं। किसीकी आवाज षड्ज स्वर में, किसी की रिषभ में किसी की गांधार स्वरों में होती है।

इसमें मनुष्य की बोली स्वाभाविक किस स्वर की है। और उसको इससे क्या फायदा (लाभ) है।

अनुयोग द्वार सूत्र में

मोर की स्वाभाविक बोली, षड्ज स्वर में होती है, मुर्घा रिषभ में, हंस-गांधार स्वर में, बकरा मध्यम स्वरमें, कोयल पंचम स्वर में, क्रौंच धैवत स्वरमें, और हाथी की निषाद स्वर में आवाज होती है।

(१) जिस मनुष्य की या स्त्री की स्वाभाविक आवाज षड्ज स्वर में होगी उसके पास सदा लक्ष्मी रहेगी। खान, पान, सुख, चैन से रहेगा।

(मनुष्य और पशु में अंतर होता है, पुन्याई का)

उत्तराध्ययन सूत्र टीका

मज्जेण लहइ वित्तिं, कयं च न विणस्सइ ॥
गावो पुत्ताय मित्ताय, नारीणं होइ वल्लहो ॥१॥

जिस पुरुष की या स्त्री की आवाज षड्ज स्वर की है उसका धन्धा अच्छा चलेगा। गाय, भैंस, घी, दूध, खान-पान से सुखी रहेगा। लडका-लडकी, औरत, परिवार अच्छा मिलेगा।

(२) जिस मनुष्य की स्वाभाविक आवाज रिषभ स्वर में निकलती हो वो राजकारण में मुख्य पद प्राप्त करता है, सांसारिक सभी सुविधायें प्राप्त होती है।

(३) जिस मनुष्य की आवाज गंधार स्वर में निकलती हो वह मनुष्य

संगीत कलाका जानकार, कवि, गायक, धर्म शास्त्र ज्ञाता, दूसरों को पढाने वाला होता है।

(४) जिस मनुष्य की आवाज मध्यम स्वर में निकलती हो वो व्यक्ति उदार हृदयवाला, खुशमिजाज, आराम भोगने वाला, हिम्मत वाला होता है।

(५) जिस मनुष्य की आवाज पंचम स्वर में निकलती हो उसे संसार में बहुत सन्मान मिले, किसी से पराजय नहीं हो सकता, सेना का मालिक भी बन सकता है।

(६) जिस मनुष्य की आवाज धैवत स्वर में निकलती हो, वो दूसरों को लडाता है और आप अलग रहता, पूरा दगाबाज, हट्ठी होता है शराबी, खोटे रस्ते जाननेवाला होता है। अधर्मी किसी की बात नही मानने वाला होता है।

(७) जिस मनुष्य की आवाज निषाद में निकलती हो वो हत्यारा होता है प्रत्येक से झगडा करता है। संसार में वह पैर पैर पर अपमानित होता है।

इन सात स्वरों का ज्ञान स्थानांगसूत्र एवं अनुयोगद्वार सूत्र में हैं।

सात स्वरों के उच्चारण स्थान

(१) षड्ज स्वर का उच्चारम जबान (जिह्वा) का अग्रभाग से होता है।

(२) रीषभ स्वर का उच्चारण छाती से होता है।

(३) गंधार स्वर का उच्चारण कंठ के अग्रभाग से होता है।

(४) मध्यम स्वर का उच्चारण जबान का मध्यभाग से होता है।

(५) पंचम स्वर का उच्चारण नासिका से होता है।

(६) धैवत स्वर का उच्चारण दांत और ओठ से होता है।

(७) निषाद स्वर का उच्चारण मृकुटी से होता है।

साहित्य और संगीत है, आत्मा का आनंद ॥

बाकी पेट भरण कह्या, दुनियादारी फंद ॥

स्वर ज्ञान का फल

(१) देश विदेश जाते हुये प्रस्थान समय, या शुभकाम की शुरुआत में मनुष्य या जानवर की षड्ज, रिषभ, गांधार आवाज सुनाई दे तो आनंद ही आनंद, सब काम सिद्ध होगा, धन एवं यश दोनों मिलेंगे।

(२) अच्छे काम करते समय, परदेश जाते समय, किसी चिज का शुभ मुहुर्त करते समय यदि मोर (मयूर) की आवाज सुनाई दे तो अक्षय धन प्राप्त हो, यश मिले, कार्य सिद्ध होगा। और यदि प्रस्थान समय नाचता मयूर (मोर) दिखाई दे तो लक्ष्मी ठेलम ठेल उपार्जन करेगा।

(३) शुभ काममें यदि चकोर पक्षी दिखाई दे या उसकी आवाज सुनाई दे तो आनंद लक्ष्मी यश मिलेगा। मारवाड में उसे रूपारेल कहते हैं छोटीसी चिड्या जैसी होती है इसका शुकन सर्वश्रेष्ट माना गया है।

(४) शुभ काम करते समय प्रस्थान करते समय यदि घोडा-घोडी जीमने पग से भूमि खोदती दिखाई दे तो काम सफल होगा यदि आवाज सुनाई दे तो भी काम फत्तेह होगा।

(५) तोता यदि प्रस्थान समय बोले तो अच्छा है, प्रस्थान या शुभ काममें रोने की आवाज सुनाई दे तो अच्छा नहीं, गृद्ध पक्षी दिखाई दे तो बुरा है।

(६) जिसके घर में रात में उल्लू-घुघ्घु बोलता हो तो बुरे दिन आने की निशानी है। हसता हुआ, लोरी गाता हो तो अच्छा है इन स्वरो के ज्ञान बिना मनुष्य संगीत नही सजा सकता।

सप्तस्वरा स्त्रयोग्रामा, मूर्छना ह्येक विशतिः ॥
तान एकोन पंचाशत्, इत्येतत्स्वर मंडलं ॥१॥

सात स्वर, तीन ग्राम, एकवीस मूर्छना, उन्पचास तान, ज्ञान होनेपर स्वर ज्ञान प्राप्त होता है। आधुनिक सात स्वर, सा, रे, ग, म, प, ध, नी, सा ये सात स्वर है। बीज वर्ण है। छ-राग, छत्तीस रागनी, इनके अदतालीस बेटे इस तरह कुल संख्या ९० हुये।

नाद ब्रह्म है विश्व में। आतम अमीरस धार ॥
स्व-पर आतम अनुभवे। प्रगटे सबमें प्यार ॥

(१) जो आत्मा स्वर्ग से आया है उसकी रूचि गाने, बजाने, संगीत में होगी वाजिंत्र, बीना, सितार, दिलरुबा, ताउस, सुरशिंगार, जल तरंग, तोडे आलाप दे सकते हैं। बाजों में तो वो जोश है कि नामर्द भी मर्द बन जाता है। बाजों की आवाज सुनकर मन मयूर नाचने लगता है।

भैरव मालकोस को, दीपकराग हिंडोल ॥
मेघराग श्रीराग पुन, ये षट राग कलोल ॥१॥

भैरव राग, मालकोश राग, दीपक राग, हिंडोल राग, मलार राग, और श्रीराग, ये छ रागों के नाम है।

(२) यदि भैरव राग, तेल की घाणी (बिना बेल की) के सामने बैठ कर गवैया गाने लगे तो उसके मुह से निकले संगीत के परमाणु उस घाणी को फिरा देते थे।

(२) यदि गवैया मालकोश राग पत्थर की शिला के सामने बैठ कर गाता है तो पत्थर की शिला, मोम की तरह कोमल बन जाती है मालकोश राग के परमाणु उस शिला से टकराने से। वीतराग परमात्मा समवसरण में मालकोश में बोलते हैं सभी के हृदय देशना से विभोर हो जाते हैं। यही उन परमाणुं का चमत्कार है।

(३) यदि गवैया दीपकराग गाता है तो तैयार किये हुये दीपक बिना माचिस से जल जाते हैं। दीपक राग के परमाणु उसे जला देते हैं।

(४) यदि गवैया हिंडोल राग गाता है तो उसके परमाणु झुला झुलने के समान झूलने लगता था।

(५) यदि कोई गवैया मलार राग गाता है तो उस राग के परमाणु आकाश में व्याप्त हो कर मेघ बरसाते हैं।

(६) यदि कोई गवैया श्रीराग गाता था तो धन, धान्य, लक्ष्मी के भंडार पूर्ण हो जाते थे।

जब था मैं जवान, नयणो भाला भलकता ॥
अब कुडी पडी कबान, नाखां पण लागे नहीं ॥

राग – रागिनीयों के भेद

भैरवी, कालिंगडा, आशावरी, सारंग, गोड सारंग, पिलूं, नरवा, धनासीरी, श्रीराग, दीपक, कल्याण, कानडा, सोरठ, जेजेवंती, विहाग, कमाच, जिहाद, खमाच, जिला, झिंझोटी, मलार, छाया, दोडी, केदारा, दरबारी कानडा, कामोद, काफी, वसंत, खयाल आदि गाना गानेके लिये परमात्मा के सामने जाओ।

साज के साथ राग-रागिनी द्वारा गीत गानेसे आत्मा अनहद नाद आनंद प्राप्त करता हैं।

अमर – बनो

अब हम अमर भये न मरेंगे – २
या कारण मिह्यात्व दियो तज, फिर क्युं देह धरेंगे ॥ अ.

(१)

राग द्वेष जग बंध करत है, इनका नाश करेंगे ॥
मर्यो अनंत काल से प्राणी, सो हम काल हरेंगे ॥ अ.

(२)

देह विनाशी हुं अविनाशी, पनी गति पकरेंगे ॥
वासी-जासी हम खिरवासी, चोखे व्हे निखरेंगे ॥ अ.

(३)

मर्यो अनंत वार बिन समज्यो, अब सुख, दुख विसरेंगे ॥
आनंदधन निकट अक्षर हो, नहीं समरे सो मरेंगे ॥ अ.

सुखस्य दुखस्य न कोपिदाता, परो ददातीति कुबुद्धीरेषा।
अहं करोमिति मिथ्याभिमान, स्वकर्म सूत्रे ग्रथितो हि लोकः

अंतो मुहुत्तंमी गये, अंतो मुहुत्तमी सेसए चैव ॥
लेसाहीं परिणयाहीं, जीवा गच्छन्ति परलोयं ॥

भूमि कंप निमित्त

जब मनुष्य मानवता छोड कर दानवता का मार्ग अपनाता है तब उसके पापोदय भूमि कंप होता है। हजारों मनुष्य, पशु, पक्षी मरते हैं भारी विडंबना उठाते हैं।

भूमि कंप से गांव के गांव बरबाद हो जाते हैं , सुखे के साथ लीला भी बल जाता है। नदी नाले, कुये, वावडी सभी जगह प्रलय का ताण्डव मच जाता है।

पाताल के वासी देव-दानव या व्यंतरिक आपस में लडते हैं तो पृथ्वी पर लात मारते हैं तो उसी जगह में भूमि कंप होता है। जैसा देव-पांच पच्चीस कोस तक यह भूमि कंप होता है, ज्यादा भी हो सकता है।

भूमि के नीचे विस्फोटक पदार्थों की अधिकतासे भी भूमि कंप होता है।

उत्तराध्ययन सूत्र टीका में लिखा है

(अत्यंत पापोदय से जिस जगह सामुदायिक खोटे कर्मों का उदय हो)
शब्देन महता भूमि, र्यदा रसति कंपने ॥
सेनापतिरमात्यश्च, राजा राष्ट्रंच पीड्यते ॥१॥

जमीन में बहुत बडा आवाज हो, उससे राजा, दिवान, सेनापति एवं आम जनता कांप उठती है। बिमारी फैल जाती है। उथल-पुथल मच जाता है। पुरी पृथ्वी का कंपन नही होता अमुक-अमुक जगह ही भूकंप होता है।

मजहब की बहस में, खुदा मिलता नही ॥
डोर सुलझा रहा हूं, मगर शिरा मिलता नहीं

काली घणी करूर, कस्तुरी कांटे तुले ॥
शाकर बडी सरूप, रोडोसुं तुले राजीया ॥

सुई सदा साफे बसी, केची पगकी रेक ॥
केची सब टुकडे करे, सुईने करदी एक ॥

व्यंजन निमित्त

(शरीर पर तिल, मशा, लाल दाग, सफेद दाग, अन्य काले चिन्ह उन सबका खुलाशा फल)

(१) शरीर पर तिल, मशे, लहसुन, काले दाग आदि उन सब का विवेचन एवं फल का विस्तृत वर्णन करते हैं।

व्यंजन याने तिल, मशा, लहसन आदि समझना शरीर की चमडी पर तिल जैसे आकार का शाम रंग चिन्ह हो उसे तिल कहते हैं। चमडी से कुछ ऊंचा उठकर मांसकी छोटीसी गांठ राई या बाजरी के दाने सरीखा हो उसे मसा कहते हैं। काले रंग या लाल भी होता है।

(२) शरीर की चमडी पर कुसुंबे के फूल सरीखा लाल रंग का चिन्ह हो उसे लहसन कहते हैं। ये जैसे तिल, मशा, लहसन, शरीर पर पुरुष के जीमनी तरफ और स्त्री के डाबी तरफ फल देनेवाले होते हैं।

महानी शीथ सूत्र एवं प्रवचन सारोद्धार में

व्यंजन - तिल, मशा का रंग काला कहा है और लहसन का लाल, कहीं-कहीं काला का भी निर्देश हैं।

(१) मस्तक पर तिल या मसा हो तो आदमी इज्जत प्रतिष्ठित होता है।

(२) कपाल की जींमनी तरफ हो तो आदमी बुद्धीमान हाजरी जवाब होता है।

(३) आँख की भ्रू पर हो तो देश-विदेश की यात्रा भ्रमण करेगा।

(४) आँख पर तिल, मशा हो तो आदमी उच्च राज्य पदवी प्राप्त करेगा।

(५) मुख पर जीमने गाल तिल हो तो लक्ष्मीवान बनेगा। और सुन्दर स्त्री प्राप्त होगी।

(६) उपर के ओठ पर तिल हो तो पैसेवाला बनेगा और उसकी बात मानेंगे।

(७) नीचे के ओठ पर हो तो पैसेवाला होगा किन्तु महा कंजूस होगा।

(८) कानपर तिल हो तो आभूषण धारी श्रीमंत बनेगा।

(९) गर्दन पर तिल हो तो आराम मिलेगा औरत की तरफ से खूब लक्ष्मी मिलेगी। और उस की आयु लंबी होगी।

(१०) छाती पर तिल, मसा, लहसन या कोई भी काला, लाल चिन्ह हो तो वह हिम्मतवाला उसकी कामनायें पूर्ण करेगा, उद्यमि-साहसी होगा।

(११) जीमनी भूजा पर तिल हो तो स्वयं की कमाई खायेगा, साहसी, हिम्मत वाला होगा।

(१२) कंधे पर तिल हो तो विज्ञानी बनेगा, गाढ बुध्दिमान होगा।

(१३) हाथ के पंजे पर तिल हो तो दिलदार, उदार चरित्रवान होगा।

(१४) जांघ पर तिल हो तो प्रत्येक काम फतेह प्राप्त करेगा, सभी प्रकार की सवारी करेगा, कई यात्रायें करेगा।

(१५) पांव की एडी पर तिल हो तो देश-विदेश भ्रमण करेगा।

(१६) कोई यदि प्रश्न करें कि हम फल क्यों नही मिलता तो उसका उत्तर यह है कि पुरुष के जीमनी तरफ (दाये) और स्त्री के डाबी तरफ (बाये) होना चाहिये, तो पूर्ण फल देगा।

औरतों के अंग का वर्णन

(१) जिस स्त्री के मस्तक पर तिल हो वह राज राणी, शेठाणी होगी।
कपाल पर तिल हो तो लक्ष्मीवान बनेगी।

(२) आँख पर तिल हो तो पति को अतिवल्लभ होगी।
गाल पर तिल हो तो आनंद करेगी।

(३) कान पर तिल हो तो सोने जवाहरात दागिने पहनेगी।
गले पर तिल हो तो घर में उसका हुकम चलेगा।

(४) छाती पर तिल हो तो पुत्रवती होती है।
हाथ पर तिल हो तो वह सब को प्रिय, विनयवती होती है।

(५) जांघ पर तिल हो तो उसके पास सेवा करनेवाले नोकर रहते हैं। पांव पर तिल हो सर्वत्र यात्रायें करेगी, देस, परदेस घुमेगी।

(६) औरतो के डावी तरफ तिल, मसा, लहसन, काला दाग अच्छा है।

छंद

सर-सर हंस न होत, बाज गजराज न दर-दर ॥
तर-तर सुफल न होत, नार पतिव्रता न घर-घर ॥
तन-तन सुमन-न-होत, मोतिजल बिंदू न घन-घन ॥
फन-फन मणि न होत, सर्व मलया नहि बन-बन ॥
कहु रन होत न सूर, सब नर होत न भक्तहर ॥
नर हर कवि सुकवित्त किय सर्व न होई एक सर ॥१॥

नवकार महामंत्र – विश्व मंत्र है

मंत्रं संसार सारं, त्रिजग नुपमं, सर्व पापारि मंत्रं ॥
संसारोच्छेद मंत्रं, विशम विषहरं, कर्म निर्मूल मंत्रं।
मंत्रं सिध्धी प्रदानं, शिवसुखजननं, केवल ज्ञान मंत्रं
मंत्रं श्री विश्व मंत्रं, जप-जप जपितं, जन्म निर्माण मंत्रं

निकले थे घरसे, दिल में सौ अरमान लिये थे ॥
एक तरफ छाई हरियाली, एक तरफ स्मशान थे ॥
पांव तले हड्डी चुभी, हड्डी के ये बयान थे ॥
चलने वाले, जरा संभलकर चल, हम भी कभी इन्सान थे।

निज पुत्री ताते वरी, तस कूखे सुत एव ॥
कर्म वरो जीव अपनो, त्रिपृष्ट वासुदेव ॥
नवाणु क्रोड कंचन तजी, और तजी आठे नार ॥
ते दुक्कड नित वंदीये, श्री जंबू त्रण काल ॥

हस्त रेखा

(हस्त रेखा, लिलाट रेखा, आँख रेखा, पेट रेखा, पग रेखा का ज्ञान)
पुरुष का दाहिना (जीमना) स्त्री का बाया (डाबा) जानना।

(१) जिसके हाथ में हाथी, घोडा का निशान हो वह राजा या फौज में बडा होदेदार होगा।

(२) जिसके हाथ में मच्छ रेखा हो वह लक्ष्मीवान होगा, पुत्रवान एवं सुखी रहेगा।

(३) जिसके हाथ में पालखी का निशान हो वह, नौकर चाकरों का शेठ बनकर सुखी जीवन बितायेगा।

(४) जिसके हाथ त्रिशूल या भाला, तलवार का चिन्ह हो वह स्वयं लक्ष्मी उपार्जन करेगा, हिम्मतवान, साहसी होगा।

(५) जिसके हाथ फूल या फूल का हार का चिन्ह हो तो वह व्यक्ति संसार में नाम करेगा। और इज्जत उपार्जन करेगा।

(६) जिसके हाथ स्वस्तिक साथीया हो तो वह धर्मध्वज फरकानेवाला पर उपकारी प्रतिष्ठा, तीर्थयात्रा करने वाला होगा।

(७) जिसके हाथ में देव विमान या मंदिर का चिन्ह हो तो वह मंदिर बनवायेगा, अमर नाम करेगा, देव गति में जायेगा।

(८) जिसके हाथ सूर्य जैसा चिन्ह हो वह बडा तापमसी प्रकृति का होगा।
जिसके हाथ में अंकुश, मोर या कलश का चिन्ह हो वो सुखी व धनवान होगा।

(९) जिसके हाथ में चार कोनावाली वावडी का निशान हो तो वह दिलदार व उदार चरित्र, उदार विचार वाला होगा।

(१०) जिसके हाथ में रथ का चिन्ह हो तो घर पर गाडी, सुख समाधी वाला उद्यमी होगा।

(११) जिसके हाथ कल्पवृक्ष, पर्वत, छत्र, धनुष्य आदि चिन्ह होने पर, उसकी सब चिंताये दूर होती है। धनवान होता है।

(१२) सरोवर, ध्वजा, चंद्र, छत्र, चमर, कच्छप हो तो सुखी लक्ष्मीवान व पुन्यकारक होता है।

(१३) जिसके हाथ में अंगूठे में यव रेखा हो तो उसका जन्म शुक्ल पक्ष का जानना। सुखी, धनवान होता है।

(१४) नंदावर्त, जहाज, षट्कोण, त्रिकोण, मुकुट आदि का चिन्ह हो तो जीवनभर सुखी रहेगा।

(१५) यश रेखा मणिबंध से निकलकर अंगूठे के नीचे और तर्जनी के बीचल भाग में जाकर मिलती है, पूरी हो तो यश पूरा मिलेगा खंडित हो तो बिच-विच में अपयश भी प्राप्त हो।

(१६) जिसके हाथ की उर्ध्व रेखा मणिबंध से निकल कर तर्जनी अंगूली तक जा मिली हो तो वो बडा शेठ या राज्य का बडा होदा प्राप्त करेगा।

(१७) जिसकी वैभव रेखा पूरी हो (इसे मातृरेखा भी कहते हैं) टूटी हुई न हो, और लंबी हो वह बहुत श्रीमंत होता है। वैभव रेखा हथेली से निकल कर अंगूठे के नीचे और तर्जनी अंगुली के ऊपर यश रेखा को जाकर मिलती हैं। वैभव रेखा और यश रेखा संधी की जगह न मिले तो उसे स्त्री का वियोग रहेगा। और यदि स्त्री मौजूद हो भी कुसंग रहेगा, दोनों के आपसमें अनबन रहेगी। इस तरह स्त्री के भी जान लेना। यह संधी रेखा सुहागरात सरीखा काम करती है।

(१८) आयुष्य रेखा कनिष्टा अंगुली के नीचे होकर निकलती हुई तर्जनी अंगुली के जडतक जाती है। वह खंडित न हो, टुटी फुटी न हो, लंबी हो तो वह लम्बी आयुवाला होगा।

यदि आयुष्य रेखा तर्जनी मूल तक चली गई हो तो उसकी पूरी आयु एक सौ वरस की समझना। मध्यमा अंगुली तक गई हो तो पिचोतर वर्ष की आयु समझना। और अनामिका अंगगूली तक गई हो तो पचास वर्ष की आयु समझना। जितनी कम हो उतनी कम उमर समझना। शास्त्रकारों ने इस समय ज्यादा से ज्यादा एक सौ बीस वरस की कही हैं।

आयुष्य रेखा यदि पुतली लाईन हो तो संतोषी और सुखी मनुष्य समझना, जाडी, चौडी हो तो रात दिन चिंता बनी रहेगी, संकल्प विकल्प करता रहेगा। उसे कभी सन्तोष नही होगा।

संपत्तिरेखा उसको कहते हैं जो आयुष्य रेखा और वैभव रेखा के बीच में चौकडी का आकार हो जितनी चौकडी हो उतना वो लक्ष्मीवान बनेगा। जिसको चौकडी न हो उसे साधारण व्यक्ति समझना।

उर्ध्व रेखा से भी वैभव संपत्ति रेखा का विचार किया जाता है, शास्त्रों में दोनो उपलब्ध है। हस्तरेखा में देखनेवाला अनुभवी होना चाहिये। आदमी का भाग्य हाथ में है, हाथ देखकर आदमी का व्यक्तित्व पहिचान लेते हैं।

आयुष्यरेखा और कनिष्टा अंगुली के बीच में जितनी आडी रेखा पडी हो उतनी स्त्री समझना। रेखा अखंडित एवं पुरी होनी चाहिये।

कनिष्ठा अंगुली के नीचे, आयुष्य रेखा के ऊपर और स्त्री रेखा के सामने जितनी खडी रेखा पडी हो उतनी धर्म रेखा समझना।

जिस व्यक्ति के धर्म रेखा न हो वो अधर्मी समझना,

अनामी के नीचे और आयुष्य रेखा के उपर जितनी खडी रेखा हो या आडी रेखा हो, उतनी प्रकार की विद्या प्राप्त करेगा दो, चार, छ जितनी भी खडी आडी रेखायें हो उतनी तरह की विद्या का जानकार अनुभवी होगा।

विद्यारेखा जितनी स्वच्छ और अच्छी होगी उतनाही वह विद्वान होगा, कवी, वक्ता व लेखक होगा।

तर्जनी अंगुली के नीचे वैभव और यश रेखा की संधी के ऊपर बीचले भाग से आडी रेखा निकल कर आयुष्य रेखा के अग्रभाग को जो रेखा मिल जाये उसे दीक्षा रेखा कहते हैं कट होती है तो दीक्षा छोड देगा। यदि रेखा साफ नही है तो बराबर दीक्षा नही पालेगा।

हाथ देखनेवाले अनुभवी को चाहिये कि धर्मरेखा और दीक्षा रेखा दोनों का मिलान कर भाव कहना चाहिये हथेली के नीचे हाथ सी संधी के उपर तीन रेखा होती है उसे जवमाला बोलते हैं। मणिबंध में जिसके एक जवमाला का आकार हो तो वो मनुष्य आराम से सुखी जीवन व्यतीत करेगा। और यदि तीन जव माला हो तो दुनिया में बहुत पैसेवाला अथवा महा तपस्वी होगा।

मणीबंध से पांच तरह की उर्ध्व रेखा जो अंगुली और अंगूठे की तरफ जाती है। उसका फल दिखाते हैं।

पहली उर्ध्वरेखा अंगुठे के नीचे जा मिले उसे राज रेखा कहते हैं। राज सन्मान या राज्यकर्ता होगा।

दूसरी रेखा मणिबंध से निकलकर तर्जनी अंगुली तक जाती है तो वो राज्य करेगा। तीसरी उर्ध्वरेखा मणिबंध से चलकर मध्यमा अंगुली के मुलतक जा मिले तो वो सेनापति या आचार्य होगा।

जिसकी वैभव रेखा साफ व पतली होगी तो वह व्यक्ति अपना नाम रोशन करेगा। वैभव रेखा से अंगुली तरफ जितनी रेखा गई हो उतने ही दुश्मन समझना। और मणिबन्ध तरफ गई हो तो मित्र समझना।

आयुष्य रेखा में से जितनी छोटी रेखा वैभव रेखा तरफ निकली हो उतनी ही उस व्यक्ति को संपत्ति मिले। और अंगुली तरफ जितनी गई हो उतनी ही उसे विपदायें मिलें।

मणीबंध से आयुष्य रेखा तक हथेली की बाजूमें जितनी आडी रेखा पडी हो उतने बेटा-बेटी समझना। उनमें साफ अखंड हो उतने बेटा बेटी जिन्दे रहेंगे। कोई इसे भाई-बहेन रेखा भी कहते हैं।

हथेलीपर यशरेखा की दाहिनी बाजू अंगूठे तरफ जितनी आडी रेखा गई हो उतने देशों की वह यात्रा करेगा।

जिसकी यश रेखा साफ हो वो देवगति पावे और साफ न हो तो मनुष्य लोक प्राप्त करें।

(५) खडे होने पर जिसके हाथ गोडो को छू ले तो राजा होगा, या समाज रत्न, या धर्म रत्न होगा। जिसके हाथ की पांव की अंगूलीये लंबी हो वो इज्जतदार, सन्मान प्राप्त होगा, जिसका ललाट ऊंचा होगा वह बुद्धीशाली होगा।

(६) जिसकी आंख मंजरी (बिलाडी सरीखी) हो वो कंजूस होगा, जिसके दांतो के बीच जगह होगी वो विद्वान होगा। जिसकी तर्जनी अंगूली लंबी हो वो क्रोधी होगा।

(७) जिसके पूरे बत्तीस दांत हो वह महानत्यागी, या राजा या शेठ सामंत होगा। जिसके ३१ एकतीस दांत हो वो भी आनन्दकारी है इससे कमवाला दरीद्री, निर्धन होगा।

(८) जिसके लिलाट में पांच रेखा पुरी हो वो सौ वर्ष जियेगा। जिसके चार रेखा पडी हो वो साठ वर्ष जियेगा।

(९) जो सदा हसमुख रहता है वो सदा सुखी रहेगा, आराम भोगेगा।

(१०) प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में तीन बडी रेखायें होती है। आयुष्य रेखा, बीच की विभव रेखा, तीसरी मणीबंध से निकलकर अंगूठे और तर्जनी तरफ मिलती है यश रेखा ये तीनों जिस के अखंड साफ हो, लंबी हो तो वह व्यक्ति यशस्वी, समाज सेवक, धार्मिक एवं सर्व मान्य होता है जो कम हो, छोटी हो, उतना कम समझना।

(११) हाथ में टुटी-फुटी बहुत रेखा हो तो अच्छा नहीं, पुरुष के बत्तीस लक्षण पुरे शरीर में पडे हुये होते है। वह प्रतापी होता है।

(१२) जिसके हाथ की अंगूलीयों में चक्र हो तो वो भाग्यशाली सुखी एवं धनवान होता है।

(१३) वो मनुष्य अपने हाथ की अंगूलीयों १०८ लम्बा हो वो तेजस्वी यशस्वी होता है। ९७ आंगुल हो तो मध्यम, ८४ होतो सामान्य। इसके कम होतो दुख से जीवन बितायेगा।

अंगुली मापने की तरकीब, खडे होकर पग से शिरतक रस्सी माप लो फिर उस रस्सी कों अंगूलीयों से माप लो।

(१४) बडा शूरवीर, बुद्धीमान, ज्यादा इज्जत वाला, ज्यादा सुखी, ज्यादा परमोपकारी, या अच्छा यशस्वी नेता उनकी आयु कम होती है। इस पांचवा आरा में अच्छी वस्तु दुर्लभ है।

(१५) जिसके कान बडे हो तो सुखी होता है। कानों की बुटी मांसवाली और लंबी हो तो पूरा आयुष्य बितायेगा।

(१६) नाक के दोनों छिद्र बडे होतो खराब, छोटे हो तो अच्छा जिसका नाक स्वत साफ रहता हो वह लंबे आयुष्यवान होता है। और सुखी होता है।

(१७) हाथी के आंख सरीखी जिसके आंख हो वो सेनानायक होता है। मोर की आंखो सरीखी जिसकी आँख हो वह मध्यम श्रेणी का समझना। मांजरी आंखवाला व्यक्ति आप मतलबी, स्वार्थी

समझना।

(१८) जिसके शरीर का रंग हीरा, माणक, मोती, सोना या गौर वर्ण चमकदार कोमल हो वो भाग्यशाली होता है कथंचित काले वर्णवाला भी। जो पुरुष या स्त्री रुपवान हो तो वो भाग्यशाली है किन्तु खोटे रस्ते जाने पर अंत समय बिगड जायेगा। पुन्य घटेगा, पाप बढेगा।

(१९) जिसकी आवाज मिठी, प्रिय एवं सर्वमोहक हो वो सुखी रहेगा। जिसकी चाल, सिंह, हाथी, हंस की तरह सुव्यवस्थित, स्वाभाविक हो वो भाग्यशाली होगा।

(२०) तीर्थंकर चक्रवर्ती के १०८ लक्षण होते हैं वासुदेव, प्रतिवासु के बलदेव के १०८ लक्षण होते है अच्छे व्यक्ति के ३२ लक्षण होते हैं।

जिस मनुष्य की हड्डिये मजबूत व वजनदार हो वह मनुष्य बोलने में साहसी होता है, दिल का कमजोर। जिसकी चमडी मुलायम कोमल होती है, उसको ऐश आराम मिलेगा। जिसका शरीर मोटा हो, हाथ पैर की नशे दिखाई नहीं देती हो वह सुखी होगा।

जिसकी आँखें कुछ लाल हो उसकी औरत खूबसूरत मिलेगी। जिसकी चाल-तालबद्ध हो वह सवारी करेगा घरपर गाडी होगी। जिसके आँखें सबके प्रति प्यार हो वह पुन्यशाली होगा। जिसका शरीर कोमल, गौरवर्ण हो वह सुखी बन कर सन्मान प्राप्त करता है।

जिसके नख लाल हो वह शरीर से निरोग रहेगा तथा धनवान होगा। जिस के नख टेडे मेडे हो वह शरीर से रोगी एवं सामान्य मनुष्य होगा। जिसके नखों में पहले जबसे दाग दिखे तो वह चिन्ताग्रस्त होगा। आर्थिक संकट बना रहेगा।

(१) जिसके आँख, नाक, हाथ लंबे हो लक्ष्मीवान होगा जिसका नाक लंबा, तीखा तोते की तरह हो वो सदा सुखी रहेगा और धर्म प्रिय होगा।

(२) कंठ, जांघ, पीठ जिसकी छोटी हो वह भाग्यवान होगा। केश, नख, चमडी, दांत और अंगूलियों के पेरवे पतले हो वह ज्यादा आयुवाला होकर सुख भोगवेगा।

(३) हाथ (हथेली) पांव तलिये, आँखों के कोने, नख, तालु, जबान और होठ पतले हो वह सुखी व पुन्यशाली धर्मात्मा होगा।

(४) जिसकी छाती, मस्तक और लिलाट लंबे हो (विशाल) हो वो सुखी सम्पन्न होता है।

(५) जिसकी आवाज, नाभि, गंभीर हो तो वो सदा सुखी रहेगा। और आनंद प्राप्त करेगा।

(२१) जिसके हाथ पर छोटे छोटे बाल हो तो वह आराम करेगा औरत के हाथ पर बाल हो तो अनिष्ट। पुरुष के साथल, पीडी पर बाल हो तो वह व्यक्ति अच्छा है। जिसके बाल नहीं होते उससे बचकर चलना स्वार्थी है।

औरत के हाथ पर, साथल पर, पीडीपर, पेट पर, छाती पर बाल नहीं होना चाहिये। यदि है तो ध्यान से चलना कही विश्वासघात न हो।

(२२) जिस पुरुष के छाती में बाल नही वह अन्दर से कुछ और बाहर से कुछ और समझना।

(२३) जिस आदमी के पाव में चक्र हो तो विदेश गमन करेगा। यदि उर्ध्व लंबी रेखा पांव में पडी हो तो वह धनाढ्य एवं उद्योग पति होगा।

जिसके पांव में ध्वजा, रथ, त्रिशूल या काछवा या किसी जानवर चिन्ह हो तो वह सुखी व उदार होगा। कमल हो तो राजा बनेगा नेता होगा। पग के अंगुठे में जव रेखा हो तो बहादूर हिम्मत वाला होगा।

स्त्रीयों के लक्षण

जिस तरह से पुरुष के जीमने लक्षण कहे वैसे स्त्रियों के डाबे जानना।

जिस स्त्री का मुख गोल, गौर वर्ण, सुन्दर, कोमल, बोली में मिठास हो वह पद्मनी के निशान है। बाल मस्तक पर लंबे है, शरीर पर यदि बाल है तो अच्छे नहीं।

पतली कमर हो, पेट पर त्रिरेख पडती हो वह धनवान एवं सुखी

जीवनभर रहेगी। छोटा लिलाट, कम बुद्धीवाली और लंबा हो तो भाग्यशाली धनवान होगी।

जिसके दांतो के बीच जगह हो तो वह मृदुभाषी एवं बोलने में चतुर होगी।

(१) लिलाट में डाबी तरफ तिल काला या लाल हो तो वह बुद्धीमान होगी। गालपर डावी तरफ तिल हो तो सबको प्यारी होगी। गर्दन पर डावी तरफ तिल हो तो अच्छे गाने वाली मृदुभाषी होगी। हाथपर तिल तो हो हिम्मतवान होगी।

(२) जिसके पांवकी तर्जनी अंगूली अंगूठे से बडी हो तो उस स्त्री का घर में राज चलेगा, पति का कुछ भी नहीं, जिस स्त्री पांव की तर्जनी अंगूली से मध्यमा अंगूली लंबी हो तो वह घमंडी होगी, अभिमानी होगी।

(३) जिस स्त्री के दांत सुन्दर एक सरीखे हो तो सदा इच्छित भोजन करेगी। और सुखी होगी।

(४) जिसके साथल पर तिल हो तो बहुत सुख भोगने वाली होगी, पग पर हो तो बहुत यात्रायें करेगी।

अहिंसा

यो मां सर्व गतं ज्ञात्वा, न च हिंसेत् कदाचन ॥
तस्याहं न प्रणश्यामि, न च मां स प्रणश्यति ॥
गीता-अ-५ श्लोक २७

अहिंसा परमं ध्यानं, अहिंसा परमं तपः ॥
अहिंसा परमं ज्ञानं, अहिंसा परमं पदं ॥
योग वशिष्ट-श्लो. ३०

हिंसा मत कर मानवी, हिंसा दुखका मूल ॥
इस भव में बन जायेगा, तेरे लिये त्रिशूल ॥

उत्पात – निमित्त

इस संसार में जिन जीवों के अशुभ कर्म का उदय होता है, तब नहीं बनने योग्य उत्पात उपस्थित होते है और उन उत्पात का फल यहां पर बताते हैं।

जब आकाश से बिजली कडकती है तब पृथ्वीपर आकर वृक्ष स्थंभा या किसी भी सहारे वापिस आकाश में चली जाती है, आवाज होता है, जो भारी कर्मो से लिप्त जीवधारी प्राणी मृत्यु प्राप्त करते है। यह एक उत्पात है। लोग कहते हैं बिजली गिरी।

(१) जहाँ बिजली गिरे, चाहे झाड हो मंदिर हो या महल हो वहां पर छ महिने तक उस बिजली का असर रहेगा लोगों के आपस आपस में वैरभाव बढेगा, धन धान्य धन्धा पर छः महिना असर पडेगा।

(२) जहां देव मूर्ति हंसती दिखाई दे, सिंहासन से नीचे गिर जाय, या मूर्ति रोतीसी सूरत दिखाई दे, वहां पर राज नैतिक हत्यायें, आपस में वैरभाव बढेगा।

(३) जहां मंदिरों मैं देव मूर्तिये, देवी देवताओं के चित्र रोते, हंसते हुये दिखाई दे, देवताओं की मूर्ति की आंखे क्रोधमय दिखाई दे उन्हे घर छोड कर भागना पडेगा। गांव, नगर, प्रान्त में उत्पात मचेगा।

(४) जहां पर रात्री में रोते हुये की बोली कागडा, उल्लू या सियाल बोलने लगे तो उस प्रान्त में काल पडेगा।

(५) कभी भी शुभ काम, विवाह, उत्सव, प्रतिष्ठा या धर्म अनुष्ठान में अग्निका प्रकोप हो तो वो गांव, वह नगर, वहां के लोगों का उत्कर्ष नहीं हो सकता।

(६) जहां वृक्षों के पत्तो पर खून सरीखे लाल दाग पड जाये वहां दंगे, हत्यायें बढेगी।

दुखभरा - संसार

संसार में सभी प्रायः दुखी है, कोई शरीर से, कोई कुटुम्ब से, कोई आर्थिक से, तो कोई मानसिक से, इन दुखों से छुटकारा पाने के लिये, भोपा, मांत्रिक, तांत्रिक या यंत्र मंत्र ज्ञातोओं के पास जाते हैं।

कृतः कर्म क्षयो नास्ति, कल्प कोटि शतैरपि ॥
अवश्यमेव भोक्तव्यं, कृतः कर्म शुभाशुभम् ॥

पूर्व में किये हुये कर्म उदय आते हैं। उन्हें भोगना ही पडता है चाहे शुभ हो या अशुभ गो। किन्तु व्यवहार में दुख निवारण हेतु भोपाओं के पास या साधु मुनिराजों के पास जातें हैं। रक्षा पोटली, वासक्षेप, डोरा, धागा करवाते हैं। हजारों की संख्या में जाते हैं। जिन्हें श्रद्धा हैं उनका काम बन जाता है। इसमें हेतु है शब्द शक्ति-श्रद्धा एवं पूर्वकृत कर्म।

यदि साधु मुनिराज एवं भैरुजी, मणीभद्रजी, घंटाकर्मवीर, पद्मावती, अम्बामाता, चक्रेश्वरी आशापुरी, सचीयामाता ओसीयामाता, इन देव देवियों के जिन्हें भाव आता है उनके पास लोग जाते हैं।

लोगों को आपने इनके पास जानेसे रोका तो वे मुसलमान पीर पेगम्बरो, नीच जाति वाले मैली विद्यावालों के पास जायेंगे।

गर्जी-दर्दी को कोई नही रोक सकता। राजस्थान में कहावत है कि ''हाडो बेवाने वे, ने डाली भागवाने वे, लगा तो तीर, नहीं तो तुक्कातो हैं, श्रद्धा एक अमर धन है, इससे कई लोगों के काम बनते हैं। वे सब विद्यायें, तांत्रिक, मांत्रिक प्राचीन काल से हैं।

संसार सागर करीन्द्र भुजंग सिंह ॥
दुव्याधि वन्हि रिपु बन्धन संभवानि ॥
चौर ग्रह भ्रम निशाचर शाकनीनां ॥
नश्यन्ति पंच परमेष्टि पदेर्भवानि ॥

वाणव्यंतर देवता, फिरता मृत्यु लोक ॥
पूर्व कर्म संयोगसु, मिटे जगतका शोक ॥

॥ सरस्वती स्तोत्रम् ॥

वाग्वादिनि ! नमस्तुभ्यं, वीणापुस्तकधारिणि !
मह्यं देहि वरं नित्यं, हृदयेषु प्रमोदतः ॥१॥
काश्मीरमण्डनी देवी, हंसस्कंधसवाहने,
ममाज्ञानविनाशाय, कवित्वं देहि मे वरम् ॥२॥
जय त्वं विजया देवी, कवीनां मोद–कारिणी, देहि मे
ज्ञानविज्ञानं वाग्वादिनि ! सरस्वति ! ॥३॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ भगवती देवी, श्रीँ देहि वरानने,
वांछितार्थप्रदात्री च । वद २ वाग्वादिनि नमः ॥४॥
लक्षजापेन मन्त्रोऽयं, गणित्वैकादशाचाम्लैः, इति
स्तुता महादेवी, सर्वसिद्धिप्रदायिका ॥५॥
इदं स्तोत्रं पवित्रं च, ये पठन्ति नरः सदा, तस्य
नश्यति मूढत्वं, प्राप्नोति मंगलावलीम् ॥६॥
सरस्वती स्तोत्रमिदं पवित्रं,
गुणैर्गरिष्ठं निजमंत्रगर्भितम् ॥
पठन्ति ये रम्यमहर्निशं जना,
लभन्ति ते निर्मलबुद्धिमंदिरम् ॥७॥

॥ इति सरस्वती स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

|| श्री वीतरागाय नमः ||

मंत्र शास्त्र

मंत्र मन् धातु से ष्ट्रन् प्रत्यय होता है, त्र आदेश,
मन्यते जायते आत्मा देशो अनेन इति मंत्र।
जिसके द्वारा आत्मा का आदेश निजानुभव जाना जाय वह मंत्र।

प्रिय पाठक वृन्द ! अब आपका ध्यान मंत्र शास्त्र की ओर आकर्षित करना चाहता हूं क्योंकि इस पुस्तक में ऐसी २ चीज़ों का संग्रह किया है कि जिसको पढ़कर या मनन कर इसके अन्दर रहे हुए इस रहस्य को समझ सकेंगे कि हमारे पूर्वाचार्य्यों ने किन २ महान् शक्तियों द्वारा संसार के सुप्रसिद्ध राजा महाराजा और अच्छे अच्छे नामांकित विद्वानों के मस्तक अपने चरणों में झुका दिये थे, ऐसी चमत्कारिक चीज़ों का संग्रह दिया जा रहा है। प्रिय पाठक वर्ग से विनती है कि सब से पहिले इस के विधि विधान का अच्छी तरह अवलोकन करें और उसको समझ कर इससे फायदा हासिल करें।

मन्त्र - मंत्र अर्थात् अन्योन्य अक्षरों (अक्षर) को मिलाकर एक ऐसा शब्द बनाना जिसका उद्देश्य किसी प्रादुर्भाव अपूर्व शक्ति से होता हो। यह एक मानी हुई बात है कि महान पुरुषों के वाक्यों में एक प्रकार की अपूर्व शक्ति होती है तो फिर खास इसी उद्देश्य से बनाये हुए अनेक प्रकार के अक्षरों (अक्षर) के मिलान में जो शक्ति मौजूद है उसके विषय में तो कहना ही क्या? ऐसे महान पदों के रचयिता जितने संयम और सत्यता के पालक होते हैं उतनी ही मंत्र में अधिक शक्ति होती है। ऐसे मन्त्र अनेक प्रकार के होते हैं जैसे कोई योग साधन के तो कोई रोग की शान्ति के लिये, कई लक्ष्मी प्राप्ति और कई दुश्मनों के नाश करने के काम में आते हैं।

हमारे कई प्रिय बन्धुओं की यह मान्यता है कि प्राचीन समय के मन्त्र अब उपलब्ध नहीं होते हैं, क्योंकि आज कल जो कोई आराधना करता है वह निष्फल ही रहता है, - अक्सर संसार में देखा जा रहा है कि हर एक व्यक्ति आज सुख और दुःख के एक ऐसे चक्कर में फंसा हुआ है कि हमारी

समाजके धनीवर्ग तो अपने जीवन की इति श्री पैसा पैदा करने ही में समझते हैं और जो निर्धन हैं उनको तन ढांकने को पूरा कपड़ा भी नहीं मिलता और न पेटभर अन्न ? इस तरह समाज के दोनों अंग आधि व्याधि और उपाधि में रात दिन पड़े हैं, और जो वर्ग इस की आराधना करता है वह भी अधिक व्याधि और उपाधि में पड़ा है इस लिए उस में पूर्ण श्रद्धा न होने से वह भी निरर्थक ही रहता है। फिर उलटे चोर कोतवाल को डांटे वाली कहावत के अनुसार अपनी भूल न पकड़ कर मन्त्र ही को दूषित ठहराते हैं।

हमारी समाज के बहुत से बन्धुओं की यह भी मान्यता है कि अगर हमारा भाग्य अनुकूल है तो फिर हमें मन्त्र की आराधना करने से क्या फायदा ? उत्तर में निवेदन है कि भाग्य की अनुकूलता से ही हरएक वस्तु का आसानी से समागम हो जाता है, और हर एक चीज़ प्राप्त होने से ही इस उससे फायदा उठा सकते है, आगे हम पढ़ चुके हैं कि विशिष्ट प्रकार के अक्षरों के संयोग का नाम ही मन्त्र है, और इश के पाठ करने से जो जो आन्दोलन होता है उसी से स्वर्ग के निवासी देवी देवता अपने अवधिज्ञान से जान लेते हैं कि अमुक व्यक्ति अमुक जगह पर बैठ कर अमुक मन्त्र का पाठ एवं आराधना कर रहा है, पहिले के समय में जब महान पुरुष और भाग्यशाली व्यक्ति विद्यमान थे तब उनकी सेवा में देवता हाज़िर रहते थे, जिसका वर्णन आपको शास्त्रों द्वारा ज्ञात हो सकता है कि तीथङ्करों चक्रवर्तियों वासुदेव और बलदेवों के समीप में देवता हाज़िर रहते थे, लेकिन इस कलिकाल के युग में मन्त्र तन्त्र और यंत्रों की शक्तियां भी कम होती जा रही हैं लेकिन उससे यह मान्यता नहीं हो सकती कि यह सर्व चीज़ें निरर्थक हैं - क्योंकि शास्त्रकार महर्षि फरमाते हैं कि -

निर्बीजमक्षरं नास्ति, नास्ति मूलमनौषधं ।
निर्धना पृथ्वि नास्ति, आम्नायाः खलु दुर्लभाः ॥

अर्थात-दुनियां में जितने अक्षर हैं वह सर्व शक्ति शाली हैं और उसके सुनने या मनन करने से एक तरह का असर पैदा होता है जैसे कोई हमें अच्छे शब्दों से पुकारता हैं, तो हम राज़ी होते हैं और अगर कोई बुरे शब्दों से बुलाता है तो हम नाराज होते हैं यह सब क्या है ? मानना पड़ेगा कि सिर्फ शब्दों का ही असर है, इससे साबित होता है कि शब्दों में अपूर्व शक्ति है ज़रूर हैं। संसार

में जितनी वनस्पतियां हैं उनमें भी शक्ति है, पृथ्वी भी निर्धन नहीं है क्योंकि जगत में अनेक प्रकार के रत्न और सुवर्ण की खानें आज भी मौजूद हैं, इस लिये शास्त्रकारों ने पृथ्वी को रत्नगर्भा कहा है, लेकिन इन तमाम चीज़ों की जानकारी प्राप्त करना अत्यन्त दुर्लभ हैं।

मनुष्यों का स्वभाव सहज ही चमत्कार प्रिय होता है, जन समुदाय का बड़ा भाग आज सिद्धियों की तरफ टकटकी लगाकर बैठ है और उसके लिये अपनी शक्ति अनुसार तमाम प्रयत्नों को भी कर गुजरता है लेकिन जब निष्फलता प्राप्त करता है तब द्राक्षके स्वाद से अतृप्त रहे शियालकी माफिक यंत्रो मंत्रों और तंत्रों आदि को कल्पित कहकर विद्या को झूठी करने के लिये सुज्ञ जनता में प्रचार करता है, अगर यह तमाम विद्या झूठी ही है तो भूतकाल में जो महान वैरागी जैनाचार्य वज्रस्वामी, वादिदेव सूरि, श्री हेमचन्द्राचार्य जैसे महान पुरुष भी इस विद्या की तरफ लक्ष न देते। मैं आशा करता हूं कि पाठक वर्ग यह बात अच्छी तरह समझ गये होंगे कि मंत्रों में अवश्य अपूर्व शक्ति रही है, अगर कमज़ोरी है तो सिर्फ इतनी ही है कि हमने उसको समझने का कष्ट नहीं उठाया।

मन्त्रों के एक एक अक्षर में अत्यन्त शक्ति छुपी हुई है, परन्तु आजकल के सुधारक कहलाने वाले ऐसी चीज़ों पर विश्वास नहीं करते, उन्हें मालूम होना चाहिये कि मन्त्र शास्त्र में भी वैज्ञानिक रहस्य विद्यमान है।

जो व्यक्ति मन्त्र अक्षरों पर विश्वास नहीं करते, और जो मन्त्रों के अशुद्ध उच्चारण पर कोई दोष नहीं समझते तथा जो मन्त्र-अक्षरों को प्राचीन भाषा संस्कृत से परिवर्तन करने को कहते हैं उनके लिये नीचे लिखे भाषण के कुछ अंश उपयोगी होंगे।

पूना के ओकल्ट रिसर्च कालेज के प्रिन्सिपल करमकर ने वर्णमाला की शक्ति (अक्षर शक्ति) पर एक मननीय भाषण बड़ौदा में दिया था उन्होंने बताया था :-

वर्णमाला के मूलाक्षर केवल औपचारिक ही नहीं होते, उनका मन्त्र शक्ति के साथ अत्यन्त गाढ़ सम्बन्ध होता है, और वर्णमाला में से प्रत्येक

अक्षर मनुष्य के शरीर पर वर्णोचार प्रमाण विशिष्ट प्रभाव डालता है इस बात को भिन्न भिन्न अक्षरों के उदाहरण देकर व्याख्याता ने अपने वक्तव्य की पुष्टि की, और वर्णमाला के विभागों की चर्चा करके यह समझाया कि प्रत्येक विभाग पृथ्वी, जल, तेज-अग्नि, वायु और आकाश का अनुसरण करता है।

बाकी रहे हुए य, र, ल, व, श, स, अक्षरों में से 'र, अक्षर को-हज़ार बार उच्चारण किया जाय तो एख डिग्री उष्णता बढ़ जाती है, और सर्दी हुई हो तो 'ख, अक्षर अनुनासिक सहित उच्चारण किया जाय तो सर्दी मिट जाती है। तथा अनुनासिक सहित 'म, का उच्चारण किया जाय तो लीवर का रोग मिट जायेगा इत्यादि भिन्न भिन्न अक्षरों के उपयोग के सम्बन्ध में बताया। उन्होंने बतलाया कि हम जब से उत्पन्न हुए हैं तभी से 'हं, तथा 'सः, का जाप श्वासोश्वास द्वारा करते हैं, उन्होंने बताया कि आजकल किसीका मन्त्र शास्त्र पर विश्वास नहीं और शिक्षण में भी इसे कोई स्थान नहीं है, भिन्नभिन्न मन्त्रों के सम्बन्धमें समझाकर मन्त्र शास्त्र का व्यवहार में क्या उपयोग है यह समझाया। उदाहरणार्थ- ''ॐ ह्रीं श्रीं सरस्चत्यै नमः'', इस मन्त्र के उच्चारण से बुद्धि तीव्र होती है।

ॐ गं गणपतये नमः, इस मन्त्र के पढ़ने से ऐश्वर्य तथा मान बढ़ता है और भूत आदि को बाधक होता है, अपस्मरा, हिस्टिरिया हुआ हो तो भी इस मन्त्र से दूर होते हैं, यह अपना अनुभव वक्ता ने बताया था।

उच्चारण में अल्पविराम और पूर्णविराम का खूब ध्यान रखना चाहिये, अक्षर वही के वही हों, वाक्य रचना भी वही की वही हो, परन्तु यदि अल्पविराम और पूर्णविराम का ध्यान न रखा जाय तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है- जैसे जैसे-''दीवा नहीं दरबार में है अन्धेरा घोर'' यहां दीवा से नहीं जुदा रह जाय तो यहां यह अर्थ होता है कि दीवा (दीपक) के बिना दरबार में घोर अन्धेरा है। परन्तु ''दीवान हीं दरबार में है अन्धेरा घोर'' ऐसा लिखा जाय तो इस का अर्थ यह होगा कि वहां के कर्मचारी दीवान से घोर अन्धेरा है, ऐसे बहुत से शब्द हैं-जैसे-उसने केस रखाया, अर्थात् उसने केस (बाल) रखाये हैं। परन्तु यहि उसे इस प्रकार लिखें 'उस ने केसर खाया, तो इससे केसर खाने का अर्थ होगा, ऐसे ही और वाक्य देखिये-कर्म

बन्धन करने का कारण हुआ, यदि इसमें ज़रा सा शब्द भिन्न करदें तो सर्वथा विपरीत अर्थ हो जायगा। जैसे कर्मबन्ध न करने का कारण हुआ।

आज लोग 'पगरखां, साधारण शब्द का प्रयोग करते हैं जिसमें कोई अर्थ नहीं होता, परन्तु पगरखां अर्थात् पैरों की रक्षा करने वाला अर्थ शब्द बोलते ही तुरन्त हो जाता है। दूसरे प्रकार से भी अनुभवी समझेगा कि एक भाषा में से शब्द का अनुवाद दूसरी भाषा में करने पर अर्थ शिथिल हो जाता है और जो मूल शब्द में अर्थ गौरव होता है, वह गौरव भाषान्तर में नहीं रहता। जैसे प्रजापति प्रजा की रक्षा करने वाला अर्थ होता है, प्रजापति की जगह प्रजा की रक्षा करने वाला बोलें तो प्रजापति में जो अर्थ गौरव है, वह प्रजा के रक्षण करने वाला कहने में नहीं रहता।

इससे जो मूल क्रिया के सूत्र हैं उनमें तब्दीली करना किसी प्रकार भी उचित नहीं, तुम जिसका अर्थ सिखो, हेतु सीखो, कारण सीखो तभी तुम्हें आनन्द आयेगा, बाकी दूसरी भाषा में मूल सूत्र बदल डालने का कहना यह किसी प्रकार भी बुद्धिमत्ता का सूचक नहीं।

पूर्व भारत वर्ष में मंत्र विद्या का प्रचार बहुत ही असाधारम था क्योंकि पांचवी से दशवीं सदी तक इन पांच सौ वर्षों में मन्त्र शास्त्र सम्बन्धी दो अढ़ाई हज़ार ग्रन्थ तो सिर्फ बौद्ध भिक्षुओं ने ही बनाये थे? इस पर से सहज ही अनुमान जा सकता है कि भारत वर्ष में मन्त्र शास्त्रों का कितना प्रचार था, बौद्ध धर्म में मन्त्र शास्त्र सम्बन्धी अनेक ग्रन्थ उपलब्ध होने से जनता की मिथ्या मान्यता है कि जैनों के मन्त्र सम्बन्धी जो शास्त्र हैं वह बौद्धों के अनुकरण से तैयर किये गये है, जिसका कारण यह है कि जैनों के इसके सम्बन्धी ग्रन्थ अभी अप्रसिद्ध ही हैं। अब आपका ध्यान इसके विधि विधान की तरफ खेंच कर आशा करता हूं कि इस को बहुत ही गहराई से समझने की कोशिश करेंगे।

साधक पुरुष की योग्यता

साधक पुरुष की योग्यता सम्बन्धी कुछ बातों को बतलाता हूं कि साधन करने वाले महानुभाव पहिले अपने आप को वैसा बनालें बाद में ही आगे पैर बढ़ावे ताकि आप अच्छी तरह फायदा उठा सकें।

(१) साधक पुरुष-का पांचो इन्द्रियों के युक्त नही हैं तो आप कभी भी इस से कामयाबी हासिल नहीं कर सकते हैं ? कारण अगर आपबल से हीन हैं तो आप एक आसन पर स्थिर नहीं बैठ सकेंगे ? और जब तक आपका आसन स्थिर न होगा तब तक कामयाबी हासिल नहीं कर सकेंगे। और अगर आप इन्द्रियों से हीन हैं तो उसके अनुकूल या प्रतिकूल होने वाले स्वरूप को नही समझ सकेंगे, इस लिये बल और इन्द्रियों युक्त होना भी बहुत ज़रूरी है मानों अगर चक्षु इन्द्रिय से हीन है तो उसके स्वरूप सम्बन्धी होने वाले प्रत्यक्ष या परोक्ष के उदाहरण नहीं समझ सकेगा। अगर कोई कर्ण इन्द्रिय से हीन है तो वह आराधना सम्बन्धी होने वाली आवाज़ों को नही समझ सकेगा। अगर कोई घ्राणेन्द्रिय से हीन है तो आराधना सम्बन्धी वस्तुओं में सुगन्ध है या दुर्गन्ध इसकी परीक्षा नही कर सकेगा। अगर कोई जिह्वा से हीन है तो उस सम्बन्धी वार्तालाप नहीं कर सकेगा, और अगर कोई शरीर से हीन है तो फिर उसके लिये तो कहना ही क्या? इससे आप समझ गये होंगे कि बल और इन्द्रियों से युक्त होना बहुत ज़रूरी हैं।

(२) साधक पुरुष को अल्पाहारी होना भी ज़रूरी है क्योंकि अगर आप ज़्यादा आहार लेंगे तो शरीर में प्रमाद आदि बहुत से रोग घर कर लेंगे, वैसे ही ज़्यादा आहार कर लेने से शरीर में आलस्य घुस जाता है और फिर वह कोई करने नहीं देता, ज़्यादा आहार करने से सबसे बड़ा भारी अवगुण तो यह है कि आप एक आसन पर आदि से अन्त समय तक नहीं बैठ सकेंगे।

(३) साधक पुरुष को अल्पाहारी रहने के साथ साथ आहार भी वही करना चाहिये जिसमें कि सात्विक चीज़ों का ही समागम हो जैसे दूध, दही, घी बिना की हरी सब्ज़ी गेहूं और चावल आदि ही चीजें लेनी चाहियें उस में भी सात्विक होते हुए वह चीज़ भी नहीं खानी चाहिये किं जो ज़्यादा देर में पच सकें, हालांकि मंत्राराधन में दूध और भात (चावल) ही खाने की पुष्टि की गई है।

(४) साधक पुरुष की विषय विकार से भी दूर रहना चाहिए, जिस से दिमाग भी तर रहे और सारे ही वीर्य की ताकत इसी ओर लगाई जा सके और बहुत जल्दी कामयाबी हासिल कर सकें।

(५) साधक पुरुष-समय का भी इतना पाबंद होना चाहिये। जितनी कि इस कार्य द्वारा फायदा उठाने की चिन्ता लगी हो उतनी ही चिन्ता समय के लिए भी रखनी चाहिए।

(६) साधक पुरुष-निर्लोभी, निर्मोही, निष्कपटी, निःमायी, निक्रोध और निःरागी भी होना चाहिए।

(७) साध पुरुष-अपने मन, वचन और काया को इस इस तरह काबू में रखे कि जिस तरह चाहे रख सके।

(८) साधक पुरुष-किसी व्यसन का आदि न होवे।

(९) साधक पुरुष-मंत्राराधन के वक्त अपने मन से किसी की बुराई करने की इच्छा न करे किसी को कटु वचन भी न कहे और अपने हाथों से किसी का बुरा भी न करे।

(१०) साधक पुरुष-जब तक मंत्राराधन कर रहा हो। तब तक व्रत करे जिससे साधक पुरुष का तेज बढ़ता रहे और बहुत जल्दी फायदा उठा सके।

(११) साधक पुरुष-हर एक मन्त्र की आराधना सम्पूर्ण श्रद्धा और विधि संयुक्त ही करे।

यह साधक पुरुष की योग्यता के मुख्य विषय बतलाये गये हैं, साधन करने वाला व्यक्ति इन बातों को ध्यान में रख कर अपने आपको इस प्रकार शिक्षित कर लेवे कि वह जिस मन्त्र की आराधना कर रहा है उससे फायदा हो सके, अब मन्त्र सम्बन्धी विधि विधान बतलाये जाते हैं।

विधि विधान-

मन्त्र छः प्रकार के होते हैं- वशीकरण, स्तंभन, आकर्षण, शांतिक, पौष्टिक, मारण, विद्वेषण और उच्चाटन। इनके जो नाम है उसी प्रकार यह कार्य करते हैं। साधक पुरुष मन्त्राराधन शुभ मास शुभ दिन निकाल कर शुक्लपक्ष में शुभ चन्द्रमा का योग आने से शुरु करे।

हर एक कार्य करने के पहिले हमें यह आवश्यकता प्रतीत होती है कि

हम जिसके साथ कार्य करना चाहते हैं उसके साथ हमारा कैसा सम्बन्ध है- उस के साथ काम करने से फायदा होगा या नुकसान? इस लिये यहां पर अकडम चक्रम यन्त्र दिया जाता है।

अकड़म चक्रम यंत्रम्

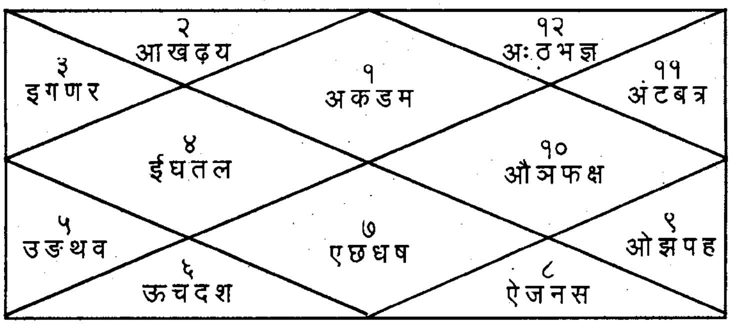

फल – १ - ५ - ९ आवे तो सिद्धी – फलंति को काले

फल – २ - ६ - १० आवे तो साध्य – फलंति वा न वा

फल – ३ - ७ - ११ आवे तो सुसिद्धी – फलंति तत् क्षणम्

फल – ४ - ८ - १२ आवे तो अरि – मूल निकंदनम्

यह नाम के अनुसार फल देने वाले हैं। हर मन्त्र की आराधना करने वाले व्यक्तियों को चाहिए कि साधना करने के पूर्व जिस मन्त्र की आराधना करे उस मन्त्र के अधिष्टायक देव के नाम का पहिला अक्षर और अपने नाम का पहिला अक्षर लेकर गिने, अगर मन्त्र के अधिष्टायक देव का नाम मालूम न हो तो मन्त्र के पहिले अक्षर को लेकर गिने और ऊपर के मुताबिक फल देखकर कार्य करें वरना कार्य फलीभूत न होगा। आजकल यह आवाज़ आती है कि हमने लिखे मुताबिक जाप किये परन्तु फल नहीं मिला?

जिसका मूल कारण यह है कि हम पहिले उस मन्त्र के सम्बन्ध को नहीं देखते हैं कि यह हमें फायदा देगा या नहीं? इसके अलावा भी स्थान, वस्त्र, माला, दिशा आदि भी बहुत सी बाते देखनी पड़ती हैं। इन सब को बिना देखे ही हम आराधना करते हैं फिर भला आप ही खुद सोचिये कि कैसे फायदा होगा? आसन, ध्यान, माला, व्यस्त्र आदि हर एक प्रकार के मन्त्रोंमें अलग अलग होते हैं इस लिए उस सम्बन्धी यंत्र देते हैं।

– (दीपनादि प्रकार यंत्रम्) –

कार्य नाम	वशीकरण	स्तंभन	आकर्षण	शांतिक	पौष्टिक	मारण	विद्वेषण	उच्चाटन
काल	पूर्वान्हे	पूर्वान्हे	पूर्वान्हे	आधी रात	प्रभात	शाम	दोपहर	अपरान्हे
ऋतु	वसन्त	वसन्त	वसन्त	हैमन्त	शिशिर	शरद्	गर्मी	वर्षा
कौनसे हाथसे	बांया हाथ	दाहिना हाथ	दाहिना हाथ	दाहिना हाथ	दाहिना हाथ	दाहिना हाथ	दाहिना हाथ	दाहिना हाथ
कौनसी उंगली से	अनामिका	तर्जनी	कनिष्टा	मध्यमा	मध्ममा	तर्जनी	तर्जनी	तर्जनी
मुद्रा	सरोज मुद्रा	शंख मुद्रा	अंकुश	ज्ञान मुद्रा	ज्ञान मुद्रा	वज्रासन	प्रवाल	प्रवाल
आसन	स्वस्तिकासन	वज्रासन	दण्डासन	पद्मासन	पद्मासन	भद्रासन	कुर्कटासन	कुर्कटासन
ध्यान वर्ण	लाल वर्ण	पीला वर्ण	अरुण वर्ण	चन्द्रकान्त वर्ण	कृष्ण वर्ण	धूम वर्ण	धूम वर्ण	
तत्व ध्यान	जल तत्व	पृथ्वी तत्व	अग्नि तत्व	जल तत्व	पृथ्वी तत्व	व्योम तत्व	वायु तत्व	वायु तत्व
माला	प्रवाल की	सोने की	प्रवाल की	स्फटिक की माला	मुक्ता मणि	पुत्र जीवनी	पुत्र जीवनी	पुत्र जीवनी
पल्लव	वषट्	धे धौ	वषौट्	स्वाहाः	स्वाहाः	धे धे	हूँ	फट्
मुख	उत्तर दिशा	पूर्व दिशा	दक्षिण दिशा	पश्चिम दिशा	नैऋत्य	ईशान	अग्नि कोण	वायव्य कोण
भेर	संपुट	विदर्भण	गन्धन	दीपन	दीपन	रोध	पल्लव	रोध

इस यन्त्र के अनुसार जिस कार्य को करे उसके नीचे के कोष्टक के माफ़िक आसन, मुद्रा, दिशा, अंगुली आदि लेकर कार्य करें अवश्य फलीभूत होगा। फिर जो विषय आपकी समझ में न आवे तो जवाबी पोस्ट कार्ड भेज कर शास्त्रीजी से पूछ सकते हैं।

आत्म रक्षा--

मन्त्र की साधना करने वाले को चाहिए कि सर्व प्रथम शुद्ध जल से स्नान कर जिस कार्य को करना है उसके वर्ण अनुसार वस्त्र पहन कर लीपी हुई ज़मीन पर बैठकर नीचे के मन्त्र से आत्म रक्षा करे।

॥ आत्म रक्षा मन्त्र ॥

ॐ परमेष्टि नमस्कारं सारं नवपदात्मकं,
आत्मरक्षाकरं, वज्र पंजराभं स्मराम्यहम् ॥१॥
ॐ नमो अरिहंताणं शिरस्कं शिरसि स्थितं,
ॐ नमो सव्वसिद्धाणं मुखे मुख पटंवरं ॥२॥
ॐ नमो आयरियाणं अंग रक्षातिशायनि,
ॐ नमो उवज्झायाणं आयुधं हस्तयोर्द्रढं ॥३॥
ॐ नमो लोए सव्व साहूणं मोचके पादयो शुभे,
ऐसो पंच नमुक्कारो, शिला वज्रमयी तले ॥४॥
सव्व पावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो वहि।
मंगलाणंच सव्वेसिं खादिरांगार - खातिका ॥५॥
स्वाहांतं च पदं ज्ञेयं, पढम हवई मंगलं
वप्रोपरि, वज्रमयं पिधानं देह रक्षणे ॥६॥
महाप्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रव-नाशिनी।
परमेष्टि-पदोद् भूता, कथिता पूर्व सूरिभिः ॥७॥
यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्टि पदैः सदा।
तस्म न स्याद् भयं व्याधि, राधि श्चापिकदाचन ॥८॥

इस प्रकार आत्म रक्षा करे बादमें नीचे लिखे मन्त्र से मुख शुद्धि करे।

॥ अथ मुख शुद्धि मन्त्र ॥

ॐ गुरु तत्वाय नमः हूँ आत्म तत्वाय स्वाहाः

ह्राँ पार्श्व तत्वाय स्वाहाः ह्रीँ विद्या तत्वाय स्वाहाः

इस प्रकार मुख शुद्धि करने के बाद नीचे के मन्त्र से दिशा बन्धन करे।

॥अथ दिशा बन्धन मन्त्र ॥

क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षौँ क्षः

इस प्रकार दिशा बन्धन करने के बाद, साधक पुरुष मन में इस प्रकार की कल्पित धारण करे कि एक नगर है जिसमें मैं साधना करने को बैठा हूं उस नगर के चारों तरफ फिरता हुआ सुवर्णमयकोट (किल्ला) है फिर दिशा बन्धन के मन्त्र से दिशा बन्धन करके जो जल है उसको दशों दिशाओं में छांटे। बाद में एक कल्पित खाई का ध्यान करे जो कि पूरी पानी से भरी है। उसमें तमाम जलचर जीव हैं ऐसा कल्पित ध्यान करे। और इस मन्त्र को पढ़े :-

॥ अथ मन्त्र ॥

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणी

अमृतं स्त्रावय २ सँ २ क्लीँ २ हूँ २ ह्राँ २

ह्रीँ २ द्रावय २ ह्रीँ स्वाहाः ॥

इस मन्त्र से प्रभु पार्श्वनाथ का अभिषेक करे और उसी जल से अपने मस्तक में तिलक करे, ऐसा करने से मंत्राराधन सम्बन्धी सर्व उपद्रव शांत होते हैं फिर मन्त्र शुरु करे, इस प्रकार हमेशा करे, ग्रन्थ बढ़ने के भय से मुख्य विधि विधान ही दिया है।

अब यहां पर मंत्रों के बीज अक्षरों में शुद्धाशुद्धि देखने के लिए बीज अक्षरों का कोष देते हैं :- अर्थ सहित

ॐ – प्रणव बीज, ध्रुव बीज, विनय और तेजो बीज है।

ऐं – वाग् और तत्त्व बीज है।

क्लीं – काम बीज है।

ह्सौं ह्सों ह्सौं – यह शक्ति बीज है।

हो – शिव और शासन बीज है।

क्षि – पृथ्वी बीज है।

प – अप्प जल बीज है।

स्वा – वायु बीज है।

हाः – आकाश बीज है।

ह्रीं – माया और त्रैलोक्य बीज है।

क्रों – अंकुश और निरोध बीज है।

आ – पाश बीज है।

फट् – विसर्जन और चलन बीज है।

वषट् – दहन बीज है।

वोषट् – आकर्षण और पूजा ग्रहण बीज है।

संवौषट् – आकर्षण बीज है।

ब्लूं – द्रावण बीज है।

ब्लैं – आकर्षण बीज है।

ग्लौं – स्तंभन बीज है।

वौंषट् – आवाहन बीज है।

क्ष्वीं – विषापाहार बीज है।

चः – चन्द्र बीज है।

घः – मारण और ग्रहण बीज है।

ए – छल बीज है।

द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः – यह पांच वाण बीज है।

हूं – द्वेष और विद्वेषण बीज है।

स्वाहाः – होम और शान्ति बीज है।

स्वधा – पौष्टिक बीज है।

नमः – शोधन बीज है।

ह – गगन बीज है।

श्रीं – लक्ष्मी बीज है।

अर्हं – ज्ञान बीज है।

इं – विष्णु बीज है।

इ – हर बीज है।

लः – तंत्र बीज है।

क्षः फट् – शस्त्र बीज है।

यः – उच्चाटन और विसर्जन बीज है।

य – वायु बीज है।

जूं – विद्वेषण बीज है।

श्लीं – अमृत बीज है।

क्षीं – सोम बीज है।

ख – खादन बीज है।

हंस – विष को दूर करने वाला बीज है।

क्ष्म्ल्व्य्रूं – पिंड बीज है।

बीज अक्षरों के लिए कुछ सांकेतिक शब्द

ॐ – तारः; ध्रुव, वैदादि, नैगमादि, श्रुत्यादि।

ह्रीं – माया, लज्जा, शक्ति, शिव, पार्वती, भुवनेश, गिरजा, नाम और बीज है।

श्रीं – लक्ष्मी नाम और लक्ष्मी बीज है।

हुं – वर्म, कवचं, त्रितत्वं, क्रोध छंद।

लं – पृथ्वी नाम और बीज है।

वं – जल नाम और बीज है।

रं – अग्नि नाम और बीज है।

यं – वायु नाम और बीज है।

हं – आकाश नाम और बीज है।

ग्लौं – नर बीज है।

हूं – कूर्चं, दीर्घ वर्म, दीर्घ तनु च्छंद है।

क्लीं – कंदर्प काम वाण नाम और बीज है।

नमः – चित्त नाम और हृन्मंत्रं है।

स्वाहाः – शिरोमं, अग्निवाच, वनिता, अग्नि प्रिया, दहन प्रिया, पावक, द्विठः ठद्वयं है।

आं ह्रीं क्रों – यह तीन पाशादि बीज है।

ऐं ह्रीं श्रीं – त्रिबीजं है।

त्रीं – तारा बीज है।

ह्रा – चंडी बीज है।

स्त्रीं – स्त्री बीज है।

यह बीज अक्षरों का कोष है और इन्हीं बीज अक्षरों द्वारा पूर्वाचार्य्यों ने मन्त्रों का निर्माण किया है। बीज अक्षरों का कोष तो बहुत बड़ा है परन्तु इस पुस्तक में उन्ही बीज अक्षरों को लिया गया है जो इस पुस्तक के साथ सम्बन्ध रखते हैं। पूर्वाचार्य्यों ने मन्त्र की पुस्तकें लिखते समय कुछ चीज़ों को गुरुगम्य रखा है। यह सारी बातें कोष द्वारा हल हो सकती हैं कि किस अक्षर को आगे पीछे लिखा है या उन्होंने किस रहस्यमय अक्षर को गुप्त रखा है इन सारी बातों का ज्ञान बीज कोष द्वारा हो सकता हैं।

पूजा अधिकार

मन्त्र के प्रारम्भ में नाम लिखना वह दीपन, अंत में नाम लिखना सो पल्लव, मध्य में नाम देना सो संपुट, प्रारम्भ मध्य और अंत में नाम देना सो रोधन, मन्त्र के एक एक अक्षर के बाद एक एक नाम का अक्षर लिखना सो ग्रंथन, मन्त्र के दो अक्षरों के बाद नाम लिखना सो विदर्भण, इस तरह कर्म की विधि समझें।

दीपन से शान्तिकर्म, पल्लव से विद्वेषण, संपुट से वशीकरण, रोधन से बन्धन, ग्रंथन से स्त्री आकर्षण, विदर्भण से स्तंभन कर्म करे। बाद में दिशा, काल, मुद्रा, आसन और पल्लव के भेदों को ऊपर दिये हुए कोष्टक से समझ कर मंत्राराधन करे। अगर इसका ज्ञान न हो तो भले ही कितने जाप करें परन्तु कभी भी फायदा न होगा।

दिन के पूर्व समय में वशीकरण, आकर्षण, और स्तंभन कर्म करे, मध्यान्ह में विद्वेषण, दिन के पिछले समय में उच्चाटन, शाम को निषेध कर्म, आधी रात को शान्ति कर्म, प्रभात में पौष्टिक कर्म करे, वशीकरण को बायां हाथ से और बाकी के सभी कर्म दाहिने हाथ से करे। आसन माला आदिके लिए कोष्टक दिया है वहां से देखें।

इस पुस्तक में जो मंत्र, यंत्र और तंत्र दिये हैं उसके सिद्ध करने की

विधि उस में दी गई हैं फिर मंत्र में दीपक साधक के दाहिनी तरफ और धूप बांयी तरफ रखें। पूर्व मन्त्र को भोज पत्र पर स्थापना करके कलश के ऊपर श्री फल रखकर मोली से बांध कर जो दिशा बतलाई हैं उस दिशा की तरफ स्थापना करें। जिस कमरे में स्थापन करना हो उस को गाय के गोबर से लीप कर लघुशान्ति से १०८ बार जल मंत्र कर कमरे की दशों दिशा द्वार आदि तरफ छांटे ऐसा करने से उपसर्ग की शान्ति होती है बाद में वर्ण अनुसार वस्त्र पहन कर माला की स्थापना करके माला गिने। सिद्ध करने के जो जाप बतलाये गये हैं वह जाप त्रिकाल भी कर सकते हैं यानि प्रातः काल, दोपहर और संध्या को भी करे या फिर सिर्फ रात को ६ बजे के बाद भी कर सकते हैं। इस प्रकार मंत्र की आराधना करें। यंत्र की भी इसी प्रकार साधना करे। साधना करने के स्थान के नीचे पोलाण नही रखे। साधना नदी किनारे, तालाब या धर्म स्थान या जंगल में एकान्त स्थान पर तथा गुफा या निज के मकान के अन्दर तथा तीर्थ स्थान आदि स्थानों पर करें। जब तक साधना करें निज के हाथ की रसोई बनाकर खावे या फिर पुरुष के ही हाथ से बनी हुई खावें परन्तु स्त्री के हाथ की न खावें, क्योंकि स्त्रियों को शास्त्रकारों ने हमेशा अपवित्र कहा। अस्तु -

जब तक साधना करें ब्रह्मचर्य व्रत पालन, भूमि शयन, व्रत, तपस्या आदि कार्य करना तथा मिथ्या भाषण व कटु वचन, आदि का त्याग करना इन बातों का पूरा ध्यान रखे। इस प्रकार साधना करने से मंत्र सिद्ध होता है।

साधना में बतलाये हुए जाप को करने के बाद स्थापना के सन्मुख त्रिकोण कुण्ड बनाकर दशांश हवन करे और दशांश तर्पण करे। हर एक मंत्र की विधि सम्पूर्ण श्रद्धा और क्रिया के पालन में तत्परता से करे। अगर एख दफा साधना करने से काम न बने तो दुबारा तिबारा करे। अगर फिर भी काम न बने तो छोड़ देवे।

कार्य बन जाने के बाद धर्म बुद्धि से तथा यथा योग्य दान आदि देवे। इस में जो भी मंत्र, यंत्र, तंत्र करे उनको द्वेष बुद्धि या अनुचित करने की दृष्टि से न करे वरना काम न होगा सिर्फ परोपकार व हित दृष्टि से करे। जिस से इस भव और पर भव में यश, मान, प्रतिष्ठा आदि मिलेगा।

आपके मन में जो चिंता है वह अब दूर हो जायेगी यदि आप में या कुटुम्ब में किसी भी प्रकार की तकलिफ है शारिरिक व्याधि है, या मानसिक धडकन है वह दूर हो जायेगी कुछ ही समय में लाभ होगा, व्यापार में वृद्धी होगी, ग्राहक व परिजन वे सभी आपके सहयोगी बनेंगे।

किसी भवके अंतराय कर्मोदय से आपको कष्ट उठाना पडा, आर्थिक लाभ नहीं हुआ - तो अब आपका समय अच्छा आ रहा है। साहस रखकर काम करते रहे आपको किसी बात की कमी नहीं रहेगी। समय मिलने पर देव दर्शन किया करें। अपने इष्ट देव का स्मरण करे।

३२३ - अंक का फल

यह काम आपका सिद्ध होगा, इसमें ग्रह दृष्टी से अच्छा समय है। जो आप विचार रहे हैं इसमें आपको लाभ मिलेगा व्यवसायिक व्यापार सम्बन्धी, कुटुम्ब सम्बन्धी, ब्याह, सगाई सम्बन्धी, शारिरीक सम्बन्धी चिंताये दूर होगी।

बहार विशेष कर आपको लाभ होगा, मन चाहा काम बन जायेगा। तीर्थ यात्रा या सत्समागम करने पर आपको विशेष शान्ति मिलेगी। धार्मिकता में भाव रखना, प्राणिमात्र को शाता उपजाना, आपकी हर कामना सिद्ध होगी।

३२१ - अंक का फल

जमीन, जायदाद, बाग, बगीचा, खेती आदि से लाभ होगा अच्छे लोगों के साथ संपर्क होगा, कहीं से आपको मार्गदर्शन मिलेगा, व्यापार, धंधा, नौकरी में वृद्धी होगी। जीवन में संकट आते ही रहते हैं पर धैर्यतासे

देव अरिहंत, गुरु निग्रंथ, केवली भाषित जैन धर्म समकित है

With Best Compliments From

Mafatlal Dalichandji Vedmutha (Jhab)

कष्टों का सामना करना, घबराना नहीं। यह पाप सभी अच्छा समय आया है, नष्ट होगें। चिंता न करें अपने इष्टदेव का स्मरण करते रहें, स्वयं रस्ता मिलेगा जीवनमें उत्कर्ष मिलेगा।

३१३ – अंक का फल

सवाल अच्छा है, अपना विचार किसी के सामने प्रकट न करें, व्यापार व कुटुम्ब परिवार में अपूर्व शान्ति मिलेगी। कही न कही से अकस्मात लाभ मिलेगा। धंधा पानी अच्छा चलेगा। सन्तान लाभ होगा, मिलन होगा पूर्व परिचितों का, कई दिनों से विचारा हुआ कार्य अब आपका बन जायेगा।

यदि आपको अपने दुश्मनों या किसीने कुछ मैली विद्या का प्रयोग करवाया हो ये सब बाधाये नष्ट हो जायेगी। आप अपने इष्टदेव का स्मरण करें। यथा शक्ति दान पुन्य करें।

३११ – अंक का फल

समय की गति पहले आपके लिये अच्छी नही थी इसलिये आपको तकलिफ उठानी पडी। परन्तु अब आपका समय अच्छा आ गया है। अब सभी काममें आपको सफलता मिलेगी, तकलिफ के दिन गये। ग्रह योग अच्छे हैं अतः व्यापार, धंधा, कुटुम्ब, घर गृहस्थी में शांति होगी।

ग्रह गोचर से मनुष्य को कष्ट उठाना पडता है परन्तु पुन्योदय होनेपर सब अनुकुल हो जाते हैं। देशान्तर में भी आपको लाभ होगा। धर्म सम्बन्धी शुभ कार्यो में लाभ लें।

समभाव से कर्मों की निर्जरा होती है

With Best Compliments From

M/s. Kuldeep Metals

55/57, Nanubhai Desai Road, Rajgopal Bhavan,
Chandawadi, Mumbai-400 004

१२१ – अंक का फल

यो तो संसार में सभी जीव सुख-दुःख, धूप-छाया समय प्रभाव से आते ही रहते हैं। किन्तु पुन्य की घडी जब आती है तब विपरीत भी अनुकुल बन जाते हैं। शत्रु मित्र बन जाते है। धन्धा, पाणी, सगाई सम्बन्धी इच्छित काम बनते हैं वो समय आपका आ गया सभी तरह से आपकी उन्नति होगी। लक्ष्मी लाभ होगा। अनुकूल परिस्थितीये बनेगी। आप अपने इष्टदेव का स्मरण करते रहें।

१२२ – अंक का फल

आपका समय अभी ठीक नहीं है। दो महिने तक शान्त रहिये। अभी आपका धारा हुआ काम नहीं बनेगा। ग्रह गोचर अशुभ चल रहा है। आपने हर एक को सहयोग दिया पर आपको कोई सहयोग नहीं देगा। सभी आपका खाने की इच्छा करेंगे। दानपुन्य करते रहिये, गाय, कुत्ते या कबुतर जानवरों को रोटी, दाना दें। दो मास का समय ठीक नहीं है।

नवकार महामंत्र का दो मास तक जाप करते रहिये। अशुभ ग्रह टल जायेगा। पुन्य का समय आते ही आपकी मनोकामना सिद्ध होगी।

१२३ – अंक का फल

जिवन में तकलिफ आती है, साहसी मनुष्य सहन करते हुये आगे बढ़ते है। अब आप चिंता न करें आपका शुभ समय आ गया है। आपके मनमें विचारा काम बन जायेगा। आपके मनमें कई काम करने के विचार आते हैं परन्तु नहीं बन पाये।

क्रोध आने पर मुंह बंद करलो (चुप)
क्रोध आत्मा का पतन करता है

With Best Compliments From

M/S. IMPEX STEEL CORPORATION

76, V. P. Road Mumbai-400 004

अब आप निश्चिंत रहे समय अच्छा है व्यापार धंधा, कामकाज, परिवार सम्बन्धी सभी प्रकार के कार्योमें सफलता मिलेगी। आपके दुश्मन भी मित्र बनेंगे। देव दर्शन स्मरण भक्ति में लाभ लें।

१३१ - अंक का फल

आप जिस काम को मन में विचार कर आये हैं वह काम पुरा पड़ेगा। पहले जो भी नुकसान हुआ है उसमें अब लाभ होगा। दौलत मिलेगी सन्तान व स्त्री की ओर से भी लाभ मिलेगा।

समाज व धार्मिकता में इज्जत मिलेगी संकट सब टल जायेंगे। शारिरीक व्याधि दूर होगी, स्त्री, सन्तान सुख मिलेगा, समय अच्छा है। अपने इष्ट देव का स्मरण करते रहें।

१३२ - अंक का फल

पहले जिन जिन धंधो में नुकसान हुआ, या जो आपके अमुक दुश्मन हुये, वे सभी अब अनुकुल बनेंगे क्योंकि अब आप का समय अच्छा आ रहा है।

राज दरबार, समाज, व जाति में सम्मान मिलेगा। आपसे अच्छे काम भी होंगे। बहुत से दिनों से आपके मन में जो विचारणा थी वो अब पुरी होने का समय आ गया है। ग्रह गोचर ठीक चल रहा है कभी कभी संकट आते हैं तो उनका साहससे सामना कीजिये सब दुःख के बादल विखर जायेंगे और आपको आनंद होगा।

२२२ - अंक का फल

आप जिस काम को विचार कर आये हैं वह काम कुछ समय के लिये छोड दिजिये, कोई दूसरा काम कीजिये अभी धारा हुआ काम करने में आपको आपत्ति का सामना करना पडेगा।

इस काम में दुश्मन लोग विघ्न डालेंगे। आपका समय २२ दिन अच्छा नहीं हैं। शान्ति से काम ले परिवार सम्बन्धी व्यापार धंधा में भी शांति से काम ले।

समय अच्छा आने पर सभी कामों में सफलता मिलेगी। अपने इष्ट देव का स्मरण किया करें।

२२१ – अंक का फल

इतने दिन आपके अच्छे थे, आनंद किया, मोज मजा की परन्तु अब समय ठीक नहीं है। अब आपके दोस्त दुश्मन बनेंगे परिवार के लोग भी तुमसे नाता तोडना चाहेंगे। समय पलटता है तब सब पलट जाते हैं।

''पुन्य क्षये क्षीयते'' जब पुन्य क्षय होता है तब क्षय हो जाते हैं। भाई-भाई दुश्मन बन जाते हैं। जो आपने मनमें काम धारा है उसे छोड़ दिजीये, एक महिना शान्ति से बिताइये, कुछ समय तक शांत बने रहिये, समय को मान दिजिये। अपने इष्ट देव का स्मरण कीजिये।

२३२ – अंक का फल

आप विचारा काम छोड दिजिये, तीन महिना ठीक समय नहीं है, सगे सम्बन्धीयों से संपर्क कम रक्खे नहीं तो वाद विवाद होगा। व्यापार धन्धा में जैसा चाहे वैसा फल नहीं मिलेगा। धर्म का आराधन नवकार महामंत्र का तीन मास तक जाप करें।

आपके ग्रह गोचर सामान्य है इसलिये धारा हुआ काम नहीं बनता। सीधा करने जाते हो तो उल्टा पड़ता हैं।

१३३ – अंक का फल

पहले आपका समय बराबर नहीं था पर अब बराबर समय आ गया है। आपका धरा हुआ काम बनेगा। इस काम में कोई अंतराय आयेगा वो भी सफल होगा। सब अडचने मिट जायेगी, सगा सम्बन्धी ब्याह, सगाई, काम, धन्धा सफल बनेगा, शरीर सम्बन्धी बाधायें दूर होगी।

यदि किसीने मैली विद्या का प्रयोग करवाया हो तो वो सब दूर होगा।

३१२ – अंक का फल

दूसरा काम बनेगा, धारा हुआ काम नहीं बनेगा समय मध्यम है हट

से काम नहीं करना। शान्ति से समय को मान देकर धन्धा व्यापार करना।

कष्ट आते हैं, जीवन में उतर चढाव आता है उसका धैर्यता से सामना करना। उद्योग करने पर लक्ष्मी प्राप्त होती है। प्रमादी आलसी कुछ नहीं कर सकता। आप अपने इष्ट देव का स्मरण करें, समय ठीक आयेगा।

३३२ – अंक का फल

बुरे दिन चले गये, अब अच्छे दिन आये हैं आपको जो भी नुकसान हुआ है वह अब सब ठीक होगा। आप अपने व्यापार धन्धे में ध्यान पूर्वक वृद्धी कीजिये फल मिलेगा, धन, सन्तान, परिवार एवं अन्य सुख सामग्री प्राप्त होगी।

अभी आपका समय अच्छा है।

२२३ – अंक का फल

आपके मन में धारा हुआ सवाल सिद्ध होगा। कुछ ही समय में लाभ होगा। परिवार सम्बन्धी, शरीर सम्बन्धी, व्यापार धंधा सम्बन्धी लाभ होगा गाय, कुत्ता, कबुतर, मुक प्राणी को आहार दें। अपने इष्ट देव का स्मरण करे। समय अच्छा है।

३२२ – अंक का फल

जो आपने अपने मनमें काम धारा है, उसमें दुश्मन लोग विघ्न डालेंगे। नतीजा अच्छा नहीं, चिंता होगी समय अच्छा नहीं। फिर भी हिम्मत रखकर, सोच समझकर काम करेंगे तो सफलता मिलेगी।

आप अपने इष्ट देव का स्मरण करें।

क्षमा वीरो का भूषण है।

With Best Compliments From

VIKRAM D. SHETH

Vikram Steel & Engg. Co.

Stockists & Mfrs.:

ALLTYPE OF STAINLESS STEEL, FERROUS & NON FERROUS METAL IN ALL INDUSTRIAL RAW MATERIAL

34, Krishna Baug, Shop No. 5, 2nd Parsiwada, Mumbai-400 004.

Tel.: 386 9666 • Fax : 389 1198

प्राचीन पाटण के भंडार में यह ताडपत्री पर लिखित संस्कृत श्लोक बद्ध श्री गौतम केवली महाविद्या प्रश्नावली प्राप्त हुई, इसकी झेरोक्ष कॉपी निकाल कर हिन्दी में यह प्रकाशित की, श्रद्धा से सम्पन्न का विषय है।

जीव किस स्थान से निकलता है

१ - पग तलियासे निकला जीव नरक योनि में जाय।

२ - जंघा से निकला जीव तिर्यंच योनि में जाय।

३ - पेट-डुंठी से निकला जीव मनुष्य लोक में जाय।

४ - मुंह-नाक-आंख-कान से निकला जीव देवगति या मनुष्य में श्रेष्ठ घर जन्म ले।

५ - चोटी से निकला जीव मोक्ष में जाय। सर्वांगसे भी,

जीव जहाँ से निकलेगा वह उफ जाता है, अथवा खुल्ला रहता है, भव्य आत्मा-उत्तम गति में ही जायेगा। नर्क-तिर्यंच में नही जायेगा।

मृत्युके समय आत्म प्रदेश कहां से निकले, यह देखने के लिये पास में रहे हुए को चाहिये कि वह उसके शरीर को देखे कि अंत समय में कौनसा अंग हिला। किस

१. गोडे के नीचे पांव तलिये तक कोई भी भाग हिले तो अधोगति समझना।

२. गोडे से कमर तक कोई भी स्थान हिले तो तिर्यंच गति में गया समझना।

३. नाभी से लेकर गले तक का कोई भी अंग हिले तो मनुष्य गति में गया।

४. मुंह, आँख, नाक, कपाल आदि खुल्ला रहे या हिले तो देवगति में गया।

सभी धार्मिक केसेट ''त्रिशला'' में मिलेगी
जवेरी बजार, प्याऊ के सामने, मुंबई

जैन दर्शन

जैन धर्म में जो मनुष्य जैसा कर्म करेगा, वैसा फल पायेगा, यह जैनों की सीधी सडक है।

मुख्य जैन धर्म में समकित

देव - राग द्वेष से रहित ऐसे जिनेश्वर परमात्मा, जिन्होन मोक्ष प्राप्त किया है वे ही मोक्ष दे सकते हैं। ऐसे परमात्मा ईश्वर को देव मानना। ऐसे २४ चौवीस तीर्थंकर हो गये।

गुरु - कंचन, कामिनी के त्यागी, पंच महाव्रत पालक, रजोहरण मुख वस्त्रीका रखनेवाले, यह जैन साधु का निशान है। इन्हें साधु, संयमी, श्रमण, निग्रंथ, मुनि और अणगार कहते हैं। गुरु मानना।

धर्म - दुर्गति प्रसृतान् जंतून्, यस्माध्धारयते ततः ॥ धत्ते चैतान् शुभे स्थाने, तस्माद् धर्म इति स्मृतः ॥१॥

जीव का लक्षण - यः कर्त्ता कर्म भेदानां, भक्ता कर्म फलस्य च ॥ संसर्ता परिनिर्वाता, स ह्यात्मा नान्य लक्षणः ॥१॥

जैन धर्म में चेतना लक्षणवाला जीव माना गया है। वो भले, बुरे कर्मोंका करनेवाला और भोगनेवाला भी है धर्म से जीवन व्यवहार में आचरण करने से मुक्ति होगी।

गति - जैन धर्म में आत्मा के जाने के इस पंचम आरे में चार रस्ते हैं (गति है) देवगति, मनुष्यगति, तिर्यंच गति, (पशु, पक्षी, जानवर) नर्क गति।

उपासना - इन नव पद की आराधना करना अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप। जैन धर्म में जन्म जन्मांतर माना गया है। धार्मिक साधना, जन्मान्त।

विश्व का महामंत्र - जैन धर्म में इस महामंत्र का जाप करने पर आत्मा को अनंत सुख की प्राप्ति होती है। इस सांसारिक जीवन में इसकी आराधना से साम्यभाव आत्मशांति मिलती है। वह है नवकार महामंत्र।

कर्म आठ है - १. ज्ञानावरणीय, २. दर्शनावरणीय, ३. वेदनीय, ४. मोहनीय, ५. नामकर्म, ६. गोत्रकर्म, ७. आयुष्यकर्म, ८. अंतरायकर्म तकदीर व तदबीर दोनों पर जीवन निर्भर है।

स्यादवाद - जैनों का स्याद्वाद (अनेकान्त वाद) यह अकाट्य सिद्धान्त है।

कोई कहेता कुछ है नही, कोई कहेता कुछ है।
है और नही के बीचमें, जो कुछ है सो है ॥१॥

अपेक्षा कृत है, और नहीं, कथंचित् अवक्तव्य है।

संसार - इस संसार का आदि नहीं, अंत नहीं समयानुसार घट, बढ होती रहती है। तीर्थंकर देव केवल ज्ञान द्वारा त्रीपदी का ज्ञान अपने गण धर शिष्यों को देते हैं उत्पात, व्यय, ध्रुव।

With Best Compliments From :

✆ Office : 621389
Resi : 620757

Sha Tikamchand Mangalchand Jain

Dealers in Balloons & Decorations

61, East Avani Moola Street, MADURAI-625 001

मुनि पदवीधर आचार्य योगवहन क्रिया

आवश्यक सूत्र के छः दिन, दशवैकालिक सूत्र के बारह दिन, दश अध्ययन के दस दिन, दो चुलिका के कुल बारह दिन बाकी के समुदेश अनुज्ञा और वृद्धी के नव दिन आ. सत्ताईस हुये उत्तराध्ययन सूत्र के बत्तीस दिन, आचारांग सूत्र के अठ्ठावन दिन, कल्पसूत्र के पैतीस दिन, महानिशीथ सूत्र के बावन दिन, नंदीसूत्र एवं अनुयोग द्वार के सात दिन, दशपयन्ने के दस दिन, श्री भगवती सूत्र के छः महिना और छः दिन, इतने योग वहन क्रिया करें। गुरु गम से तपस्या के साथ सूत्र वांचन, अभ्यास, अनुभव करे तब गणिपद मिले। पंन्यास भी पैतालिस दिन।

आगमों का अभ्यास, गुरुगम से वांचना एवं अनुभव होने पर आचार्य पदवी ग्रहण करना। पिस्तालिस आगम, ग्यारह अंग, बारह उपांग, दस पयन्ना, छः छेद, चार मूल, दो चुलिका।

दग्धे बीजे यथात्यंतं, प्रादुर्भवति नांकुरः ॥
कर्म बीजे तथा दग्धे, न रोहति भवांकुरः ॥१॥

जब तक कर्मों का नाश नहीं होता तब तक उसे जन्म, मरण के चक्कर में घूमना पडता है। कर्म बीज का नाश होने पर मुक्ति अनंत, अथाह, आनंद प्राप्त होता है।

जैन दर्शन में स्व - अपना पर - पदार्थ का निश्चयात्मक ज्ञान प्रमाण माना गया है। ध्यान चार माने गये है। आर्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान, शुक्लध्यान।

Crompton Greaves

UTTAM M. HIRAN

With Best Compliments From :

Authorised Stockist Lighting Products

SHA MANGALCHAND DARGAJEE

24, EAST AVANI MOOLA STREET, MADURAI-1.
PH.: 623050, 622179.
RESI.: 46436, 46598

जैन धर्म - आडम्बर में नहीं निर्वृत्ति में है।

जैन धर्म में भावों भरी बारीकता मनन अनुभव करने योग्य हैं आडम्बर या देखाव में नहीं, प्रभु ने फरमाया कि - जैन धर्म तो जयणा विवेक में हैं।

जयं चरे चयं चिट्ठे, जय मासे जयं सये ॥
जयं भुंजंतो भासंतो, पाव कम्मं न बंधई ॥

दशवै कालिक सूत्र ४ अध्याय।

जयणा पूर्वक चलो, जयणा पुर्वक बैठो, अपने योग्य जगह देखकर बैठो, जयणापूर्वक शयन करो, खाते समय भक्ष, अभक्ष, समय, स्थान का उपयोग रखकर भोजन करो। बोलते समय छोटे-बड़े का विवेक रखकर काम पूर्ता बोलो, ज्यादा मत बोलो, मिथ्या भाषण मत करो, इस तरह धर्म को रात दिन व्यवहार में लाओ और उसका पालन करो।

जैन धर्म में सभी के साथ प्रेमसे मैत्रीभावपूर्वक रहना कहा है, प्रत्येक जीव संसार में सुखपूर्वक यथा शक्ति तप, त्याग, ध्यान द्वारा मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

प्रत्यक्ष ज्ञान

जैन दर्शन में चर्म चक्षु द्वारा जो दृष्टीगोचर होता है वह परोक्ष ज्ञान है। क्योंकि इसमें मिथ्या भी हो सकता है। मतिज्ञान, बुद्धी का ज्ञान, श्रुतज्ञान, शास्त्रों का ज्ञान, ये दो ज्ञान परोक्ष है। परन्तु आत्मा से जो साक्षात्कार होता है वह प्रत्यक्ष ज्ञान है। अवधिज्ञान, मनपर्यवज्ञान और केवलज्ञान ये तीनों प्रत्यक्ष ज्ञान है। इनमें झूठ नहीं हो सकता।

द्रव्य तीन प्रकार के

देवद्रव्य - जिनेश्वर भगवान के बोले गये चढावें में सम्मिलित होते हैं। देवद्रव्य में मंदिर व्यय किये जाते हैं।

गुरुद्रव्य - गुरुदेव के अथवा ज्ञान खाते के चढावे गुरुद्रव्य याने ज्ञान खाते में गुरु वैयावच्चं में खर्च होते हैं।

साधारणद्रव्य - स्वधर्मी भाईयों की भक्ति आदि के चढावे व अन्य गृहस्थी के चढावे के रुपये स्वधर्मी भक्ति में खर्च किये जा सकते हैं।

जैन दर्शन में महामंत्र

जपंति ये नमस्कारं, लक्षपूर्णं विशुद्धितः ॥
जिन संघ पूजितै स्तैस्तीर्थ कृत्कर्म बध्यते ॥१॥

जो मनुष्य शुद्ध भाव से एक लाख नवकार महामंत्र का जाप करता है, वह नर्क का आयुष्य तोड देता है और अंत में जिनपद प्राप्त करता है।

चौदह पूर्व का सार भूत महाप्रभावशाली इस महामंत्र के जाप से मनुष्य मात्र के शारीरिक, मानसिक सभी व्याधीयें दूर होती है।

नव तत्त्व

जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, मोक्ष ये नव तत्त्व माने गये हैं। तत्वार्थ सूत्र, मोक्षशास्त्र में।

जीवाजीवास्त्रव बंध संवर निर्जरा मोक्षास्तत्वं

सात तत्त्व माने हैं पुण्य, पाप में दोनों आश्रव और बंध में आ जाते हैं। इन नव तत्वों का निरुपण जैन दर्शन में विस्तृत रुप से किया गया है।

संसार के सभी जीव सुख, आराम चाहते हैं, दुःख, तखलिफ कोई नहीं चाहता। किन्तु पूर्वकृत कर्मों से तखलिफ आ पड़ती है। ज्ञानी हो तो हस, हस कर भोगेगा। अज्ञानी रो, रो कर भोगेगा। यह जीव जब आया था तो अकेला ही आया था और जब यहाँ से रवाना होगा तब भी अकेला ही जायेगा।

सभी सगे व्हाले, कुटुम्ब, कबीला इस शरीर के साथीदार है। आत्मा के साथीदार कोई नहीं। संसार में जन्म लेकर यदि तूने खोटे कर्म द्वारा लक्ष्मी उपार्जन की। मौज मजा सारे कुटुम्बवाले करेंगे किन्तु कर्मों का फल तुझे ही भोगना पडेगा।

व्यवहार और निश्चय तकदीर और तदबीर

परालब्ध पहेले बना, पीछे बना शरीर ॥
तो भी यह आश्चर्य है, मनुष्य न धारे धीर ॥१॥

संसार में सभी जीव अपने, अपने कृत कर्मों के अनुसार सुख-दुःख के भोक्ता होते हैं। इसलिये जैन दर्शन में कर्म प्रधान है।

व्यापार करेवा रे, देश विदेश फरे ॥
पर सेवा हेवारे, कोडी न एक भले ॥

व्यापार या अन्य कार्य करने के लिये देश विदेश फिरते हैं किन्तु यदि कर्म में (भाग्यमें) नहीं है तो कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। आत्मा और कर्मों का अनादी सम्बन्ध है।

सात भंगी (स्याद्वाद के)

१. स्यादस्ति, २. स्यान्नास्ति, ३. स्यादस्ति नास्ति, ४. स्यादवक्तव्य, ५. स्यादस्ति अवक्तय, ६. स्यान्नास्ति अवक्तव्य, ७. स्यादस्ति नास्ति अवक्तव्यः ॥

शरीर मे आत्मा कहाँ रहता है -
तिल में तैल, अरणीमें अग्नि, फूल में सुवास वैसे

With Best Compliments From :

KANTILAL HIRAN
MANAGING DIRECTOR

Hiran

ORGOCHEM LTD.
1/5, JAYKAR SMRUTI, AAREY ROAD, GOREGAON (W),
MUMBAI-400 062. TEL: 8753624/8755123 FAX: 91-22 8721560

WORKS: 663, G.I.D.C., PANOLI-394 116. ANKLESHWAR,
DIST. BARUCH TEL: 02646-72212/72225

सात नय

१. नैगम, २. संग्रह, ३. व्यवहार, ४. रिजुसूत्र, ५. शब्द, ६. समभिरूढ, ७. और एवं भूत ये सात नय है।

मनुष्य को गुरुगम द्वारा धार्मिक अभ्यास करना, यह जीवन मिला है उसे सार्थक करना, इसका भरोसा नही कब रवाना होना पडे।

श्वास रुक जायेगी चलते चलते ॥ शमा बुझ जायेगी जलते जलते
दम निकल जायेगा रोशनी का, क्या भरोसा है इस जिन्दगी का ॥

प्रतिदिन मनुष्य को धार्मिक पुस्तकों का वांचन करना चाहिये। धीरे धीरे ज्ञान प्राप्त होगा। और आत्मा का विकास होगा।

दिगम्बर जैन २

जैन धर्म में दो धारायें है जिन कल्पी (जिनेश्वर की बराबरी) अतिशय धारी, स्थवीर कल्पी, श्वेत मानो पेत जीर्ण प्रायः उपकरण धारण करनेवाले। दिगम्बर कब कैसे अलग पडे।

दिगम्बर - दिशाही जिनके अंबर याने कपडे हो वो दिगम्बर, नग्न.

श्वेताम्बर - जिनके श्वेत वस्त्र हो वो श्वेताम्बर।

With Best Compliments From :

(O) : 382 6424
& 386 5568
Fax : 389 4561
(R) : 387 2027

JAY HIND METALS

Stockists & Suppliers of Stainless Steel Pipes
& Non Ferrous Metals

Shah Ramesh Fojmalji Burad

21/23, Laxmi Niwas, 2nd Parsiwala Lane,
Mumbai-400 004.

आवश्यक सूत्र वृत्ति में कहा है

शिवभूति मुनि, जैन श्वेताम्बर कृष्णाचार्य के शिष्य थे। भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण बाद ६०९ छ सौ नव वर्ष के बाद दिगम्बर सम्प्रदाय पृथक हुआ।

शिवभूति मुनि गृहस्थ अवस्था में इनका सहस्त्रमल नाम था। रथवीरपुर के दीपक नामक उद्यान में आर्य कृष्णाचार्य पधारे। उसी नगर में शिवभूति सहस्त्रमल नाम का प्रसिद्ध एक गृहस्थ रहता था, वैराग्य भाव आने से दीक्षा अंगीकार कर ली। कृष्णाचार्य का शिष्य बना। जगह जगह विचर कर धर्मोपदेश देते एक वक्त रथवीरपुर में गुरु शिष्य दोनों आये।

राजा ने शिवभूति मुनि को रत्न कंबल वहोराई, गुरु के पास आये, रत्न कंबल गुरु को दिखाई तो गुरु ने कहा इतनी भारी किमत की कंबल साधु को नहीं लेनी चाहिये। शिवभूति मुनि इससे नाराज हुये, एक दिन गुरुजी जिन कल्पी मुनियों का वर्णन कर रहे थे तब शिवभूति मुनि ने कहा अपन जिन कल्पी जैसे क्यों नहीं होते। वस्त्र, पात्र, उपधि क्यों रखते हैं, गुरुजी ने कहा।

जिन कल्पी मार्ग बहुत कठिन एवं काल, समय के हिसाब से बिना उपकरणो से रहना मुश्किल है, ऐसे अतिशययुक्त ज्ञानधारी नहीं रहे।

शिवभूति मुनि ने कहा क्यों कठिन है मैं जिनकल्पी मार्ग पर चलूँगा, मोक्षार्थी जीव को उपधि नहीं चाहिये।

जैसे उपधि आदि होने से मूर्छा बढ़ती है तो शरीर भी छोड़ देना चाहिये। आहार पानी भी नहीं लेना चाहिये, इससे भी शरीरका पोषण होता है। शिवभूति को बहुत समझाया किन्तु गुरुजी से अलग होकर विचरने लगे।

संसारी बहेन जो साध्वी थी उत्तरा, शिवभूति मुनि को वंदन करने आई, और उन्हीं के पंथ में शरीक हो गई। शिवभूति मुनि के दो शिष्य हुये, कोडिन्य मुनि, कोटिवीर्य मुनि, दिगम्बर लोग कहते हैं कि - धवल, जय धवल, महाधवल ये तीन शास्त्र सर्व प्रथम के हैं।

दिगम्बर मुनि - श्रावक को कहते है - धर्म वृद्धी,

श्वेताम्बर मुनि - श्रावक को कहते है - धर्म लाभ,

दिगम्बर मुनि - भिक्षा करने जाते है उसे - भ्रामरी कहते हैं

श्वेताम्बर मुनि - भिक्षा लेने जाते है उसे - गोचरी कहते हैं

श्वेताम्बर मुनि - रजोहरण ओघा रखते हैं

दिगम्बर मुनि - मोर पिछी कमंडल रखते हैं

दिगम्बरों की मान्यता

(१) कपड़ों में मोक्ष नहीं होता (नग्न होना)।

(२) केवली कवला आहार नही करते, अर्थात खाते नहीं।

(३) स्त्री को मोक्ष नहीं मिलता।

दिगम्बरों में सम्प्रदाय

१. काष्टा संघ, २. मूल संघ, ३. माथुर संघ, ४. गोप्य संघ, ५. वीश पंथ, ६. तेरह पंथ, ७. समैया पंथ.

वीश पंथवाले - मंदिर में देव देवी बिठाते हैं, तेरह पंथ वाले नहीं बिठाते।

वीश पंथवाले - पंचामृत से जिन मूर्ति का प्रक्षाल कराते हैं, तेरह पंथवाले नही कराते।

अछेरा (आश्चर्य) - कल्पसूत्र में बताये १० प्रकार के अच्छेरे श्वेताम्बर मानते हैं, दिगम्बर नहीं मानते उनके नये १० अच्छेरे है।

बीश पंथवाले प्रभु को फूल चढाते। फल भी चढाते हैं। बडी पूजायें जवारा रोपण भी करते हैं।

दिगम्बर - रथयात्रा निकालते हैं अन्दर प्रभु को बिठाते हैं, भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण बाद ६८३ पीछे - गोमटसार, त्रिलोकसार, आदि पुराण, हरिवंश पुराण, वसुनंदी श्रावकाचार, मोक्षमार्ग प्रकाश, आदि धवल, जय धवल, महाधवल से पीछे बने हैं।

गोमटसार ग्रंथ संवत ११३३ में सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमीचन्द्रजी चामुंडराय के पढने के लिये बनाया।

सवाल - श्वेताम्बर मुनि कपडे चादर - पछेडी रखते हैं। परिग्रह है।
जवाब - दिगम्बर मुनि कमंडल, मोर पीछी रखते हैं यह भी परिग्रह है।

प्रश्नचर्या समाधान नामक ग्रंथ में लिखा है कि श्री भूतबलीजी और पुष्पदंत मुनिजीने भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण के बाद ६८३ वर्ष बाद में जेठसुदी पांचम को रोज-

धवल नामक ग्रंथ	-	७०००० श्लोक वाला ग्रंथ लिखा।
जय धवल शास्त्र ग्रंथ	-	६०००० श्लोक प्रमाण ग्रंथ लिखा।
महाधवल शास्त्र ग्रंथ	-	४०००० श्लोक प्रमाण ग्रंथ लिखा।

दिगम्बरों के गणधरों द्वारा लिखे ग्रंथ कौन से हैं, कोई नहीं, दिगम्बर ग्रंथ - हरिवंश पुराण में लिखा है -

''णविउण खीरसागर जलेण भूसिओ आहरण उज्जलेण''

खीर समुद्र के स्वच्छ जल से प्रभु को स्नान कराके, जिनेन्द्र भगवान को गहने आभूषण पहनाये।

दिगम्बर - हम स्नान, गहने आभूषण जन्म के समय ही पहनाते हैं बादमें नही।

श्वेताम्बर - भगवान को सोने चांदी के रथ में बिठाकर नगर में क्यों फिराते हो, भगवान तो दीक्षा के बाद रथ में नहीं बैठे।

दिगम्बर ग्रंथ - ''वसुनंदी जिन संहिता'' में लिखा है-
अनर्चित पद द्वंद्वं, कुंकुमादि विलेपनैः॥
बिंबिं पश्यति जैनेंद्रं। ज्ञान हीन स उच्यते॥१॥

अर्थ - केशर विलेपन से रहित जिस जिनेन्द्र के बिंबका जो मनुष्य दर्शन करता है वह अविवेकी अज्ञानी है॥

खास तीन बाते

(१) केवली कवलाहार नही करते - केवलज्ञानी आहार नहीं करते।

उमास्वामी मोक्षशास्त्र में - तत्वार्थमें सूत्र ''एकादश जिने'' जिनेश्वर भगवान के भी ११ ग्यारह परिषट रहते है। कवलाहार से ज्ञानहीं जाता

(२) कपड़े में मोक्ष नहीं - कुंद कुंदाचार्य द्वारा लिखित चार ग्रंथों में लिखा है।

''नाणुवहि, संयमुवहि,
तउच्चवहि, अन्नम विउवटि''

ज्ञान उपधि, संयम उपधि, और अन्य उपधि रखना मुनियों की रखना लिखा हैं, बाह्य उपकरण से मतलब नहीं आभ्यन्तर भावों से आत्मा को मुक्ति मिलती है।

(३) स्त्री को मोक्ष नहीं होता - दिगम्बर मानते हैं

चतुर्विध संघ में साध्वी श्राविका भी मुख्य अंक है। मोक्ष का अधिकारी प्रत्येक जीव है, साधना सम्यक्त्व चाहिये।

॥ तारेइ तरिं वा नारिंवा ॥

मोक्ष आत्मा को होता है नहीं कि पुद्गल शरीर को। श्वेताम्बर में स्त्री को समान अधिकार हैं।

दिगम्बर कहते हैं कि श्वेताम्बरो में मुनिसुव्रतस्वामी के एक गणघर घोडा हुआ। यह गलत हैं। मुनिसुव्रत स्वामी के मनुष्य गण घर हुये घोडे को तो उन्होंने उपदेश दिया था जो उसे जातिस्मरण ज्ञान प्राप्त किया इसके लिये यशोविजयजी महाराज ने लिखा है।

॥ मुनिसुव्रत को गणधर घोडो, ऐसो कहे सो जाणे थोडो ॥
कौन गणधर यहां धोडो, भाख्यो झूठो आल इस विध दाख्यो ॥

श्वेताम्बर - १२ बारह देव लोक मानते हैं।

दिगम्बर - १६ सोलह देव लोक मानते हैं।

अन्य क्रियाकाण्ड में कतिपण अन्तर है किन्तु जैनों के मूलभूत सिद्धान्तों में कोई अंतर नही। जीओ और जीने दो, सत्य, अहिंसा का पालन करे स्याद्वाद अनेकांतवाद, मात्र जैन मानते हैं।

एक्यता

जैन मात्र भगवान महावीर के झंडे के नीचे खडे हो जाओं हम सब एक है, हम जैन भाई-भाई है, मुक्ति-मोक्ष का होना आत्मा का विषय है, पांचवे आरे कलियुग में कोई मोक्ष नहीं जाता, क्यों लडते हो, क्यों झगडते हो, तीर्थों के दर्शन करना है, यात्रा करनी है, करो? कौन मना करता है, श्वेताम्बर - दिगम्बर दोनों करो, कोई इन्कार नहीं करता।

नाशाम्बरत्वे न दिगम्बरत्वे, न तर्कवादे नच तत्व वादे ॥
न पक्ष सेवा श्रयेन मुक्तिः कषाय मुक्तिः किलरेव मुक्ति ॥

नही श्वेताम्बर में मुक्ति, नही दिगम्बर में मुक्तिः नहीं नर्क में, नही मात्र तत्ववादमें, राग-द्वेष की मुक्ति होने पर मुक्ति है। समन्वय अनेकान्तवाद में।

मज़हब की बहस में, खुदा मिलता नहीं।
डोर सुलझा रहा हूं, मगर शिरा मिलता नहीं ॥

With Best Compliments From :

P. R. SHAHEE, B.Com., F.C.A.

✆ 74 57 21

PUKHRAJ SHAHJEE & CO.

Chartered Accounts

1st Floor, 133, West Masi Street,
MADURAI - 625 001

बौध धर्म भगवान बुद्ध ३

बौध धर्म के प्रवर्तक भगवान गौतमबुद्ध का जीवन चरित्र एवं सिद्धान्तों का टुंक परिचय देते है। कितनेक लोग बौध और जैन धर्म को एख समझते हैं, मगर एख नहीं रहन, सहन, सिद्धान्तों में अन्तर है। बौद्ध मत में शास्त्र और साधु कैसे होते हैं उनका यहाँ परिचय दिया जाता है।

गौतम बुद्ध

इनका जन्म नेपाल सुंसमार पर्वत के पास कपिलवस्तु गांव में हुआ, पिता का नाम शुद्धोदन, माता का नाम गौतमी था। गौतम बुद्ध के पत्नि का नाम यशोधरा और पुत्र का नाम राहुल था। गौतमबुद्ध ने ३० वर्ष की आयु में दुनिया का आरंभ समारंभ सांसारिक सम्बन्ध छोड़कर मुनि बन गये।

एक दिन गौतम महल में सोने गये, उनकी पत्नि यशोधरा सोई थी. मनमें वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ। दुनिया झूठी है, सम्बन्धों में स्वार्थ है। दरवाजे से ही लौट गये, घोडेपर सवार होकर अंधेरे में चल दिये, रातभर चलने के बाद सुबह में अपने नौकर के साथ घोडा एवं अलंकार अपने पिताश्री के पास भेज दिये।

अपने सुन्दर लंबे केश कटवा कर साधु बन गये आगे जंगल की राह ली, जवानी में दुनिया का सुख, चैन छोड दिया, औरत, पुत्र, राजपाट, धन धाम तृणवत् समझकर छोड़ दिया। राजकुंवर होकर भी जंगल के मुनि बन गये।

गौतम बुद्ध के चौमासे

(१) कपिलवस्तु गांव छोड़कर प्रथम चौमासा बनारस नगर में किया। बनारस से चलकर राजगृही नगरी में आये, उपदेश देकर आनंद, देवदत्त, उपाली और अनुरुद्ध ये चार शिष्य बनाये। कपिलवस्तु गांव से शुद्धोधन का गौतमबुद्ध को बुलावा आया, शिष्यों के साथ कपिलवस्तु गांव गये, गौतमबुद्ध भिक्षा के लिये अपने घर गये, सगे सम्बन्धी सभी मिले

यशोधरासेभी मिलने गये, अपने पति को देख कर खूब रोने लगी। पांव में गिरकर रोई। गौतमबुद्धने उपदेश दिया धीरज धरो, दुनिया झूठी है, धर्म ही एक आत्म कल्याण का रास्ता है बाकी भोग विलास क्षणिक है भीक्षा लेकर गौतम अपने मठ में चले आये।

यशोदाने अपने पुत्र को राज भाग मांगने के लिये गौतम बुद्ध के पास भेजा, दो चार पड़ाव के बाद राहुल गौतमबुद्ध से मिला, अन्य साधुओं को इशारा किया और राहूल को भी साधु बना लिया, यशोधरा भी साध्वी बन गई।

भगवान महावीर एवं गौतम बुद्ध दोनों पास ही गांव मैं थे पर मुलाकात नहीं हुई। गौतमरीषी, गौतमबुद्ध, गौतम स्वामी सभी अलग अलग है।

जैन धर्म में २४ तीर्थंकर है, बौध मत में सात, बौध मत में सौगतदेव माने गये हैं, बौध साधु लाल कपडे पहनते है, जैन धर्म में श्वेत। बौध मतमें तारादेवी एक मददगार देवी अधिष्टात्री मानी गई है।

बौधमत के सात तीर्थंकर - १. विपश्यी, २. शीखी, ३. विश्वभू, ४. ककुछंद, ५. कांचन, ६. काश्यप और ७. शाक्यसिंह।

बौध मत में - प्रत्यक्ष एवं अनुमान दो प्रमाण माने गये हैं विज्ञान, वेदना, संज्ञा, संस्कार और रुप ये पांच स्कंध माने गये हैं।

बौध मत में सब पदार्थ (प्रत्येक वस्तु) क्षणिक है। जैन धर्म के तत्त्वों को नहीं मानते। बौध धर्म भगवान बुद्ध ने चलाया, पहले का कोई इतिहास नहीं।

जैनों के २४ वे तीर्थंकर भगवान महावीर हुये, उनके पहले रीषभदेव, अजितनाथ आदि २३ तीर्थंकर हुये। भगवान महावीर ने साढे बारह वर्ष तक तप किया, गौतम बुद्ध ने छः वर्ष तप किया।

भगवान महावीर के इन्द्रभूति गौतम, आदि ग्यारह गणधर अन्य कई शिष्य थे।

गौतम बुद्ध के मौदगलायन, शौरीपुत्र, आनंद, देवदत्त, उपाली और अनुरुद्ध आदि शिष्य थे।

एक वरवत गौतम बुद्ध और शिष्य देवदत्त दोनों के तकरार हुई वह शिष्य अलग होकर अपना नया मत निकाला, किन्तु छोटी उमर में वह मर गया इसलिये उसका मत चला नहीं।

भगवान महावीर का सिद्धान्त था

जीओ और जीने दो, किसी जीव को मारो मत, सब पर समभाव रक्खो। सभी जीव जीना चाहते हैं।

गौतम बुद्ध का सिद्धान्त था

जिस देश में जहां जैसा मिले वो खा लेना, अनाज मिले तो अनाज खा लेना, मांस मिले तो मांस खा लेना।

ईश्वर को कर्ता नहीं मानते

बौद्ध धर्म में क्षणिक वाद होने से जन्मजन्मान्तर नहीं मानते। लेकिन गौतम बुद्ध ने बयान किया है कि मैने बहुत जन्मजन्मान्तर में भ्रमण किया।

गौतम बुद्ध का दूसरा चौमासा राजगृही

तीसरे चौमासा का बराबर वर्णन नही मिलता।

चौथा चौमासा विशाला नगरी में किया, और भगवान महावीर ने ग्यारहवाँ चौमासा विशाला नगरी में किया विशाला नगरी से चलकर कपिलवस्तु गाँव में गये वहाँ पर शुद्धोदन (इनके पिता) का स्वर्गवास हो गया था कई बहनों को प्रतिबोध देकर साध्वीयें बनाई।

वहाँ से वत्सदेश, कौशाम्बी नगरी में आये, वहाँ से चलकर कुंतागार विहार में **पांचवा चौमासा** किया। वहाँ से महाकुल नगर में गये, वहाँ पर **छट्ठा चौमासा** किया यहाँ पर गौतम बुद्ध ने विचार किया मैंने छः वर्ष तक तप किया, लेकिन कुछ भी नहीं हुआ, इसलिये तप करना छोड़ देना चाहिये, जो भी है वो सब ज्ञान में हैं। दूसरे लोगों को उपदेश देना। महाकुल गांव से रवाना होकर राजगृही गये, राजा श्रेणिक की पत्नि क्षेमा को दीक्षा दी। वहाँ से चलकर सावथ्थी नगरी में आकर राजा श्रेणिक को कई चमत्कार दिखाये।

राजा श्रेणिक पहले जैन नहीं था बाद में भगवान महावीर की देशना सुनकर श्रावक बना, जैन धर्म अंगीकार किया।

सातवा चौमासा जेतवन विहार में किया

चौमासा के बाद चलकर सुंसमार पर्वतपर (जो कपिलवस्तु गांव के पास था) वहाँ गये, वहाँ वर **आठवा चौमासा** किया , वहाँ से चलकर कौशांबी आये, वहाँ पर मौदगलायन के साथ तकरार हुई, गुस्से में वहाँ से चलकर पारिलेयक वनमें गये। वहाँ पर **नवमा चौमासा** किया मौदगलायन और शौरीपुत्र ये दोनों गौतम बुद्ध के लायक शिष्य थे। बोध पीठको में अभी भी उनके नाम आते हैं।

दसवा चौमासा पारिलेयक वन में किया, वहाँ से चलकर कोशलदेश में बेरंजगांव गये वहाँ पर बारहवां चौमासा किया। वहाँ से रवाना होकर दखन में मंतल तक गये। वहाँ से चलकर बनारस आये बनारस, विशाला, सावथ्थी गये वहां पर राहूल अपने पुत्र को महाकुल नामका सूत्र बनाकर पुत्र को सिखाया, तब वह अठारह वर्ष का हो गया था। वहाँसे चलकर चालिया गाँव गये और **तेरहवा चौमासा** किया वहाँ से सावथ्थी जेतून विहार में गये। वहां **चौदमा चौमासा** किया, **पंनरवा सावथ्थी** निग्रोध घर में किया।

शुद्धोदन की गादी पर भद्रक राजा हुआ, उसकी गादीपर महानाम का राजा हुआ, उसको धर्मोपदेश दिया।

सोलहवां चौमासा अलवी गाँव में किया, यहाँ पर एक राक्षस को प्रतिबोध दिया।

सतरहवां चौमासा राजगृही में किया वहाँ पर एक श्रीमती नामक वैश्या को प्रतिबोध दिया। वहाँ से सावथ्थी, अलवीगांव चालीयागांव। **अठारहवां चौमासा** किया, फिर राजगृही गये। **उन्नीसवा चौमासा** वेलूवनविहार में किया, वहां से चल कर मगध में पहुँचे, **बीसमा चौमासा** सावथ्थी में किया। वहाँ से चलकर चालिया गांव गये, वहाँ पर एक चोर को प्रतिबोध दिया। जिसका नाम था अंगूलीमाली। इसके बाद चौमासों की

हकीकत बराबर नहीं मिलती।

एक दिन गौतम बुद्ध एवं देवदत्त शिष्य दोनों में तकरार हुई। जो चाचे का लड़का था। राजगृही में जाकर राजा श्रेणिक के पुत्र अजातशत्रु के मकान में ठहरा। कुछ दिन बाद गौतम बुद्ध भी आये। देवदत्त ने आपना नया मत निकाला। उसने गौतम बुद्ध से कहा -

(१) साधु को नगर छोड़कर जंगलमें रहना।

(२) गृहस्थी के उतरे पुराने कपडे पहनना।

(३) भीक्षा मांग कर आहार लेना।

(४) मांस खाना नहीं।

गौतम बुद्ध ने जवाब दिया। एक सरीखे नियम लागू नहीं हो सकते।

(१) साधुओं के लिये नगर या वन दोनों ठीक हैं।

(२) कपड़े जैसे मिले, वैसे पहन लेना।

(३) भोजन जहाँ जैसा मिले, कर लेना।

(४) मांस जिस देश में, जिस घर में जैसा मिले खा लेना।

दोनों के नियमों में फरक होने से देवदत्त ने नया मत निकाला। अजातशत्रू राजा ने उसे मदद दी, किन्तु मात्र अपना मत सावथ्थी में ही चला सका, और अल्पायु में स्वर्गवासी हुआ।

यह सब वर्णन बौधधर्म महापरिनिर्वाण ग्रंथ में हैं एकवीसवां चौमासा ले लगाकर तयालीसवा चौमासा तक के बीच की गौतम बुद्ध की दिन चर्या नहीं मिलती। चुम्मालिसवा चौमासा सावथ्थी के पास जेतवन विहार में किया। वहाँ से चलकर वलचर टकरी, वहाँ से पाटलीपुत्र, वहाँ से अंबपाली वेलुग्राम पिस्तालिसमा चौमासा किया।

वहाँ पर गौतम बुद्ध बिमार हुये, अवध, ममालिक, मगरबी, शिमाली जिल्लों में बिचरे।

३० - वर्ष दुनियादारी में रहे।
६ - वर्ष तप त्याग ध्यान में रहे।
४४ - वर्ष कुछ ज्यादा धर्म का सत्य अहिंसा का उपदेश दिया।

(१) दुनिया क्षण विनाशी है, मेरा उपदेश क्षण विनाशी नहीं।

(२) जो मनुष्य जैसा करता है, वैसा फल पाता है।

(३) काया को बिना तखलिफ दिये मुक्ति नहीं।

(४) जिसका संयोग है उसका वियोग निश्चय है।

(५) जो मनुष्य बौद्ध धर्म में दृढ रहेगा उसका ज्ञान निर्मल होगा।

(६) भावना पाँच है, मैत्री, मुदित, करुणा, अशुभ और उत्प्रेक्षा।

(७) आयतन बारह है, स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु, श्रोत, स्पर्श, रस, गंध, रूप, शब्द, मन, और धर्मायतन यह १२ आयतन है। धर्म, बुद्ध और संघ ये तीन रत्न है।

गौतम बुद्ध के उपदेशसे, श्रेणिक, अजातशत्रू, शुद्धोदन, भद्रक और महा आदि राजा, बौद्ध धर्मी हुये श्रेणिक व अजात शत्रु भगवान महावीर का समागम पाकर जैन धर्म अंगीकार किया।

गौतम बुद्ध वेलूर गाँव में बिमार पडे, अपने शिष्यों को इकट्ठा किया। और कहाँ तुम सब संगठित रहना, सबको सुख हो ऐसा करना, मेरी आयु अब तीन दिन की है, अपना मन पवित्र रखना, ज्ञान प्राप्त करने में प्रयत्नशील रहना इश तरह शिष्यों को उपदेश देकर पावापुरी गये। वहाँ पर चंदसोनी ने चावल और डुकर का मांस खिलाया। वहाँ से कुसीनार गये वहां पर इतनी बिमारी बढ गई उन्होंने अपने आनंद शिष्य को बहुत उपदेश दिया।

अंत में गौतम बुद्ध ने कहाँ पांच स्कंध में सब कुछ आ जाता है, श्रमणनिग्रंथ के सिद्धान्त इसमें आ जाते हैं। इस तरह ध्यानस्थ होकर महाप्रयाण की ओर चल दिये।

गौतम बुद्ध के निर्वाण बाद ३३० वर्ष बाद तीन पीठी का लिखी गई। काश्मीर का राजा मेघवाहन बौद्ध धर्म पालता था। चीन में भी बौधधर्म

का प्रचार हुआ।

ओरीया टापु में भी इसका फैलाव हुआ। बौधाचार्य बुधघोष ने धम्मपादसूत्र की टीका सिलोन में रची, बर्मा, जापान में बौद्ध धर्म का खूब प्रचार हुआ।

बौद्धधर्म के ग्रंथसूत्र

१. विनयपीठीका सूत्र, २. महावग्ग सूत्र, ३. कुलवग्ग सूत्र, ४. परिवार पाठ सूत्र, ५. दिग्निकाय सूत्र, ६. परिनिव्वाण सूत्र, ७. मध्यमनिकाय सूत्र, ८. सूत्र निपात, ९. विमानवथ्थु सूत्र, १०. पियवथ्थु सूत्र, ११. थिरगाथा सूत्र, १२. जातक सूत्र (इसमें कई कथायें हैं) १३. निदीश पीठिका शौरी पुत्रकृत, १४. पाटा संहिता, १५. अपादान, १६. बुधव्यास, १७. प्रिय पीठिका, १८. धर्म संग्रहणी, १९. कथावथ्थु, २०. पठाणसूत्र (इसमें जीवका स्वरूप वर्णन है) २१. श्रृगालवाद (इसमें गौतम बुद्ध के साथ श्रृगाल पुरुष के सवालों का जवाब है) ये आगम पीठिका है।

बौध पीठिका में लिखा है - निर्ग्रंथ ज्ञातपुत्र और अग्निवेशायन गौत्र का सुधर्मा अपने प्रतिपक्षी है, और पक्के दुश्मन है, इससे कह सकते है बौद्धों को जैनों से दूर रहना था, यह भी इनके ग्रंथों में लिखा है निर्ग्रंथ ज्ञातपुत्र पावापुरी में निर्वाण किया, गोशालो मंखलीपुत्र, अभयकुमार, और अजातशत्रू आदि के नाम जगह जगह लिखे हैं। बौद्धो में ललित विस्तरा ग्रंथ पुराना मानते हैं।

गौतम चार हो गये

गौतम स्वामी - इन्द्रभूति भगवान महावीर के शिष्य।

गौतम बुद्ध - गौतम बुद्ध बौद्धधर्म के स्थापक।

गौतम रिषी - वैदिक धर्म में रीषी हुये।

गौतम - सोलह पदार्थ का निर्माण करनेवाले नैयायिक

बौद्ध धर्म में मंदिर को - बौधाढक कहते हैं।

बौद्ध की मूर्ति - पद्मासन, आशिर्वाद हाथ, अंग पर जनोई मस्तकपर जटा

पदवीधर साधुको लामा कहते हैं।

कपडे -लाल पहनते हैं। साधु

ठहरने की जगह को -मठ कहते हैं कोई आश्रम भी कहते हैं।

राजा अशोक के समय बौद्ध धर्म राजधर्म था।

(यह प्रसंग न्यायरत्न श्री शांतिविजयजी कृत जैन मत प्रभाकर से उधृत)

वैदिक दर्शन

इस दर्शन धर्म में चार वेदों का कथन है, वेदों पर किन-किन महाशयो ने भाष्य बनाये, स्मृति पुराण का वर्णन किया गया है।

शुक्ल यजुर्वेद की महीधर भाष्य का कथन

तत्र ब्रह्म परंपरया प्राप्तं वेदं वेदव्यासो मंदमतीन् मनुष्यान् विचिंत्य तत्कृपया रिग्यजुः सामाथर्वाख्यान् चतुरो वेदान् पैलवैशंपायन जैमिनिसि मं तुभ्यः क्रमादुप दिदेश।

ब्रह्माजी की परंपरा से चले वेदों को व्यासजीने इनके चार भाग बनाये। १. रिग्वेद - यह पैल नाम के शिष्य को दिया। २. यजुर्वेद - यह दूसरे शिष्य वैशंपायन को दिया। ३. सामवेद - यह तीसरे शिष्य जैमिनि को दिया। ४. अथर्ववेद - यह चौथे शिष्य सिमंतु को दिया। ये चारों वेद परमेश्वर के श्वास से निकले। मनुस्मृति अध्याय पहले में लिखा है, ब्रह्माजी ने अग्नि, वायु और सूर्य से रिग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद आकृष्ट किये।

ये तीनों वेद सनातन है, महाभारत और दयानंद सरस्वती की बनाई हुई रिग्वेदादि भाषा भूमिका में लिखा है, जब प्रलय होगा, वेद परमेश्वर में लीन हो जायेंगे और जब दूसरी सृष्टि होगी, रीषी लोग तप करेंगे वेदों को

पायेंगे। रिगवेद संहितामें लिखा है वेदमंत्र रिषीयों ने उत्पन्न किये ''ऋषेर्मंत्र कृता स्तोमैः कश्यपोदर्धयन् गिरः

वैदिक धर्म में गायत्री मंत्र का जाप करना सबसे बड़ा, महान कहा है, गायत्री मंत्र पढनेसे मनुष्य मुक्ति पाता है। चाहे दूसरी कोई धर्मक्रिया बने या ना बने सिर्फ गायत्री मंत्र को पढे वह आकाश व वायु की तरह साफ पवित्र होकर परब्रह्म में लीन हो जाता है। और मुक्ति का अनन्त आनंदमय पद प्राप्त करता है। उपनिषदों में कहा गया है जो मनुष्य सूर्य के सामने बैठकर गायत्री मंत्र का जाप करे वह निडर आत्मबली और पवित्र बन जाता है। गायत्री मंत्र के प्रभाव से एक क्षत्रीय ब्रह्मरिषी हुये।

गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

अर्थ - भू, पाताल, स्वर्ग हम सूर्य की बड़ी ज्योति का ध्यान करते, वो हमारी बुद्धी को प्रेरणा करे।

वेदों को जाने, समझे, अनुभव करे उसे वैदिक कहते हैं यज्ञ कराना जानते हो उनको श्रोत्रिय कहते हैं, और जो गृहस्थों के उपनयन, विवाह आदि संस्कार कराना जानते हो उन्हें याज्ञिक कहते हैं। जिन्होंने यज्ञ किया हो उन्हें दीक्षित कहते हैं।

वेदों पर सायनाचार्य, माधवाचार्य, औव्वट और महिधराचार्य ने भाष्य बनाये, सायनाचार्य करीब ६०० वर्ष पहले कर्नाटक विजयनगर में बुक्क नामक राजा के आश्रित थे। सन्यासी बने उनका नाम विद्यारण्य स्वामी कहलाया।

अजामेघ, गोमेघ, अश्वमेघ, अग्निहोत्र, राजसूय और वाजपेय ये सब यज्ञों के नाम है। रिग्वेद की पांच शाखायें सांख्यायिनी, शाकल, बान्कुल, आश्वलायनी और माण्डूक। कृष्ण यजुर्वेद की पांच शाखा - आपस्तंबीय, हिरण्यकेशी, मैत्राणी, सत्याखाड और बोधायनी। शुक्लयजुर्वेद की तीन शाखा - कण्व, माध्यंदिनि और कात्यायनी, सामवेद की तीन शाखा -

कौथुमी, रामायणी और गोमिल। अथर्ववेद की दो शाखा - पिष्पलाद और शौनिकी।

(१) वेदों में गीतो को सुक्त कहते हैं॥

(२) गीतों की कलिको रिचा कहते हैं॥

वेदों को पढ़ने से ज्ञात होता है कि पहले लडाईयों में राजा महाराजा धनुष, बाण, वज्र का उपयोग करते थे। अनार्यों के साथ आर्यों की लडाईयें होती थी। योद्धाओं के पीने के लिये सोमरस का विधान आता है। वास्तविक में सोमरस एक लता का रस होता था, जिसके सेवन से योद्धाओं में स्फूर्ति व ताकत बढ़ जाती थी।

वैदिक धर्मशास्त्र

एतरेयोपनिषत्, अष्टविंशति उपनिषत्, शिक्षादि वेदांग चतुष्टय मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, योग वाशिष्ट, विदुरनीति, महाभारत श्रीमद् भागवत, वाल्मीकी रामायण, गीता, विष्णु सहस्त्रनाम, शिव संहस्त्र नाम, दुर्गा सप्तसती; शिवपुराण और एकादशी महात्म्य।

वेदान्त का कथन है कि जब पृथ्वी पर भार बढ़ जाता हैं, पाप बढ जाता है, मानव, मानव को मारने तैयार होता है। मर्यादा छूट जाती, तब ईश्वर कोई महान् शक्तिरूप में जन्म लेता है। अधर्मी, अत्याचारी का नाश करते हैं।

दस अवतार

मत्स्य, कूर्मो, वराहश्च, नरसिंहोथ वामनः ॥
रामो रामश्च कृष्णाच, बुधः कल्की च ते दश ॥१॥

मत्स्यावतार, कूर्मावतार, वराह अवतार, नरसिंह अवतार, वामन अवतार, परशुराम अवतार, रामा अवतार, कृष्णा अवतार, बुद्धावतार और कल्की अवतार।

वैदिक में पूरा महाभारत

शार्दूल विक्रीडित

आदौ देवकि-देव गर्भ जननं, गोपी गृहे वर्धनम् ॥
माया पूतन जीविता पहरणं, गोवर्धनो ध्धारणम् ॥
कंस-च्छेदन कौरवादि हननं, कुंती सुता पालनम् ॥
एतद् भागवतः पुराण कथनं, श्रीकृष्ण लीला स्पदम् ॥१॥

अर्थ - देवकीजी के गर्भ से श्रीकृष्णजी का जन्म हुआ। गोपियों के घर बड़े हुये, मायापूतना को मार डाला। गोवर्धन पर्वत उठाया। कंस का छेदन किया, कौरवों का नाश, पाण्डवों की रक्षा की। बस इतना ही महाभागवत का सार है।

रामायण पुरी इसमें

शार्दूल विक्रीतम्

आदौ राम तपो-वनादि-गमनं, हत्वा-मृगं कांचनं ॥
वैदेही हरणं, जटायु मरणं, सुग्रवि सं संभाषणं ॥
वाली निग्रहणं समुद्रतरणं लंकापुरी दाहनं ॥
पश्चाद् रावण कुंभकर्ण हननं, चैतद्धि रामायणं ॥१॥

अर्थ - रामचंद्रजी का वनवास जाना, कांचन मृग को मारना, सीताजी का हरण होना, जटायु का मरना, सुग्रीव के साथ वार्तालाप, बाली का निग्रह करना, लंकापुरी को जलाना, कुंभकरण, रावण का नाश करना यह पूरी रामायण का सार आ गया।

ज्ञान के द्वारा दूसरों को सही उपदेश देना, वेद पुराणों का अभ्यास वांचन, सत्संग करना, आत्मा पर अज्ञान का मैल लगा हुआ है वह सत्संग के द्वारा, शास्त्रों के पठन, पाठन द्वारा, मैल मिटाकर निर्मल भाव रख सकते हैं।

जैसे एक सफेद कपडा पहने हैं, वह धीरे-धीरे मेल के परमाणुओं से मलीन हो जायेगा, किन्तु उसका श्वेत प्रकाश उसमें मौजूद है। साबुन

लगाकर धोनेपर मैल के परमाणु साफ हो जायेंगे और उसका श्वेत प्रकाश बाहर आ जायेगा। इसी तरह आत्मा का ज्ञान पाप परमाणुओं द्वारा विस्मृत हो जाता है। सत्संग, स्वाध्याय, पठन, पाठन, वांचन से ज्ञान मिलेगा ज्ञान आत्मा का प्रकाश है। गीता, भागवत आदि धर्मग्रंथों का मनन, वाचन, श्रवण कीजिये, यहीं सत्य वैदिक परंपरा है।

सांख्य दर्शन (मरीची मत)

धर्मोहि तेषामधिको विशेषः धर्मेन हीना पशुभिः समाना।। सब में धर्म ही विशेष है, धर्म के बिना मनुष्य पशु के समान है। मनुष्य को दाढी औमूंछ, पशुके सिंग और पूंछ।। सच्चे धर्म की तलाश करना, ज्ञान प्राप्त करना आम मनुष्य का फर्ज है। यहाँ पर सांख्य धर्म का परिचय देते हैं।

कोई कहता है स्वर्ग, नर्क, परलोक कुछ नही है, परलोक किसने देखा है। खाना, पीना ऐश, आराम करना वही धर्म है। सांख्य धर्म - भरतचक्रवर्ती के लडके मरीची के चेले कपिल ने सांख्य धर्म का निरुपण किया। इस धर्म में कपिल व आसुरी के बाद संखनाम के आचार्य हुये। उनके नाम से सांख्य धर्म दर्शन पडा, पहेले इसका नाम कपिल मत था।

सांख्य धर्म में पंच विशति तत्व, तत्व कौमुदी, गौड पाद, आत्रेयतंत्र और सांख्य सप्तति आदि धर्म शास्त्र है प्रत्यक्ष अनुमान और शब्द तीन प्रमाण माने गये हैं। इस मत का मानना है कि हमारे २५ पच्चीस तत्व को जो मानता है उसकी मुक्ति होती है।

पंच विंशति तत्वज्ञो, यत्र कुत्राश्रमे वसन् ।।
जडी, मुंडी, शिखी वापी, मुच्यते नात्र संशयः ।।१।।

जो मनुष्य २५ तत्वो को समझ लें वह भले आश्रम में रहे शिरपर जटा रखे या न रखें, चोटी रखे या न रखे उसकी मरजी।

सांख्य धर्म में दो भेद है

(१) ईश्वरवादी - ईश्वर को कर्ता मानते है।

(२) अनीश्वरवादी - ईश्वर को कर्ता नहीं मानते।

सांख्य धर्म के आचार्यों के नाम - कपिल, आसुरी, भार्गव, पंचशिख और वरकृष्ण।

सांख्य धर्म के खास धर्म शास्त्र - सांख्य सप्तति, तत्वकोमुदी, गौदपाद, आत्रेयतंत्र और माठर, ईश्वरवादी, अनीश्वरवादी दोनों पचीस तत्वों को मानते हैं। सतोगुण, रजोगुण और तमो गुणकी साम्यता का नाम प्रकृति, प्रकृतिका दूसरा नाम प्रधान और अवक्तव्य।

सांख्यधर्म में माना है कि प्रकृतिसे बुद्धी, बुद्धी से अहंकार, और अहंकार से षोडसगण पैदा होते हैं। १. स्पर्शन, २. रसन, ३. घ्राण, ४. चक्षु और श्रोतये पांच बुद्धी इंद्रियें हुई। ६. वायु, ७. उपस्थ, ८. वचः, ९. हाथ, १०. पांव ये पांच कर्मेन्द्री हुई। ११. रूप, १२. रस, १३ गंध, १४. स्वर और १५. स्पर्श ये पांच तनुमात्र और १६. मन ये षोडशगण हुये। पांच तनुमात्र से पंचभूत पैदा हुये। रूप तनुमात्रसे पंचभूत पैदा हुये। रूप तनुमात्रसे तेज, रसतनुमात्रसे जल, गंध तनुमात्रसे पृथ्वी, शब्दतनुमात्र से आकाश और स्पर्श तनुमात्र से वायु पैदा हुआ, प्रकृति, बुद्धी, अहंकार और अहंकार से पांच बुद्धी इन्द्री, पांच कर्मेन्द्री, पांच तनुमात्र और मन इन सबको मिलाने से १९ तत्व हुये। इनमें ५ तत्व मिलानेसे २५ तत्व हुये। इनमें आत्मा मिलाने से २५ तत्व सांख्य धर्म में हुये।

अमूर्तश्चेतनो भोगी, नित्यः सर्वगतो क्रियः ॥
अकर्ता निर्गुणः सूक्ष्मः, आत्मा कापिल दर्शने ॥१॥

सांख्य धर्म में आत्मा अमूर्त है, ज्ञानवान भोगी, नित्य सर्वव्यापी, अक्रिय, अकर्ता, निर्गुण व सूक्ष्म है।

प्रकृते र्विरहो मोक्षः तन्ताशे स स्वरुपगः ॥
बध्यते, मुच्यते चैव, प्रकृतिः पुरुषो न तु ॥१॥

प्रकृति के विरह का नाम मोक्ष है, उसके विरह में आत्मा अपने स्वरूप को पाता है, प्रकृति ही बंधती और छूटती हैं। पुरुष का बन्ध मोक्ष नहीं।

सांख्यधर्म में साधु गेरवे रंग के कपडे पहनते हैं। हाथ में त्रिदंड और

विछाने मृगचर्म, ब्राह्मण के घरका भोजन करते हैं। उनके भक्त लोग ॐ नमो नारायणाय कहते हैं। और नमस्कार करते हैं। जवाब में साधु नारायणाय नमः कहते हैं।

नैयायिक दर्शन

योग, शैव, अक्षपाद और नैयायिक ये नैयायिक दर्शन के नाम हैं, इस दर्शन में प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द ये चार प्रमाण माने गये हैं।

प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टांत, सिद्धांत, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितंडा, हेत्वाभास, जल्प, जाति और निग्रह ये सोलह पदार्थ माने हैं।

नैयायिक साधु कंबल ओढते हैं, शिर पर जटा रखते हैं प्रतिदिन मुखशोधन कर भस्मी लगाते हैं। हाथ में तुंबा रखते हैं। नीरस भोजन करते हैं। वन में रहते हैं, फलादी खाते हैं, अतिथी का सत्कार करते हैं, पंचाग्नि तप करते हैं। उनके भक्त ॐ नमः शिवाय कहते हैं, जवाब में साधु शिवाय नमः कहते हैं।

शंकर (शिव) देव मानते हैं

शिव शंकर संसार के संहारक हैं, उनकी साधना ध्यान करते हैं।

With Best Compliments From :

Jayantilal Jain

NARESH HARDWARES

Dealers in:
Locks, Wire Mesh, Chicken Wire Mesh, Hinges, Tower Bolts, Handles.

265-A, West Masi Street, 1st Floor, Madurai-625 001.
✆ 746170 Resi.: 30902, 32436

बड़े आचार्य

१. नकुलिश, २. कौशिक, ३. गार्ग्य, ४. मैत्र्य, ५. कौपुरुष, ६. ईशान, ७. पारगार्ग्य, ८. पलांडक, ९. मनुष्यक, अपर कुशिक, ११. अत्रि, १२. पिंगलाक्ष, १३. पुष्पक, १४. बृहदाचार्य, १५. अगस्ति, १६. संतान, १७. राशीकर, १८. और विद्यागुरु ये अठारह इनके बडे आचार्य हुये।

दुःखका आत्यंतिक वियोग होना मोक्ष है, जयताचार्य का बना हुआ बड़ा न्यायतर्क ग्रंथ है। उदयनाचार्य भी बड़े विद्वान हुये इन्होंने न्याय के कई ग्रंथ लिखे, नैयायिक में एक बड़े सर्वज्ञ नामके आचार्य हुये इन्होंने न्यायसार तर्कसूत्र ग्रंथ लिखा। उस ग्रंथ पर अठारह तरह की टीकाये हैं। उनमें न्यायभूषण टीका प्रसिद्ध है।

मीमांसक दर्शन

मीमांसक दर्शन का दूसरा नाम जैमिनीय है। इनके दो भेद है।

(१) कर्म मीमांसक भट्ट प्रभाकर आदि।

(२) ब्रह्म मीमांसक वैदान्तिक लोग।

इनके साधु गेरु के रंग के कपडे पहनते हैं, त्रिदंड रखते हैं। बैठने मृगचर्म रखते हैं, हाथ में कमंडल, कितनेक मीमांसक वेदों को परमतत्व कह कर ईश्वर को नहीं मानते, मीमांसक में सर्वज्ञ आदि विशेषणवाला कोई ईश्वरनहीं, वेदों को ही नित्य मानते हैं, और उसीसे तत्वों का निर्णय करते हैं। वेदों को प्रतिदिन पढते रहते हैं, जब मीमांसक आपस में मिलते हैं तब संन्यस्तं, संन्यस्तं कहते हैं।

मीमांसक के धर्मशास्त्र

वेद कठ वल्लिका, भागवत पुराण वेदों को मानते हैं इस धर्म को मानने वाले बहुत कम दिखाई देते हैं, साधु वेश सांख्य धर्म की तरह होता है।

प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति और अभाव, ये छः

प्रमाण भट्ट मीमांसकवाले मानते हैं। और प्रभाकर मीमांसकवाले अभाव को छोड़कर बाकी पांच प्रमाण मानते हैं।

मीमांसक के साधु ब्राह्मण ही होते हैं, शुद्र के घर का आहार नहीं लेते, वेदों को अनादी, मानते पुरुषकृत नहीं, मीमांसक में साधुओं के चार भेद है। कुटीचर, बहूदक, हंस और परमहंस। कुटीचर मठ में रहते हैं, बहूदक साधु नदीके किनारे रहते हैं। नीरस भोजन करते हैं। हंस साधु फिरते रहते हैं, तप करते हैं।

सब क्रिया और ज्ञान में आगे बढने पर परमहंस होते हैं, संसारिक कार्यों से विरक्त, धर्मोपदेश देकर स्व, परका कल्याण करते हैं।

इस्लाम धर्म (मजहब)

कुरानशरीफ के आधार पर यह इनका मूल धार्मिक ग्रंथ है। इस्लाम धर्म के मुख्य शास्त्रों में लिखा है। हजरत आदम के पहले कोई मनुष्य नहीं था। रीती, रिवाज नहीं थे। जिन्न थे, वनवासी सबसे पहले पेगंबर आदम हुये। उनकी आयु ९३० नवसौ तीस वर्ष की थी।

शीख, इद्रिस, नूह, हुद, सालेह, इब्राहीम, लूत, इस्माईल, इशहाक, याकूब, युसुफ, सोएब, मुसा, हारून, इलियास, अलिसय, समयूल, दाउद, सुलेमान, यन्स, जकरीया, यहिया, इशा और आखिर में पेगम्बर महम्मदसाहब हुए। इनको सबसे अफजल मानते हैं।

कुरानशरीफ आस्मान से इन्हीं के लिये उतरा

मुल्क - अरबस्तान के मक्के शरीफ में ईस्वी सन ५७१ अर्से में पेगम्बर महम्मदसाहब पैदा हुये। और ईस्वी सन् ६११ में लोगों को धर्म का उपदेश देने लगे (मजहब की तालीम)

खुदाताला को एक मानना ॥
रसूल को जानना ॥
बुत्परस्ति (बुराई) को छोडना ॥
पांच दफा नवाज पढ़ना ॥

सालभर में एक महिने तक रोजा रखना, अगर ताकत हो तो उम्रभर में एक दफे मक्के शरीफ जाकर हज्ज करना हुकम है।

शराब पीना नहीं, जूआ खेलना नहीं, बुरे कामों से, बुरी बातों से बचना और नेकी से चलना यह हुकम है। कुरान शरीफ को मुसलमान लोग कलामें इलाही मानते हैं। और सबका उसपर ईमान है।

मुल्क - अरबस्तान में मक्का और मदीना इस्लाम (मुसलमान) मजहब की जियारतगाह है। (धार्मिक स्थान है तीर्थ है) मक्के शरीफ में मुसलमानों का काबा हज्ज करने का मुकाम हैं।

कुरानशरीफ सिपारा ४ में लिखा है, हरीमें काबेमें किसी जानवर का मारना जाईज नहीं है (अर्थात इस धार्मिक तीर्थ एरिये में किसी जानवर को नहीं मारना) अगर कोई भूल से मार देवे तो उसके बदले में अपना पाला हुआ जानवर उस जगह में छोड देवे। या दो भले आदमी उश जानवर की किमत ठहरावे उतनी किमत से गरीबो को खाना खिला दें।

दरमियान मक्के के चोखूरी चार दिवारों के अंदर काबा एक मकान है। जिसके कोनेपर मिनार बने हुये हैं। मुसलमानों की एक जियारतगाह है।

मक्के से मदीना करीब २०० दो सौ माईल है उत्तर वायुकोने में रहा हुआ है, वहाँ की मशजिद बहुत बड़ी ४०० चार सौ खंभे शंगमुसा के बने हुए है। ३०० तीन सौ चिराग रात दिन जला करते हैं। बीच में पेगम्बर महम्मदसाहब की मजार है। कई ग्रंथ छोटी बड़ी पुस्तकें अरबी भाषामें लिखी हुई मक्के शरीफ में मौजूद है। मजहब इस्लाममें गुरु को पीर कहते हैं। मुर्शद भी कहते हैं और चेले को मुरीद कहते हैं। पेगम्बर महम्मद साहब उनकी बेटी फातीमा दामाद अली, और उनके दो बेटे हसन हुसेन ये पंच तन मानते हैं।

हसन हुसेन को अजीद बादशाह ने कत्ल कर दिया था नमाज में -

बुरान मानो तो कहदूं, अभी खुदा लगती।
अयान दे गई विलाल की हस्ती ॥
नमाज पढ गये कर्बलावाले ॥

रमजान महिने की सत्तावीस मी तारीख को कुरान शरीफ आस्मान से उतरा। तारीख तेरह को रबीउल अवल सन् ग्यारह हिजरी के रोज पेगम्बर महम्मद साहब का इंतकाल हुआ।

उस रोज मुसलमान लोग रोजे रखते हैं। पेगम्बर महम्मद साहब का हिजरी सन् मुसलमानों में ज्यादा माना गया है। मौलवी, हाफिज, मुल्ला, काजी, इनकी मजहबी बुजुर्ग है (बडे हैं)

शहर अजमेर (राजस्थान) शरीफ में जिस ख्वाजोसाहब की दर्गाह है। हिजरी सन् ६०७ छः सौ सात में आप वहाँ तशरीफ लाये।

आखीर सन् ६२८ छः सौ अठावीस हिजरी में अजमेर ही में उनका इंतकाल हुआ। उनकी वहाँ दर्गाह बनाई हुई है। हरसाल वहाँ उनका उरस (मेला) होता है यानी उनकी जियारत के लिये हजारो आदमी जमा होते हैं और खेरात करते हैं, उस वक्त वहाँ बड़ा जलसा होता है। बड़ी खन्नक होती है।

कामील ने खुदाताला की तारीफ में कहा है

न गोहर में है और न हो शंगमें।
पर वो लेकिन ! चमकता है सब रंग में

एक शायर कहता है-

With Best Compliments From :

Anchor and all Electrical Goods,
PVC Cabies & Wires

PARAGON CABLES

SURAJ

Enterprises

2, Sourashtra Lane, West Masi Street, MADURAI-625 001

USE ALWAYS

POWER KING CABLES

तेरी इबादत हम गुन्हेगारों से क्या होगी ॥
हम सिर्फ नकल करते हैं, नमाज व रोजे की ॥
नक्शे वजूद तेरी जुबाँ पर हुआ तो क्या।
वो सजदा कर कि जमी पे निशा रहे।

कमर खमीदा नही, बेशबब बुढापे में ॥
जमीन ढूढ रहा हूं, मज़ार के काबिल ॥१॥

बेवजा कम नही है, बुढापे में ये कमर ॥
मैं झूक के ढूंढता हूं, जवानी किधर गई ॥२॥

महाप्रभावी भक्तामर स्तोत्र रचयिता श्री मानतुंग सूरीश्वरजी म.सा.

आपका जन्म वाराणसी (काशी) में ब्रह्मक्षत्रीय शेठ श्री धनदेव की धर्म पत्नि के कूंख से ई.सन् छ सौ में हुआ था आपके एक बहने थी, जिसका शुभ विवाह बनारस (काशी) के शेठ लक्ष्मीधर के साथ हुआ था।

ये दोनों परिवार धार्मिक एवं जैन धर्मावलम्बी थे, दिगम्बर मुनियों के संसर्ग में आने से - वैराग्यमय हो गये और माता पितासे आज्ञा लेकर चारुकीर्ति दिगम्बर मुनि के पास दीक्षा अंगीकार की, नाम रक्खा महाकीर्ति.

एक समय महाकीर्ति अपने बहेन के वहां भिक्षा के लिये गये, बहेन ने उन्हें जिन कल्पी एवं स्थविर कल्पी का सही ज्ञान दिया, एवं व्यवहार और निश्चय श्वेतांबर परंपरा का बोध दिया।

हलुकर्मी आत्मायें सत्य स्वीकार लेती हैं जिनसिंह सूरिजी के समीप श्वेताम्बर दीक्षा अंगीकार की, नाम रक्खा - ''मानतुंग मुनि''

महान् विद्वत्ता के अनुरुप आचार्य पद दिया गया, अपने अपने अनुभव चमत्कार दिखाते, दो बडे विद्वान बाम और मयूर, (श्वसुर - जमाई थे) अफने चमत्कार दिखाते (प्रबंध चिंतामणी के अनुसार) साला बहनोई थे।

भावी तीर्थकरो की यादी

	किसका जीव	अब कहां है	किस नामसे जिन बनेंगे
१.	श्रेणीक राजा	पहली नरक में	पद्मनाथ
२.	वीरप्रभु के काका	भवनपति में	सुदेव
३.	श्रेणीक पुत्र उदय	भवनपति में	सुपार्श्व
४.	पोट्टिल मुनि	चोथे देवलोकमें	स्वयंप्रभु
५.	दॅढायु श्रावक	दूसरे ''	सर्वानुभूति
६.	कार्तिक शेठ	प्रथम ''	देवश्रुत
७.	शंख श्रावक	बारहवे ''	उदय
८.	आनंद श्रावक	प्रथम ''	पेढाल
९.	सुनंदा श्राविका	पांचवे ''	पोट्टिल
१०.	शतक श्रावक	तीसरी नरक में	शतकिर्ति
११.	कृष्ण की माता देवकी	आठवे देवलोक में	मुनिसुव्रत
१२.	कृष्ण महाराजा	तीसरी नरक में	अमम
१३.	सत्यकी वियाधार	पांचमें देवलोक में	निष्कषाय
१४.	बलदेव	पांचमें देवलोक में	निष्पुलाक
१५.	सुलसा श्राविक	पांचमें देवलोक में	निर्मम
१६.	बलभद्र की माता रोहिणी	दूसरे देवलोक में	चित्रगुप्त
१७.	रैवती श्राविक	बारहवें देवलोक में	समाधि
१८.	शताली श्रावक	बारहवें देवलोक में	संबर
१९.	द्रिपायन	अग्निकुमारभवन में	यशोधर
२०.	कर्णराजा	बारवे देवलोक में	विजय
२१.	नारदजी	पांचवे देवलोक में	मल्ल
२२.	अंबड श्रावक	बारहवे देवलोक में	देव
२३.	अमर श्रावक	नवम् ग्रैवेयके	अनंतवीर्य
२४.	स्वाति बुद्ध	सर्वार्थ सिद्ध विमान में	भद्र

एक समय स्वयंप्रभ सूरि चार देवियों को उपदेश दे रहे थे कि ऊपर से
विद्याधर का विमान जाते रुका, विद्याधर नीचे उतरा वह था
रत्नचूड (भावि श्री रत्नप्रभ सूरिजी)
गुरुदेव की वाणी सुनकर दीक्षा अंगीकार की क्रमशः श्री रत्नप्रभसूरिजी हुये।
आबू पर्वत यात्रार्थ आये चक्रेश्वरी देवी की प्रेरणा से उपकेशपुर (ओसियाँ)
पधारे। वीर निर्वाण ७० सित्तेर वर्ष।
भगवान पार्श्वनाथ के पाट पर ६ छट्टे आचार्य।

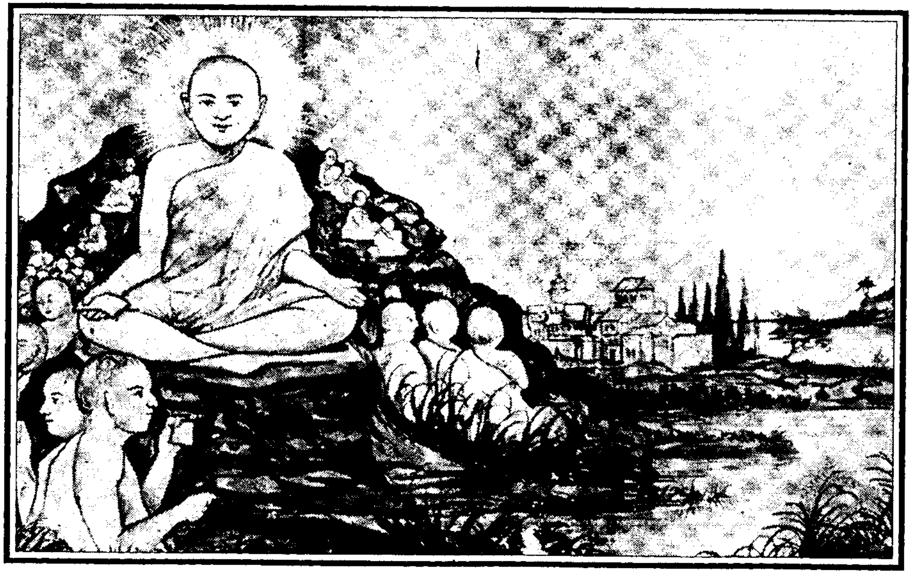

उपकेशपुर (ओसियाँ) कीलुणाद्रीटेकरी पर ५०० पांचसौ मुनियों के साथ ठहरे। लुणाद्री टेकरी पर समवसरण उपदेश पीठ पर बैठ कर मुनियों को वांचना देते।

किन्तु नगर में भयंकर हिंसा से घर घर में मांसाहार था - कहीं भी गौचरी नहीं मिली - मुनि तपस्या करते रहें। अपने आप में ध्यान स्वाध्याय में मग्न रहे। वहां का राजा श्रीमाल (भीनमाल) से आया हुआ। उपलदेव और ऊहड महामंत्री था। धर्म के नाम पर हिंसा करते थे।

आचार्य रत्नप्रभ सूरि के दो तपस्वी साधु उपकेशपुर में भिक्षार्थ गये एक घर में प्रवेश किया वहाँ निर्दयी लोगं जीवों को काट रहे थे और मांस मदिरा की प्रचुरता देख मुनि वापिस लौट आये। और तपमें तल्लीन हो गये।

आचार्य रत्नप्रभ सूरि ५०० मुनियों के साथ अनेक कठिनाइयों को सहन करते हुए उपकेशपुर में लुणाद्री पहाडी पर ध्यान लगा कर बैठे हैं।

चामुंडादेवी गुरुदेव के पास आकर प्रार्थना करती है। आप के तप-त्याग-से मैं सदा आपकी सेवा करूंगी। आप यहां चौमासा कीजिये बडा लाभ होगा।

दीर्घ तपस्वी ३५ साधु रक्खे बाकी मुनियों को कोरंटकपुर (कोरटा) भेज दिये। गुरुदेव श्री रत्नप्रभसूरिजी का वीर निर्वाण - ७० वा वर्ष में चातुर्मास उपकेशपुर (ओसियाँ) में हुआ।

राजसुता अपने पति देव के साथ सुख शय्या में सो रही थी, रात्रि समय राजा के जमाई को पीणा सांप ने काटा जिससे उसका शरीर विष व्याप्त अर्थात् मृत्युवत् हो गया।

उपलदेव की कुवरी (सौभाग्यवती) ऊहडदेव मंत्री का कुवर (त्रिलोक सिंह)

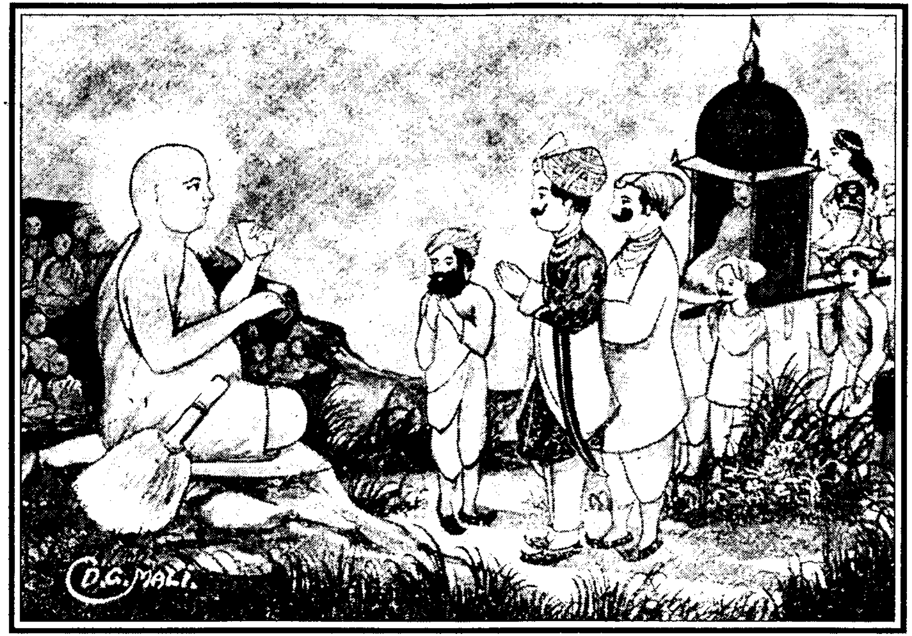

लुणाद्री टेकरी पर बिराजमान श्री रत्नप्रभ सूरिजी के पास राजा उपलदेव - महामंत्री ऊहड एवं कुवरी सोभाग्यदेवी सभी राज परिवार गुरु की सेवा में उपस्थित हुये।

महाराज ! सर्प के डंस से कुवर मर गया है इसे जीवित कीजिये। यह आप का महान उपकार होगा। क्यों कि इस संसार में सही मार्ग दिखाने वाले गुरदेव है। कृपा करो जीवित दान दो।

उपकेशपुर के राजा उपलदेव की पुत्री सोभाग्यवती का शुभ विवाह महामंत्री ऊहड के सुपुत्र त्रीलोक सिंह से कर दिया - विवाह की प्रथम रात्री में पीणा नामक सर्प ने कुंवर को डस लिया। महामूर्छित अवस्था में मृत समझकर कुंवर को जलाने स्मशान भूमि तरफ ले जा रहे है। आगे राज कुंवरी घोडे पर सवार सती होने जा रही है। सामने से एक तेजस्वी बालक साधु आकर कह रहा है !

अरे राजन ! जीवित राजकुमार को क्यों जला रहे हो, लुणाद्री टेकरी पर बिराजमान श्री रत्नप्रभसूरिजी के अंगुष्ट प्रक्षाल कुवर पर छांटो, जहर उतर जायेगा।

(लौट कर चले लुणाद्री टेकरीपर)

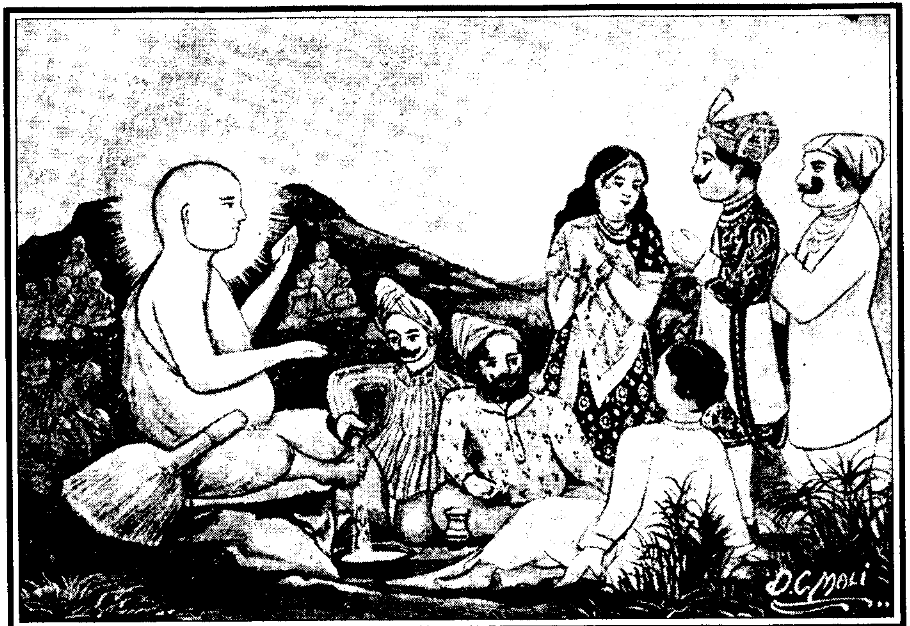

बालक साधु के कथनानुसार कुंवरी ने, कुंवर को गुरुदेव के पास बिठाया - गर्म जल लाकर गुरुदेव के अंगूठे का प्रक्षालकर - विष हर विष निन्नासं, मंत्र द्वारा पानी छिटका जहर उतर गया। राजकुंवर खडा हुआ, श्वसुर-पिता-पत्नि राज्य परिवार स्मशान वेश देखकर आश्चर्य मुग्ध हो गया। वृतान्त सुनने के बाद सभी गुरुदेव के चरणों में जा पडे। जगत का उध्धार करनेवाले गुरु का हमपर महान उपकार हुआ।

आचार्य भगवंत श्री रत्नप्रभ सूरीश्वरजी महाराज ने वीर निर्वाण ७० सीतेर वर्षे उपकेशपुर (ओसियाँ) में राजा उपलदेव - महामंत्री ऊहडदेव एवं सभी राज परिवार पुर में रहनेवाले आसपास नगरों के क्षत्रीयों ने जैन धर्म स्वीकार किया।

नाम रक्खा ओसवाल

कुल के नाम से गोत्र हुये। तत्पश्चात महान पुरुषों के नाम से गोत्र हुये। काम करने से गोत्र हुये। गॉव नाम से भी।

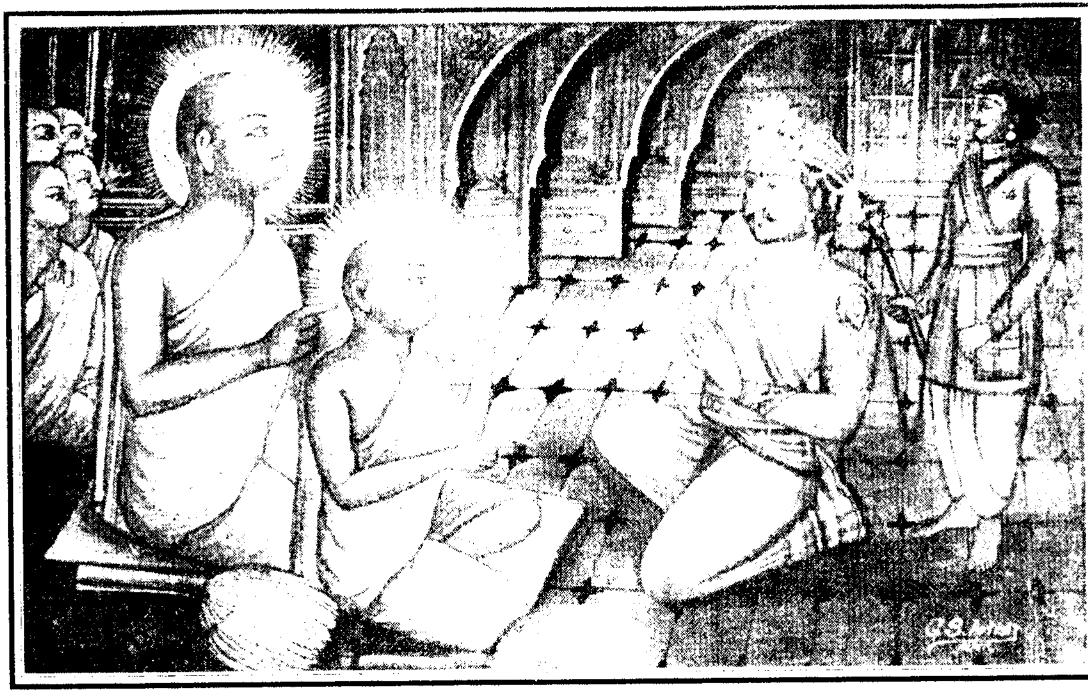

वीर निर्वाण ७० वर्ष उपकेशपुर में भगवान पार्श्वनाथ संतानीय श्री रत्नप्रभसूरीश्वरजी (विद्याधर रत्नचूड) से
उपलदेव राजा एवं ऊहडदे मंत्री सपरिवार क्षत्रियों ने जैन धर्म स्वीकार किया -
नाम रक्खा ओसवाल इनमें से कई गोत्र निकले ।

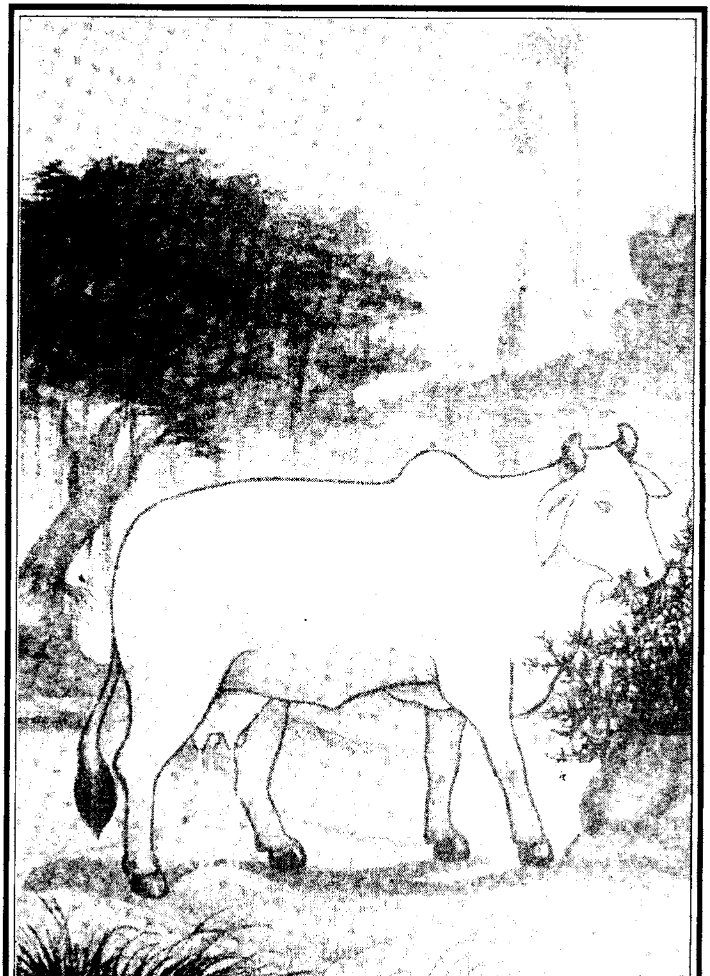

समकित धारी चामुंडादेवी (सच्चियाय माता) ने ऊहडदे महामंत्री की चरती हुई गाय का दूध अपनी दिव्य शक्ति से खेचकर - केर (केरडो) वृक्ष के पास रेती से (वालुसे) भगवान महावीर की मूर्ति बनाई जो आजभी ओसियाँ जैन मंदिर में मूल नायक की जगह बिराजमान है।

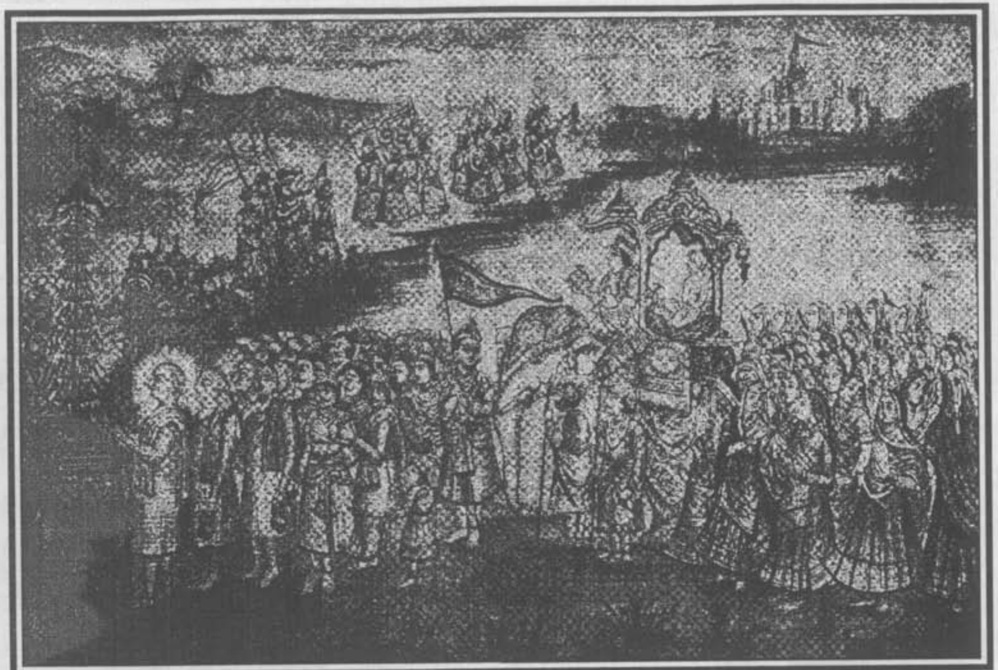

दूध रेती से बनी भूमि से महावीर मूर्ति निकाल कर एवं हीरा पन्ना पुष्पादि से पूजा कर बड़े ही जूलूस के साथ हस्ती पर आरुढ़ कर नगर प्रवेश करवाया पर कुछ जल्दी निकालने से मूर्ति के वक्षस्थल पर निंबुफल सदृश दो ग्रंथियों रह गई। वे इस समय भी विद्यमान है।

उपकेशपुर में महावीर मन्दिर की तथा कोरंटपुर कोरटा में भी महावीर मन्दिर की एक ही साथ में प्राचार्य रत्नप्रभसूरि ने वीरात् ७० वर्ष माघशुक्ल पंचमी गुरुवार धनुर्लग्न में प्रतिष्ठा करवाई। प्राचार्यश्री ने वैक्रीयलब्धि से दो रुप बनाये थे।

उपकेशपुर में एक कोटाधीश ब्राह्मण के पुत्र को सांप काट खाया था इसके बहुत उपाय किये पर कुच्छ इलाज नहीं लगा।
आखिर स्मशान ले जा रहे हैं। सच्चियाय माता के कहने पर गुरुदेव श्री रत्नप्रभसूरि के पास ले जाते हैं
गुरुदेव जीवित करते हैं। सभी जैन धर्म स्वीकार करते हैं।

सत्य अहिंसा का प्रचार करते हुये, यज्ञों में धर्म नाम पर होती हिंसा को मिटाकर अंत में सिध्धाचल तलेटी पर अनशन कर अपना नश्वर शरीर छोड कर स्वर्गवासी हुये। साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाओंने अंतिम दर्शन किये गुरुदेव श्री रत्नप्रभ सूरीश्वरजी के।

गुरुदेव। हम ओसवाल आप का उपकार कभी नहीं भूलेंगे। आप ने हमारे पूर्वजों को सत्य मार्ग दिखा कर पापोंसे हमें भी बचा लिया।

बोलों श्री स्वयंप्रभसूरीश्वर की जय।

बोलो श्री रत्नप्रभसूरीश्वर की जय।

जीवित तीर्थ ओसियाँ भगवान महावीर

वीर निर्वाण ७० वर्षे स्वयं सच्चियाय माता द्वारा निर्मित दूध और रेती की बनी भगवान महावीर की मूर्ति श्री रत्नप्रभ सूरीश्वरजी द्वारा प्रतिष्ठित - महान् चमत्कारी किसी अज्ञानी के कहने पर मूर्ति की छाती पर एक गांठ थी उसे निकाल ने हेतु कारीगर टांकी लगाई कि धडाम से नीचे गिरा। आशातना के लिये क्षमा करें।

प्रत्यक्षप्रभावी ओसियाँ भगवान महावीर के जरुर दर्शन कीजिये।

श्री यक्षदेव सूरीश्वरजी विहार कर अपनी शिष्य मंडली के साथ जंगलमें जा रहे थे कि राजा अपने साथी के साथ शिकार कर रहा है निर्पराधी जंगल में घास खाकर अपना जीवन निर्वाह करने वाले मूक अबोले हरिणों को मार रहा है ।

गुरुदेव ने उपदेश दिया जीव हिंसा से घोर पाप होता है ।

अष्टादश पुराणेषु, व्यासस्य वचनं द्वयं ॥
सुखस्य सुखमादाय, दुखस्य पर पीडनम् ॥

अठारह पुराणों का यही सारांश है, सुख देने से सुख मिलता है और दुख देने से दुख मिलता है । राजाने सत्य अहिंसामय जैन धर्म स्वीकार किया ।

कुछ वर्षों बाद चामुंडादेवी (सच्चियाय माता) द्वारा रेती दूध से बनी मूर्ति की आशातना होने पर नगर में भयंकर उपद्रव होने लगा तब महासमर्थ योगीराज श्री कक्क सूरीश्वरजी ने अठारह १८ अभिषेक व महापूजन शांतिस्नात्र करवाकर चामुंडादेवी को संतुष्ट कर नगर में शांति की और सर्व उपद्रव मिटा दिये ।

अधिष्टात्री देवी - सच्चियाय माता द्वारा, केरवृक्ष के पास, गाय के दूध व रेती से बनी, भगवान महावीर स्वामी की मूर्ति आज ओसियाँ तीर्थ में बिराजमान है।

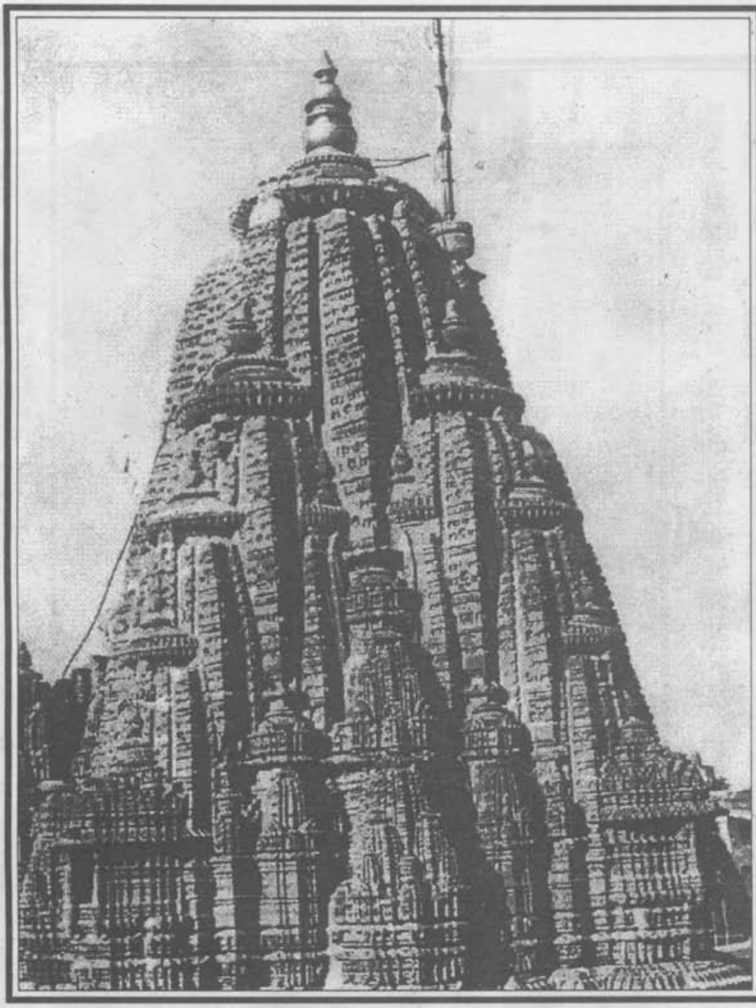

ओसियाँ-सदियों पुराणा भगवान महावीर स्वामी के मंदिर का शिखर इसमें बारीक से बारीक कारीगरी पत्थर पर कोतरणीका काम दर्शनीय अलौकिक है।
प्राचीन शिल्प कला, लतायें-गुंबज-झरोखे फूलों की श्रेणी,
देवी-देवताओं के नृत्यादि।

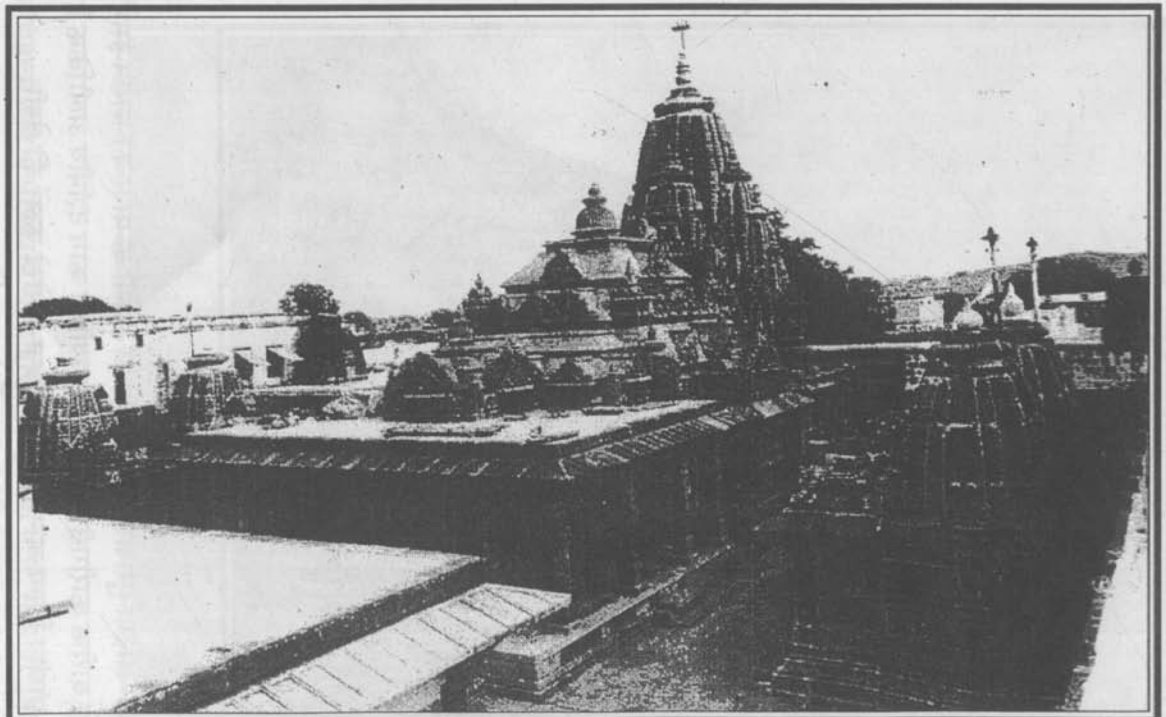

ओसियाँ में प्राचीनतम शिल्प कला का भव्य दर्शनीय जैन मंदिर (भगवान महावीर मंदिर समूह) इसके तोरण द्वार स्थापत्य कला का अजोड नमूना है। जरुर दर्शन कीजिये।

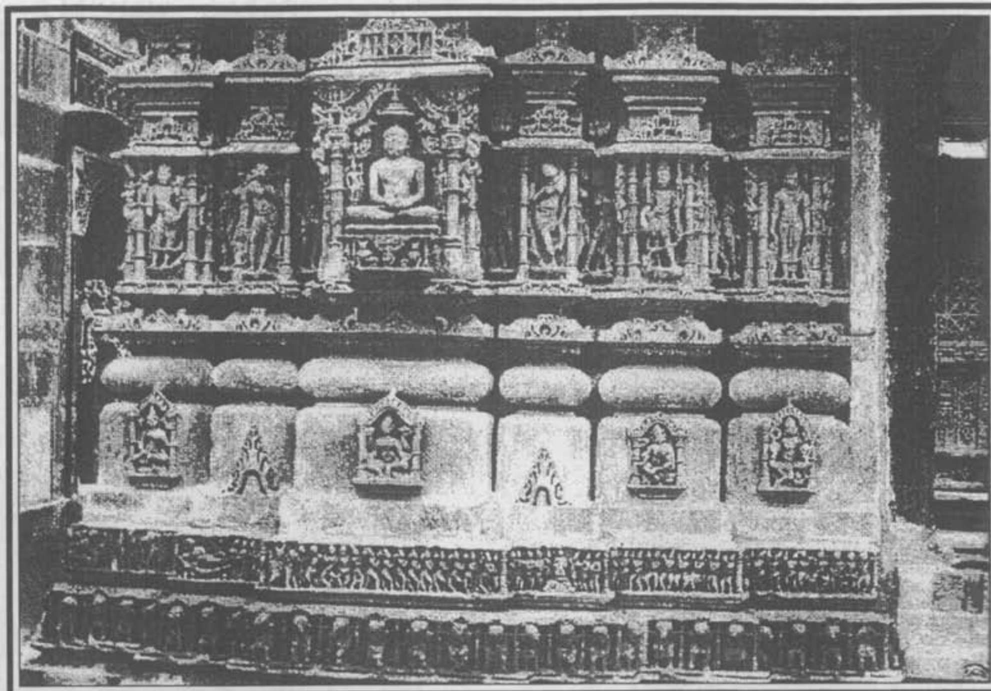

भगवान महावीर स्वामी के मंदिर में उत्तरी, देवकुलिका नं. १ (महावीर मंदिर समूह) शिल्प की अजोड कलाकृति शास्त्रीय नृत्य करती हुई अप्सरायें। (नृत्य-अंबरंतर विआरणिआहिं, ललिअ-हंस-बहु गामिणिआहिं पीण-सोणिथण-सालिणि आहिं, सकल-कमल-दल लोअणि आहिं।

भगवान महावीर स्वामी के मंदिर
में बिराजमान "पार्श्वयक्ष"

भगवान महावीर स्वामी के मंदिर
में बिराजमान "अच्छुप्ता"

श्री पार्श्वनाथ परंपरा के छठे पट्टधर (विद्याधर) श्री
रत्नप्रभसूरिजी (जिन्होंने ओसवाल बनाये) समस्थ
ओसवालों की जन्म भूमि ओसियाँ इन्होंने
१५००००० जैन बनाये एक वखतमें

इस तीर्थ के अधिष्ठायक देव श्री पूणिया बाबाजी
(मुगल कालीन-तीर्थ के देवों की आशातनायें होने से
तीर्थभूमि विरानसी हो गई थी किन्तु अभिषेकों द्वारा पुनः
उनमें वही प्रभाव मौजूद है - प्रत्यक्ष प्रभावी है।

ओसवालों की कुलदेवी - सच्चियाय माता ओसियाँ में बिराजमान है।
महान चमत्कारी-असाध्य रोग व संकट निवारण करनेवाली है।
धन-धान्य-पुत्र-पौत्र-सुख संपत्ति देनेवाली है। चाहिये भाव श्रध्धा।
देवी-देवता-वैक्रीय शरीरधारी कई रुपों में दर्शन देते है।
भक्त की मनोकामना पूर्ण करते हैं।

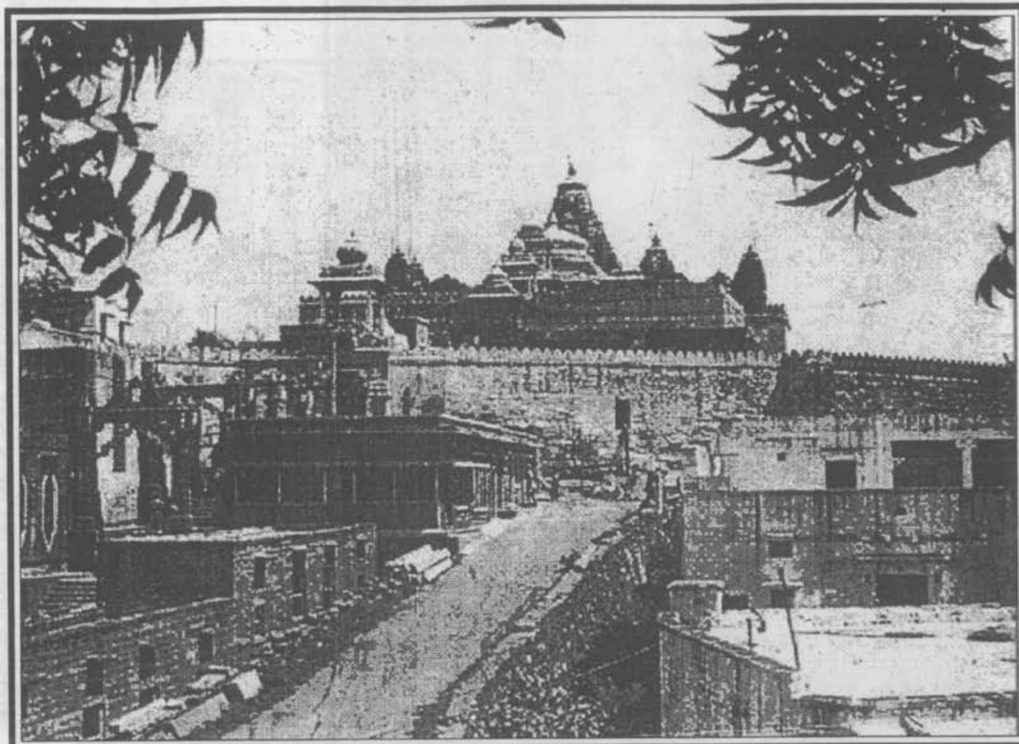

पार्श्वनाथ टेकरी लुद्रवी पर अधिष्ठात्री देवी सच्चियाय माता मंदिर ओसियाँ
यहीं पर इसी टेकरी पर रत्नप्रभसूरिजी पांचसौ शिष्यों के साथ रहे थे। और चौमासा किया था।

तीर्थ ओसीयाँ
(राजस्थान)

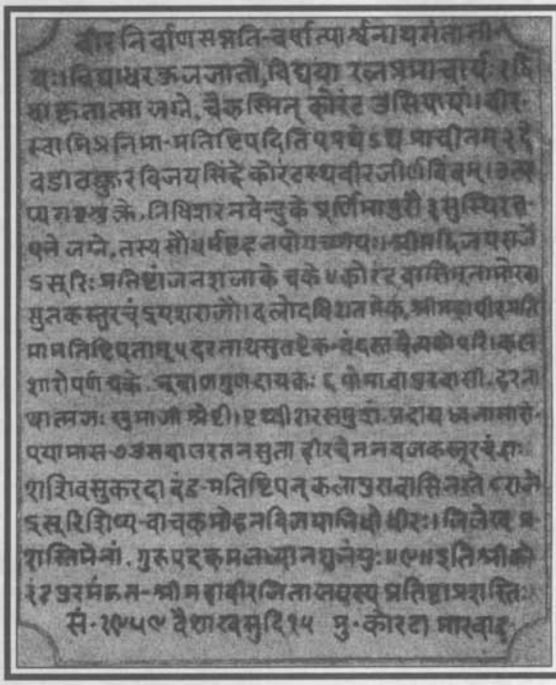

लेख-कोरंटकपुर (कोरटा)
शिवगंज के पास (राजस्थान)

ओसवाल क्षत्रीय की पत्नि सती हुई ओसियाँ में उसका स्थूप
विद्याधर श्रीरत्नप्रभ सूरिजी ने अपने दो रुप बनाकर
ओसीयां कोरटा प्रतिष्टा की थी वीर नि. ७० वर्षे।

पोरवाल (प्राग्वाट) उत्पति - श्रीमाल नगर (भीनमाल) व आबू तलेटी - पद्मावती नगरी, जैन इतिहास

ओसवाल - उत्पति ओसियाँ तीर्थ (राजस्थान)

भगवान पार्श्वनाथ के तीसरे पाट पर आचार्य - आर्यसमुद्र सूरिजी के पास दीक्षा रंग में रंगीत बचपन अवस्था में ही अपने माता पिता के साथ गुरुदेव के चरणों में हाजिर हुये। और दीक्षा के लिये प्रार्थना कर रहे हैं। (जो स्वयंप्रभसूरि हुये)

सिध्धाचल पर श्रीमाल भीनमाल नगर का संघ आया हुआ था श्री स्वयंप्रभसूरिजी से विनंती की - कि राजा जयसेन यज्ञ के नाम पर भयंकर हिंसा कर रहा है। हजारों पशुओंका बलिदान होगा।

आचार्य देव श्रीमाल (भीनमाल) पधारे - राजा जयसेन को प्रतिबोध देकर ९०,००० नव्वेहजार परिवारों को जैन बनाये, वीर निर्वाण ५२ वर्षे। नाम रक्खा प्राग्वाट (पोरवाल) क्योंकि सभी क्षत्रीय (राजपूत) श्रीमाली ब्राह्मण पूर्व दिशा में रहते थे।

श्रीमाल (भीनमाल) से गढ आबू यात्रार्थ पधारे, वहां तलेटी पद्मावती नगरी का राजा पद्मसेन यज्ञ के नाम पर हजारों पशुओं का बलिदान कर रहा है।

गुरुदेव पद्मावती नगरी पधारे राजा को सत्य अहिंसा का उपदेश देकर श्री आचार्य स्वयंप्रभ सूरीश्वरजी ने ४५००० पिस्तालिस हजार क्षत्रीय (राजपूत) राजकुल को जैन बनायें। नाम रक्खा प्राग्वाट (पोरवाल)।

राजा के पूर्वावस्था के गुरु ब्राह्मण प्राग्वाट थे इसलिये गौत्र का नाम प्राग्वाट रक्खा। सभी मिलाकर महासंघ की स्थापना की।

सच्चियाय माता का वरदान

ओसियाँ राजस्थान में लोद्रवी टेकरी से रवाना हुई माता सच्चियाय देवी-कोडी नगर में बाफणा अमरा शाह को वरदान दिया कि तुम्हारी भक्ति से मैं प्रसन्न हुई हूं। तुम्हारे हाथ से महान कार्य होगा और युगों युगों तक तुम्हारा नाम अमर रहेगा।

उन्हीं माँ के शुभाशिर्वाद से जीरावला पार्श्वनाथ का मंदिर वि.सं. ३३६ में निर्माण हुआ। आज राजस्थान में बाफणा संघवी हंसराजजी कोनाजी परिवार मालगांव निर्माण - श्री सच्चियाय माता मंदिर जीरावाला।

दांतवाडा - जिल्ला जालौर सच्चियाय माता का मंदिर निर्माता शा. पूराजी धर्माजी-घेवरचंद, रमेशकुमार, कांतिलाल, पोपटलाल, मांगीलाल महेता परिवार।

कांदीवली - शांतिलाल, सुखलाल महेता आशिर्वाद - अमरचंदजी मगनीरामजी राठोड मलाड

झाब - मुणोत - उम्मेदमलजी - श्री छट्ठीदेवी श्री सच्चियाय माता मंदिर घनला (राज) श्री मोहनलाल दलीचंद पारेख

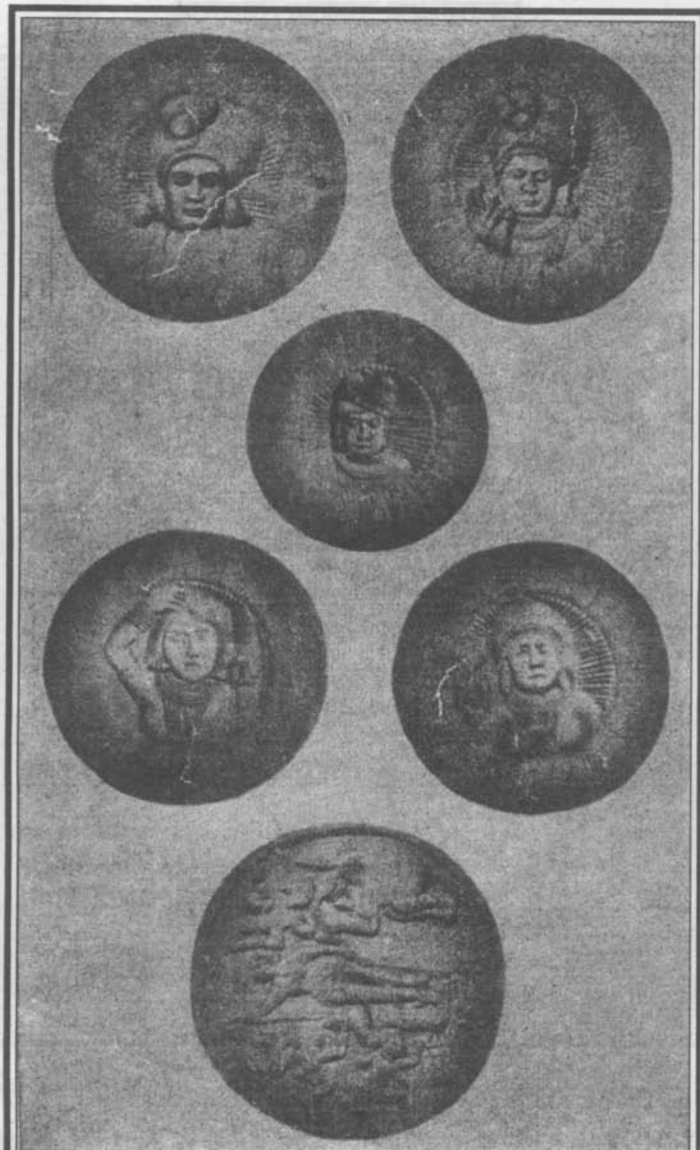

सम्प्रति राजा ने जैन धर्म अंगीकार किया और अपने पितामह व माताजी के नाम पर सिक्के चलाये। इनके समय में बहुत जनों ने जैन धर्म अंगीकार किया। तथा पूरे विश्व में जैन धर्म का प्रचार किया।

जिनालयमें उपयुक्त उपकरणे

१) मोरपींछी, २) चंवर, ३) पूजापेटी, ४) कलश, ५) सिल्वर कटोरी, ६) आरति, ७) मंगल दीपक , ८) ओरसीया, ९) स्टन्डवाला दीपक, १०) कलात्मक कलश, ११) वृषभकलश, १२) वासक्षेप मंजुषा, १३) पुष्पचंगेरी, १४) घंटी, कंडील, १५) पंखा, १६) जलवटा, १७) थाली, कटोरी, १८) धूपधाना १९) दीपक स्टेन्ड.

अष्टप्रकारी एवं नवांगी पूजाक्रम

प्रभू की पूजा कैसे, कहां से शुरु करना - नंबर एक से चालू करना, अष्ट द्रव्य से पूजा करना - यह है अष्ट द्रव्य :-

१) जलपूजा, २) चंदनपूजा, ३) पुष्पपूजा, ४) धूपपूजा,
५) दीपकपूजा, ६) अक्षतपूजा, ७) नैवेद्यपूजा, ८) फलपूजा

राजा उपलदेव द्वारा निर्मित भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति सच्चियाय माता के पास सूर्य के मंदिर में पीछले भाग देहरी में बिराजमान है।

चोवीस तीर्थंकरोंका परिचय

तीर्थंकर नाम	नगरी नाम १	पिता नाम २	माता नाम ३	राशि ४
१. श्रीऋषभदेव	अयोध्या	नाभीराजा	मरुदेवी	धन
२. श्रीअजितनाथ	अयोध्या	जितशत्रु	विजया	वृषभ
३. श्रीसंभवनाथ	सावत्थी	जितारी	सेना	मिथुन
४. श्रीअभिनंदन	अयोध्या	सम्बरराजा	सिद्धार्था	मिथुन
५. श्रीसुमतिनाथ	अयोध्या	मेघराजा	मंगला	सिंह
६. श्रीपद्मप्रभ	कोसंबी	श्रीधरराजा	सुसीमा	कन्या
७. श्रीसुपार्श्वनाथ	वाराणसि	प्रतिष्टराजा	पृथिवी	तुला
८. श्रीचन्द्रप्रभ	चन्द्रपुरी	महासेन	लक्ष्मणा	वृश्चिक
९. श्रीसुविधिनाथ	ककन्दी	सुग्रीव	रामा	धन
१०. श्रीशीतलनाथ	भद्दिलपुर	दृढरथ	नन्दा	धन
११. श्रीश्रेर्यासनाथ	सिंहपुरी	विष्णु	विष्णु	मकर
१२. श्रीवासुपूज्य	चम्पापुरी	वसुपूज्य	जया	कुभ
१३. श्रीविमलनाथ	काम्पिल्यपुर	कृतवर्म	श्यामा	मीन
१४. श्रीअनन्तनाथ	अयोध्या	सिंहसेन	सुयशा	मीन
१५. श्रीधर्मनाथ	रत्नपुरी	भानु	सुव्रता	कर्क
१६. श्रीशान्तिनाथ	गजपुर	विश्वसेन	अचिरा	मेष
१७. श्रीकुन्थुनाथ	गजपुर	सूरराजा	श्री	वृषभ
१८. श्रीअरनाथ	गजपुर	सुदर्शन	देवी	मीन
१९. श्रीमल्लिनाथ	मथुरा	कुम्भ	प्रभावती	मेष
२०. श्रीमुनिसुव्रत	राजगृही	सुमित्र	पद्मावती	मकर
२१. श्रीनमिनाथ	मथुरा	विजय	वप्रा	मेष
२२. श्रीनेमिनाथ	शौरीपुर	समुद्रविजय	शिवादेवी	कन्या
२३. श्रीपार्श्वनाथ	वाराणसी	अश्वसेन	वामा	तुला
२४. श्रीमहावीर	क्षत्रियकुंड	सिद्धार्थ	त्रिशला	कन्या

જય માલા
મણિ બંધ

हस्तरेखा निमित्त

हस्तरेखा देखना - भविष्य का ज्ञान प्राप्त करना है। हमने यह सब देखने के लिये सरलतापूर्वक नंबर देकर समझाया है। हस्तरेखा में मुख्य चिन्ह ५५ पंचावन दिखाये हैं, पुण्यशाली के हाथ में १-२-३ या इससे अधिक भी हो सकते है।

दूसरी रेखाओंको छोटी-बड़ी सभी के नंबर देखकर फलादेश दे सकते हैं।

पूरे हाथ के पंजे का इसमें वर्णन किया है। साथ में चित्र व नंबर और चित्र भी दिये हैं।

नंबर से देखिये

१. जिसके हाथ में हाथी का चिन्ह हो, वह राजा, नेता, बड़ा आदमी होता है, या हाथीवाला।

२. जिसके हाथ में मछली (मत्स्य) का चिन्ह होता है वह धनवान, सुखी अच्छी संतानवाला होता है या समुद्र की यात्रा करता है।

३. जिसके हाथ में पालखी का चिन्ह होता है वह धनवान, सामान्य ठाकुर, समाज में, जाति में आगेवान होता है। उसके पास नोकर, चाकर रहते हैं और अच्छे वाहन में बैठनेवाला होता है।

४. जिसके हाथ में घोडे का चिन्ह होता है वह फौज का अफसर बड़ा आदमी होता है। दूसरों पर हुकम चलाने वाला है। देशमें उसकी प्रतिष्ठा बढती है। बहुतसे घोडों का मालिक होता है।

५. जिसके हाथ में सिंह का चिन्ह हो वह व्यक्ति बहादुर, हिम्मतवाला, उद्योगपती, हुकुम चलानेवाला, सुखी होता है।

६. जिसके हाथ में फूलों की माला हो वह व्यक्ति जहां भी जायेगा वहाँ सन्मान पायेगा, मनकी धारणा पुरी करेगा और प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।

७. जिसके हाथ में त्रिशूल का चिन्ह हो वह व्यक्ति धर्म की ध्वजा फहरानेवाला, धर्मात्मा, सुशील एवं सदाचारी होगा। मंदिरों के निर्माता धार्मिक कार्यकर्ता

होगा। निडर एवं श्रद्धावान होगा।

८. जिसके हाथ में देवविमान का चिन्ह हो वह सुखी, धनवान, मंदिर बनानेवाला और उत्तम गति प्राप्त करने वाला होगा।

९. जिसके हाथ में सूर्य का चिन्ह हो वह व्यक्ति महान तेजस्वी ख्यातिवान एवं तामसी प्रकृतिवाला, हिम्मतवाला होगा।

१०. जिसके हाथ में अंकुश का चिन्ह होगा वह व्यक्ति धनवान, सुखी एवं हाथियों का मालिक होगा।

११. जिसके हाथ में मोर का चिन्ह हो वह व्यक्ति मीठा बोलनेवाला, आराम, सुख भोगनेवाला, जहाँ जाये वहाँ फतेह प्राप्त होगी।

१२. जिसके हाथ में योगी का चिन्ह हो वह व्यक्ति इंद्रियों को कंट्रोल करनेवाला, प्रसिद्धी प्राप्त करेगा। प्रतापी होगा, सुख, चैन से जीवन बितायेगा।

१३. जिसके हाथ में कलश का चिन्ह होगा वह व्यक्ति मंगलकारी, उत्तम आचार, विचार वाला होगा। यात्रायें करेगा और धर्मीष्ट होगा।

१४. जिसके हाथ में तलवार का चिन्ह होगा वह व्यक्ति बहादुर, हिम्मतवाला, लडवैया होगा। जय प्राप्त करने वाला होगा। और राज्य की तरफ से पुरस्कार प्राप्त करेगा।

१५. जिसके हाथ में जहाज वाहन का चिन्ह हो वह व्यक्ति समुद्र मार्ग से बड़ा व्यापारी, यात्रा करनेवाला होगा।

१६. जिसके हाथ में लक्ष्मी का चिन्ह हो वह व्यक्ति अति धनवान होता है, उसके पास जीवन पर्यन्त लक्ष्मी रहेगी। कभी भी कमी नही होगी।

१७. जिसके हाथ में स्वस्तिक (साथीयो) होगा वह व्यक्ति धनवान सदा सम्पत्तिवान, मांगलिक एवं भाग्यशाली होगा। समाज में जाति में सभी लोग उसे चाहनेवाले होंगे।

१८. जिसके हाथ में कमंडल का चिन्ह हो वह योगी, प्रतापी एवं तेजस्वी होगा।

धर्मिष्ट होगा। सेवाभावी एवं सरल प्रणामी।

१९. जिसके हाथ में सिंहासन का निशान हो वो स्वामी, राजा, बड़ा आदमी होता है। मंत्री, नेता एवं धर्माचार्य होता है।

२०. जिसके हाथ में वावडी का निशान हो वो परोपकारी, सेवाभावी एवं धर्मीष्ट व्यक्ति होता है। धनवान, सुखी रहेगा।

२१. जिसके हाथ में रथका आकारवाला चिन्ह हो वह व्यक्ति दूसरों का दुख हरनेवाला होता है, दुष्मन पर विजय प्राप्त करनेवाला, घोडा, गाडी, मोटर आदि वाहन रखनेवाला होता है।

२२. जिसके हाथ वृक्ष का निशान हो वह व्यक्ति अति धनवान, कुटुम्बवान, भाग्यवान होता है। जमीन, जागीरीवाला होता है, खान-पान से सुखी रहता है।

२३. जिसके हाथ में पर्वत-पहाड का निशान हो वह व्यक्थि हीरावाला, भाग्यशाली, धनवान होता है, और हीरे-जवाहरात का धंधा करनेवाला होता है।

२४. जिसके हाथ में छत्र का निशान हो वह पुज्य होता है और राजा या देश का बड़ा नेता बनता है। छत्रपति राजा भी होता है।

२५. जिसके हाथ में धनुष्य का निशान हो वह लडाई में विजयी बनता है, तथा उसकी देशमें इज्जत बढ़ती है। किसी भी केस में विजयी होता है।

२६. जिसके हाथ में हलका आकारवाला चिन्ह हो वो व्यक्ति खेती वाडी में यश प्राप्त करेगा, तथा इनाम प्राप्त करेगा। अपने परिश्रम से लक्ष्मी प्राप्त करेगा।

२७. जिसके हाथ में गदा का चिन्ह हो वह व्यक्ति वीर-गम्भीर व स्वयं बुद्धीशाली होता है। बहादुर होता है।

२८. जिसके हाथ में सरोवर (तालाब) का निशान हो वह व्यक्ति धनवान, सम्पत्तिवाला होता है। दूसरों को धनद्वारा सहायक होता है।

२९. जिसके हाथ में ध्वजा का निशान हो वह सदा कीर्तिमान होता है। उसकी जहां जाता है वहां प्रशंसा होती है।

३०. जिसके हाथ में पद्म का चिन्ह हो वह चक्रवर्ती राजा होता है। देश-विदेशों में यश प्राप्त करता है।

३१. जिसके हाथ में चंद्र का निशान हो वह व्यक्ति स्वरुपवान, निर्मल, यशवाला एवं सौभाग्यशाली होता है।

३२. जिसके हाथ में चामर का निशान हो वह राजा महाराजा बनता है, या महामंत्री हुकुम चलानेवाला होता है।

३३. जिसके हाथ में कच्छप (काछबा) का निशान होता है वह भूमिपती, राजा, मंत्री या नेता बनता है। समुद्रपार विदेशों में परिभ्रमण करनेवाला होता है।

३४. जिसके हाथ में तोरण का निशान होता है वह व्यक्ति उसके घर में सदा आनन्द मंगल होता है, वह कई मकानों का मालिक होता है।

३५. जिसके हाथ में चक्र का निशान हो वह चक्रवर्ती राजा या कोई बड़ा आदमी होता है।

३६. जिसके हाथ में आरीसा (काच) का चिन्ह हो वह व्यक्ति दिवान, महामंत्री होकर यश प्राप्त करता है अन्त में साधु बन कर परोपकार का मार्ग दिखाता है।

३७. जिसके हाथ में वज्र का निशान हो वह व्यक्ति वज्र के समान हृदयवाला, दृढ व्रती, किसी से पराभव नही प्राप्त करता है।

३८. जिसके हाथ में वेदी का निशान हो वह धर्म के बड़े कार्य करता है प्रतिष्ठा महोत्सव आदि में अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग करता है। श्रद्धावान होता है।

३९. जिसके हाथ के दोनों अंगूठों पर यव (जव) का निशान हो वह विद्वान और कई कलाओं का ज्ञाता होता है। विद्या में नाम प्राप्त करता है और प्रायः शुक्ल पक्ष में उसका जन्म होता है।

४०. जिसके हाथ में शंख का निशान हो वह व्यक्ति जीवन पर्यन्त धनवान होता है, समुद्री यात्रा करता है। सुखी धनवान बनता है।

४१. जिसके हाथ में षट्कोण का आकार हो उसके पास जमीन, जायदाद, बाग-बगीचे रहते है और धनवान होता है।

४२. जिसके हाथ में नंदावर्त (स्वस्तिक) हो वह व्यक्ति इज्जतवाला, श्रीमंत होता है। अपना जीवन आनंद से बीताता है।

४३. जिसके हाथ त्रिकोण का निशान हो वह जमीनदार होता है और जमीन से फायदा उठाता है। उसके यहाँ गाय, भेंस, घोडा, बलद वगैरह रहते हैं।

४४. जिसके हाथ में मुकुट का चिन्ह हो वह राजाधिपति होता है। राजा, महाराजाओं का स्वामी बनता है। धनवान, सुखी रहता है।

४५. जिसके हाथ में श्रीवत्स का निशान हो वह व्यक्ति सर्व संपत्ति वाला होता है। उसकी सभी मनोकामना सफल होती है।

४६. जिसके हाथ में यश रेखा अखंड हो किसी भी जगह तुटी न हो और लंबी हो वह व्यक्ति संसार में यश प्राप्थ करता है।

यश रेखा का दुसरा नाम पितृ रेखा है, यह यश रेखा जितनी खंडित या टुटी हुई हो उतना ही उसका यश खंडित होता है यश रेखा मणिबंध (पहोची पहरने का स्थान) से निकलकर अंगूठे के नीचे होकर तर्जनी अंगुली के उपर भाग में जा मिलती है वह यश रेखा है।

४७. जिसके हाथ में विभव रेखा अखंड हो, टुटी हुई न हो तो वह व्यक्ति अपने कुटम्ब परिवार में नामचीन होता है। विभव रेखा का दुसरा नाम मातृरेखा है, विभवरेखा, हथेली से मध्य होकर अंगूठे के नीचे होकर तर्जनी अंगुली के उपर यश रेखा को जाकर मिलती है तो स्त्री का वियोग होगा।

यदि स्त्री मौजूद हो तो भी परदेश या मन मुटाव के कारण स्त्री-पुरुष का संयोग बहुत कम रहेगा। इसी तरह स्त्री की रेखा में भी समझना। पति के साथ संयोग बहुत कम रहेगा। यदि स्त्री की रेखा मिली हो तो स्त्री का प्रेम अधिक रहेगा।

४८. आयुष्य रेखा कनिष्ठ (टचली) के नीचे हथेली में शुरु होकर तर्जनी अंगुली के मूल तक जाती है यह आयुष्य रेखा जिसकी अखंडित हो टुटी हुई न हो एकदम सीधी हो वह व्यक्ति दीर्घायु प्राप्त करता है। अर्थात् १०० एक सौ वर्ष का आयु पूर्ण करता है।

प्रत्येक अंगुली के २५ वर्ष समझ लेना २५-५०-७५-१०० वर्ष आयुष्य होता आयु रेखा के अनुसार। क्रमशः कनिष्टा (टुचकी पहली छोटी अंगुली) अनामिका-मध्यमा-तर्जनी जैन धर्म की दृष्टी से मनुष्य का आयुष्य १२० एक सौ बीस वर्ष का है।

४९. आयुष्य रेखा और विभवरेखा के बीच चौकडी आकार की जो रेखायें दिखाती है उन्हें संपत रेखा कही जाती है। ओछी या अधिक चोकडीयो धनवानपण का ज्ञान होता है। अधिक से अधिक धनवान होता है।

५०. आयुष्य रेखा कनिष्टा अंगुली के बीच जितनी रेखायें दिखती है उन्हें स्त्री रेखा कटीं गई है। जो स्त्री रेखा अखंडित हो तो दोनों का सुखमय जीवन बीतेगा। खंडित होनेपर व्यवधान पडेगा।

५१. आयुष्य रेखा के उपर कनिष्ठा अंगुली के मूल मेंस्त्री रेखा के सामने जो रेखायें पडी है वे धर्म रेखा कही जाती है। २-३ रेखायें साफ पडी हो तो वह मनुष्य धर्मी होता है।

५२. आयुष्य रेखा के उपर अनामिका अंगुली के नीचे उभी तथा आडी जितनी भी रेखायें पडी हो वे विद्या रेखायें कहलाती है। जितनी रेखायें हो उतनी प्रकार की विद्या प्राप्त करेगा। रेखायें स्वच्छ होने से कवि, वक्ता आदि ख्याति प्राप्त करेगा।

५३. तर्जनी आंगुली के नीचे और विभव रेखा तथा यशरेखा की संधी के उपर से मध्यभाग मे जो आडी रेखा है और मनुष्य रेखा के अंत भाग में मिले उसे दिक्षा रेखा कहते हैं। यह रेखा जितनी स्पष्ट, सीधी होगी उतनाही अच्छा चारित्र पालन करेगा।

दीक्षा रेखा के साथ धर्म रेखा भी स्पष्ट चाहिये जिसके धर्म कार्य में लगा रहे। निर्मल चारित्र पालन कर सके। कटि, कटाई रेखा में चरित्र में दाग लगायेगा।

५४. मणीबंध पर तीन रेखायें जिन्हें जव रेखा से पूर्ण होती है मणीबंध पर एक जव रेखा हो तो वो व्यक्ति सुखी होता है। मणीबंध पर दो जव रेखा हो तो वह व्यक्ति सुखी एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होता है।

मणिबंधपर ३ जव रेखा हो तो वह सुखी, प्रसिद्ध एवं बहुत धनवान होता है। तपस्वी महात्मा भी होता है। जब रेखा का आकार माला जैसा होता है।

हस्त रेखा का विशेष ज्ञान

१. मणीबंध की पांच प्रकार की उर्ध्व रेखा जो आंगलीयां एवं अंगूठे तरफ जाती है, उसका विवरण इस तरह।

प्रथम उर्ध्व रेखा जो मणीबंध से निकल कर अंगूठे के मूल में जाकर मिले उसे राज्य रेखा अथवा सल्तनत जो राज्य तरफ से होनेवाला फायदा हो।

दूसरी उर्ध्व रेखा मणी बंध से निकलकर तर्जनी आंगलीके मूल भाग में मिले वह राजा या दिवान होता है।

तीजी उर्द्व रेखा मणी बंध से निकल कर मध्यमा अंगुली के पास जाकर मिले, वो सेना का सेनापति या बडे ओहेदेपर होनेवाला है। या संसार छोडकर साधु बने तो बडा आचार्य बनता है।

चौथी उर्ध्वरेखा मणिबंध से निकल कर अनामीका अंगुली तक जा मिलती है वह धनवान, बुद्धीवान होता है पांचवी उर्ध्व रेखा मणिबंध से निकलकर कनिष्टा अंगुली तक जा मिलती है वह हिम्मतवाला एवं बहादुर होता है।

२. जिसके हाथ में वैभव रेखा अखंड एवं स्वच्छ हो वो समाज मान्य व्यक्ति होता है। वैभव रेखा से छोटी रेखायें जितनी अंगुलीयों तरफ गई हो उतने शत्रु होते हैं मणीबंध रेखा तरफ गई हो उतने मित्र होते हैं।

३. आयुष्य रेखा में से छोटी-छोटी रेखाये जितनी वैभव रेखा तरफ गई है, उतनी सम्पदा प्राप्त करता है। मणीबंध से आयुष्य रेखा तरफ हथेली के आडी रेखाये हो उतने पुत्र-पुत्री बड़ी रेखा पुत्र, छोटी रेखा पुत्री, टुटी फुटी मृत्यु प्राप्त हो, स्पष्ट जीवित रहते हैं।

४. मणीबंध से लेकर अंगुठा तक जितनी रेखायें हो उतने भाई-बहन होते हैं।

५. कोई आचार्य इस रेखाओंको पुत्र-पुत्री कहते है।

६. हथेली में यश रेखासे जमणी बाजु अंगूठा तरफ जितनी छोटी रेखायें गई है वह व्यक्ति इतने प्रदेशों में घूमता है ।

७. जिसकी यश रेखा स्वच्छ, सीधी, टुटी हुई न हो तो वो मरकर स्वर्ग में जाता है।

८. जिस मनुष्य के डाबा हाथ की यश रेखा टुटी हुई न हो स्वच्छ हो तो वह व्यक्ति स्वर्ग सुख भोगकर आया है ।

९. जिस मनुष्य के डाबा हाथ में वैभव रेखा अखंड, स्वच्छ हो उस मनुष्य को खुब एश आराम मिलता है । डाबे हाथ में ध्वजा या चंद्र का चिन्ह हो तो स्वरुपवान स्त्री प्राप्त होती है । पुत्र रेखा हो और साधु बन जाये तो भी वह धर्मात्मा पुत्रवान है धर्म रेखा उसेही दीक्षा रेखा कहा गया है । दुसरी डाबा हाथ में स्त्री रेखा के अग्रभाग में दीक्षा रेखा होती है धर्मरेखा व दीक्षा देखकर कहते है ।

१०. अस्थिष्वर्थाः त्वचि भोगाः सुखं मांसे स्त्रियोऽक्षिषु ॥
गतौ यानं स्वरे चाज्ञा, सर्वं सत्वे प्रतिष्ठितं ॥१॥

श्री उत्तराध्ययन सुत्र आठवा अध्याय टीका

अर्थ : जिस आदमी की हड्डीयाँ मज़बूत हो और वजनदार हो वो धनवान होता है, जिसकी चामडी कोमल हो सुखी रहता है । शरीर जाडा हो हाथ पगकी नसो दिखती हो वो सुखी रहता है, जिसके नेत्र सुन्दर हो, अथवा अणीदार हो, या कोणे लाल हो तो वो स्त्री वल्लभ होता है । अच्छी चाल, हिम्मतवाला, सुखी होता है ।

११. चख्खुसिहेणे सुभगो, दंतसिणेहे अ भोयणं मिट्ठं ॥
तय नेहेण य सोख्खं, नह नेहेण होई परमधणं ॥१॥

उत्तरध्ययनसुत्र पंदरमा अध्याय टीका

अर्थ : जिसके नेत्र में प्रेम हो वो सुखी रहता है, जिसके दांत स्निघ्न हो उसे उत्तम भोजन मिलते हैं । जिसके नख तीखे लाल हो वह सौभाग्यवान होता है । धनवान होता हैं ।

१२. चक्षु, नाक तथा हाथ लंबे हो वो भाग्यशाली होता है।

१३. कंठ, जंघा, पीठ जिसकी छोटी हो वह भाग्यवान होता है, नख, चामडी, दांत, अंगुलीये के टेखे पतले हो वो सुखी लंबे आयुष्यवाला होता है।

१४. जिस मनुष्य के हाथ, पगके तलिये, आँखों का खूणा, नख, तालु, जीभ, ओठ, सुन्दर लाल हो तो भाग्यवान होता है।

१५. छाती, मस्तक, ललाट प्रदेश जिस मनुष्य के पोहले हो सुख, चैन से जीवन व्यतीत करेगा। जिसका आवाज मीठा हो, गम्भीर हो वो भाग्यवान सुखी रहेगा।

१६. जिसके हाथ लंबे हो, घुटनो तक आते हो वो राजा, धनवान या नेता भाग्यवान होगा। हाथ, पैरकी अंगुलीयां लंबी हो वो यशस्वी भाग्यवान होता है। ललाट विशाल हो उन्नत हो वो सुखी होता है।

१७. जिस मनुष्य की तर्जनी अंगुली अंगुठा पासवाली लंबी हो तो वह क्रोधी, तामसी होता है।

१८. **दांत :** जिसके ३२ दांत पुरे हो वो मुनि या धनवान होता है जिसके ३१ दांत हो तो भी शुभ है। ३० या इससे कम दांतवाला दुखीयारा होता है।

१९. **ललाट रेखा :** जिसके ललाट में आडी रेका पांच पडी हो वो १०० वर्ष जीयेगा, चार हो तो ८० वर्ष, तीन हो तो ६० वर्ष, दो हो तो ५० वर्ष जीयेगा।

२०. **हसमुखा :** जो व्यक्ति सदा हसमुखा रहता है वो सुखी एवं चैन से जीवन बिताता है।

२१. **तीन रेखा :** प्रत्येक मनुष्य के हाथ में तीन रेखायें होती ही है १. आयुष्यरेखा, २. वैभवरेखा (बीच की), ३. यशरेखा मणीबंध से निकल कर अंगूठा व तर्जनी के बीच में जाती है। स्वच्छ अखंड हो तो सदा आनंद ही आनंद सब बातमें।

२२. ज्यादा रेखा दरीद्री के होती है। बिल्कुल कम भी दुखियारा के। यह सामान्य व्यक्ति के लक्षण है।

२३. कमल : कमल के फूल का चिन्ह हो तो भाग्यवान होता है।

भाला-तीर : का निशान हो तो आदमी नीडर व हिम्मतवान।

२४. चक्र : अंगूली में १० चक्र हो तो मुनि या धनवान होता है ९ चक्र हो तो दिवान, मंत्री बनता है। ८ हो तो लक्ष्मीवान हो, किन्तु बीमार रहे, ७ चक्र हो तो सुखी, ६ चक्रहो तो कामी, ५-४-३-२-१ चक्र होतो गुणवान होता है।

२५. शंख : अंगुलीयों के अन्त में शंख का चिन्ह हो तो सुखी होता है।

२६. छीप : अंगुलीयों में छीप का चिन्ह हो तो जीवन भर दुखी रहेगा।

२७. अंगुली : जिसके अनामिका उंगली के तीसरे वेढे से कनिष्ठा अंगुली लंबी हो तो धनवान, भाग्यशाली होता है, इसी तरह मध्यमा उंगली के तीसरे वेढे से तर्जनी उंगली लंबी हो तो नशीबदार, पुण्यवान होता है।

२८. कंजूस : उंगीलयों के बीच में छिद्र न हो तो वो कंजूस होता है। लक्ष्मी इकट्ठी करता है।

दिलदार : अंगुलीयों के बीच में छिद्र हो तो दिलदार होता है, लक्ष्मी खर्चता है।

२९. बुद्धीमान : जिस व्यक्ति के अनामिका आंगुली से कनिष्ट अंगुली का मूल नीचे हो वो बुद्धीशाली होता है, इसी तरह मध्यमा आंगली के मूल से तर्जनी आंगुली का मूल नीचे हो वह बुद्धीशाली यशस्वी परोपकारी होता है।

अधिक महिने का फल

१.	**श्रावण**	-	श्रावण महिने दो हो तो दुष्काल पडे, पृथ्वी का सुखापन, प्रजा में उपद्रव।
२.	**भाद्रवा**	-	भाद्रपद दो हो तो धान्य की अच्छी उत्पत्ति होती है सुकाल होता है।
३.	**आसोज**	-	आश्विन मास अधिक हो तो पृथ्वी पर सैन्य-चोर और रोग का भय बढ़ता है। किसी के मत में दक्षिण दिशामें काल पड़ता है।
४.	**कार्तिक**	-	कार्तिक मास अधिक हो तो सुकाल होता है, किसी अन्य देश में युद्ध होता है।
५.	**मार्गशीर्ष**	-	मगसर महिने दो हो तो - देश में परम सुख होगा, सुकाल आनंद रहेगा।
६.	**पोष**	-	पोष मास दो हो तो - सुकाल, मांगलिक, राजा का विजय लोगों की बुद्धी विपरीत होगी, शासक व प्रजा वैमनस्य।
७.	**माघ**	-	माघ महिने दो हो तो - पृथ्वी पर क्षेम कुशल, किन्तु राज्यों को भय होगा।
८.	**फाल्गुन**	-	फाल्गुन महिना दो हो तो - सुखकारी, क्षत्रियों के लिये आनंददायक।
९.	**चैत्र**	-	चैत्र महिना दो हो तो - अनाज अच्छा पकेगा और व्यापारियों के लिये बहुत अच्छा, व्यापार वृद्धी।
१०.	**वैशाख**	-	वैशाख मास अधिक होनेपर अनाज अच्छा पकेगा किसी प्रान्त में अशुभ घटना घटे।

११. ज्येष्ठ - ज्येष्ठ महिने दो होनेपर राजा का नाश होता है अनाज की उत्पत्ति अच्छी होगी।

१२. आषाढ - आषाढ महिने दो होने पर खंड वृष्टी होगी, कही अच्छा वर्ष, कही सुखापन।

बहुत लोगों का यह भी मत है कि चैत्रादि सात महिने ही दो होते है। कदाचित् दो कार्तिक, हो तो दुख, दो माघ हो तो भी दुख, दो फाल्गुन हो तो अग्नि का य होता है दो वैशाख हो तो भी अशुभ।

जब उदय समये कृष्ण पक्ष की तीज हो और उसके बाद चौथ हो, उस चौथ में संक्रांति आती हो तब उस मास से चौदवे मासे अधिक मास आता है।

सब देखता है

मनकी जाने, तनकी जाने, जाने चित्त की चोरी ॥
उण साहेब से क्या छिपावे, जिनके हाथ में डोरी ॥

चार वेद-षट शास्त्र में, बात लीखी है दोय ॥
धन चाहिये तो धर्मकर, मुक्ति नाम से होय ॥

नाम लिया नर सब लिया सब शास्त्रों का भेद ॥
बिना नाम नरके गये, पढकर चारों वेद ॥

प्यारो-मरुधर

रम्याणि हर्म्याणि, जिनेश्वराणाम् ॥
श्रध्धालवो यत्र वसन्ति लोकाः ॥
मुद्गा धृत्तं दुग्धमया च भूमि ॥
मरुस्थली सा न कथं प्रशंस्या ॥

रोक लो गर-गलत करे कोई ॥
बक्ष दो गर-खता करे कोई ॥ गालिब ॥

तेजी-मंदी

प्रत्येक वस्तुकी ज्योतिष भविष्य

१. **वर्ष का राजा फल (सूर्य)**
यदि वर्ष का राजा रवि (सूर्य) हो तो, घी, गोल, तेल, अनाज अषाढ सुदी १ सतेज होगा। एक ही मास में अच्छी तेजी रहेगी। संवत १९२९, ३९, ४३, ४६, ६६, ७०, ७३ और ७७ में यह योग बना है।

२. **वर्ष का राजा फल (मंगल)**
यदि वर्ष का राजा मंगल हो तो अनाज संग्रह करना और आसोज मास में बेचना, गोल, खारेक, कपाशीया भादरवा में बेचना। संवत १९२५, २८, ३२, ३५, ३८, ५२, ५५, ५८ और ६२ में यह योग बना।

३. **वर्ष का राजा फल (बुध)**
यदि वर्ष का राजा बुध हो तो, घी, तेल, कपाशीया, गोल, एरंडा, खांड बेचने से लाभ होगा। मेहंगाई बढ़ती जायेगी। वायदा से लाभ होगा। संवत १९३१, ४८, ५८ और ६५ में यह योग बना।

४. **वर्ष का राजा फल (गुरू)**
यदि वर्ष का राजा गुरू हो तो, अनाज का संग्रह करना, भादरवा में बेचना लाभ होगा। गोल, गेहू, तेल, खांड, कपाशीया, हलदर, सस्ती होगी। संवत १९२०, २५, ३५, ४१, ४४, ४७, ६१, ६४, ६८, ७१ और ७५ में यह योग बना।

५. **वर्ष का राजा फल (शनि)**
यदि वर्ष का राजा शनि हो तो धान महेंगा होगा। श्रावण या मागसर में बेचने से लाभ होगा। सं. १९२६, ३३, ३६, ३७, ४०, ५९, ५३, ६३ और ६७ ये योग बना था।

६. **वर्ष का राजा फल (चंद्र)**
यदि वर्ष का राजा चंद्र हो तो धान्य का संग्रह करना। भादरवा वा आसोज में लाभ होगा। सं. १९२२, ४२, ४५, ४९, ५६, ६८, ७२ और ७६ में ये योग बना था।

७. **वर्ष का राजा फल (शुक्र)**

यदि वर्ष का राजा शुक्र हो तो धान्य का संग्रह करना, आसोज, कार्तिक में बेचना लाभ होगा।

प्रत्येक वस्तुकी ज्योतिष भविष्य

१. **मेष राशी**

यदि मेष राशी पर गुरु आवे तब वर्षाद बहुत होगा, सुकाल होगा, सोना, चांदी, तांबे और कपास पहेला तीन मास तक मंदा रहेगा। भादरवा में चावल, घी, गेहूं इनमें मंदी आयेगी। आसोज से फागण ६ मास तक तेजी रहेगी। कार्तिक व मागसर में रुई, अनाज तेज होगा।

२. **वृषभ राशी**

वृषभ राशी पर गुरु आये तो धान्य में तेजी होगी, घी, तेल, चैत्र मास में तेजी रहेगी, चना श्रावण मास में तेज रहेगा, रुई में एक वर्ष तक सौ टका तेजी रहेगी। वह योग सं. १९३८, ५०-५२, और ७४ में बना था।

३. **मिथुन राशी**

मिथु राशी में गुरु आता है तब रुई में पचास टका मंदी आयेगी, यह बनाव कई वर्षों में बना। सोना, चांदी, घी, तेल पांच महिने तक तेजी रहेगी। मागसर मास में खरीदना, वैशाख में बेचना लाभ होगा।

४. **कर्क राशी**

कर्क राशी पर गुरु आता है तब वध घट के साथ सौ टकेकी तेजी आयेगी और यदि वक्री होकर मिथुन राशी पर आवे तब मंदी आयेगी। यह बनाव कई वर्षों में बना।

५. **सिंह राशी**

यदि सिंह राशी पर गुरू आवे तब ८ मास तक बध घट होकर रुई में मंदी आयेगी। घी, तेल, अनाज ये वस्तुएँ आषाढ में सस्ती हो जायेगी।

६. **कन्या राशी**

यदि कन्या राशी पर गुरु आवे तब चार मास तक ५० रुई में घटे, अन्य सब सामग्री मंदी रहेगी सुकाल होना है ।

७. **तुला राशी**

तुला राशी पर गुरु आवे तब धान्य का संग्रह करना, वर्ष के अंत में लाभ होगा (तेजी आयेगी) ।

८. **वृश्चिक राशी**

वृश्चिक राशी पर गुरु आवे तब पांच मास तक सोना, चांदी, घी में तेजी रहेगी ।

९. **धन राशी**

धन राशी पर गुरु आवे तब गुड का पाक बहुत होगा । वह सस्ते भाव से खरीदनेपर मकर का गुरु हो तब बेचना डबल लाभ होगा । कार्तिक मास में घी खरीद कर चैत्र में बेचना लाभ होगा । यह योग भी कई बार बना ।

१०. **मकर राशी**

यदि मकर राशी पर गुरु आवे तब रुई में वध घट आकर मंदी आती है । मकर राशी पर गुरु वक्री हो या कुंभ राशी पर शनि वक्री हो या दोनों ग्रह एक साथ वक्री होते हो तो रुई में भारी मंदी आयेगी ।

११. **कुंभ राशी**

यदि कुंभ राशी पर गुरु आवे तो ६ महिने तक रुई में तेजी होकर मंदी आयेगी । श्रावण में अनाज खरीदकर पोष में बेचना अच्छा लाभ होगा ।

१२. **मीन राशी**

मीन राशी पर गुरु आने पर, सफेद रंगवाली वस्तु में मंदी आयेगी । रुई में पाच महिना तक तेजी रहेगी । तल, तेल, घी में मंदी आयेगी । पहेला पांच महिना तक अनाज तेज रहेगा, बाद में मंदी । आषाढ, श्रावण में तेजी, मीन राशी पर वक्री हो तब तक तेजी रहे ।

ग्रहण से तेजी मंदी

१. सूर्य या चंद्र का ग्रहण जिस देशमें दिखता हो उस देशवाले को हानि लाभ होता है ।

२. सूर्य का चंद्र का पूरा ग्रहण हो तो उसका फल २० दिन में मिलता है ।

३. सूर्य का चन्द्र का पोणा भाग का ग्रहण हो तो एक मास में फल मिलता है ।

४. सूर्य या चंद्र का आधा भाग का ग्रहण हो तो दो मास में फल मिलता है ।

५. सूर्य या चंद्र का चौथा भाग का ग्रहण हो तो चार मास में फल मिलता है ।

६. चंद्र ग्रहण हो तो रुई के भाव घटेंगे । महिने के बाद बढेंगे ।

७. सूर्य ग्रहण होनेवाला हो तो पहले तेजी, बादमें मंदी ।

अपवाद - सूर्य का चंद्र ग्रहण के दिन वर्षाद हो तो उलट सुलट भाव होगा ।

चंद्र ग्रहण, वार फल

१. **रविवार** - के दिन चंद्र ग्रहण हो तो वर्षाद कम होगा । घी, चांदी, मंदी ग्रहण पहेला जिस के भाव घटे हो, ग्रहण के बाद भाव बढेंगे ।

२. **सोमवार** - सोमवार को चंद्र ग्रहण हो तो कपुर का नाश होता है, धान, अनाज संग्रह करने से लाभ होगा, रुई में ३० से ३५ टका तेजी आयेगी ।

३. **मंगलवार** - यदि मंगलवार को चंद्र ग्रहण होता है तो रुई सुतर के भाव बढेंगे । लाल रंग की वस्तु में तेजी आयेगी ।

४. **बुधवार** - बुधवार को यदि चंद्र ग्रहण है तो सोना तेज होगा, चावल, गेहूँ, अनाज, रुई, पित्तल, धातु तेज होगा, लाल वस्तुएँ भी तेज रहेगी ।

५. **गुरूवार** - यदि गुरूवार को चंद्र ग्रहम हो तो पीले रंग की वस्तुयें, लाल रंग की वस्तुयें, सुगंधी वस्तुये, तेल, रुई में तेजी आयेगी।

६. **शुक्रवार** - शुक्रवार को यदि चंद्र ग्रहण हो तो चांदी, मोती, श्वेत कपड़े का भाव तेज रहेगा। रुई के भाव चार मास तक मंदी बाद में तेजी।

७. **शनिवार** - शनिवार को चंद्र ग्रहण हो तो अलसी, एरंडा और तेल में छः मास बाद लाभ होगा।

सुर्य ग्रहण के बाद १५ दिन में चंद्र ग्रहण हो तो १५ दिन पहले से डेढ मास तक ४ या ५ टका की प्रत्येक वस्तुमें तेजी आती है।

महिना व चंद्र ग्रहण

१. **कार्तिक** - में यदि चंद्र ग्रहण हो तो, समुद्र में विग्रह (तूफान) हो।

२. **मगशिर** - में चन्द्र ग्रहण हो तो, धान्यं में ७ मास तेजी रहे।

३. **पोष** - में चन्द्र ग्रहण हो तो, रस, कस मे तेजी, रुई में ३०-३५ टका तेजी।

४. **माघ** - में चन्द्र ग्रहण हो तो, रस, कस में तेजी आवे।

५. **फाल्गुन** - में चन्द्र ग्रहण हो तो, रस, कस संग्रह करने से आगे लाभ होगा।

६. **चैत्र** - में चन्द्र ग्रहण हो तो, चौमासा मे काल पडे (वर्षात अल्प)

७. **वैशाख** - में चन्द्र ग्रहण हो तो, सर्व वस्तु तेज होवे, रुई में २५-३० टका तेजी।

८. **जेष्ठ** - में चन्द्र ग्रहण हो तो, रुई, अनाज संग्रह करना आगे तेजी आयेगी।

९. **आषाढ** - में चन्द्र ग्रहण हो तो, रस, कस, रुई तेजी।

१०. **श्रावण** - में चन्द्र ग्रहण हो तो, सभी में तेजी, रुई में ४०-५० तेजी।

११. **भादरवा** - में चन्द्र ग्रहण हो तो, धान्य बेचना, रस की खरीदी करना।

१२. **आसोज** - में चन्द्र ग्रहण हो तो, कपास, सुतर ४०-५० टका तेजी।

सूर्य ग्रहण, वार फल

१. **रविवार** - रविवार को सूर्यग्रहण हो तो, घी, तेल, खांड अढी मास तक भाव बढता रहे।

२. **सोमवार** - सोमवार को सूर्यग्रहण हो तो, तेल, अनाज, अफीम, काली वस्तुएँ तेज रहे।

३. **मंगलवार** - मंगलवार को सूर्य ग्रहण हो तो, चार महिना तक सभी वस्तु तेज रहे।

४. **शनिवार** - शनिवार को लाल, पीली वस्तु इनमें तेजी आयेगी रुई में १५ दिन पहेली मंदी, ग्रहण के दिन व्यतिपात हो, तो रुई तेजी।

५. **बुधवार** - बुधवार को जुवार, बाजरी, मठ, चणा वगैर धान तथा कपास, कपडा, लवींग, अफीण आदि दो मास बाद तेजी आयेगी।

सूर्य ग्रहण, वार फल

१. **कार्तिक** - मास में सूर्य ग्रहण वर्ष का आयेगा, सुकाल होगा।

२. **मागसर** - मास में रस कस के भाव बढेंगे।

३. **पोष** - मास में धान में तेजी आयेगी, बाकी मंदा।

४. **माघ** - मास में सभी में मध्यम फल, न तेजी न मंदी।

५. **फाल्गुन** - मास में खाने-पीने व धान्य ज्यादा तेजी आती है।

६. **चैत्र** - मास में सोना व अनाज संग्रह करना, आगे लाभ होगा।

७. **वैशाख** - मास में कपास, रुई, सुतर, कपडा, तल, तेल संग्रह करना।

८. **जेष्ठ** - मास में अनाज अवश्य संग्रह करना, तेजी आयेगी।

९. **अषाढ** - मास में काल, दुर्भिक्ष, राज्य विग्रह, झगडा होवे।

१०. **श्रावण** - मास में धान बेचना तेजी आयेगी।

११. **भादरवा** - मास में सुकाल अच्छा वर्ष रहेगा।

१२. **आशोज** - मास में घी, तेल भाव बढेंगे।

ग्रहण एवं नक्षत्र योग

सूर्य या चन्द्र ग्रहण में पुनर्वसु नक्षत्र हो तो चावल, कपास का भाव बढ़ता है।

१. **पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र** - में ग्रहण हो तो, रुई, कपास, कपडा, तेल में तेजी।

२. **उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र** - में ग्रहण हो तो, चावल, कपडा तेजी।

३. **हस्त नक्षत्र** - में ग्रहण हो तो, चावल, चणा का भाव बढेगा।

४. **विशाखा नक्षत्र** - में ग्रहण हो तो, उड़द, चणा, लाल वस्तु का भाव बढ़ेगा।

५. **अनुराधा नक्षत्र** - में ग्रहण हो तो, चावल, मकाई, जुवार, तल, तेजी।

६. **ज्येष्ठा नक्षत्र** - में ग्रहण हो तो, तांबा, लाल वस्तु में तेजी।

७. **श्रवण नक्षत्र** - में ग्रहण हो तो गेहू, अनाज में तेजी।

८. **रोहिणी नक्षत्र** - में ग्रहण हो तो, कपास, रुई, कपडा तेजी।

९. **मूल नक्षत्र** - में ग्रहण हो तो, रुई, कपडा, सफेद रंगवाला में तेजी।

चांदी में वध-घट योग

शुक्र - पश्चिम में अस्त हो तो शुरुमें चांदी का भाव बढ़ेगा।

कुंभ राशि का शनि चांदी में तेजी लावे।

बुध, गुरु परस्पर वेध हो तो चांदी का भाव बढ़ेगा।

बुध, गुरु या शुक्र में से कोई भी ग्रह अस्त हो तो चांदी का भाव तेज।

मंगल धन राशी पर आता है तब चांदी में तेजी।

मंगल वक्री हो तब चांदी में तेजी।

बुध वक्री हो कर अस्त हो तो तेजी आवे।

सुदी एकम को बुधवार हो तो चांदी में मंदी आती है।

चैत्र सुदी एकम बुधवार हो तो २-३ टका मंदी आयेगी।

मागसर सुदी १ बुधवार हो तो चांदी १९ टका घटेगी (मंदी)

बुध मीन राशी पर हो तो चांदी मंदी।

गुरु वक्री हो तो चांदी में तेजी।

सिंह और कन्याका मंगल चांदी में तेजी करे।

सूर्य, बुध एक राशी पर आवे तो चांदी में तेजी।

सूर्य - वरख राशी पर आवे तो चांदी मंदी।

सूर्य - सिंह राशी का होय मंगल तथा गुरु वक्री हो तो चांदी में तेजी।

सूर्य - शुक्र - कर्क राशी पर हो तो चांदी का भाव बढ़ेगा।

मंगल का यदि उदय हो तो चांदी में तेजी लाता है।

शनि यदि मार्गी होता हो तो चांदी में मंदी आयेगी।

शुक्र मीन राशी पर आये तो चांदी में शुरु में तेजी बाद मंदी।

शुक्र मेष राशी से उतरता हो तो चांदी में तेजी।

चन्द्र एवं शुक्र दोनों का वेध होता हो तो चांदी मंदी।

राहू के साथ भी मंदी

मिथुन राशी पर राहू आवे तो चांदी में मंदी आयेगी।

कर्क संक्रांति शनिवार को हो सोना, चांदी दोनों में मंदी।

सोमवारी अमावस्या चांदी में मंदी आयेगी।

गुरु मार्गी हो तो चांदी में मंदी आयेगी।

कुंभ राशी पर शुक्र आये तो चांदी में मंदी।

शुक्र पूर्व में अस्त हो तो चांदी में मंदी।

वृश्चिक राशी का शनि चांदी में मंदी।

बुध, गुरु या शुक्र का उदय हो तो चांदी में मंदी।

शनि मार्गी होय तो चांदी में मंदी।

मिलो के शेरोंमें बडी घट बढ खास संयोग

बुध सिंह राशी पर आता है तब शेरों में मंदी आती है।

बुध - अस्त होता है तो शेरों में मंदी।

कुंभ राशी का जब गुरू होता है तब शुरूआत में चार मास तक घट बढ़ होकर मंदी आती है। डीफर्ड जैसे बड़े शेरों मे ४०० से ५०० टका घटते है। संवत १९९४ में १४०० से घट कर ९०० हुअे थें। उसके बाद दूसरे ग्रहों की असर होने से भाव सुधरकर फिर १५०० हुए थे कुंभ राशी का सनि हो तो शेरों के भावों में तेजी आती है।

कुंभ राशी के अंत में यदि शनि आता हा याने तीन, चार महिना बाकी हो तब शेरों के भाव देढ़ गुने हो जाते है। रु. १५०० से बढ़कर रु. २२०० हुये है। संवत १९९३ पोष माह फागण का योग बना था।

मीन राशी का शनि होने पर प्रारंभ में शेरो के भाव घटते हैं बुध वक्री हो तो शेरों के बाव बढ़ते है।

शुक्र धन राशी पर जब आता है तो शेरों के भाव बढ़ते हैं।

कर्क राशी का शुक्र शेरों में तेजी लाता है।

शुक्र कुंभ राशी का हो शेरों में मंदी

शनि वक्री धनराशी पर हो तो प्रारंभ में मंदी बाद में तेजी फिर मंदी शनि वक्री तुला राशी पर हो तो दो महिने तक तेजी रहेगी बाद मंदी सुदी पूर्णिमा शुक्रवार को हो तो सेरों में उसी दिन अच्छी तेजी आयेगी।। शनि वक्री हो तो शेरों में २०० से २५० टका की तेजी आयेगी।

पंचक नक्षत्र - (कुंभ के चंद्रमा) ५० घडी बाद बैठता है मेष का चंद्र भी रात में बैठे तो शेरों के भाव एक महिने तक बढ़ते रहेंगे। मीन राशी का सूर्य बुध के साथ हो तब शेरों के भाव घटेंगे।

कुंभ राशी का सूर्य कुंभ संक्रांति में शेरों के भाव बढ़ते हैं।

कुंभ राशी का बुध या शुक्र हो तो शेरों में मंदी आती है।

कुंभ राशी का मंगल होता है तब शेरों में अच्छी तेजी आती है।

राहू और चन्द्र का योग होने पर शेरों में मात्र दो दिन मंदी आयेगी।

बुध, गुरु या शुक्र वक्री हो तो या सूर्य के साथ युति हो तो शेरों में पहेले से तेजी, युती के बाद धीरे-धीरे मंदी आती है। शनि और मंगल, शनि और गुरु, राहू और गुरु, गुरू और केतु, गुरू और मंगल, इकट्ठे हो तो तेजी फिर मंदी आती है।

घी, तेल, गोल विषयक तेजी मंदी

सुदी २ बुधवार, सुद ६ रविवार, सुद १० गुरुवार, हो तो घी के भाव बढ़ते हैं। ये योग बहुत बार होता है।

धनराशी पर गुरु आता है तब गोल की आवक बहुत होती है, कार्तिक महिने में घी संग्रह करके चैत्र में बेचना। मकर पर गुरु आने पर गोल के भाव डबल होते हैं।

वृश्चिक संक्रांति बुधवारी हो तो धान्य और घी के भाव बढ़ते हैं। गुरुवारी हो तो अनाज के भाव बढ़ते हैं। रस कस में मंदी आती है।

शुक्रवारी संक्रांति से घी और चावल मंदा, सिंह राशी का गुरु हो तो घी में बड़ी मंदी आती है।

कुंभ संक्रांति गुरुवारी हो तो रस कस तेजी।

मीन संक्रांति रवि, मंगल, या शनिवारी बढ़ती है घी, रस कस रुई, कपडा में तेजी आती है। गुरुवारी हो तो मंदी।

कर्क राशी का गुरु - मीन का शनि, तुला का मंगल, हो तो गोल, घी, धान्य में तेजी।

वृश्चिक राशी के गुरु में पांच महिने तक सोना, चांदी, घी और रुई में तेजी आती है। मीन राशी के गुरुमें तिल, तेल और घी में मंदी। बाद में तेजी आयेगी। सफेद वस्तु मंदी।

वर्ष का राजा रवि हो तो घी, गोल, तेल, धान्य अषाढ सुदी १ से तेजी आवे, एक मास तक तेजी रहे।

वर्ष का राजा बुध हो तो घी, तेल, कपासीया, गोल, एरंडा, खांड के भाव घटेंगे। तुला संक्रांति मंगलावीर हो तो भाव वधे।

वर्ष का राजा मंगल हो तो गोल, खारेक, कपासीया भादरवा में भाव बढ़ेगा।

वर्ष का राजा गुरु हो तो गोल, गेहू, तेल, खां, कपासीया, हलदर मंदी आयेगी।

फागण सुदी १५ रविवार, मंगलवार, शनिवार हो तो गेहू संग्रह करना, चैत्र मास में गेहू, घी, गोल में तेजी।

चैत्र महिने में शुक्र, शनि एकत्र हो तो घी, तेल में तेजी।

वृषभ संक्रांति शनि, रवि या मंगलवारी हो तो गोल, घी, रुई, सुतर, करियाणा में तेजी आवे।

सोमवारे सूर्य ग्रहण हो तो घी, तेल, अफीम आदि का संग्रह करना आगे लाभ होगा।

शनिवारे चन्द्र ग्रहण हो तो अलसी सरसव एरंडा, तिल आदि संग्रह करनेसे छः महिने बाद बडी तेजी आयेगी।

सूर्य ग्रहण मंगलवार को हो तो गोल, घी, गेहू, चावल तेजी आयेगी। किसी भी पक्ष में दशम तेरस का क्षय हो तो घी का भाव बढेगा।

चौदस की घडीयो में से पूनम की घडिये अधिक हो तो घी का भाव बढेगा।

संक्रांति विचार तेजी, मंदी

संक्रांति समय जो वाहन, आयुध (शस्त्र) वस्त्र, विलेपन भक्ष्य पात्र उसके पास हो उन उन वस्तुओं का वध घट होकर मेहंगी होगी।

संक्रांति १५ मुहुर्त हो तो धान्य के भाव बढेंगे, ३० मुहुर्त में साधारण ४५ मुहुर्त में मंदी बढेगी। खडी संक्रांति रविवार को हो तो घी के भाव बढेंगे। मंगलवार को हो तो गेहू तथा लाल रंग की वस्तुओं के भाव बढेंगे। संक्रांति समय सूर्य, चंद्र एकत्र हो तो चांदी के भाव बढेंगे। संक्रांति अमावस्या के दिन हो तो चांदी के भाव बढेंगे। संक्रांति समय चंद्रमा १-२-४-६-७-८-१०-१२ राशी पर हो तो चांदी के भाव बढेंगे।

संक्रांति और वार फल

कार्तिक मास में वृश्चिक संक्रांति बुधवार के दिन हो तो अनाज घी में तेजी आयेगी। गुरुवारी हो तो अनाज में तेजी होगी रस कस में मंदी। शुक्रवार हो तो घी, चावल में तेजी, रविवार, गुरुवार, शुक्रवार या मंगलवार हो तो रुई में ३०-३५ टका तेजी।

धन संक्रांति क्रूरवार शनि, रवि, मंगलवार को लगे तो कपास, सूतर, कापड, घी, तिल, तेल, सोना आदि तेज होगा।

धन संक्रांति शनि, रवि, सोम या मंगलवार को हो तो रुई में ४०-५० टका तेजी आयेगी। धन संक्रांति शुक्रवार को हो तो रुई में ४०-५० टका मंदी आयेगी।

मकर संक्रांति शनिवार को हो तो धान्य, धातु में तेजी, रविवार को हो तो अनाज, कपास तथा लाल वस्तु में तेजी आयेगी।

सोमवार हो तो जुवार, बाजरी, चणा आदि की खेती को नुकसान हो। मंगलवार हो तो धान में तेजी, १५ मुहुर्त की हो तो चार-पांच महिने तक अनाज भाव बढते ही जायेंगे।

सोम या गुरुवार हो तो कपास, सुतर, कापड, तील, तेल आदि संग्रह करने से ५-६ महिने तक लाभ होगा।

मकर संक्राति के दिन तुला का चंद्रमा हो तो अनाज संग्रह करना और छट्ठे महिने बेचना लाभ होगा।

वृषभ संक्रांति के दिन वृश्चिक का चन्द्र हो तो एक महिना अनाज मेहंगा होगा। अथवा चौथे महिने भी लाभ होगा।

मिथुन संक्रांति धन का चन्द्र हो तो तिल, तेल और अनाज संग्रह करने से चौथे महिने लाभ होगा।

कर्क संक्रांति के दिन मकर का चन्द्र हो तो भयंकर काल पडेगा, चारो महिना मेहंगाई रहेगी।

सिंह संक्रांति के दिन कुंभ का चन्द्र हो तो छः महिने तक अनाज खाद्य पदार्थ का दुगुना भाव होगा।

कन्या संक्रांति हो तो मीन का चन्द्र हो तो सभी वस्तुये मेहंगी होगी। विग्रह भी होगा।

तुला संक्रांति के दिन मेष का चन्द्र हो तो धान्य भाव दो महिने या चार महिना मेहंगा होगा।

वृश्चिक संक्रांति के दिन वृषभ का चन्द्र हो तो सर्व धान्य खरीदने से दो मास बाद तेजी आयेगी।

धन संक्रांति के दिन मिथुन का चन्द्र हो तो सर्व धान्य घी, सूतर खरीदसे पांच मास के बाद तेजी आयेगी।

मकर संक्रांति के दिन कर्क का चन्द्र हो तो गोल, घी, कपासीया में पांच मांस बाद तेजी आयेगी।

मीन संक्रांति के दिन कन्या का चन्द्र हो तो चार महिने के बाद अनाज में बहुत तेजी आयेगी।

वस्तुओं की राशी विचार

१. कपास - मिथुन राशी
२. अलसी - मेष राशी
३. एरंडा - वृषभ राशी
४. चांदी - तुला राशी
५. सुतर - शेर, सुवर्ण, सरसव गेहू, शर्करा (शक्कर) - कुंभराशी
६. मोती - सिंह और मीन राशी
७. सोना - कुंभ और मेष राशी
८. चावल - मेष राशी
९. जुवार (युगंधरी) - वृश्चिक राशी
१०. तिल (तेल) - तुला राशी
११. वस्त्र - वृषभ राशी

चन्द्र (दूज का) दर्शन फल

सभी तारा गण जिसके आधीन है, ज्योतिष चक्र में स्थित ८८ ग्रह गण पर जिसका प्रभुत्व है ऐसे चन्द्र का बल शास्त्रकारोने निम्न प्रकार बताया है।

१. तिथि के बल से, नक्षत्र का चार गुना बल है, नक्षत्र के बलसे वार का आठ गुना बल अधिक है। वार से करण का दुगुना बल है। करण के बल से योग का बल दुगुना है। योग बलसे ताराओं का बल साठगुना अधिक है। ताराओं के बल से चन्द्र का बल चार गुना अधिक है। और चन्द्र के बलसे, लग्न का बल हजार गुना अधिक है। इसलिये प्रत्येक काममें शुभाशुभ जानने के लिये चंद्र और लग्न बल का विचार कर लेना।

२. किसी भी महिने की द्वितीया (दूज) सुदी चंद्र के उदय समय उसका अंतिम (पानडा) उत्तर दिशा में ऊंचा हो तो उस पक्षमें रुई दुसरी वस्तुओं के भाव बढ़ेंगे। और यदि दक्षिण दिशा तरफ अंतिम भाग (पानडा) ऊंचा हो तो प्रत्येक वस्तुका भाव घटेगा, मंदी आयेगी। और चन्द्र के दोनों भाग बराबर है तो पडीया भाव साधारण रहेंगे।

३. किसी भी महिने की सुदी दूज के दिन चन्द्रमा लाल हो, रतास पर होतो रुई, कपडा का भाव बढेगा। झांखा-२ हो तो घटेगा।

४. किसी भी महिने की पूर्णिमा के दिन सूर्य, चन्द्र अमावस्या (आमने सामने हो तो) सफेद वस्तु रुई, कपडा, कपास में बहुत तेजी आयेगी।

५. पूनम पुरी हो और चन्द्रमा लाल कलर का हो तो भी भाव बढ़ेगा।

६. यदि पूर्णिमा पूर्ण होने पर चन्द्र पर बादल हो, या पूर्णिमा के दिन पुरी रात बादल हो तो २ मास तक मंदी रहेगी, सफेद वस्तुमें।

७. पूर्णिमा के दिन यदि चन्द्र फीका दिखता हो, छाणे की राख सरीखा तो एक मास तक मंदी रहेगी।

८. पूर्णिमा के दिन चंद्र छोटा दिखाई दे तो सभी वस्तु में तेजी रहेगी। बड़ा दिखाई दे तो मंदी।

९. कुछ कुछ कालापन दिखाई दे तो रोग चाला में मनुष्यों की मृत्यु होवे।
यह अनुभव ज्योतिष= के हिसाब से द्वितीया का चन्द्र एवं पूर्णिमा के चंद्र का भाव दिखाया।

वार - बालक जन्म फल

(जिस वार में बालक का जन्म हुआ हो उसका फल)

रविवार - जिस बालक का जन्म रविवार को हुआ हो, वह बालक हिम्मतवाला, बहादुर, अच्छे बालवाला, गेहुआ रंग होगा, दानी होगा, उत्साही एवं धर्मात्मा प्रत्येक काम आगेवान होगा।

सोमवार - जिस बालक का जन्म हुआ होगा वह शांत स्वभावी, मीठा बोलनेवाला, व्यवहारी, ज्ञानवान, बड़ों का अनुसरण करनेवाला, सुख या दुख में धैर्य रखनेवाला, दुसरों का मददगार किन्तु काम काज में ठंडा।

मंगलवार - इस दिन जन्मा बालक टेढा-मेढा बोलनेवाला, वाचाल, दूसरों के साथ लड़ाई करनेवाला, उच्च पद भोगनेवाला, खेतीवाडी में अति उत्साही और गर्म प्रकृतिवाला होगा।

बुधवार - जिसका जन्म बुधवार को हुआ होगा वह व्यक्ति स्वरुपवान, मधुरवाणी बोलनेवाला, किन्तु कटाक्ष करनारा, दूसरों के साथ मजाक करनेवाला, बहुत हुन्नरवान होगा, वणिक वृत्तिवाला, दूसरों के गुण अवगुण जाननेवाला, अपनी इज्झत रखनेवाला होगा।

गुरुवार - इस दिन जन्मा बालक बुद्धीमान, विद्यावान होगा अपनी इच्छा के अनुसार वर्तन करनेवाला, बड़े लोग इसका आदर करेंगे। सबके साथ मिलनसार व अपनी बुद्धी से धन उपार्जन करनेवाला होगा।

शुक्रवार - इस दिन जन्मा बालक रंग से काला व घुंघराले बालवाला, कपड़ों का शौकीन, सदाचारी, बडों का मान सन्मान रखनेवाला, ऊंची नोकरी करनेवाला होगा।

शनिवार - इस दिन जन्मा बालक तेजस्वी होगा, बुद्धीमान, विद्यावान, यंत्र, मंत्र, तंत्र विद्या का प्रेमी, माया कपट करनेवाला आप कर्मी, सबको प्रिय लगनेवाला होगा।

राशि जन्मे बालक का फल)

१. **मेष (अ, ल, इ)** - इस राशी का स्वामी मंगल है। इस राशीवाले के मुंहपर, बगल में या पगमें, तिल होगा। इस राशीवाला बचपन और बुढापे में सुखी रहेगा। वायु का जोर रहेगा और लगभग गरमी की बिमारी रहेगी। एक विवाहिता स्त्री और दुसरी के साथ सम्बन्ध रहेगा। इस राशीवाले को देशान्तर जाने से फायदा होगा। इस राशीवाले को चाहिये कि शुक्रवार को कोई भी शुभ काम आरंभ न करें।

स्त्री - इस राशीवाली स्त्री का स्वभाव अच्छा रहेगा। उसका गेहुआ कलर होगा, धनवान व इज्जतवाला पति मिलेगा। उसके लडके-लडकियाँ बहुत होंगे लेकिन जीवित तीन बालकों का सुख मिलेगा।

२. **वृषभ (ब, व, उ)** - इस राशी का स्वामी शुक्र है। इस राशीवाले को जीमणी तरफ या कमर में तिल होगा, मीठी वाणी बोलनेवाला होगा। उसके बहुत से दोस्त होंगे। उसकी आँख, गला, अथवा पेट का रोग होना संभव है। वह सदा स्त्री के आधीन रहेगा। परदेश जाने पर अच्छा लाभ होगा। कोई भी शुभ कार्यशुक्रवार को शुरु करना, सफेद कलर का हीरा अंगुठी में पहने, उसे लाभ होगा, कर्क, वृश्चिक और मकरराशीवाली स्त्री से लग्न करेगा तो अच्छा सुख मिलेगा।

स्त्री - इस राशीवाली स्त्री सुन्दर होगी, उसे पति भी अच्छा मिलेगा, किन्तु दोनों में झगड़ा शुरु रहेगा, इस राशीवाली स्त्री के आँख, पग में पीडा रहेगी, उसके लिये कार्तिक मास अच्छा दान, पुण्य करें।

३. **मिथुन (क, छ, घ)** - इस राशी का स्वामी बुध है, इस राशीवाला काला होगा, किन्तु सदा हसमुखी होगा, मिलनसार, बुद्धीमान होगा। दुसरों का रुपये धीर धार करने में नुकसान उठायेगा। पेट का रोग, खुन खराबी, कब्जीयात रहे, सन्तान सुख अच्छा है। धनवान स्त्रीओं के साथ अच्छे सम्बन्ध रहेंगे सोमवार को कोई भी शुभ काम नहीं करना।

स्त्री - इस राशीवाली स्त्री स्वरुपवान होगी। काली मम्मर आँखोंवाली होगी, लम्बेबालोवाली होगी। उसका शरीर सुवासित होगा, स्नेहल होगी सबको प्रिय, भाग्यशाली पति प्राप्त करेगी।

४. **कर्क (ड, ह)** - इस राशी का स्वामी चन्द्र है, इस राशी वाला पुरुष श्याम, उसके बगल में, पग में तिल होगा उसका शिर छोटा होगा, वो किसी की शर्म नहीं रखेगा, किसी की परवाह भी नहीं करेगा, उसके सन्तान तो अधिक होंगे किन्तु जीवित कुछ रहेंगे गला तथा हृदय में दर्द होना संभव है, उसको मित्र लोग उल्टे रस्ते ले जायेंगे। उसके लिये सोमवार अच्छा है। सफेद कपड़ा सफेद कलर की वीटी पहनना लाभदायक है।

स्त्री - इस राशी की स्त्री गेहू वर्णी व गम्भीर होगी। बोलनेमें मीठी वाणीवाली होगी। उसके शत्रु बहुत होंगे, उसके कमर में पीडा होना संभव है।

५. **सिंह (म, ट)** - इस राशी का स्वामी सूर्य है। इस राशीवाला गर्म प्रकृतिवाला होगा, लाल कलर करा होगा। हमेशा आनंददायक होगा, उसके गरदन या कमर पर काला तिल होगा। उसको शरदी रोग होना संभव है। भाग्यवान, विद्यावान होगा, भूलने का स्वभाव रहेगा। सन्तान व स्त्री सुख सामान्य, कोईक समये बडी बीमारी आना संभव है। इस राशीवालो को रविवार शुभ है। सूर्य की वीटी पहनना लाभदायक है।

स्त्री - इस राशी की स्त्री गौर वर्ण होगी, दुबली, साधारण कदवाली श्याम आँखोवाली होगी, स्वभाव में क्रोधी, अपने पति को अपने वशमें करके रखेगी। पुत्र अधिक होंगे।

६. **कन्या (प, ठ, ण)** - इस राशी का स्वामी बुध है, इस राशी वाला गोल मुंह वाला, सरल स्वभाव, करले बाल वाला, उसके पीठ पर काला तिल होगा, मनो कामना पूर्ण होगी। जो वस्तु खरीदेगा उसमें लाभ होगा। आवक प्रमाणे खर्च करनेवाला। स्त्री के साथ प्रेम व झगडा चालू रहेगा। कोर्ट काममें यश मिलेगा। इस राशीवाला के बुध अच्छा है।

स्त्री - इस राशीवाली स्त्री स्वरुपवान होगी। मृदुभाषा, महेनत करनेवाली, चतुर व चंचल होगी। अपना काम अपने हाथ करना यह उसे अच्छा लगेगा। पेट का दर्द होना संभव है।

७. **तुला (र, त)** - इस राशी का स्वामी शुक्र है। इस राशीवाला व्यक्ति शांतीवाला एवं सद्गुणोंवाला होगा। मित्र भी बहुत होंगे। कही से गिर जाने का संभव है। स्वप्न बहुत आयेंगे। पेट, कमर, मस्तक की बिमारी रहना संभव है। देशावर जाने से लाभ होगा। उनके लिये शुक्रवार अच्छा है।

स्त्री - इस राशी की स्त्री स्वरुपवान होगी, मध्यम, चतुर व चंचल होगी। उसके लिये सनिवार अच्छा है।

८. **वृश्चिक (न, य)** - इस राशीवाले का स्वामी गुरु है। मृदुभाषी, दयालु और विद्वान होगा। मुंहपर, बगलपर तथा कम्मर पर तिल होगा। व्यापार में अच्छा कमायेगा। संतान सुख अच्छा है। स्त्री सुख भी अच्छा है। उसके लिये गुरुवार अच्छा है।

स्त्री - इस राशीवाली की स्त्री स्वरुपवान एवं मध्यम श्रेणी की भी होगी। धनवान एवं भाग्यशाली पति मिलेगा। साधारण भी मिल सकता है। दांत, पेट, मस्तक रोग होना संभव है। उसके साथ बहुतसी स्त्रीये वैरभाव रखेगी। उनके लिये गुरुवार अच्छा है।

९. **धन (भ, घ, फ, ढ)** - इस राशी का स्वामी मंगल है, इस राशी वाला दयालु, मृदुभाषी, दांत छुटे-छुटे होते हैं, सफेद कपडे पहनना अच्छा लगता है। व्यापार से अच्छा पैसा कमायेगा। कफ प्रकृति होनेसे सर्दी बनी रहेगी।

स्त्री - इस राशी की स्त्रीये दिल की साफ, चतुर एवं स्वरुपवान होगी। स्वभाव से क्रोधी, अभिमानी, गर्विणी, दुसरी स्त्रियों के साथ अनबनाव, इनके लिये बुधवार व चैत्र महिना अच्छा है।

१०. **मकर (ख, ज)** - इस राशी का स्वामी शनि है। चेहरा गोल, वर्ण श्याम, गलेपर काला तिल, झुठ बोलने में डरेगा। अपनी बुद्धी से अच्छा कमायेगा। सन्तान सुख, स्त्री सुख सामान्य। पेट, मस्तक का दुखावा संभव, लाल रंग की वीटी लाभदायक है।

स्त्री - इस राशी की स्त्री गेहुआ रंग, स्वभाव से साधारण, विशाल नेत्रवाली,

सन्तान बहुत, किन्तु पांच जीवित। सन्तान सुख सामान्य। गुरुवार अच्छा हैं।

११. **कुंभ (ग, स, ष, श)** - इस राशी का स्वामी शनि है। इस राशीवाला वर्ण श्याम, मृदुभाषी, ३० वर्षबाद इस का उदय होगा। मुंहपर, बगलपर, पगपर तिल होगा। मंगलवार अच्छा है। भाई बहेन का सुख अच्छा नहीं, अन्तिम समय अच्छा पैसा होगा।

स्त्री - इस राशी की स्त्री गेहू वर्णी व तंदुरुस्ती अच्छी, सन्तान प्रेमी, शत्रु बहुत। किन्तु विजय मिले।

१२. **मीन (द, च, झ, थ)** - इस राशी का स्वामी गुरु है, चेहरा गोल, लंबा शरीर, मृदुभाषी, गरीब परिस्थिती चोरी का आरोप आ सकता है। स्त्रियोंका योग चार, मुसाफिरी व्यापार अच्छा पैसा कमायेगा।

स्त्री - स्त्री हसमुखी, सरल, शान्त, भोला स्वभाव, गेहु वर्णी, मंगलवार अच्छा है।

भूमि कंप क्यों होता है ?

संसार में वस्तुमात्र का आधार भूमि है। और जब ये भूमि कंपित हो तब उसपर रहे हुये मानव मात्र की एवं संसार की क्या दशा होती है यह जानने के लिये शास्त्रकारों व अनुभवियों ने उसके कंपित होने के कारण बतायें है।

धर्मशास्त्रों में कहा है कि जिस प्रान्त या जिस नगर, गांव में भूमि कंपन होता है वहां लोगों के सामुदायिक अशुभ कर्म का उदय है। कुछ ही समय में नगर के नगर गांव के गांव नष्ट हो जाते हैं। हमारे लोग मृत्यु को प्राप्त होते हैं। भयंकर नुकसान होता है। भूमि कंपन की कल्पना मात्र से ही हृदय धूजने लगता है।

पर्वत, नदियो, वृक्षो, घरों, दुकानों, महेलो तमाम वस्तुयें छिन्नभिन्न हो जाती है। बाग-बगीचा, रस्ते सभी बदल जाते हैं। यह भूमि कंपन क्यों होता है?

धर्मशास्त्रों में यह बताया गया है। पातालवासी देवगण आपस में लड़ने लगते हैं तब अपने पैर से पृथ्वी पर प्रहार करते हैं। तब कुछ मीइलतक भूमि कंपायमान होती

है। इसी तरह बल के प्रमाण से दूर दूर तक भी पृथ्वी कंपायमान हो सकती है।

दुसरा भूमि कंपन का यह भी कारण है। क्षार अधिक इकट्ठा होनेपर एवं प्रकार का गेस तैयार होकर विस्फोट होता है उससे भी पृथ्वी कंपित होती है।

उत्तराध्ययन सूत्र टिका में कहते है-

शब्देन महता भूमिर्यदा रसति कंपते ॥
सेनापति रमात्यश्च, राजा राष्ट्रंच पीडचते ॥१॥

जब जमीन में बड़ा विस्फोट होता है तब भूमि कंपायमान होती है। राजा, दिवान, सेनापति और देश के उपर भारी संकट आता है। रोग भी बढ़ने लगते हैं। यह बात जहां भूमि कंपन होता है वहां पर पाप की छाया छा जाती है।

नहीं बोल्या नव गुण है।

भाईयां नहीं बोल्या नव गुण है।
अपनी मर्यादा में रहना ॥
पश्चात्ताप नही है करना ॥
आपस झगडो से डरना ॥
वैर विरोध नही करना ॥
मिथ्या दोष है लागे, क्रोध भाव नही जागे ॥
जो काम पूरतो बोले, थारे पाप कर्म नही होवे ॥
तू-वचन सिध्ध बन जावे ॥
एसो वीतराग फुरमावे ॥

लाखों थे हमारे पास हीरे और मोती।
किन्तु दोस्तों कफन के जेब नहीं होती ॥

घरेलु दवाईयाँ

सर्प का जहर

१. सर्प काटने पर शीघ्र उपाय, सर्प जहां काटा हो उस स्थान को तेज चाकू या पत्तिसे चीर कर खून बाहर निकाल दो, या उस स्थान को अग्निसे जला दो। या उस स्थान पर पोटेशियम परमेंगनेट (कुये में डालने की लाल दवा) भर दो।

२. ख़ूब घी पीलाओ।

३. सर्प जहां काटा हो उससे कुछ उपर रस्सी से खींचकर काटा बांध दो, जिससे जहर उपर न चढे।

४. बेहोशी नही आनी चाहिये, आँखों पर ठंडा पानी के छीटे, बाजे आदि का आवाज हा-हा-हू-हू करते रहो, बातों में लगाते रहो।

५. बेहोशी जरा भी नहीं आने देना। काली मीर्च पावडर या तमाखु के पत्ते सुंघाने से छीक आयेगी, छींकसे बेहोशी दूर होती है।

६. नमक मिलाकर गरम जल पिलाओ, उल्टी हो जायेगी। जहर का असर कम होगा।

७. एनीमा लगाकर दस्त लगवादो, जहर कम होगा।

८. नीमकी पत्ती खिलाओ, पत्तियों का रस पीलाओ कोंपल खिलाओ।

९. काटे हुए स्थान पर तम्बाकू के पत्तों का लेप करो।

बिच्छू के काँटने पर

१. जीरे का पावडर बनाकर द्रोह के रस में मिलाकर खिला दो।

२. गाय के घी में सूंठ मिलाकर खिलाये जहर कम पड़ जायेगा।

३. पोटेशियम, परमेंगनेट और टार्टरिक एसिड मिलाकर लगाये। कांटा जल जायेगा।

किसी ने जहर खा लिया हो तो

संखिया, वछनाग, कुचला, तेलिया, आदि जहर, बिष खा लेने पर गरम पानी में सेंधा नमक मिलाकर खूब पिलाओ। जिससे उल्टी होकर विष निकल जायेगा।

गुदा मार्ग में एनीमा लगाकर या साबुन की बत्ती लगाकर दस्त (संडास) करावे जितना खा सके उतना घी खिलावे, सर्प के काटे और जहर, विष खा लेने पर साधारण इलाज के उपर निर्भर न रहकर किसी कुशल अनुभवी चिकित्सक की सहायता लेनी चाहिये।

बिच्छू काटने पर

निर्मली को लेकर घीस कर जहाँ बिच्छूने काटा हो उसपर चोटा दें। वह निर्मली चांट जायेगी। जहर खीच लेगा।

नशा ज्यादा हो गया हो तो उतारने के उपाय

नशीले मादक पदार्थ अधिक मात्रा में खा लेने पर अधिक नशा चढ जाता है, और अनेक उपद्रव दिखाई देने लगते हैं। ऐसी दशा में तुरन्त ही चिकित्सा करनी चाहिये।

भांग के नशेपर

१. अंजीर के फलों का क्वाथ पिलाओ।
२. मक्खन या बादाम का तेल खिलाओ।
३. खोए के पेडे पानी में घोलकर पिलाओ।
४. नींबू का आचार खिलाओ।
५. अदरख, निंबू, नमक मिलाकर पिलाओ।

अफीम का नशा

१. कपास के पत्तों का रस पिलाओ। २. भुनी हुई हिंग और काला नमक खिलाओ। ३. दूध और घी मिलाकर खिलाओ, भूनी हिंग, काला नमक छाछ में पीलाओ। अफीम का नशा उतर जायेगा।

शराब का नशा

१. ककडी खिलाओ । २. धनीया पानीमें पीसकर मीश्री मिलाकर ठेठाई तरह पिलाओ । ३. नींबू चीरकर उपर काला नमक भरकर चुसाओ । ४. मूली का रस पिलाओ पानी में शहद मिलाकर पिलाओ ।

गंजे का नशा

१. पोदीना का रस पिलाओ । २. गुलाब के फूल पीसकर दुध में पिलाओ । ३. बैंगन का रस पिलाओ गांजे का नशा उतर जायेगा ।

बीडी, सिगरेट, तंमाखु खाना छोडने के उपाय

व्यसन शरीर - का नशा करना है, बीडी-सिगरेट या तंमाखू खानेवाले के श्वास नली बिगड जाती है उसमें व्रण पड़ जाते हैं, बुढापे में तो हरदम शरीर में जलन, छाती में घबराहट एवं छातीमें ज्वलन होता है । ये सब व्यसन आसानी से छूट जाते हैं ।

कोई कहते हैं कि बीडी, सिगरेट या तंमाखू पर ही संडास लगती है, यह गलत एक धारणा है ।

जब भी आपको बीडी पीना, सिगरेट या तंमाखू या गुटका खाने की मनमें आवे तब आप इस दवा को मुंह में डालकर चबाते रहें सभी व्यसन व रोग मिट जायेंगे ।

१. सुआ १० ग्राम, अजमा १० ग्राम, वरीयाली १० ग्राम, थोडा काला नमक, थोडा हलदर का पावडर, सबको इकट्ठाकर थोडा पानी डालकर मसल लें । फिर सुकाकर रोटी के तवे पर सेकले । एक बोतल में भरकर पास में रक्खे । जब भी बीडी आदि कि मनमें आवे इसे मुंह में डाल दें । आदत छूट जायेगी शरीर अच्छा रहेगा ।

गला बैठ जाना - गले का दर्द

१. अकलकरा, कुलंजन और भूलेठी के टुकडे मुंह में रखना । उसे चूसते जाना, गला खुल जायेगा ।

२. आँवले का चूर्ण गायके ताजा दूध के साथ पीवे गला खुल जायेगा।

३. गन्ना-गर्म कर के चूसना, बैठा गला खुल जायेगा।

४. खजूर को दूध में डालकर गर्म करना, दूध पी ले खजूर खाले, बैठा गला खुल जायेगा।

५. भूली के बीज, कवाव चीनी, कुलंजन, काली मिर्च, बडी इलायची, इन सबको कूट छानकर गोली बना ले, पानी के साथ ले। मुख में रखकर चूसने से गला खुल जायेगा।

६. सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला और जवाखार इन सब का चूर्ण बना ले। मुंह में रखे, गला खुल जायेगा।

श्वास चढना

१. गरम पानी में मोटा कपडा भिगोकर उससे छाती का सेंक करने से श्वास का दौर रुक जायेगा।

२. श्वास बहुत चलता हो तो एक चौडे गहरे बर्तन में गर्म पानी भरकर उसमें रोगी को पैर रखकर आधा घंटा बैठावे, श्वास का दौरा रुक जायेगा।

३. गर्मपानी पीने से श्वास की अधिकता रुक सकती है।

४. सेंधा नमक और काली गाय का घी, मिला कर छाती में पलनेसे स्वास कम पड़ जाता है। रोज लगानेसे मलनेसे, श्वास मिट जायेगा।

५. सफेद जीरा ३ ग्राम छोटी इलायची ४ ग्राम, इन दोनों को २९ ग्राम पानी में पीसकर छान ले। थोडा सेंधा नमक डाले सुबह १५ दिन पीवे।

हिचकी

१. आम के सुखे पत्ते चिलम में भर कर उसका धुँआ पीने से हिचकी आना बंद हो जायेगी।

२. केले की जड के रस में थोडी मीश्री मिलाकर पीछे हिचकी बन्द हो जायेगी।

३. घी और शहद में थोडा जवाखार मिलाकर चढावे, हिचकी बंद होगी।

४. मोर पंख के चँदवे की भस्म १२५ मि.ग्रा. शहद और मक्खन के साथ चाटे। हिचकी बन्द हो जायेगी।

५. काला नमक, सेंधा नमक, सांभर नमक, समुद्र नमक इन चारों को बराबर पीसकर मुंहमें डाले हिचकी बन्द हो जायेगी।

सर्दी जुकाम

१. अदरख का रस और शहद छः छः ग्राम लेकर चाटे जुकाम मिट जायेगा।

२. गर्म पकाये उडद, नमक मिलाकर खाने के बाद खाने से सर्दी मिट जायेगी।

३. हल्दी ६ ग्राम, काली मिर्च १॥ ग्राम, थोडासा काला नमक गर्मकर खुब उबालकर पीनेसे सर्दी मिट जायेगी।

४. शक्कर का धुँआ सुंघने से सर्दी मिट जायेगी।

५. दही में सफेद बुरा मिलाकर सुबह पीना सर्दी मिट जायेगी।

खांसी

१. अदरक का रस, पान का रस, शहद तीनों को तीन तीन ग्राम मिलाकर चाटे कैसी भी खांसी मिट जायेगी।

२. सुंठ, कालीमीर्च, पीपल इन्हें बराबर लेकर चुर्ण बना ले। शहद के साथ चाटे। खांसी मिट जायेगी।

३. हल्दी को भोमर (छाणेकी भोमर) में भुन ले फिर उसके छोटे-छोटे टुकडे करले। सोपारी की तरह चूसते रहे उससे सभी तरह की खांसी अच्छी हो जायेगी।

४. बबुल का छिल्का और मीश्री कुटकर पानीके साथ गोली बनाले, फिर चुसते रहे, खांसी मिट जायेगी ।

५. कद्दू का बीज, पोस्त, अजवायन, कत्था, जावीत्री बराबर मात्रा में लेकर उड़द जितनी गोली बनाले फिर चूसते रहे । खांसी मिट जायेगी ।

लू लगना, बुखार आना

१. आंवले का मुरब्बा चांदी के बर्क के साथ लपेटकर खिलावे । लु अच्छी होगी ।

२. कद्दू का बीज ६ ग्राम, मीश्री की चासनी बनाकर उसके साथ खिलावे । आराम होगा ।

३. धनीया ३ ग्राम, कद्दू का बीज ३ ग्राम, पानीके के साथ घांट ले । गुलाब के शर्बत के साथ पिलावे ।

मलेरिया बुखार

१. तुलसी के पत्ते, काली मीर्च, पीसकर चने के बराबर गोली (पानीसे) बनाले और एक बोतल में रक्खे । जब किसी को मलेरीया बुखार आवे तब उसे सुबह शाम गर्म जलसे गोली खिलावे एक दिन में बुखार उतर जायेगा ।

२. नीम के पत्ते, छाल, बीज व कुंपल सब पीस कर पावडर बनाले । जब काम पड़े तब उसका काढा बनाकर पिलावे । बुखार उतर जायेगा ।

३. करेले की जड २ ग्राम जीरा, २ ग्राम काली मीर्च नग ७ पुराणा गुड के साथ गोली बनाले । सुबह शाम एक गोली लेने पर आराम होगा ।

४. गौ मुत्र में थोडा सेंधा नमक डालकर पैर के तले मालिस कीजिये आराम हो जायेगा ।

बहुमुत्र

१. जवाखार और मीश्री ३-३ ग्राम पानी के साथ लेने से बार बार थोडा थोडा पेशाब आना ठीक हो जायेगा।

२. बबुल का गोंद घी में भुनकर रखले, इसके सुबह मक्खन के साथ खाये। आराम हो जायेगा।

३. बबुल के फूल, बबुल की कली, छाल पत्ति तथा गोंद उकालकर काढा पीवे आराम होगा।

प्रदर

१. पके हुये केले खाकर उपर से दुध पीवे।

२. सफेद जीरा, शतावर, आँवला, नीम की छाल ३-३ ग्राम लेकर पावभर पानी में पीस छानकर ठंडाई की तरह पीवे। प्रदर मिट जायेगा।

३. अशोक की जड़ का चूर्ण २ ग्राम लेकर शहद में चाटे आराम होगा।

वायु की व्याधि

१. जहां वायु व्याधि हो वहांपर एरंडी के बीज पीसकर गरमकर थोडा सेंधा नमक डालकर लेप करें। एकदम आराम।

२. लहसन का सेवन करे। घी में तलकर।

३. धतुरे के पत्ते गर्मकर वादी आई हो उस पर जरा गरम कर तेल लगा कर बांधे आराम।

४. एक तोला काले तील पीसकर पुराने गुडमें मिलाकर खावे आराम।

५. मेथी को जरा सेंककर मुंह में चबाकर धीरे-धीरे खाने से आराम।

हार्दिक शुभेच्छा

भंडारी - छगनलालजी, लालचंदजी, फतेशकुमार, भरतकुमार, प्रविणकुमार, उत्तमकुमार, निखिलकुमार, श्रेयांसकुमार

(आकोलीवाले) राजस्थान

(१) महेन्द्रकुमार भंडारी

नारायण मुदली लाईन, चेन्नई.

फोन - २५३९०३०६

(२) चुन्नीलाल लालचंदजी भंडारी

नं. १३, नारयणी मुदली स्ट्रीट, चेन्नई.

फोन - २५३५००४२

श्री नाकोड़ा तीर्थ के पार्श्वनाथ भगवान एवं अधिष्ठायक भैरवजी के दर्शनार्थ प्रत्येक पूर्णिमा को पदयात्रा करने वाले सभी भक्तों का कटारिया परिवार हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

Amritlal Pukharaj Singhvi

Padmavati Nagar, Industrial Area Road, Balotra - 344022 (Raj.).

Tel. : (02988) 20737

MAHABHAIRAV METAL INDUSTRIES,

TECHNO STEEL

Tel. : 2386 46 48 Fax : 2389 62 16

E-Mail : mayurhydro@rediffmail.com

MAYUR VALVES COMPANY

Mohanlal Pukharaj Singhvi

M. K. DYEING MILLS

(Dyeing and Printing Cloths)

Industrial Area, Balotra - 344022 Tel. (O) 20762 (R) 20737

जैन विवाह विधि

श्री वर्धमान सूरि कृत - आचार दिनकर ग्रंथ के आधार पर

विवाह १४ संस्कार

विवाह कराने के लिये जैन पंडित या विधिकारक श्रावक का ब्राह्मण

दो शब्द :

"आचार प्रथमो धर्म:"

इस नियमानुसार प्रथम अपने आचार को शुध्ध बनाना, यह प्रत्येक मानव - जैन - श्रावक का खास कर्तव्य है। बिना आचार शुध्धि के गृहस्थ धर्म सुखी नहीं बन सकता। इसलिये जैन आचार्य वर्धमान सूरिजी ने अपने "आचार - दिनकर" ग्रंथ में गृहस्थों के गर्भाधान आदि १६ संस्कार बताये हैं, उनमें १४ वा संस्कार विवाह-विधि का उल्लेख किया हैं।

प्राकृत पुस्तक में विवाह-विधि का अच्छी तरह विधान किया गया है। इस में लिखे मुताबिक जैन मंत्रों से विवाह की क्रिया करानी चाहिये।

श्रध्धा - आत्मविश्वास

जिन देव देविओं को, जिन परमात्मा को हम श्रद्धापूर्वक आराध्य देव मानते हैं उन्हीं देव देविओं के मंत्र आशिर्वाद संसार को सुखमय बनाते है। प्राचीन समय में जैन विवाह विधि से जैनों के विवाह का प्रचलन था शिक्षा-ज्ञान के अभाव में ब्राह्मण करे सो मान्य।

आज कल जहाँ देखते हैं वहाँ ज्यादातर ब्राह्मण लोक अपनी विधि के विवाह करा देते हैं। धार्मिक दृष्टी से जहाँ जैसे मंत्र-विधि होनी चाहिये वहाँ जैन विधि में ही मिलेगा।

हम भगवान महावीर के उपासक है, हमारे आराध्य देव वीतराग है। उनके अनुयायी हम जैन है - हमारी कुलदेवी - हमारे कुल देवता, जिन्होंने हमें जैन बनाया उनके द्वारा निहित किये गये हैं।

जैन-विधि में कतिपय जगह अपने-अपने प्रान्त प्रदेश की योग्य प्रथा को स्थान देना चाहिये।

विवाह - पाणिग्रहण

जीवन का पवित्र सम्बन्ध है, शरीर - आत्मा - दोनों का, "तम्हा संयोग सम्बन्ध"। पूर्व भवों का सम्बन्ध जागृत होकर दोनों साथ जीवन बिताने की प्रतिज्ञा करते हैं।

पांच तत्व - प्रत्यक्ष देव - जल - अग्नि व पांच परमेश्वर की साक्षी मान कर - जीवन साथ निभाने का व्रत धारण करते हैं।

माता - पिता, सास श्वसुर इनकी साक्षी से कन्या दान - सर्व समक्ष पुनीत बनकर - वर - वधू का भविष्य सदा उज्ज्वल बनें यहीं सभी की शुभेच्छा।

सगाई - सम्बन्ध

सगाई सम्बन्ध निश्चय हो जाने पर कन्या पक्षवाले वडील (बडे) विवाह पत्रिका - कुंकुम के छांटने डालकर चावल, सुपारी, द्रोह (दूर्वा), श्रीफल, तथा सवा रूपया के साथ - वरपक्ष वाले वडील के हाथ में अर्पण करें, यह मंत्र बोलकर -

महामंत्र लग्न निश्चय

ॐ अर्हं परमसौभाग्यय, परम सुखाय, परम भोगाय, परम धर्माय, परम यशसे परम संतानाय, भोगोपभोगान्तराय व्यवच्छेदाय अमुक नाम्नी (यहां लडकी का नाम बोलना) कन्या अमुक गोत्रां (गौत्र) अमुक नाम्ने (वरनाम) वराय, अमुक गोत्राय (गौत्र लडके का) ददाति प्रति गृह्वाण अर्हं ॐ नमः।

इस तरह लग्न पत्रिका देवें तथा सब का मीठा मुंह करावे - गोल धाना। वर को पेहेरावणी करावे।

बरपक्षबाले

वधू के लिये सुन्दर कपडे आभूषण भेजें और आपस में स्नेह प्रेम का वातावरण बना रहे ऐसी शासन देव से विनन्ती करें।

मातृ का स्थापन

लग्न के पांच दिन, या सात दिन पहले शुभ मुहूर्त में वर - या - कन्या के यहाँ मातृ का स्थापना यानि - कुल देवी की स्थापना करनी चाहिये। बाद में उसकी पूजा अपने घर में जहां - माताजी - या कुल देवी का स्थान हो वहां पर धूप दीप - नैवेद्य - फूल - हार चढाना और देवी से आशिर्वाद मांगना - हमारा रा वर वधू का संसार सुखमय बनें।

बाद में - कन्या को एक पाट पर बिठाकर सर्व प्रथम - उसकी माता - तिलक करे, उस पर अक्षत (चावल) लगावे, तथा हाथ और पांव पर कंकू छिटकावें। हाथों में (पुली में) श्रीफल, पान, सुपारी, सवा रूपया अक्षत से अंजली भर दें, चार सुहागिन क्रमशः तिलक - अक्षत - लगावे, थाली में - कंकू - श्रीफल, अक्षत लेकर कन्या को वधावे।

बाद में सुगन्धी द्रव्यों से पुरे शरीर में पीठीका मालिश करावे, इस तरह प्रतिदिन पीठी करावे, जिस दिन कुलदेवी की स्थापना करें, उस दिन से लग्न तक प्रतिदिन वर- हो या वधू - को पीठी कराना। देवदर्शन करें।

यहाँ पर उस दिन ज्वारा रोपण भी करा सकते हैं संसार को हरा भरा रखने के लिये (विधान है) यह इच्छा पर निर्भर है। देश-देश की जैसी प्रथा।

मण्डप-मुहूर्त

मंडप का मुहूर्त "श्री आदिनाथ चरित्र" में विस्तृत वर्णन है, उस मंडप में "चवरी" स्थापना की विधि - "आचार दिनकर ग्रंथ" में लग्न के दिन करने की बताई गई है। शुभ चोघडीया - शुभ वेला में मंडप की स्थापना करना।

चवरी की जगह ५-६ या १० हाथ जमीन पसंद पर सम चोरस उसे साफ करा कर शुध्ध पवित्र बनावे। बीच में चवरी की जगह गार से - या अन्य सुगन्धी पदार्थ से लिपावे। उसके चार - जगह - कलश - घडा सात-सात स्थापना करें। उसके उपर मंडप सजावें।

अशोक वृक्ष (आशोपाल्लव) के पत्तो के चारों तरफ तोरण बंधावे, बीच में वेदिका चौरी △ ऐसा त्रिकोणाकार अग्निकुंड बनावे, वर-वधू को दक्षिण द्वार से प्रवेश कराकर डाबी से जीमणी तरफ पूर्व दिशा सम्मुख बिठाने के पारले - धूरा लगाकर गादी स्थापन करे। बाई तरफ - वर - और दाहिनी तरफ वधू। अच्छी तरह मंडप - चवरी सामान सब तैयार करवा ले।

क्रिया कारक, पंडित - ब्राह्मण या यति-गुरोंसा अथवा अनुभवी वृध्ध श्रावक पुस्तक में विधि अनुसार विधि करवा दें।

चवरी का सामान

शुध्ध जल छानकर कलश भर कर रक्खें - कलश के चारों तरफ कंकू केशर के स्वस्तिक बनावें। श्रीफल नग ३, चन्दन - वाटकी - कंकू वाटकी, अक्षत चावल सवा किलो। फूल - छुटक - तथा दो हार - फूलों के वर-वधू के लिये। मधु (शहद)

होम का सामान

समी का लकडा (खेजडी के टुकडे), पीपल के लकडे के टुकडे, इन्द्रजव, बीली - आम - इनमें जो कोई भी मिले उस लकडी के टुकडे, घी - सवा किलो, सुपारी नग ५, जव - तिल २०० ग्राम, सभी सामग्री एक थाली में तैयार कर रक्खें।

तोरण पूजा

तोरण जो ऊपर लगाया जाता है - उसे एक थाली या परात में रखकर - कन्या के माता पिता - तोरण की पूजा करें।

चंदन-पुष्प-हाथ में लेकर मंत्र बोले -

मंत्र

ॐ नमः क्षेत्र देवतायै शिवायै क्षाँ क्षीं क्षूँ क्षौं क्षः अत्र विवाह मंडपे आगच्छ-आगच्छ इह बलि परिभोगं गृहाण गृहाण भोगं देहि देहि सुखं देहि यशो देहि, सन्ततिं देहि, ऋध्धिं

देहि, वृध्धीं देहि, भो कुलदेवी, कुलदेवता, पूर्वादि, सर्व समिहितं देहि - देहि - स्वाहाः यह मंत्र बोल कर - केशर - कंकू के छिंटे डालकर तोरण पर फूल चढाना।

मंत्र - तोरण ऊपर चढाते समय

हाथ में तोरण लेकर मंत्र बोलना -

ॐ ह्रीं श्रीं नमो द्वार श्रिये सर्व पूजिते सर्व मानिते सर्वप्रधाने इह तोरण स्था सर्व समिहितं देहिं - देहिं स्वाहाः।

यह मंत्र बोलकर ऊपर तोरण लगाना।

ग्रह शांति

यदि बन सके तो जिस दिन से लडका लडकी पाठ बैठे उस दिन से ७ स्मरण का दोनों समय सुबह शाम अगरबत्ती लगाकर पाठ करावे।

नहीं तो लग्न के दिन तो अवश्य पाठ करावे।

वर राजा लग्न के लिये

लग्न के पहले - उस दिन - वर को तैल पीठी आदि करवाकर, स्नान आदि करवाकर, सुन्दर लग्न के कपडे - अलंकार - आभूषण पहन कर, ललाट में माताजी या वडील सुहागिन कंकू का तिलक अक्षत लगाकर, वर वारा घोडे पर चढे, उस समय यह मंत्र सुनकर घोडे पर सवार होना।

वरघोडा का मंत्र

ॐ अर्हं - आदिमो अर्हन् - आदिमो नृपः, आदिमो दाता, आदिमो नियन्ता, आदिमो गुरुः, आदिमा श्रेष्ठः, आदिमः कर्ता, आदिमो भर्त्ता, आदिमो जयी, आदिमो - नयी, आदिमः शिल्पी, आदिमो विद्वान, आदिमो जल्पाकः आदिमः शास्ता, आदिमो रौद्रः, आदिमः सौम्यः, आदिमः काभ्यः, आदिमः करुण्यः आदिमो वन्द्यः आदिमः स्तुत्यः आदिमो जेयः, आदिमो ध्येयः, आदिमो भोक्ता, आदिमः सोढा, आदिमः एकः, आदिम अनेक, आदिमः कर्मवान्, आदिमो अकर्मा, आदिमो धर्मवित् आदिमो अनुष्ठेयः, आदिमो अनुष्ठाताः, आदिमः सहज, आदिमो दशावान्, आदिमः सकलत्रः, आदिमो निष्कलत्र आदिमो विवोढा, आदिमः ख्यापकः आदिमो ज्ञापकः आदिमो विदुरः, आदिमः कुशल, आदिमो वैज्ञानिकः आदिमः सेव्यः, आदिमो गम्यः, आदिमो विमृश्यः आदिमो विर्मष्ठा, सुरासुर नररोरग त्रणतः प्राप्त विमल केवलो यो गीयते सकल प्राणि गणहितः दयालुः अपरापेक्षः परमात्मा परं ज्योतिः परं ब्रह्मः परमैश्वर्यमाक्, परंपरः परापरो अपरंपरः जगदुत्तमः सर्वगः सर्ववित्, सर्वजित् सवीर्यः सर्वत्र शस्यः सर्ववंद्यः सर्वपूज्यः सर्वात्मा, असंसार, अव्ययः अवार्यवीर्यः श्री संश्रयः श्रेयः विश्ववश्यावह्नत् संशयहृत्, विश्वसारः, निरंजनः, निर्मम, निष्कलंकः

निष्पाप:, निर्मना: निर्वचा: निर्देह:, निसंशय: निराधार: निरवधि प्रमाण प्रमेय प्रमाता, जीवा-जीवा श्रव संवर बंध निर्जरा मोक्ष प्रकाशक:, स एव भगवान शांतिं करोतु, तुष्टिं करोतु, पुष्टीं करोतु, रिध्धिं करोतु, वृध्धिं करोतु, सुखं करोतु, श्रियं करोतु, लक्ष्मीं करोतु अर्हं ॐ नम:

इस तरह यह मंत्र पूर्ण होने पर वरराजा घोडे पर सवार होकर ससुराल की तरफ चले। बहेन लूण उतारती साथ चले - शुभ मंगलिक वाजिंत्रों के साथ ससुराल तोरण पर पहुंचे।

तोरण बांदना

इस तरह शांति के साथ तोरण वांदने के बाद वर राजा को पाट पर खडे रक्खे। बाद में कन्या की माता सुहागिनों के साथ गीत गाते हुये जमाई को पोखें।

अलग-अलग अपने-अपने गांवो के रीति रिवाज के समान - झेरणा, घुंसरा, इंडी पींडी वगैरह लेकर वर को पोखें। वर को वधावे।

अपने-अपने प्रान्त के रीति रिवाज द्वारा चवरी में - पूर्व सम्मुख कन्या के बाई तरफ बिठावे। सुगन्धी धूप लगाना -

कन्या को तैयार कर - सहेलियों के साथ चवरी में दाई ओर बिठावे। क्रियाकारक हाथ पर दोनों के कंकणडोरा बांधा।

मंगल माला

मंगलं भगवान वीरो । मंगलं गौतम: प्रभु: ।।
मंगलं स्थूलिभद्राद्या । जैन धर्मोऽस्तु मंगलं ।।
नार्भयाद्या जिना: सर्वे, भरताद्याश्चचक्रिणा: ।।
कुर्वन्तु मंगलं सर्वे, विष्णव: प्रतिवैष्णव: ।।
नाभिसिध्धार्थ भूपाद्या जिनानां पितर: समे ।।
पालिता खण्ड साम्राज्या, जनयन्तु जयं मम ।।
मरुदेवी त्रिशलाद्या, विख्याता जिन मातर: ।।
त्रिजगज्जनितानन्दा, मंगलाय भवन्तु मे ।।

(५)

श्री पुन्डरी केन्द्र भूति, प्रमुखा गण धारिणा: ।।
श्रुत केवलिनोऽपीह, मंगलानि दिशन्तु में ।।

(६)

ब्राह्मी चन्दनबालाद्या: महासत्यो महत्तरा: ।।
अखंडशील लीलाढ्या, यच्छन्तु मम मंगलं ।।

(७)

चक्रेश्वरी - सिध्धायिका, मुख्या शासन देवताः ।।

सम्यग्दृशं विघ्न हंराः, रचयंतु जयश्रियम् ।।

(८)

कपर्दो मातंग मुख्या, यक्षा विख्यात विक्रमः ।।

जैन विघ्न हरा नित्यं, दिशन्तु मंगलानि में ।।

इसके बाद दोनों के छेडे बांधकर हस्त मिलाप करावे। पुरुष के हाथ पर - कन्या का हाथ रखना, महेन्दी व सिक्का रखकर - क्रियाकारक मंत्र बोले।

हस्तमिलाप मंत्र

ॐ अर्हं - आत्मासि - जीवोसि समकालोऽसि समचित्तोऽसि स समकर्मासि, समाश्रयोऽसि, समदहोऽसि, समक्रियोऽसि, सम स्नेहोऽसि, समचेवृितोऽसि, समाभिलाषोऽसि, समेच्छोऽसि, समप्रमोदोऽसि, समविषादोऽसि, समावस्थोऽसि, सम निमित्तोऽसि, समवचा आसि, समक्षुतृष्णोऽसि, समगमोऽसि, समागमोऽसि; समविहारोऽसि समविषयोऽसि, समशब्दोऽसि, समरूपोऽसि, समरसोऽसि समगंधोऽसि, समस्पर्शोऽसि, समेन्द्रियोऽसि, समाश्रयोऽसि समसंवरोऽसि, समबंधोऽसि, समनिर्जरोऽसि, सममोक्षोऽसि, सदेहि एकत्वं इदानीं, अर्हं ॐ.

इस मंत्र के द्वारा वर - वधू का हस्त मिलाप करा के - सामने चवरी में अग्नि स्थापन करें, पास में चार - छोटे (पुकणीया) सफेद चुने से रंगे।

मंत्र - अग्नि स्थापन चवरी में

ॐ ह्राँ-ह्रीँ-ह्राँ-ह्रः नमो अग्नेय, नमो बृहत् भानवे, नमो - अनन्त तेजसे, नमो अनन्त वीर्याय, नमो अनंतगुणाय, नमो हिरण्य तेजसे, नमः छागवाहनाय, नमो हव्याशनाय, अत्र कुंडे - पवित्र चवरी कुण्डे, आगच्छ आगच्छ.

अवतर - अवतर - तिष्ठ - तिष्ठ - स्वाहाः ।

यह मंत्र बोल अग्नि प्रगटावे कर लाये हुये काष्ट - घी - गुड, जव, तिल, सुवारी वगेरह का होम करें।

होम - मंत्र

ॐ अर्हं - ॐ अग्ने, प्रसन्न सावधानो भव तवाऽयमवसरः तद् आहारय इन्द्रं - यमं - नैर्रुतः वरुणं - वायुं - कुबेरं, ईशानं, नागं-ब्रह्माणं - लोकपालान ग्रहाँश्च - सूर्य - सोम - मंगल बुध - गुरु - शुक्र - शनि - राहु केतून् - सुरांश्च असुर सुपर्ण - विद्युदग्नि, द्विपोदधि, दिग्वायु, स्तनितकुमारान् भुवनपतिन्, भूत-पिशाच यक्ष राक्षस किन्नर किं

पुरुष महोरग गंधर्वान्, व्यंतरान्, चंद्रार्कग्रह, नक्षत्रतारकान् ज्योतिष्कान्, सौधर्मेशान, सनत्कुमार माहेन्द्र, ब्रह्मलांताक शुक्र सह स्त्रारा अनतप्राणता आरणा अच्युत ग्रैवेयका अनुत्तर भवान् वैमानिकान्, इन्द्र सामानिक पार्षद्य प्रायस्त्रिशल्लोकपालानीकप्रकीर्णक लोकान्तिक अभियोगिक भेदभिन्नान् चतुर्निकायानपि सभार्यान् सायुधबलवाहनान् स्व स्वोपल क्षित चिन्हान् अप्सरसश्च -

परि गृहीता परिगृहीत भेद भिन्नाः स सरवीका सदासीकाः साभरणा रूचक वासिनी दिग्कुमारिकाश्च - सर्वा समुद्र नदी गिर्याकर बन देवताः तदेतान् - सर्वान् सर्वाश्च, इदं - अर्घ्यं, पाद्यं आचमनीयम्, वलिं - चरुं हुतं न्यस्तं ग्राह्य - ग्राह्य स्वयं गृहाण - गृहाण स्वाहाः अर्हं ॐ.

इस तरह क्रिया कारक हवन करता हुआ, डाम के पत्र से पानी लेकर वर-वधू की ओर प्रसस्थ करे।

प्रतिज्ञा - पहला फेरा

प्रथम फेरे का प्रतिज्ञा मंत्र

ॐ अर्हं अनादि विश्वं, अनादि - आत्मा, अनादि कालः अनादि कर्म, अनादि सम्बन्धः, देहिनां देहानुगतानां, क्रोधाहंकार, छद्मलौभैः संज्वलन, प्रत्याख्यान - अप्रत्याख्यान अनंतानुबंधिभिः, शब्द-रूप-रस-गंध-स्पर्शै, इच्छा - अनिच्छा परिसंकलितैः सम्बन्धः अनुबंधः प्रतिबंधः संयोगः सुगमः सुकृतः, स्वनुष्टितः सुप्राप्तः सुलब्धो, द्रव्यभाव विशेषेण अर्हं ॐ।

तदस्तु वां सिध्ध प्रत्यक्षं केवलि प्रत्यक्षं, चतुर्निकाय देव प्रत्यक्षं विवाह विधान-अग्नि प्रत्यक्षं, नाग प्रत्यक्षं, नर नारी प्रत्यक्षं, नृप प्रत्यक्षं, जन प्रत्यक्षं, गुरु प्रत्यक्षं, मातृ प्रत्यक्षं, पितृ प्रत्यक्षं, मातृपक्षप्रत्यक्षं, पितृपक्षप्रत्यक्षं, ज्ञाति-स्वजन, प्रत्यक्षं संबंधः सुकृतः सदनुष्टितः सुप्राप्त, सुसंबध्धः सुसंगतः।

यह पहले फेरा - क्रियाकारक वीटी - चावल, सुपारी - जव - तिल - घी आदि अग्नि को देवें।

प्रतिज्ञा

पांच तत्व - पृथ्वी - जल, अग्नि, वायु एवं मानव नर - नारी, सम्बन्धी सभी पक्षों के सामने हम दोनों प्रथम प्रतिज्ञा करते हैं कि जीवनभर - सुख - दुख में साथ निभायेंगे, मंत्र में बताये इनकी साक्षी है।

दूसरे फेरे का मंत्र

ॐ अर्हं - कर्मोऽस्ति, मोहनीयमस्ति, दीर्घस्थित्यस्ति, निबिडमस्ति, दुच्छेद्यमस्ति,

अष्टाविंशति प्रकृत्यस्ति, क्रोधोस्ति, मानोऽस्ति, मायास्ति, लोभोऽस्ति, संज्वलनोऽस्ति, प्रत्याख्याना वरणोऽस्ति, अप्रत्याख्यानावरणोऽस्ति, अनंतानुबंध्यस्ति, चतुश्चतुर्विधोऽस्ति, हास्यमस्ति, रति-अरति अरतिरस्ति भयमस्ति जुगुप्साऽस्ति, शोकोऽस्ति, पुंवेदोऽस्ति स्त्रीवेदोऽस्ति, नपुंसकवेदोऽस्ति, मिश्रमस्ति, सम्यक्त्वमस्ति, सप्राप्ति कोटा कोटी सागर स्थित्यस्ति, अर्हं ॐ।

तदस्तु वां - निकाचिता निबिडबध्ध मोहनीय कर्मोदय कृतः स्नेहः - सुकृतोऽस्तु, स्वनुष्टितोऽस्तु, सु संबध्धोऽस्तु, आभवं अक्षयोऽस्तु अर्हं ॐ हवनीय सामग्री अग्नि देवता को प्रदान करें।

यह दूसरी प्रतिज्ञा

हम दोनों की आत्मायें कई भवों से संबंध निभाये साथ चल रही हैं।

इस भव में भी हम दोनों प्रतिज्ञा करते हैं कि जीवनभर साथ निभायेंगे।

तीसरे फेरे का मंत्र

ॐ अर्हं - कर्मास्ति वेदनीयमस्ति, सातमस्ति, असातमस्ति, सुवेद्यं सातं, दुर्वेद्यमसातं, सुवर्गणा श्रवणं सातं, दुर्वर्गणाश्रवणमसातं, शुभ पुद्गल दर्शनं सातं, दुःपुद्गल दर्शनमसातं, शुभषट् रसास्वादनं सातं, अशुभ षट्रसास्वादन सातं, शुभगंधाघ्राणं सातं, अशुभ गंधा घ्राणंमसातं, शुभ पुद्गल स्पर्शनं सातं, अशुभ पुद्गल स्पर्शनम सातं, सर्व सुखकृत् सातं, सर्व दुखकृतसातं अर्हं ॐ.

तदस्तु वां सातावेदनीयं माभूत् अशातावेदीयम्.

आशिर्वाद

सभी की साक्षी से हम दोनों ने प्रतिज्ञा की, पूरा साथ निभायेंगे। वे सभी देव-देवी-मानव मात्र हमें आशिर्वाद दें - हमारा जीवन सुखमय बीतें।

चौथा फेरा

कन्यादान

ॐ अर्हं - सहजोऽस्ति, स्वभावोऽस्ति, सम्बन्धोऽस्ति प्रतिबध्धोऽस्ति, मोहनीयमस्ति, वेदनीयमस्ति, नामास्ति, गोत्रमस्ति, आयुरस्ति, हेतुरस्ति, आश्रवबध्धमस्ति, क्रियाबध्धमस्ति कायबध्धमस्ति, तदस्ति सांसारिक सम्बन्धः अर्हं ॐ।

यह मंत्र बोलकर - कन्या के पिता के हाथ में तिल - जव, डाभ - धरो - क्रिया कारक मंत्र बोले।

मंत्र

अद्य अमुक वर्षे, अमुत रीतौ, मासे - पक्षे तिथौ - वासरे नक्षत्रे योगे - करणे - मुहूर्ते

पूर्व कर्म सम्बन्धानुबध्धां, वस्त्र - गंध - माल्यांलंकृतां, स्वर्ण रूप्य मणि भूषण भूषितां कन्यां ददामि प्रति गृण्हीय वस्त्र-आभूषणयुक्त मेरी यह कन्या आपश्री को अर्पण करता हूं।

हाथ के द्रव्य उनपर वधा कर डाले।

वर राजा स्वीकार करें

वर राजा हाथ में जल लेकर प्रतिज्ञापूर्वक कन्या को स्वीकार करते हैं

मंत्र

प्रतिगृण्हामि - प्रतिगृन्हामि, सुप्रतिगृहीताऽस्तु शांतिरस्तु, तुष्टिरस्तु, पुष्टिरस्तु, रिध्धीरस्तु, वृध्धीरस्तु धन धाम सुख संपदा संतान वृद्धी रस्तु स्वाहा।

क्रिया कारक हाथ में डाभ, अक्षत, वासक्षेप लेकर मंत्र पढे.

मंत्र

ॐ येन अनुष्ठानेन आद्य अर्हन् शक्रादिदेव कोटि परिवृतो भोगाय संसारी जीव व्यवहार मार्ग संदर्शनाय सुनंदा सुमंगले पर्यणैषीत् ज्ञातं अज्ञातं वा सद् अनुष्ठानं अनुष्टितं मस्तु।

वासक्षेप आदि कन्या वर पर डाले।

हथलेवा छुडाने का मंत्र

ॐ अर्हं जीवस्त्वं कर्मणा बध्धः ज्ञानावरणेन बध्धः दर्शनावरणेन बध्धः वेदनीयेन बध्धः मोहनीयेन बध्धः आयुषा बध्धः, नाम्नाबध्धः गोत्रेणबध्धः अन्तरायेण बध्धः, प्रकृत्याबध्धः स्थित्याबध्धः रसेनबध्धः प्रदेशेन बध्धः

तदस्तु ते मोक्षो गुणस्थानारोह क्रमेण अर्हं ॐ मुक्तयोः करयोरस्तु, वां स्नेह संबंध अखंडित मस्तु

यहाँ पर कन्यादान के लिये रुपया पैसा - आभूषण परिजनों द्वारा दिया जाता है।

अंतिम सबकी तरफ से आशिर्वाद

पूर्वं युगादिभगवान विधिनैव येनः ।।
विश्वस्य कार्य कृतये किल पर्यणैषीत् ।।
भार्याद्वयं तद्मुना विधिनास्ति युग्मं ।।
एतत् सुकाम परि भोग फलानु बंधि ।।

हथलेवा छुटता है, दोनों माता पिता वडीलों के और अपने कुलदेवा के पैर पडते हैं। सुहागिन गीतों के साथ प्रस्थान।

आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्र हीनं च यत्कृतम्
तत्सर्वं कृपया देवः क्षमस्व परमेश्वरः

प.पू. प्रतिभा संपन्न श्री राम सूरीश्वरजी म.सा. (डहेलावाला) के आज्ञानुवर्तिनी विदुषी श्री कंचनश्रीजी म.सा.

आप का जन्म वि.सं. १९८२ भादरवा सुद ६ के दिन राधनपुर में हुआ था। पिता - मोतीभाई, माता - मणीबहेन बाल्यकाल - १३ वर्ष की आयु में प.पू. श्री मणिश्रीजी के पास दीक्षा अंगीकार की।

आपने जैनागम, प्रकरण ग्रंथों का अध्ययन किया, साथ ही शुध्ध चारित्र का पालन, त्याग तपस्यादि करते हुये आपने अपना पवित्र जीवन बिताया।

अंतिम समय तक प्रतिदिन स्वाध्याय में संलग्न रहकर अपना जीवन आदर्श बनाया। आपने कई बालिकाओं को एवं श्राविकाओं को उपदेश देकर दीक्षा प्रदान की।

सं. २०५९ मगसर सुद १४ पंचभाई की पोल में स्वर्गवासी हुई।

विनय भक्ति भावनाए, गुरु कृपा ने साधतां ।।
श्रमणी धर्म ना सुव्रतोंने यतिधर्म ने पालतां ।।
शताधिक श्रमणीवृंद, परिवारे जे शोभतां ।।
एवा श्री गुरू कंचन वंदतां, विघ्नों सकल दूरे थतां ।।

हार्दिक शुभेच्छा

जवेरीलालजी
हस्तीमलजी
चत्तरगोता
सायला - कोलार,
राजस्थान

फोन : (निवास व प्रतिष्ठान)
- २२५३०१
मो. ९८४५४१७४३२

हार्दिक शुभेच्छा

विजयलक्ष्मी
ज्वेलर्स

ओटमल
हंजारीमलजी रेवतडा

कोलार,
राजस्थान

ડૉ. વીરેંદ્ર પી. શાહ

આપનો જન્મ તા. ૧-૬-૧૯૩૫ ના દિને ધાંગધ્રા (ગુજરાત) માં થયો અને પ્રાથમિક શિક્ષણ સાંગલી (મહારાષ્ટ્ર) માં લઈ ઉચ્ચ શિક્ષણ મુંબઈમાં લિધું. આપે ની ઉચ્ચ પદવી મુંબઈ મહાવિદ્યાલયમાંથી પ્રાપ્ત કરી અને જેવી પ્રખ્યાત નાનાકીય સંસ્થામાં પદાધિકારી તરીકે સેવાઓ આપી. એક સાન્નિષ્ઠ અને કાર્યદક્ષ ઉચ્ચાધિકારી તરીકે ૧૯૯૫ માં આપ સેવાનિવૃત્ત થયા.

આર્થિક વિવિધ વિષયોપરના આપના લેખો નામાંકિત સામાયિક અને દૈનિકોમાં જેવા કે બૅંકર, ઈકોનોમિક ટાઈમ્સ, ફાઈનેન્સિયલ એક્સપ્રેસ વગેરેમાં પ્રસિદ્ધ થયા છે.

સાથે સાથે સંગીત અને સાહિત્યિક વિષયોમાં રસ હોવાથી નીચે મુજબના ત્રણ ભાવાઓમાં ગદ્ય-પદ્યાત્મક આપના કલાત્મક પ્રકાશનો પણ પ્રકાશિત થયા છે.

૧. નેમ-રાજુલ	:	લૉંગ પ્લે રેકાર્ડ (હિંદી) જન્મથી નિર્વાણ સુધીની કાવ્યકથા
૨. વીરલ ચોવીશી	:	૨૪ તીર્થંકરોના સ્તવનોનું કલાત્મક ચિત્રો સાથેનું રંગીત પુસ્તક (ગુજરાતી)
૩. Jain Hymns	:	વીરલ ચોવીશીનું અંગ્રેજી રૂપાંતર
૪. મારા ગુરૂદેવ	:	પ.પૂ.આ.દેવ શ્રી રામચંદ્રસૂરીશ્વરજી શ્રદ્ધાંજલી પુસ્તિકા (ગુજરાતી)
૫. મન-મંથન	:	માનવ મનને અનુસંધીને રંગીન ચિત્રો સહીત ગીત-સંગ્રહ (હીંદી)

૬. વીરલ ચિંતનિકા : સ્વાધ્યાય માટે સુવાક્યોનું અનુપમ પુસ્તક (ગુજરાતી)

૭. નાચે ભક્તિ મયૂર : રંગીત ચિત્રો સહીત ભક્તિ-ગીતોનો સંગ્રહ (હિંદી)

૮. ગહરે સાગર ખોજે મોતી : વિશ્લેષણાત્મક ધાર્મિક લેખોનો સંગ્રહ (ગુજરાતી)

૯. સંભવ પ્રીત સગાઈ : શ્રી સંભવનાથ પ્રભુજીના સ્તવનોની પુસ્તિકા (ગુજરાતી)

૧૦. : તત્ત્વજ્ઞાન સંબંધી રૂળાઈયાત શૈલીના અંગ્રેજી કાવ્યો

हार्दिक शुभेच्छा

शा. मोहनलाल दलिचंदजी पारेख

मु. पो. धनला (राजस्थान)

जि. पाली

फोन - ०२९३५ ६८८३१

यहाँ पर सुन्दर विशाल
सच्चियाय माताजी का मंदिर - धर्मशाला,
भोजनशाला सम्पूर्ण अच्छी व्यवस्था है।

एक बार जरूर
दर्शन करने पधारें।

हार्दिक शुभेच्छा

शा. विजयराज कुन्दनमलजी

TAMAKA

Plastic Udhyog

TaMAKA PIPES

Mfrs. : HDPE Agricultural Irrigation & Domestic Pipes High Quality Hose Pipes

Fact. : Plot No. 10, A-3, KIADB
Industrial Area, Bethamangala
Road, Tamaka, KOLAR - 563101
Karnataka, India
STD. : 08152
Fact. : 221171
Resi. : 226499
M. : 9845300254

हार्दिक शुभेच्छा

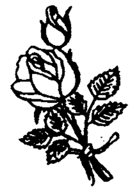

शा. चंपालालजी
कुन्दनमलजी
छत्तरगोता

राजस्थान - सायला
कोलार

हार्दिक शुभेच्छा

शा. मिश्रीमल
रतनाजी
रामसीणा चौहान

तखतगढ़वाला

हार्दिक शुभेच्छा

दिनेश, हीराचन्द, मगनलालजी
(सुजानी) बागरा - राजस्थान

मिलन
पान ब्रोकर्स

अमावरपेट, कोलार
फोन : (नि) 225587
(दु.) 221956
(मो.) 94481-65206

With
Best Compliments From

Sureshkumar Kantilalji

SAYLA

Heera Chand
Pawn Broker

New Bus Stand Road,
Brahmin Street,
Kolar - 563 101.
Ph. No. : 08152224681,
221445

With
Best Compliments From

छत्रगोता सायलावाले

Kisorilal
Sukhrajji

Bankers & Jewellers

235, Ammavarpet,
KOLAR - 563 101
Resi. : 222698
Shop : 98454-25249

With Best Compliments From

Swastik

LLOYDS ENGINEERING
PVT . LTD .

Mfrs. Of : Stainless Steel,
Carbon & Alloy Steel,
Pipe Fittings

58, Islampura Street,
(Near Alankar Cinema),
Mumbai - 400 004.

Factory : Plot No. L-109, MIDC Taloja
Industrial Area, Dist. Raigad - 410 218,
Navi Mumbai, Maharashtra, India

Off. : Tel. : 23860222 / 23862404
Fact. : 27402777 / 27402778
Off. : Fax : 91-022-23805017
Fact. Fax : 91-022-27402779
e-mail : swstmtl@bom3.vsnl.net.in

With Best Compliments From

Motilal Bohra

Venus

METAL CORPORATION

STAINLESS STEEL RODS
& WIRE ROPES

Authorised Dealers :
MUKAND LTD.

52-52/A, Nanubhai Desai Road,
Islampura Street, Bombay - 400 004.
Phones : 23864335, 23868586
Fax : 23870686
Telex : 011-74459, VWIL IN
Gram : 'VENUSMETAL'

With
Best Compliments From
सुरेशकुमार कान्तीलालजी

☎ STD. : 08152
Ph. 224681

HEERA

JAIN
STEEL HOUSE

S. S. Complex,
Ammavaripet,
Kolar - 563 101

With
Best Compliments From

ASHOK KUMAR

Texo - Plast
Irrigation Systems

Mfrs. :
Quality Irrigation Pipes

Factory : Plot No. 10-A,
KIADB Industrial Area,
Bethamangala Road, TAMAKA.
Kolar - 563 101. Karnataka
✆ Fac. : 224144
Resi. : 226366

With
Best Compliments From
Javerilal
Lal Chand
& Keerthi

Keerthi Kumar
Javerilal

Banker's

New Bus Stand Road,
Brahmin Street,
KOLAR - 563 101.
(Karnataka)
STD 08152-225301

WITH
BEST COMPLIMENTS FROM

Lalit Kumar Jain
Uttam Kumar Jain

✆ Off. : 222046
228346
Resi. : 223042
Mobile : 9448045510

AMBIKA
INDUSTRIES

Mfrs of :
Plastic Bangles

Behind Santhegate,
Near Govt. Bus Stand,
KOLAR - 563 101. K.T.

हार्दिक शुभेच्छा

श्री जयन्तिलाल
हस्तीमलजी
चतरगोता
सायला (राजस्थान)

अमावर पेट,
कोलार - 563 101
फोन - 222553

With Best
Compliments From

M/s. Manikchand
Mohanlal Chhajed
(K.G.F. Vala)

MANAK
BANKERS &
JEWELLERS

Opp. S. S. Complex,
M. G. Chowk, Kolar - 563 101.
Karnataka
Phone : 08152-222817

With
Best Compliments From

LOHAR MISRIMAL
SUNAJJI CHAUHAN

Misrimal
Pawn
Brokers

Ammaverpet, Kolar - 563 101.
Karnataka
Shop : 220090
Resi. : 228926
Mobile : 9845246529

With
Best Compliments From

MITHALAL

✆ : 08152
(O) 227079
(R) 226278

Suresh
Electricals

Dealers in :
All Electrical Goods

245, Ammavarpet,
Kolar - 563 101

गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी

बागरा निवासी
शा. ताराचन्द चन्दनमलजी
के सुपुत्र शीतल
के शुभ विवाह पर
ज्ञानभक्ति में सहयोग

अपने पिताश्री
शा. वगताजी हरजीजी के
स्मरणार्थ महान् तपस्वी -
जीवनभर तपस्या ध्यान करते रहे

श्री चन्द्रप्रभाश्रीजी म.सा.

शा. ओंकारमल वगताजी मु.
रामसीण (राज.)

सांइ वसराम अपार्टमेन्ट,
ब्लॉक नं. ४०५, इ.एस.आई.,
न्यू कोटर के पास, चिरु चोक रोड,
उल्हासनगर

हार्दिक शुभेच्छा

Ph. No. : Off. 224450
Resi. 226151

मिसरीमलजी रतनाजी
Misrimalji Ratnaji

Sri Mahaveer Electricals

Ammavarpet
Kolar - 563 101
Tagatgad

हार्दिक शुभेच्छा

किशोरीलाल सुखराजजी ज्वेलर्स

राजस्थान में सायला
चत्तरगोता

अमावरपेट, कोलार,
कर्नाटक - ५६३ १०१.
✆ (नि.) २२२६९८
(दु.) २२८७९४

हार्दिक शुभेच्छा

भरत सिल्वर

830, बुधवार पेठ,
पुणे

हार्दिक शुभेच्छा

श्री. बाबुलालजी

बालवाडा
(राज.)

प्रवर्तिनीजी श्री मुक्तिश्रीजी
म.सा. के उपदेश से
ज्ञान भक्ति में स्वश्रेयार्थे
१०० पुस्तक प्रकाशन

*

श्री बाबुलालजी
मन्नालालजी
नागदा

*

शा. भवरलाल
कुन्दनमलजी
रतनपुरा बोहरा
परिवार

जीवित महोत्सव प्रसंगे
पूज्य दादीजी सुन्दरबाई,
पूज्य पिताजी भवरलालजी,
पूज्या मातुश्री श्री शान्तिदेवी
- मोदरा (राज.)

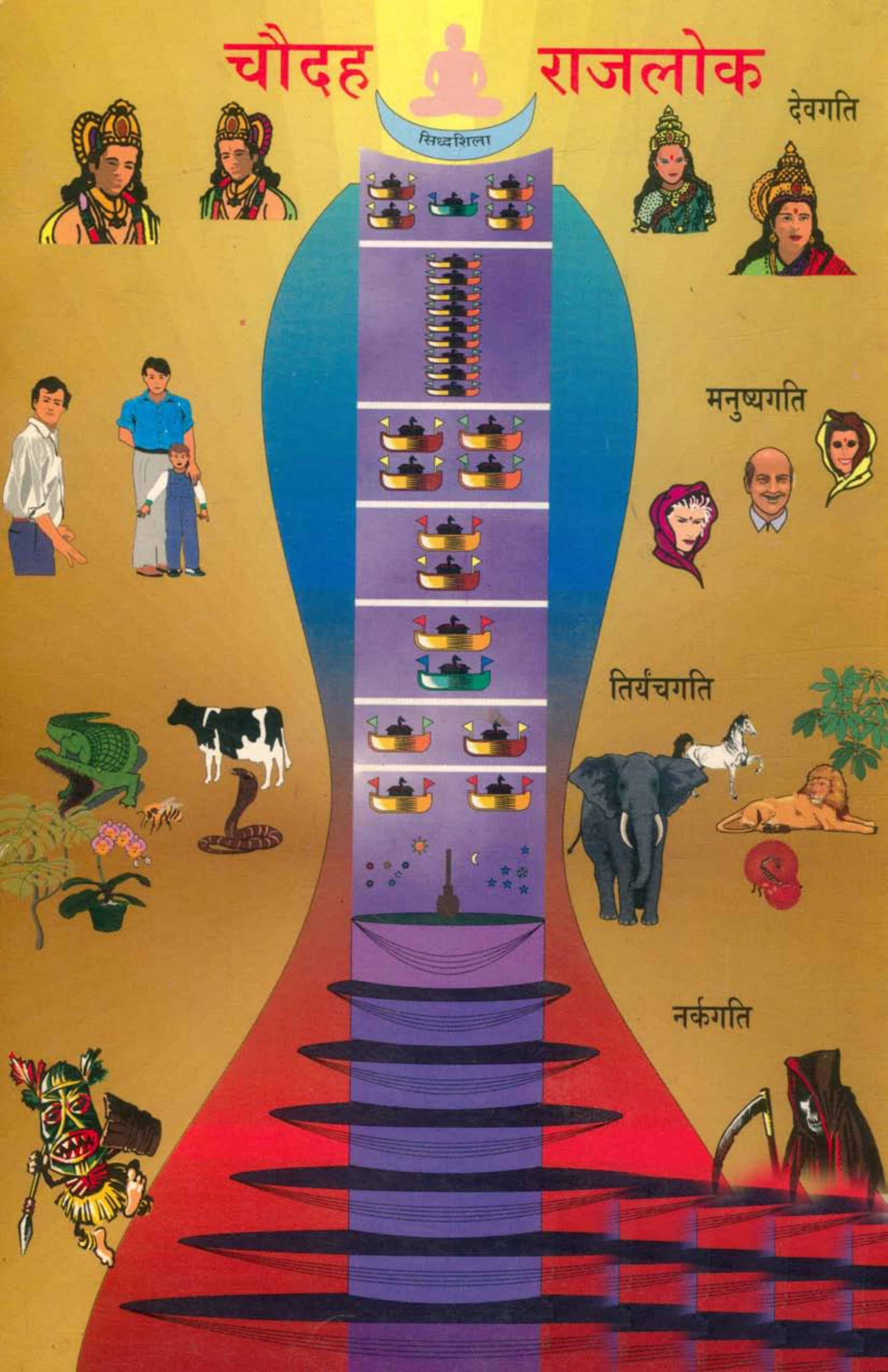
चौदह राजलोक
सिध्दशिला
देवगति
मनुष्यगति
तिर्यंचगति
नर्कगति